स्टिंग ऑपरेशन



अनिल सलूजा

प्रस्तुत उपन्यास के सभी पात्र एवं घनटनायें काल्पनिक हैं। किसी जीवित अथवा मृत व्यक्ति से इनका कतई कोई सम्बन्ध नहीं है। उपन्यास का उद्देश्य मात्र मनोरंजन है। प्रूफ संशोधन कार्य यद्यपि पूर्ण योग्यता व सावधानीपूर्वक किया गया है, तथापि मानवीय त्रुटि रह सकती है, अत: किसी भी तथ्य सम्बन्धी त्रुटि के लिए लेखक, प्रकाशक व मुद्रक उत्तरदायी नहीं होंगे। किसी भी कानूनी विवाद का निपटारा न्याय क्षेत्र मेरठ में होगा।

प्रस्तुत उपन्यास में दिए गए हिंसक दृश्यों, धूम्रपान, मधपान अथवा किसी अन्य मादक पदार्थों के सेवन का प्रकाशक या लेखक कत्तई समर्थन नहीं करते। इस प्रकार के दृश्य पाठकों को इन कृत्यों को प्रेरित करने के लिए नहीं बल्कि कथानक को वास्तविक रूप में दर्शाने के लिए दिए गए हैं। पाठकों से अनुरोध है की इन कृत्यों वे दुर्व्यसनों को दूर ही रखें।

यह उपन्यास मात्र 18 + की आयु के लिए ही प्रकाशित किया गया है। उपन्यासब आगे पढ़ने से पाठक अपनी सहमति दर्ज कर रहा है की वह 18 + है।

रीना राठौर सीरीज

स्टिंग ऑपरेशन

अनिल सलूजा

"तमाम गवाहों और सुबूतों के मद्देनजर यह अदालत इस नतीजे पर पहुंची है—मुलजिम विशाल कपूर ने अपने पेशे का गलत इस्तेमाल करते हुए एक बेगुनाह लड़की को न केवल बदनाम किया— बल्कि उसे आत्महत्या करने पर मजबूर भी किया...। साथ में मुलजिम विशाल कपूर ने एक और घर को बदनाम करने की भी कोशिश की...लिहाजा अदालत विशाल कपूर को दोषी मानते हुए उसे दस साल के कठोर कारावास की सजा देती है।"

फैसला सुनते ही कटघरे में खड़े विशाल कपूर के चेहरे पर भूचाल आ गया।

तभी उसकी नजर राठौर पर पड़ी—जो विजयी मुस्कान के साथ उसी को देख रही थी।

विशाल कपूर का पूरा वजूद सुलग उठा।

आंखों में अंगारे दहकने लगे।

उधर मजिस्टेट ने अपने फैसले पर दस्तखत किए और कुर्सी छोड़ कर चेम्बर में चले गए।

ठीक तभी पीछे से सिकन्दर ठाकरे ने विशाल कपूर की कलाई पकड़ी और उसमें हथकड़ी डाल दी।

विशाल कपूर कटघरे से निकला और सिकन्दर ठाकरे के आगे-आगे चलते हुए रीमा राठौर के करीब आ खड़ा हुआ। जो उस वक्त टेबल पर से फाइलें उठा रही थी।

फाइलें उठाते हुए उसने विशाल कपूर को देखा और मुस्कुराई—"अगर जहर बोओगे—तो फसल भी जहरीली ही होगी, विशाल कपूर...। सरकार ने प्रैस को आजादी इसलिए नहीं दी कि वो दूसरों के घरों को उजाड़ने लगे। तुम...।"

"बहुत बुरा किया तुमने रीमा राठौर—बहुत बुरा किया...।"

विशाल कपूर एक-एक शब्द को चबाते हुए बोला—"बिना कोई तफ्तीश किए तुमने मेरे मुंह पर जो कालिख मली है—उसको मैं कभी नहीं भूलूंगा। जेल में मैं हर पल ऊपर वाले से तुम्हारी लम्बी उम्र की दुआ करता रहूंगा—ताकि जेल से छूटने के बाद मैं तुम्हें खत्म करके अपना इन्तकाम ले सकूं...। तुम भी खुद को बचा कर रखना, रीमा राठौर—क्योंकि अब तुम्हारी जिन्दगी पर मेरा नाम लिखा जा चुका है।"

"हा...हा...हा...।" रीमा राठौर उसकी बात को हवा में उड़ाने वाले अंदाज में हंसी—फिर उसके गाल पर हल्के से थपकी देते हुए बोली—"अभी बच्चा है तू विशाल कपूर—रीमा राठौर का कलेजा चबाने के लिए स्टील के दांत चाहिये—जबकि अभी तो तुम्हारे दूध के दांत भी नहीं टूटे। तू घबरा नहीं—मैं खुद को कुछ भी नहीं होने दूंगी...। जब तू जेल से निकलेगा—तब देखूंगी कि जो दावा तू अब कर रहा है—उस पर कितना खरा उतरता है।"

कह कर उसने सिकन्दर ठाकरे को देखा—"ले जाओ इसे।"

ठाकरे ने विशाल कपूर की पीठ पर थपकी दी और गुर्राया—"चल...।"

विशाल कपूर ने रीमा राठौर को एक बार आग उगलती आंखों से देखा और बाहर की तरफ कदम बढ़ा दिए।

रीमा राठौर ने फाइलें अपनी बगल में दबाते हुए एक नजर विशाल कपूर की पीठ पर डाली—फिर अपने दाईं तरफ देखा—दर्शक दीर्घा में रखी कुर्सियों पर सबसे आगे लाईन पर एक बुजुर्ग हाथ जोड़े उसी को देख रहा था।

फैसला सुनने आये लोग पीछे के दरवाजे से निकल रहे थे। वे दोनों बुजुर्ग दम्पत्ति उसके सामने आये। "अब तो आप संतुष्ट हैं न, बाबा...।" रीमा राठौर आदमी से बोली। उस आदमी की आंखों में आंसू भर आये—साथ ही एक बार फिर से उसके हाथ जुड़ गए।

"विशाल कपूर को उसके किए की सजा तो मिल गई बेटी; लेकिन हमें क्या मिला...। हमारी बेटी तो हमें वापिस नहीं मिली...।"
कहते हुए वह फफक पड़ा।

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी।

"अगर मुझे मरे हुओं को जिन्दा करने की कला आती होती तो मैं अवश्य ही आपकी बेटी को भगवान से छीन कर ले आती...। मैं तो बस एक आम इंसान हूं— और इंसान भगवान नहीं बन सकता। विशाल कपूर ने आपकी बेटी को मरने पर मजबूर किया था—जिसकी सजा उसे कानून ने सुना दी है। और वही मैंने किया। आपको न्याय दिलाना मेरा फर्ज था—वो फर्ज मैंने पूरा कर दिया है।"

कह कर उसने अपने काले कोट का कालर पकड़ कर उसे थोड़ा एडजस्ट किया—फिर बोली—

"ऊपर वाले का दिया आपके पास बहुत कुछ है—आप किसी अनाथ लड़की को गोद ले लें—इस तरह आपको बेटी मिल जायेगी—और उसे मां-बाप मिल जायेंगे।"

"तुम ठीक कहती हो बेटी—भगवान तुम्हारा भला करे।" औरत बोली।

"हम तुम्हारी सलाह पर विचार करेंगे।" आदमी बोला।

अदालत के परिसर में खड़ी पुलिस की गाड़ी के करीब खड़ी नेहा ने विशाल कपूर को देखा तो उसकी आंखों से झर-झर आंसू बहने लगे।

उसने करीब तीन साल का लड़का गोद में उठा रखा था—करीब पांच साल की एक लड़की फ्रॉक पहने उसके करीब खड़ी थी...।

औरत की साड़ी उसके फूले हुए पेट के ऊपर बंधी थी—जिससे उसकी साड़ी उसके टखनों से कॉफी ऊपर तक हो रही थी।

साफ नजर आ रहा था कि वह गर्भवती है।

तभी छोटी लड़की—पापा-पापा कहती हुई विशाल कपूर की तरफ लपकी और उसकी टांगों से लिपट कर जोर-जोर से रोने लगी।

विशाल कपूर के कदम वहीं रुक गए—और उसके साथ चल रहे ठाकरे के कदमों में भी स्थिरता आ गई।

इंसानियत के नाते उसने इस मिलन को होने देना उचित समझा—सो वह कुछ नहीं बोला।

विशाल कपूर झुका और बच्ची को अपनी बांहों में उठाकर सीधा होते हुए उसके आंसू पोंछने लगा।

“घर आ जाओ, पापा...मम्मी घर में रोती रहती हैं।” वह मासूम भोलेपन से रोते हुए बोली—“हमारा भी दिल नहीं लगता आपके बिना।” कह कर उसने ठाकरे की तरफ देखा—“मेरे पापा को छोड़ दीजिए अंकल—मैंने तीस रुपये जोड़े हैं—साथ में मेरे पास बहुत-सी गुड़ियां-गुड्डे हैं—आप सभी ले लीजिये—मगर मेरे पापा को छोड़ दें।”

उस मासूम गुड़िया से नजर मिलाने का साहस नहीं था उसमें।

तभी बच्चा उठाये औरत विशाल कपूर के सामने आई और उसके सीने से सिर लगा कर फफक पड़ी।

“मत रोओ, नेहा...तुम भी जानती हो कि मैं बेकसूर हूं। मुझे फंसाया गया है...मैं...।”

“आप दिल छोटा मत कीजिये जी...।” नेहा सीधी हो अपना आंचल दुरुस्त करते हुए बोली—“मैं आपको कुछ भी नहीं होने दूंगी—मैं हाईकोर्ट में अपील करूंगी और आपको इंसाफ दिला कर ही रहूंगी।”

विशाल कपूर ने उसकी बात का जवाब न देते हुए उससे बच्चा लेकर उसे चूमा और वो प्यार से बोला—

“अपनी मां को तंग मत करना।”

बच्चे ने चुपचाप सिर हिला दिया। उस बेचारे को पता ही क्या था कि क्या हो रहा था?

विशाल कपूर ने दोनों बच्चों को बारी-बारी से चूमा और लड़के को नेहा को पकड़ा कर गुड़िया को नीचे खड़ा कर दिया।

“चलो, इंस्पेक्टर...।” वह बोला।

“नहीं...।” गुड़िया फिर से विशाल कपूर की टांगों से लिपट गई और जोर-जोर से रोने लगी—“मैं आपको नहीं जाने दूंगी—आप कहीं नहीं जायेंगे—

आप घर चलिए...।"

अपने फटते कलेजे को सम्भाले विशाल कपूर ने गुड़िया को स्वयं से अलग कर उसकी बांह नेहा को पकड़ाई और भर्राये लहजे में बोला—"बच्चों का ध्यान रखना नेहा...।"

कुछ नहीं बोली नेहा—बस आंसू बहाते हुए सिर हिला दिया।

"चलो, इंस्पेक्टर...।" विशाल कपूर बोला और पुलिस की बंद गाड़ी की तरफ कदम बढ़ा दिए—जिसका पिछला दरवाजा खुला था।

¶¶

"हा...हा...हा...।"

उस आधुनिकता से सजे कमरे में वह सामूहिक ठहाका ऐसे गूंजा जैसे वहां एक साथ कई पिशाच हंस रहे हों।

वे तीन थे—जो सोफों पर बैठे ठहाके लगा रहे थे। उनके करीब ही एक व्यक्ति सिर झुकाये खड़ा था। वह ठहाके तो नहीं लगा रहा था—मगर उसके होठों

पर मुस्कान जरूर थी।

उनके बीच में रखी सेन्टर टेबल पर—जिसका ऊपरी कांच का बेस सोफे के रंग से मैच कर रहा था, स्कॉच की बोतल के साथ पांच पैग रखे हुए थे और साथ में तले हुए काजू एक बड़ी प्लेट में रखे हुए थे।

उन पांच में दो तो कड़क जवान थे...। दोनों की उम्र पच्चीस साल के करीब थी और वो चेहरों से खाते-पीते घर के नजर आ रहे थे।

उनमें से एक का नाम निशांत था और दूसरा प्रकाश...।

तीसरा अधेड़ उम्र का खद्दरधारी था—जो चेहरे से ऐसे नजर आ रहा था—जैसे सारी दुनिया की शराफत का ठेका उसी ने ले रखा हो, मगर उसकी आंखों में ऐसी चमक थी कि लोमड़ी भी उसकी आंखों का ताव न सह सके। नाम था आत्माराम।

आत्माराम मौजूदा विधायक था...। और उसे पूरी उम्मीद थी कि अगली बार चुनाव जीतने पर वह मन्त्री बन जायेगा।

निशांत आत्माराम का बेटा था और प्रकाश उसका भतीजा था।

दुनिया की नजर में प्रकाश आत्माराम का भतीजा था—और वह उसे प्यार भी वैसा ही करता था...। जो चीज वह निशांत के लिए लाता था—वही चीज प्रकाश के लिए भी आती थी। खुद निशांत भी प्रकाश से भाईयों जैसा प्यार करता था। लेकिन हकीकत में प्रकाश आत्माराम का भतीजा नहीं था— बल्कि वह उसके दोस्त का लड़का था और उसके पास पिछले साल भर से रह रहा था।

आत्माराम का दोस्त मुम्बई में नहीं रहता था— बल्कि उसका बिजनेस दुबई में था और उस बिजनेस में आत्माराम की बराबर की साझेदारी थी।

एक जो वहां खड़ा था, वह आत्माराम के कई गुलामों में से एक था।

अभी-अभी उसी ने आकर विशाल कपूर को दस साल की सजा मिलने की खबर सुनाई थी और इसी खबर को सुनकर तीनों ठहाके लगा रहे थे।

“बहुत बढ़िया खबर सुनाई तूने बांके...।” आत्माराम अपने ठहाके को रोकते हुए बोला—“दिल खुश कर दिया। जा...।”

बांके ने सिर झुकाया और कमरे से बाहर निकल गया। आत्माराम ने अपना पैग उठाया और दोनों को देखते हुए गर्व से गर्दन अकड़ाई—"देखा मेरा दांव...।" वह बोला—"इसे कहते हैं सियासी फटका—साँप भी मर गया और लाठी भी नहीं टूटी...। हरामजादा मेरे बेटे को फंसाने चला था। अभी तो शुरूआत हुई है...। और आत्माराम वो बला है—जो जितनी दुश्मनी निभाता है—उसे जड़ से खत्म करके दम लेता है।"

"अब आप क्या करेंगे, पापा...?" निशांत बोला।

"तू देखता जा बेटे, तेरा बाप क्या करता है और तू भी सीख, बेटे...।" उसने प्रकाश को देखा—"कि राजनीति कैसे खेली जाती है।" कहते हुए उसकी आंखों में भेड़िये की क्रूरता उभर आई।

"ठक...ठक...ठक...।"

जूतों की एड़ियां फर्श पर टकराने की आवाज विशाल कपूर के कानों में पड़ी।

उस वक्त वह अपनी सेल में अपने घुटनों पर बाहें रखे, ऊपर ठोड़ी रखे अपने पीछे बने छोटे से चबूतरे से टेक लगाये बैठा था।

आवाज सुन कर उसकी पुतलियों में हरकत हुई—मगर उसके शरीर में कोई हरकत नहीं हुई।

वैसी ही पोजीशन में बैठा वह सेल के सींखचों वाले दरवाजे को देखने लगा—जिसके उस पार बनी गैलरी में से उसे जूतों की आवाजें आ रही थीं।

और तभी साईड से निकल कर आत्माराम उसकी सेल के सामने आ खड़ा हुआ।

उसे देखते ही विशाल कपूर का चेहरा सुलग उठा।

आंखों में अंगारे दहकने लगे।

झटके से वह उठा और सींखचों के दरवाजे के करीब आ कर सींखचों को पकड़ते हुए फुंफकारा—"तू...।"

आत्माराम के होठों पर कुटिलता से भरी मुस्कान नाच उठी।

"कैसा है रे, विशाल कपूर—विशेष संवाददाता ऑफ आर चैनल...।"

विशाल कपूर के चेहरे पर फैला रौद्र और भी गहरा हो गया।

"अभी खुशियां मत मना, आत्माराम...।" वह घायल शेर की तरह गुर्राया —"अभी तो केस की शुरूआत ही हुई है...। हाईकोर्ट में अपील करूंगा—और याद रख—जिस दिन भी मैं जेल से निकला—तेरी उल्टी गिनती शुरू हो जायेगी। मैं तेरे को—तेरे बेटे को—तेरे भतीजे को पूरी दुनिया के सामने नंगा कर दूंगा।"

"हा...हा...हा...।" हौले से कहकहा लगाया आत्माराम ने—"तू मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता—तू अभी मेरे को जानता ही कहां है—मेरा सिर्फ एक छोटा-सा रूप देखा है तूने। रही बात तेरे हाईकोर्ट में अपील करने की, तो तेरा अपना ही चैनल तेरे से मुंह मोड़ चुका है।"

"मेरी पत्नी तो है। तू देखना...एक हफ्ते के अन्दर-अन्दर मेरा वकील हाईकोर्ट में अपील करेगा...।"

"एक हफ्ता तो बहुत दूर है, मेंरे बच्चे...मैं तेंरे को तीन दिन में ही अपने एक और रूप के दर्शन करा दूंगा...। और मेरा वो रूप देख कर तू वहीं खत्म हो जाएगा...। क्योंकि आत्माराम को दुश्मन पालने का जरा भी शौक नहीं है—वो तो दुश्मनी शुरू होने से पहले ही दुश्मन को खत्म करने में विश्वास रखता है।"

"तूने भी अभी तक मेरा सिर्फ एक ही रूप देखा है, आत्माराम...। एक कर्तव्यपरायण रिपोर्टर का रूप—जो कानून की रक्षा के लिए, सरकार की आंखें अपनी खबरों से खोलता रहता था, मगर अब मेरा कानून से भरोसा उठ चुका है...। बस एक बार मुझे बाहर आने दे—फिर मैं तेंरे को अपने उस रूप के दर्शन कराऊंगा—जिसे देख कर तू पनाह मांगेगा।"

"बातें तो बढ़िया कर लेता है तू; मगर अफसोस कि मैं तेरा दूसरा रूप नहीं देख पाऊंगा—उससे पहले ही तेंरे को मेंरे दूसरे रूप के दर्शन हो जायेंगे।"

"बस...यही बकवास करने आया था तू यहां?" गुर्राया विशाल कपूर।

"बकवास तो यूं ही हो गई—मैं तो तेंरे अन्तिम दर्शन करने आया था।"

"यह तो अब वक्त ही बतायेगा कि तूने अन्तिम दर्शन किए या मैंने तेरे अन्तिम दर्शन किए हैं...।"

एक-एक शब्द को चबाते हुए गुर्राया विशाल कपूर।

¶¶

"क्या बात है...?" रीमा राठौर ने सोफे पर बैठे सिकन्दर ठाकरे को देखते हुए भौंहें उछालीं—"बीवी ने नई शादी कर ली या एस.पी. ने फटकार पिला दी?"

कहते हुए वह खुद भी उसके सामने बैठ गई।

इस वक्त वह शोख हरे रंग की स्कर्ट पहने थी—जिस पर सफेद बड़ी-बड़ी धारियां थीं। टाप सफेद रंग की थी। छोटी-सी स्कर्ट और वैसी ही टाप ऐसी थी कि अगर वह फर्श पर गिरी कोई चीज उठाने को झुके तो उसके आगे खड़े व्यक्ति को उसकी नाभि तक के दर्शन हो जायें—और पीछे खड़े व्यक्ति को वो सब नजर आ जाये—जिसके लिए आदिम युग से बड़ी-बड़ी लड़ाइयां होती आ रही हैं।

उस वक्त वह कोर्ट से आ कर आराम कर रही थी—जब उसके बेडरूम में सिकन्दर ठाकरे के आने की आवाज गूंजी...।

और अब वह ड्राईंगरूम में उसके सामने बैठ रही थी।

रीमा राठौर की मजाक में कही बात के जवाब में जब ठाकरे कुछ नहीं बोला तो रीमा राठौर भी गम्भीर हो गई।

"क्या बात है...?" वह बोली—"बहुत सीरियस नजर आ रहे हो?"

ठाकरे ने गहरी सांस छोड़ते हुए पहलू बदला और रीमा राठौर को देखते हुए बोला—

"मैं नहीं जानता कि मैं सही सोच रहा हूं कि गलत, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि आज तुमने एक बेगुनाह को जेल कराई है।"

"विशाल कपूर की बात कर रहे हो तुम...?" रीमा राठौर उसे गहरी नजर से देखते हुए बोली।

"हां...।"

"वो गुनहगार है। उसे सही सजा मिली है।"

"मगर मेरा दिल आज यह कह रहा है कि उसे गलत सजा मिली है।"

"दिल के ऐसी बात करने की कोई वजह भी तो होनी चाहिये?"

तभी पार्वती कॉफी लेकर भीतर आई। उसने दोनों को कॉफी सर्व की और चुपचाप बाहर निकल गई।

"विशाल कपूर के बारे में मैं कॉफी कुछ जानता हूं। अपने काम के प्रति वह पूरा ईमानदार है...।" कॉफी पीते हुए बोला ठाकरे—"वह हमेशा सच्चाई को ही सामने लाया है और मैं आत्माराम के भतीजे प्रकाश के बारे में भी जानता हूं...। नम्बर वन का हरामी है वो। जो कुछ मैंने उसके बारे में सुना है...अगर उसकी कोठी मेरे कार्यक्षेत्र में होती तो मैं अब तक उसे कब का गिरफ्तार कर चुका होता...।"

उसने कॉफी का घूंट भरा और अपनी बात आगे बढ़ाते हुए बोला —"विशाल कपूर ने प्रकाश और श्वेता का स्टिंग ऑपरेशन करके दुनिया को यह दिखाया था कि प्रकाश कितना कमीना आदमी है...।"

"विशाल कपूर ने उन्हें ब्लैकमेल करने के लिए स्टिंग ऑपरेशन किया था, ठाकरे साहब...। उसने आत्माराम से बीस लाख की डिमाण्ड की थी, जबकि हकीकत में श्वेता और प्रकाश एक दूसरे से प्यार करते थे और वो शादी करने जा रही थी—प्रकाश से सेक्स करके श्वेता ने कोई गुनाह नहीं किया था; मगर विशाल कपूर ने तो उसे दुनिया के सामने नंगा कर दिया...। जिसे वो बेचारी बर्दाश्त नहीं कर पाई और उसने आत्महत्या कर ली। मरने से पहले लिखे अपने सुसाइड नोट में उसने साफ लिखा था कि उसकी मौत का जिम्मेदार विशाल कपूर है और राइटिंग एक्सपर्ट ने यह दावा किया था कि वह श्वेता के हाथ का ही लिखा सुसाइड नोट था।"

"मैं सब जानता हूं...। तुम्हारी पूरी बहस मैंने सुनी थी...। और यह तो दुनिया जानती है कि तुम हमेशा सच्चाई का ही साथ देती हो—मैं भी जानता हूं; लेकिन फिर भी मेरा दिल आज यह कह रहा है कि आज तुमने एक बेगुनाह को सजा कराई है।"

ठाकरे खाली कप टेबल पर रखते हुए बोला।

"कानून दिल की बातों को या भावनाओं को मानकर नहीं चलता। कानून कठोर है। वो सिर्फ सच्चाई को देखता है।" रीमा राठौर सख्त लहजे में बोली।

"मगर कई बार जो दिखता है—वह भी झूठा होता है।"

"क्या बात है...?" रीमा राठौर उसे घूरते हुए बोली—"विशाल कपूर पर बड़ा तरस आ रहा है। ऐसे तो नहीं थे तुम...?"

"मैं अब भी वैसा ही हूं जैसा पहले था।" गम्भीर बना बोला ठाकरे—"लेकिन यहां मुझे ऐसा लग रहा है कि जो कुछ भी हुआ, गलत हुआ। विशाल कपूर की पत्नी को उसके कधे से लग कर रोता देखा था मैंने...उसकी बेटी को उसकी टांगों से लिपटते देखा था मैंने...।"

"मैंने पहले ही कहा—कानून भावनाओं को नहीं देखता...।"

"मगर...।"

"लगता है आज तुम मुझे गलत सिद्ध करने की ठान कर आये हो...।" रीमा राठौर मुस्कुराई।

"वो बात नहीं है, रीमा...।" गम्भीरता से बोला ठाकरे—"तुम्हें मैं क्या, अदालत भी गलत साबित नहीं कर सकती और मुझसे बढ़कर तुम्हें और कौन जान सकता है! तुम गलत हो ही नहीं सकतीं...।"

"फिर ऐसी बात क्यों करते हो?"

"सिर्फ इसलिए कि तुम भगवान नहीं हो...। इंसान हो तुम और गलती इंसान से ही होती है।"

"घुमा-फिरा कर फिर मेरे को गलत कह रहे हो?"

"पहले मेरी पूरी बात सुन लो—फिर जो तुम्हारा दिल चाहे—वही करना।"

“कहो...।”

“मैं यह चाहता हूं कि”—ठाकरे पहलू बदलते हुए बोला—“तुम गलत नहीं हो सकतीं। हो सकता है मैं ही गलत सोच रहा होऊं...। इसलिए मेरी खातिर...सिर्फ मेरी खातिर”—उसने अपने सीने पर हाथ रखा—“तुम इस केस की पूरी पड़ताल करो। बस यूं समझ लो कि तुम इस केस को रीओपन करके नये सिरे से शुरू कर रही हो।”

रीमा राठौर गम्भीर हो उठी।

“ओ○के○....।” वह गहरी सांस छोड़ते हुए बोली—“तुम्हारी खातिर मैं इस केस की दोबारा तफ्तीश करूंगी...। और यकीन मानो—इन्वेस्टीगेशन के दौरान मेरे जेहन में जरा भी—कहीं भी पूर्वाग्रह नहीं रहेगा। अब तो खुश...?”

ठाकरे ने हल्की-सी मुस्कान के साथ सिर हिला दिया।

“और कुछ...?” रीमा राठौर बोली।

“सुबह का खाना नहीं खाया...।” ठाकरे ने अपने पेट पर हाथ फेरा।

रीमा राठौर जोरों से हंस पड़ी।

¶¶

"आप निश्चिंत रहिये नेता जी, आपका काम हो जायेगा... आज ही हो जायेगा...हां-हां...ठीक है...कल आप पांच पेटी भेज दीजियेगा...ठीक है।"

अपने ऑफिस में बैठे जेलर ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और अपने आगे रखी लम्बी चौड़ी ऑफिस टेबल पर रखे सफेद रंग के माचिस के आकार के रिमोट पर लगे इकलौते बटन को उंगली से दबाया।

"किर्र...र्र...।"

बाहर कहीं बजर की कर्कश आवाज हुई।

शीघ्र ही एक सिपाही ऑफिस का पर्दा हटा कर भीतर दाखिल हुआ और तन कर खड़ा हो गया।

"सर...।"

“जुम्मन को लेकर आओ...।” गम्भीरता से बोला जेलर।

सिपाही तुरन्त मुड़ा और पर्दा हटा कर बाहर निकल गया।

करीब दस मिनट बाद कद-बुत और शक्ल से ही खूंखार नजर आने वाला एक व्यक्ति जेलर के सामने खड़ा था।

उसने कैदियों वाली वर्दी पहन रखी थी—जिसकी जेब पर 302 लिखा हुआ था।

“सलाम, साहब...।” जुम्मन अपने माथे से एक उंगली लगाते हुए बोला, फिर उसके कहे बिना ही एक कुर्सी खींच कर बैठ गया।

जेलर ने पहलू बदला और बोला—“नेता जी का फोन आया है। तेरे को एक काम करना है।”

“क्या...?” माथे पर बल डालते हुए बोला जुम्मन ।

"कल दोपहर को एक कैदी आया है...। नम्बर है सात सौ छियासी...।"

"बड़ा ही पाक नम्बर है...।"

"वो आज शाम का ढलता हुआ सूरज न देखने पाए। अंधेरा होने से पहले उसकी जिन्दगी में अंधेरा कर दो।"

एक गहरी सांस छोड़ी जुम्मन ने—"लगता है अभी बाहर मेरी जरूरत नहीं है...।"

"बाहर भी जरूरत है तेरी...। इसीलिए नेता जी ने कहा है कि काम ऐसे हो कि तेरे ऊपर किसी को शक न हो। बाकी मैं भी तो बैठा हूं...। सब सम्भाल लूंगा। परसों तेरी सजा पूरी हो रही है। परसों शाम को तेरे को नेता जी के सामने पेश होना है।"

"यानि यहां से निकलते ही उनके पास जाऊं?"

"उनकी गाड़ी आ जायेगी तेरे को लेने के लिए...। अब जा और काम तमाम कर दे सात सौ छियासी का...।"

“नाम क्या है उसका...?”

“विशाल कपूर।”

जुम्मन खड़ा हो गया।

बिना कुछ और कहे वह ऑफिस से बाहर निकल गया।

¶¶

कॉफी बड़ा ग्राऊंड था वह—जिसमें कैदी कई तरह के काम कर रहे थे।

कोई लकड़ी का काम कर रहा था तो कोई गंडासा चला रहा था। एक तरफ एक बिल्डिंग बन रही थी—जिसे कैदी ही बना रहे थे।

मैदान के अन्त में पहाड़ियां थीं—जिन पर मजदूर बने कैदी फावड़ों से पत्थरों को तसलों में भर कर नीचे ला रहे थे।

कई पत्थर तथा मिट्टी उखाड़ रहे थे।

उन्हीं कैदियों में जुम्मन भी था—जो एक बड़े लीवर से एक बड़ा-सा पत्थर उखाड़ रहा था—उसके साथ पांच-छह कैदी और भी काम कर रहे थे और वे सभी जुम्मन के चेले-चपाटे थे।

ग्राऊंड में पांच-छह जेल वार्डन कैदियों पर निगाह रखे इधर-उधर टहल रहे थे।

ऐसे ही आठ-दस वार्डन पहाड़ी के ऊपर उसकी चोटी पर खड़े थे।

मैदान के इस तरफ जिधर जेल थी—उधर दो ऊंचे टावर बने हुए थे—जिन पर बनी मचान पर राईफलें हाथों में लिए गार्ड्स सभी कैदियों की निगरानी कर रहे थे।

"वो उस छोकरे को देखो...।" लीवर से पत्थर को उखाड़ने की कोशिश करते हुए धीमें स्वर में बोला जुम्मन।

काम कर रहे उसके आदमियों ने गर्दन विशाल कपूर की तरफ घुमाई—जो कि उनसे कुछ दूर फावड़े से एक तसले में मिट्टी भर रहा था।

“सात सौ छियासी...।” एक फुसफुसाया।

“हां...।” जुम्मन बोला—“अल्लाह का पाक नम्बर है। उसी के पास भेजना है।”

“मगर पहरा है, उस्ताद...।“ एक बोला—“ऐसे कैसे मरेगा वो...?”

“उसे किसी तरह से ऊपर ले जाओ—पीछे डेढ़ सौ फुट नीचे गहरी नदी बह रही है। बस यहां से धक्का दे दो...। नीचे पहुंचते-पहुंचते ही वह पत्थरों से टकरा-टकरा कर इतना टूट जायेगा कि नदी में उसके पुर्जे ही गिरेंगे।”

“मगर उस्ताद, ऊपर तो कुत्ते पहरा दे रहे हैं?” दूसरे ने ऊपर खड़े सिपाहियों की तरफ देखा।

“और फिर ऊपर ले कैसे जायेंगे उसे?” तीसरा बोला।

“हरीराम जो बीच में खड़ा है—वो हमारा ही साथी है...।” जुम्मन बोला —और फिर वह उन्हें अपनी स्कीम समझाने लगा।

उसके साथी काम करने के साथ-साथ उसकी स्कीम को समझ रहे थे।

पहाड़ी के ऊपरी छोर से करीब सात फुट नीचे काम कर रहा था विशाल कपूर।

अकेला ही वह तसला पत्थरों से भरता और अकेला ही तसले को उठा कर नीचे ले जा कर बन रही बिल्डिंग के सामने फेंकता और खाली तसला उठा कर वापिस आ जाता।

उस वक्त वह खाली तसला उठाये ऊपर चढ़ रहा था—जब उसकी नजर उन दो आदमियों पर पड़ी जो उसकी जगह पर काम कर रहे थे।

हैरानी नहीं हुई उसे—न ही उसके दिल में कोई विचार पनपा।

वह उनके करीब आया और फावड़े से पत्थरों को उखाड़ने लगा।

उन दोनों की तरफ उसने देखा तक नहीं।

"विशाल कपूर...।" तभी एक धीमें स्वर में बोला।

बुरी तरह से चौंकते हुए विशाल कपूर ने उसकी तरफ देखा।

"काम करते रहो—हमारी तरफ मत देखो...।" दूसरा काम करते हुए बोला।

विशाल कपूर तुरन्त अपने काम में जुट गया—"कौन हो तुम...?" वह धीमें स्वर में बोला।

"तू विशाल कपूर ही है ना...रिपोर्टर...?" दूसरा बोला।

"हां...तुम कौन हो...?"

"हम शाका के आदमी हैं... शाका की तरफ से हुक्म आया है कि तुम्हें यहां से फरार करा के उनके पास ले के जाना है।"

रिर्पार्टर था विशाल कपूर...। पूरे बम्बई की खबर रखता था—ऐसे में शाका उसके लिए कोई अंजान नाम नहीं था।

अण्डरवर्ल्ड में शाका का अच्छा खासा नाम था और उसकी आत्माराम से दुश्मनी को सभी जानते थे।

वह भी जानता था...। तभी तो उसकी बात सुन कर वह चौंका तो था ही, साथ ही वह यह समझा कि शाका को भीतर की सारी बात का पता है; इसलिए शाका ने उसकी मदद लेने के लिए, उसे फरार कराने के लिए अपने आदमी भेजे हैं।

"अब तू बोल—तू फरार होना चाहता है?" पहला धीमें स्वर में बोला।

काम करते हुए ही विशाल कपूर ने अपने चारों तरफ गर्दन घुमाई—फिर बोला—

"यहां से फरार होना नामुमकिन है। तुम कैसे...।"

"तू उसकी चिंता छोड़—तू यह बता कि तू फरार होना चाहता है कि नहीं?"

“मगर मुझे फरार कराओगे कैसे...?”

“पहाड़ के दूसरी तरफ नदी बह रही है...।” दूसरा बोला—“बस तेरे को हिम्मत दिखानी होगी...। ऊपर से हमारे साथ कूद पड़ना है तेरे को नदी में...। थोड़ा आगे ही शाका की नाव हमें लेने आ जायेगी।”

“मगर ऊपर तो पहरा है? हम ऊपर की तरफ...।”

“तू देख तो सही...हम क्या करते हैं।” दूसरा मुस्कुराया।

“हमारा उस्माद जुम्मन अभी नाटक करेगा...।” पहला बोला।

“जुम्मन...?”

“वो नीचे दाढ़ी वाला हमारा उस्ताद है और शाका का खासमखास...।”

कहते हुए पहले ने जुम्मन की तरफ इशारा किया।

विशाल कपूर ने जुम्मन को देखा—जो अभी भी लीवर से पत्थर उखाड़ने में जुटा हुआ था।

तभी उसने ऊपर देखा तो पहले ने अपने सिर पर हाथ फेर दिया।

यह इशारा था जुम्मन के लिए कि विशाल कपूर भागने को तैयार था।

जुम्मन ने तुरतं लीवर को छोड़ा और अपने साथ खड़े अपने चेलों में से एक के मुंह पर थप्पड़ जड़ दिया।

चेले को पता था कि क्या करना है। सो वह चीखा—"तूने मेंरे को मारा हरामजादे ....अब तू नहीं बचेगा।" चीखने के साथ ही वह जुम्मन पर टूट पड़ा।

उसके साथी भी जुम्मन से भिड़ गए।

तभी जुम्मन ने एक के पेट में लात मारी तो वह बुरी तरह से चीखते हुए नीचे गिर और ग्राउण्ड की तरफ लुढ़कता चला गया।

बाकी के तीनों और भी गुस्से का प्रदर्शन करते हुए जुम्मन पर टूट पड़े।

नतीजा—

पहाड़ी की चोटी पर खड़े सिपाहियों में से एक जो कि हरीराम था, चीखा—तेजी से शोर मचाते हुए नीचे की तरफ लपका।

"अरे पकड़ो उन्हें....। जल्दी करो....।"

उसकी तेज आवाज सुनकर ऊपर खड़े तीन और सिपाही नीचे लड़ रहे चुम्मन एण्ड कम्पनी तकी तरफ लपके।

अभी वह उनके करीब ही पहुंचे थे कि विसाल कपूर के साथ इकट्ठे दोनों गुण्डे चीखे—

"भागो....।"

कहने के साथ ही वे दोनों तसले छोड़ तेजी से ऊपर चढ़ने लगे।

विशाल कपूर भी तेजी से उसके पीछे-पीछे ऊपर चढ़ने लगा।

इस वक्त उसका कलेजा धाड़-धाड़ करता उसकी पसलियों से टकरा रहा था—लेकिन वह अपनी हिम्मत को पूरी तरह से सम्भाले हुए था। उसकी आंखों

के सामने कभी आत्माराम का तो कभी रीमा राठौर का चेहरा नाच रहा था....।

अभी वे चोटी के करीब ही पहुंचे थे कि पूरे ग्राऊंड में तेज अलार्म बज उठा

"बांऊsssss....।"

"रुक जाओ....वर्ना गोली मार दूंगा....।" तभी नीचे से दहाड़ती आवाज आई।

"जल्दी कर...।" पहला चीखा—"वर्ना हम सभी मारे जायेंगे...।"

विशाल कपूर और भी तेजी से पहाड़ी की चोटी की तरह बढ़ने लगा और उन दोनों से आगे निकल गया।

"धांय...। धांय...।" तभी नीचे से उन पर फायरिंग शुरू हो गई।

मगर तीनों ऊपर चढ़ते रहे।

और इधर विशाल कपूर पहाड़ की चोटी पर पहुंचा—उधर पीछे से गोली उसकी बाजू को कंधे के पास से झुलसाते हुए निकल गई।

"आह...।" कराह उठा वह। साथ ही उसने दायें हाथ से अपनी बाईं बाजू पकड़ ली और जैसे ही वह उन दोनों को देखने के लिए पलटा—पहले ने उसके सीने पर हाथ रखते हुए उसे तेज धक्का दिया।

सम्भल नहीं पाया विशाल कपूर और उसके पैर उखड़ गए।

वह धड़ाम्-से नीचे गिरा और लुढ़कनियां खाते हुए नीचे गिरने लगा।

दोनों अपने हाथ सिर पर रखते हुए वहीं बैठ गए और अपना रुख सुरक्षाकर्मियों की तरफ कर लिया—जोकि अपनी राईफलें सम्भाले तेजी से ऊपर चढ़ रहे थे।

ऊपर आकर दो गार्डों ने उन दोनों गुण्डों को काबू किया जबकि दो पहाड़ी से नीचे झांकने लगे।

तीखी ढलान में कई पत्थर...चट्टानें उभरी हुई थीं।

"बेचारा...।" हरीराम ने गहरी सांस छोड़ी—"कल ही आया और आज चल बसा...।"

उधर पहला गुण्डा दोनों गार्डों के सामने अपनी सफाई दे रहा था—

“हम तो उसे पकड़ने के लिए उसके पीछे दौड़ रहे थे...। हमारा इरादा भागने का नहीं था।”

“इन्हें जेलर साहब के सामने पेश करो...।” दूसरा बोला—“वही इनका फैसला करेंगे।”

जेलर ने कहर भरी आंखों से दोनों को देखा—फिर अपने दाईं तरफ खड़े एक अधिकारी से बोला—“पीछे बह रही नदी का बहाव इतना तेज है कि अब तक विशाल कपूर की लाश समुद्र में पहुंच गई होगी। फिर भी फौरन उसकी लाश की तलाश की जाये। और अगर वो बच गया हो तो उसे फौरन अस्पताल पहुंचाया जाये।”

“यस सर।”

कहकर वह अधिकारी तेजी से बाहर निकल गया।

जेवर ने दोनों को देखा और गुर्राया—"अब बोलो—कैसे भागा वह....?"

"ह...हमें कुछ नहीं पता, साहब...। जुम्मन की लडाई हो गई थी— उसे देख रहे थे हम...कि वह फरार न हो जाऐ—इसलिए हम उसके पीछे भागे। हम उसके करीब पहुच थे कि उसे गोली लग गई और वह गिर गया कर लुढकता चला गया।"

पहला बोला।

जेलर ने गार्डों की तरफ देखा।

"यह ठीक कह रहा है, सर...।" हरीराम बोल पड़ा–"उसे गोली लगी थी...। और उसके गिरते ही यह दोनों सिर पर हाथ रख कर बैठ गए थे।"

जेलर के होठों पर एक हल्की-सी रहस्यपूर्ण मुस्कान आ कर लुप्त हो गई।

आत्माराम का बताया काम जुम्मन ने बड़ी आसानी से बढ़िया तरकीब लगा कर पूरा कर दिया था।

उसने दोनों गुण्डों से दिखाने के लिऐ थोड़ी पूछताछ की और फिर सभी को भेज दिया।

११

"फट...फट...फट...।"

मोटरबोट के इंजन की आवाज नदी के दोनों तरफ बनी पहाड़ियों से टकरा कर लौट रही थी।

नदी में धीमी रफ्तार से चल रही मोटरबोट में हथियारों से लैस दस सिपाही बैठे थे—जो कि जेल वाली साईड की पहाड़ियों पर तथा पानी में नजर मारते हुए विशाल कपूर की लाश को ढूंढ रहे थे।

पहाड़ की खड़ी चढ़ाई से कई जगहों पर बड़ी-बड़ी चट्टानें बाहर निकली नजर आ रही थीं।...। कई जगहों पर पेड़ लगे नजर आ रहे थे तो कई स्थानों पर

पहाड़ पूरी तरह से पथरीले और गंजे थे—जिनकी दरारों से ऊंची-ऊंची घास लहरा रही थी।

नीचे बह रही नदी का बहाव काफी तेज था।

"उस जगह से गिरा था सात सौ छियासी...।" तभी एक सिपाही पहाड़ की चोटी की तरफ बांह लम्बी करते हुए बोला—"उस जगह को खास तौर पर देखो...।"

सिपाहियों ने पहाड़ पर—पानी में खूब अच्छी तरह से देखा।

मगर किसी लाश के दर्शन नहीं हुए उन्हें।

करीब तीन घण्टे तक विशाल कपूर की लाश की तलाश होती रही। यहां तक कि बोट समुद्र तक पहुंच गई थी...। लेकिन फिर बोट वापिस रवाना हो गई।

¶¶

उस वक्त रीमा राठौर कोर्ट से आकर अपने बेडरूम में आ कर बैठी ही थी कि उसकी काली पैन्ट की जेब से गाने की आवाज निकलने लगी—

"सारे जहां से अच्छा....हिन्दुस्तां हमारा....हम बुलबुलें हैं इसकी....यह गुलिस्तां हमारा...हमारा...।"

बायें हाथ से अपनी सफेद शर्ट के बटन खोलते हुए रीमा राठौर बाईं तरफ थोड़ी टेढ़ी हुई और जेब से मोबाइल निकाल कर उसकी स्क्रीन पर नजर मारी।

सिकन्दर ठाकरे का नम्बर चमक रहा था स्क्रीन पर ...।

अंगूठे से बटन दबाते हुए—बायें हाथ से शर्ट का आखिरी बटन खोलते हुए उसने मोबाइल कान से लगाया।

"हां, बोलो ठाकरे...।"

कहते हुए उसने बायां हाथ अपनी काली ब्रा पर हल्के से फेरा...।

"विशाल कपूर मारा गया...।"

सुन कर वह एकदम से चौंकते हुए खड़ी हो गई।

उसके चौंकने से उसके ब्रा में कैद उभार जानलेवा अंदाज में जोरों से कांपे।

"य...यह क्या कह रहे हो तुम...?" वह बुरी तरह से चौंकते हुए बोली।

"फरार होने की कोशिश कर रहा था वह—सुरक्षा बलों की गोली का शिकार हो पीछे नदी में जा गिरा।"

"ओह नो!" रीमा राठौर को विश्वास नहीं हुआ।

"मुझे तो इसमें किसी की साजिश की बू आ रही है रीमा...। हो सकता है आत्माराम ने उसका कत्ल करवाया हो...।"

"ऐसे एकदम किसी पर उंगली नहीं रख दिया करते, ठाकरे।" खुद को किसी तरह से सम्भालते हुए बोली वह।

"मैं ऐसे ही नहीं कह रहा—अभी कल ही तो उसे सजा मिली है और आज उसने फरार होने की कोशिश भी कर डाली? अरे...फरार होने से पहले वह

कोई स्कीम बनाता... और स्कीमें एक दिन में नहीं बन जातीं...। साफ नजर आ रहा है कि उसके साथ साजिश रची गई थी...। तुमने तफ्तीश शुरू की?"

"शुरू करने वाली हूं। तुम्हें विशाल की मौत की खबर कैसे लगी?"

"जेल से फोन आया था।"

"विशाल कपूर की लाश...?"

"बहुत तलाशा गया उसकी लाश को...। नहीं मिली—नदी का बहाव ही इतना तेज है कि वो हाथी को भी बहा कर ले जाये—सो लाश मिलने के मामले में पुलिस को निराशा ही मिली है।"

"ओह...।"

"मैं विशाल कपूर के घर जा रहा था खबर देने—सोचा कि पहले तुम्हें खबर दे दूं...।"

"अच्छा किया...।"

कह कर रीमा ने मोबाइल का लाल बटन दबाते हुए उसे बेड पर फेंका और शर्ट उतार कर वार्डरोब की तरफ बढ़ गई।

वार्डरोब खोल कर उसने अपने लिये कपड़े निकाले और वापिस बेड के पास आ कर पैन्ट उतारी और फिर नये कपड़े पहन लिए...।

अब वह पीले रंग के पंजाबी सूट में थी...।

तभी पार्वती कमरे में दाखिल हुई...।

"अरे...!" वह उसे कपड़े पहने देख हैरानी से बोली—"मालिश नहीं करवायेंगी मैडम...?"

"नहीं...।"

रीमा राठौर ने बस इतना ही कहा और कमरे से बाहर निकल गई।

¶¶

"न...हीं...।"

नेहा इतने जोरों से चीखी कि पूरे मकान की दीवारें थरथरा गईं।

"य...यह झूठ है...! म... मेरा विशू नहीं मर सकता...।"

वह अपने सामने खड़े ठाकरे को देखते हुए चीखी और फिर आगे बढ़ कर दोनों हाथों से उसका गिरेबान पकड़ लिया—"झूठ बोल रहे हो तुम...मैं तुम्हारी बातों में नहीं आने वाली—मेरे विशू को कुछ नहीं हो सकता।"

"यह सच है, नेहा।" ठाकरे उसकी कलाइयों को पकड अपना गिरेबान छुडाते हुए गम्भीर लहजे में बोला—"अभी थोड़ी देर पहले ही जेल से फोन आया था...। वो फरार होने की कोशिश में पुलिस की गोली का शिकार हो नदी में जा गिरा...।"

"नहीं...य...यह झूठ है....कह दो यह झूठ है...।"

नेहा रोती-बिलखती वहीं बैठ गई।

उसके करीब खड़ा ठाकरे पसोपेश में पड़ा उसे देख रहा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसी स्थिति में वह नेहा को किस तरह से हैण्डल करे।

तभी रोते-रोते अचानक ही नेहा के आंसू सूख गए...। और उनके स्थान पर उसकी आंखों में अंगारे दहकने लगे।

झटके से गर्दन पीछे को टेढ़ी कर उसने आग उगलती आंखों से ठाकरे को देखा, फिर खड़ी होते हुए घायल शेरनी की तरह गुर्राई—"आत्माराम के कुत्ते...मुझे यह खबर देकर यह देखना चाहता है कि मैं कैसे तड़पती हूं...। जा....कर कह दे अपने मालिक से कि नेहा एक रिपोर्टर की पत्नी है। और वो तब तक चैन से नहीं सोयेगी जब तक उसे दुनिया के सामने नंगा नहीं कर देती। मेरी मांग का सिंदूर अब तभी मिटेगा—जब तक तेरा कुत्ता मालिक अपने किए की सजा नहीं पा लेगा...।"

"ऐ...।" फुंफकार उठा ठाकरे—"खबरदार जो इंस्पेक्टर ठाकरे को गाली दी तो—ठाकरे अगर किसी का गुलाम है तो सिर्फ कानून का गुलाम है—समझीं...।"

"अबे जा...जा...बड़ा आया कानून का पहरेदार...।" नेहा मुंह बनाते हुए दहाड़ी—"जिसे सच्चे और झूठ की पहचान नहीं, वो क्या खाक करेगा कानून की

पहरेदारी। तुम जैसे वर्दी वालों का कानून आत्माराम जैसे नेताओं की जी हजूरी तक ही होता है...।"

"बकवास बन्द करो...।" गुर्रा उठा सिकंदर ठाकरे।

"क्यों—सच्चाई कड़वी लग रही है? जैसे तू वैसी तेरी रीमा राठौर...। कहती है... किसी बेगुनाह को सजा नहीं होने देती मैं...मगर...मगर उसने तो मेरे बेगुनाह पति को गुनाहगार साबित कर दिया। मेरे को विधवा बनाने में जितना कसूर आत्माराम का है—उतने दोषी तुम भी हो। मैं तुम्हें कभी माफ नहीं करूंगी।"

कहते हुए वह फिर से बिलख उठी।

उसकी हालत देख कर ठाकरे भीतर से द्रवित हो उठे; लेकिन अपने भीतर के भाव उसने चेहरे पर नहीं आने दिए।

उसने एक गहरी सांस छोड़ी और बोला—

"विशाल की लाश अभी नहीं मिली...। उसकी तलाश हो रही है। जैसे ही उसकी लाश मिलेगी—तुम्हें खबर कर दी जायेगी।"

कह कर उसने उसकी तरफ पीठ की और दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

वहां वह और नहीं ठहरना चाहता था।

नेहा भरी हुई थी। उसे तथा रीमा राठौर को कोस रही थी। कानून को गालियां दे रही थी।

खुद को मिलीं गालियां बर्दाश्त कर सकता था वह; लेकिन कानून और रीमा राठौर के खिलाफ एक शब्द भी नहीं सुन सकता था।

इसीलिए उसने वहां से निकलना ही ठीक समझा था। वर्ना कहीं ऐसा न हो कि उसकी बर्दाश्त जवाब दे जाए और वह उसके खिलाफ कोई कार्यवाही कर बैठे।

मकान से निकल कर वह बाहर खड़ी अपनी जिप्सी में बैठा और थाने के लिए रवाना हो गया।

¶¶

सिपाही पर्दा हटा कर ऑफिस में दाखिल हुआ तो कुर्सी पर बैठे जेलर की निगाह उस पर टिक गई।

"रीमा राठौर आई हैं, सर।" सिपाही बोला—"आपसे मिलना चाहती हैं।"

बुरी तरह से चौंक उठा जेलर—साथ ही उसका कलेजा धड़क उठा।

"यह बला कहां से आ टपकी...?" वह धीरे से बड़बड़ाया—"बुलाना तो पड़ेगा ही...।" उसने एक लम्बी सांस छोड़ी और बोला—

"भेजो...। और चाय भी भेज देना।"

सिपाही बाहर निकल गया।

करीब आधे मिनट बाद पर्दा हटा और रीमा राठौर भीतर दाखिल हुई।

"आईये, रीमा राठौर जी—वेलकम...वेलकम...।" जेलर खड़ा हो कर उसका स्वागत करते हुए बोला।

उसके होंठ इस कान से उस कान तक फैल गए—जैसे रीमा राठौर के दर्शन पाकर उसे हार्दिक खुशी हो रही हो।

जबकि भीतर से वह उसे गालियां ही निकाल रहा था।

रीमा राठौर के टेबल के करीब पहुंचने पर उसने बड़ी गर्मजोशी से उससे हाथ मिलाया और फिर बोला—"बैठिये...।" कहते हुए वह स्वयं भी बैठ गया।

रीमा राठौर एक कुर्सी खींच कर उस पर बैठ गई।

"खैरियत तो है, रीमा राठौर जी—जो आपको इस वक्त यहां आना पड़ा?" वह बोला।

रीमा राठौर ने पहलू बदला और बोली—"मैं विशाल कपूर के सिलसिले में जानकारी लेने आई हूं—मुझे पता चला है कि वो मर गया है।"

“जी हां...।” गम्भीर होते हुए बोला वह—“भागने की कोशिश कर रहा था....। सुरक्षा गार्डों ने उसे दो बार चेतावनी दी; मगर वह नहीं रुका—सो उन्होंने उस पर गोली चला दी...। गोली के झटके से वह पहाड़ी से गिरा और पीछे बह रही नदी में जा गिरा...।”

“कमाल है...!” रीमा राठौर ने हैरानी जताई—“अभी कल ही तो वह जेल में आया था—और इतनी जल्दी उसने ऐसा दुस्साहस भी कर डाला...। वह रिपोर्टर है—कम से कम उससे तो ऐसी बेवकूफी ही उम्मीद हरगिज नहीं की जा सकती थी।”

“जब मौत आती है तो बड़े-बड़े दिमाग काम करना बन्द कर देते हैं। और अगर करते भी हैं तो उनकी सोच ऐसी हो जाती है कि दिमाग से निकलने वाला हर रास्ता उसकी मौत पर ही खत्म होता है।”

“मैंने जेल भीतर से देखी है...।“ रीमा राठौर बोली—“पीछे वाली पहाड़ियां भी देखी हैं। उन पर तो हर वक्त पहरा रहता है। क्या आज पहरा नहीं था?”

"था।"

"तो फिर वो ऊपर कैसे चढ़ गया?"

"तीन कैदियों की आपस में लड़ाई हो गई थी...। लड़ाई इतनी खतरनाक हो गई थी कि खून-खराबा होने की नौबत आ गई थी। उनकी लड़ाई को छुड़ाने के लिए ऊपर पहाड़ी पर मौजूद गार्ड उनकी तरफ दौड़े थे और विशाल कपूर को जैसे भागने का मौका मिल गया। उसे शायद नहीं पता था कि वाच टावर पर मौजूद गार्ड वहां की निगरानी करते रहते हैं...। और उसे यह भी नहीं पता था कि पहाड़ी के उस पार से फरार नहीं हुआ जा सकता—क्योंकि पीछे गहरी नदी है—जिसका बहाव बहुत ही तेज है। उसमें गिरना मौत को बुलाना होता है। बस वहीं खता खा गया वो।"

रीमा राठौर के होंठ सीटी बजाने वाले अंदाज में गोल हो गए।

आंखों में सिकुड़न पैदा हो गई।

"कहीं वह लड़ाई नूरा कुश्ती तो नहीं थी, जेलर साहब?" वह बोली।

"नहीं...उनकी तीन बार पहले भी लड़ाई हो चुकी है।" जेलर तुरंत बोला—"और आज तो उनकी लड़ाई खतरनाक हद तक पहुंच गई थी। हां—अगर पहली बार लड़े होते तो ऐसा सोचा जा सकता था कि वे किसी साजिश के तहत लड़े थे।"

"मैं उन तीनों से मिलना चाहती हूं।" कुछ सोच कर बोली रीमा राठौर।

जेलर ने वाल क्लॉक पर नजर मारी—फिर अफसोस भरे स्वर में बोला—

"सॉरी रीमा राठौर जी...। इस वक्त आप उनसे नहीं मिल सकतीं...। आप कल पांच बजे से पहले कभी भी आ कर उनसे मिल लें—मगर अब की माफी चाहता हूं।"

"ओ०के०....।" रीमा राठौर खड़ी हो गई—"मैं कल आऊंगी।"

"चाय आ रही है...।"

"सॉरी...कल जरूर पीऊंगी।"

कहते हुए रीमा राठौर मुस्कुराई और बाहर निकल गई।

जेलर कुछ देर तक दरवाजे पर लटके पर्दे को देखता रहा—फिर उसने रिसीवर उठाया और आत्माराम का नम्बर मिलाने लगा।

¶¶

"अरे नेहा तुम....?" दरवाजा खोलते ही नेहा की चचेरी बहन आशा चौंकते हुए बोली—"यह क्या हाल बना रखा है...? सब खैरियत तो है न...?" कहते हुए उसने उसकी गोद से मुन्ना को ले लिया और स्वयं एक तरफ हट गई।

गुड़िया को पकड़े हुए नेहा भीतर प्रविष्ट हुई—आशा उसे अपने बेडरूम में ले आई।

नेहा की हालत ही बता रही थी कि उस वक्त बहुत गहरे सदमे और गुस्से में थी।

"ठहर—पहले मैं पानी लाती हूं, फिर बात...।"

"नहीं...।" नेहा ने उसकी कलाई पकड़ ली..."मेरे पास इतना वक्त नहीं आशा...।" वह बोली—"मैं तेरे पास एक बहुत जरूरी काम से आई हूं।"

"पहले यह बता...बात क्या है?"

एक कुर्सी खींच उस पर बैठते हुए मुन्ने को अपनी गोद में बिठाते हुए बोली आशा।

"म...मैं विधवा हो गई हूं...।" कहते हुए नेहा की आवाज भर्रा गई।

आशा के सिर पर जैसे कमरे की छत आ गिरी...। उसका पूरा जिस्म जोरों से कांप उठा।

"ज...जीजू...।"

"मार डाला उन कुत्तों ने तुम्हारे जीजू को...। समाज की गंदगी साफ करने चला था तुम्हारा जीजू; मगर वह गंदगी उन्हें ही
निगल गई।"

आशा की आंखें बह निकलीं—“य...यह क्या हो गया नेहा....यह...।”

“नहीं...।” फुंफकार उठी नेहा—“रोना नहीं मेरी बहन। देख—मैं...मैं भी नहीं रो रही—एक आंसू भी नहीं गिर रहा मेरी आंखों से—अब वो कुत्ते रोयेंगे—जिन्होंने मेरे को विधवा बनाया है। मैं अपनी मांग तभी पोछूंगी—जब उन कुत्तों को उनके अंजाम तक पहुंचाऊंगी...यह बिदिंया अब तभी ऊजड़ेगी—जब वो कुत्ते जेल जायेंगे।”

“य...यह क्या कह रही है तू नेहा? जिन्होंने जीजू को मारा है—तू उनसे अकेली नहीं लड़ पायेगी।”

“यह तो वक्त ही बतायेगा कि जीत किसकी होनी है! तू बस मेरा एक काम कर दे। मैं बहुत उम्मीद लेकर तेरे पास आई हूं।”

“बोल नेहा—मेरी जान भी चाहिये तो वो भी हाजिर है।”

नेहा ने अपनी ढीली-ढाली शर्ट की जेब से एक कागज निकाला और उसकी तरफ बढ़ाते हुए बोली—“यह मेरी वसीयत है बहना-जिसमें लिखा है कि

अगर मैं मर जाती हूं—तो मेरे पति की सारी जायदाद, जो कि उनकी मौत के बाद मेरी हो गई है—उसके उत्तराधिकारी मुन्ना और गुड़िया होंगे...और तू एक ट्रस्टी की तरह इनकी देखभाल करेगी।"

उसने अपनी टांगों के बीच खड़ी गुड़िया के सिर पर हाथ फेरा।

"ल...लेकिन नेहा मैं...।"

"मेरे घर में इतना कैश और जेवर पड़ा है कि इनकी शादी तक तुम्हें किसी चीज की कमी नहीं रहेगी।"

"मैं यह नहीं कह रही नेहा—मैं यह कहना चाहती हूं कि तू कानून की मदद लेकर...।"

"नाम मत ले कानून का...।" फुंफकार उठी नेहा—"नफरत हो गई है मुझे कानून से...। अब मैं उसी कानून के मुंह पर तमाचा मार कर उसकी बन्द आंखें खोल कर उसे सच्चाई का चेहरा दिखाऊंगी। फिर उससे कहूंगी कि अब वो

मेरे विशू को लौटाये...। उसी की गलती से ही तो मेरा विशू मरा है। यह...यह वसीयत पकड़ ले मेरी बहन...।"

आशा ने थूक सटकते हुए कागज पकड़ लिया।

नेहा ने पहले मुन्ना को चूमा—फिर गुड़िया का सिर चूमते हुए बड़े प्यार से बोली—"अपनी मौसी को तंग नहीं करना गुड़िया...।"

गुड़िया ने चुपचाप सिर हिला दिया। इस वक्त वह काफी सहमी हुई नजर आ रही थी।

"मौसी का हर कहना मानना और भैया का पूरा ख्याल रखना।" नेहा उसे समझाते हुए बोली।

गुड़िया ने पुनः सिर हिला दिया।

"मैं एक बार फिर कहती हूं, नेहा...।" तभी आशा उसे समझाते हुए बोली—"अपना इरादा त्याग दे—और कुछ नहीं तो उस आने वाले बच्चे का तो

ध्यान रख—जो तेरे पेट में पल रहा है।" उसने उसके फूले हुए पेट की तरफ इशारा किया।

नेहा ने फीकी मुस्कान के साथ अपने पेट पर हाथ फेरा—जो उसकी ढीली ढाली शर्ट में कोई खास नजर नहीं आ रहा था।

"यह इसकी किस्मत...।" वह बोली—"अगर इसकी किस्मत में दुनिया देखनी होगी तो यह जरूर देखेगा; मगर मैं अपने कदम

वापिस नहीं खींचूंगी...।"

कह कर वह खड़ी हो गई।

आशा भी खड़ी हो गई...। उसने नेहा को रोकने की—उसे समझाने की बहुत कोशिश की; लेकिन नेहा अपने फौलादी इरादे से टस से मस नहीं हुई।

¶¶

"ट्रिन...ट्रिन...।"

फोन की घण्टी बजते ही आत्माराम ने सेन्टर टेबल पर रखे फोन का रिसीवर उठाकर कान से लगाया।

इस वक्त उसके चेहरे पर विजयी चमक थी। आंखों में भी खुशी नाच रही थी।

अभी आधा घण्टा पहले ही जेलर का फोन आया था उसे—जिसमें जेलर ने उसे विशाल कपूर के मर जाने की खबर दी थी।

तभी से वो अपने बेटे और भतीजे के साथ स्कॉच के पैग लगाते हुए अपनी इस जीत को सेलीब्रेट कर रहा था।

"हैलो...।" वह बड़े ही मीठे स्वर में बोला।

"मैं जेलर बोल रहा हूं नेता जी।"

दूसरी तरफ से जेलर की आवाज सुनकर आत्माराम के होठों पर मुस्कान फैल गई।

“हां बोलो शिन्दे...लाश मिल गई उस हरामजादे की?” वह बोला।

“वो तो अभी नहीं मिली नेता जी...। लेकिन एक गम्भीर बात हो गई है....।”

सुनकर आत्माराम के माथे पर बल पड़ गए—“क्या हुआ?” वह गम्भीर होते हुए बोला।

“रीमा राठौर आई थी यहां और विशाल कपूर की मौत के बारे में पूछताछ कर रही थी...।“

सुनकर न चाहते हुए भी आत्माराम का कलेजा धड़क उठा।

“क्या पूछताछ कर रही थी वो?” वह गुर्राया।

दूसरी तरफ से सब कुछ बताया गया। फिर आवाज आई—“वो कल फिर आयेगी।”

“तुम तीनों को अच्छी तरह से समझा देना...।”

“वो तो मैं समझा दूंगा नेता जी; लेकिन उसका इस मामले में दिलचस्पी लेना बहुत खतरनाक हो सकता है।”

“मैं जानता हूं कि वो हरामन बड़ी कुत्ती चीज है। पूछताछ तो तुम्हारे सामने ही होगी...।”

“जी हां...।”

“बस....तुम मुझे बता देना कि उसने क्या-क्या पूछा। उसके बाद अगर जरूरत पड़ी तो उसे भी उड़ा दिया जायेगा। घबराने की जरूरत नहीं।”

“जी, नेता जी।”

“तीनों को अच्छी तरह से समझा देना।”

“जी...।”

आत्माराम ने रिसीवर क्रेडिल पर रखते हुए गहरी सांस छोड़ी तो पैग पकड़े हुए प्रकाश बोला था—

“क्या कह रहा था, शिन्दे...?”

उत्तर में उसने सारी बात कह सुनाई।

“आप कहें तो उस साली का आज ही बैंड बजा देते हैं।“ निशांत अधखुली आंखों से उसे देखते हुए बोला।

“नहीं!” गुर्रा उठा आत्माराम—“ऐसी सोच भी दिल में नहीं लाना निशांत...।”

“यह...यह आप क्या कह रहे हैं चाचा जी? है तो वो एक छोकरी ही—उसे खत्म करने में वक्त ही क्या लगेगा?” प्रकाश बोला।

“और है भी सबसे बड़ा पटाखा—सुना है ऊपर वाले ने भी बड़े इत्मिनान से बनाया था...। हमारी रात बढ़िया गुजर जायेगी और...।”

"बगवास बन्द कर अपनी...।" उसकी बात काटते हुए गुर्राया आत्माराम—"जानता भी है कौन है वो...? बड़े-बड़े नेता उसकी चौखट पर पानी भरते हैं। पुलिस का बड़े से बड़ा अधिकारी उसकी इज्जत करता है। अगर उसे कुछ हो गया तो तूफान खड़ा

हो जायेगा। और तब मैं चाहे कितना भी जोर लगा लूं—तुम दोनों को नहीं बचा पाऊंगा।"

"लेकिन चाचा जी...।"

"राजनीति से काम लो बेवकूफों...।" उन्हें समझाने वाले अंदाज में बोला आत्माराम—"ऐसी चाल चलो कि तुम्हारा बाल भी बांका न हो और सामने वाले का सब कुछ तबाह हो जाये। जैसे विशाल कपूर को खत्म किया था। समझे?"

दोनों कुछ नहीं बोले—बस सिर हिला दिया।

"और फिर जरूरी तो नहीं कि वह हमारे खिलाफ कुछ करे? पहले यह देखो कि हवा का रुख क्या है—फिर अपना कदम उठाओ। समझे?"

दोनों ने समझने वाले अंदाज में सिर हिला दिया। साथ ही उनके होठों पर मुस्कान फैल गई।

¶¶

जाको रखे सईंया, मार सके न कोये।

बिल्कुल यही कहावत विशाल कपूर पर चरितार्थ हुई थी।

जुम्मन के चेलों ने उसे धक्का दे कर पहाड़ी से नीचे गिराया तो लुढ़कता हुआ वह पहले तो दो-तीन चट्टानों से टकराया और फिर एक उभरी हुई ऐसी चट्टान पर आ गिरा—जो ऊपर से झांकने पर नजर नहीं आती थी। और नीचे से देखने पर चट्टान तो नजर आती थी; लेकिन उस पर बेहोश पड़ा विशाल कपूर नजर नहीं आता था।

बेहोश तो वह पहली चट्टान से टकराते ही हो गया था। उसके बाद तो जो किया था, ऊपर वाले ने किया था।

सुबह का बेहोश हुआ वह अब जाकर होश में आया था—जब सांझ घिरने लगी थी।

"आह...!" एक कराह निकली उसके होठों से और उसने ऐसे आंखें खोलीं—जैसे उसे आंखें खोलने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ रही हो।

कुछ देर तो वह वहीं चट्टान पर यूं ही चेतनाशून्य-सा लेटा रहा—फिर जैसे ही उसका दिमाग सक्रिय हुआ—वह हड़बड़ाते हुए जैसे ही बैठने को हुआ—उसका कलेजा मुंह को आ गया।

बैठने के लिए जैसे ही वह करवट लेने को हुआ, उसकी नजर नीचे बह रही नदी पर जा पड़ी। चट्टान के किनारे पर पड़ा था वह।
तुरन्त उसने अपनी पीठ चट्टान से लगा ली और लेटे-लेटे ही चट्टान के भीतरी सिरे की तरफ खिसका और सिरे से लगने के बाद ही वह उठ कर बैठा....।

अब उसे पता चल रहा था कि वह बच कैसे गया। बैठने में ही उसे बहुत मेहनत करनी पड़ी थी। उसके जिस्म का पोर-पोर फोड़े की तरह दुःख रहा था। चेहरे पर पीड़ा के भाव स्पष्ट नजर आ रहे थे।

लेकिन उसकी आंखों में अंगारे दहक रहे थे। आत्माराम और रीमा राठौर ने उसकी जिंदगी तबाह करके रख दी थी। उसकी ईमानदारी पर बेईमानी की कालिख पोत दी थी।

"ऊपर वाले ने मेंरे को बदला लेने के लिए ही जिन्दा रखा है...।" वह बड़बड़ाया—"वर्ना मैं बचता ही क्यों...?"

बड़बड़ाते हुए वह हिला तो उसकी बाजू का वह हिस्सा चट्टान के उभरे हिस्से से रगड़ खा गया—जहां उसे गोली लगी थी।

एक कराह फूट पड़ी उसके होठों से—साथ ही उसने बाजू को दबा दिया।

कुछ पल बाद जब उसे राहत महसूस हुई तो अपनी कैदियों वाली कमीज की बाजू ऊपर कर उसने जख्म को देखा।

कुछ खास गहरा नहीं था जख्म। खून जमा हुआ था वहां और जख्म के आस-पास की चमड़ी थोड़ी फूली हुई थी।

उसने बाजू नीचे की और उस स्थान पर उंगली रख कर उसे ऐसे फाड़ा कि जख्म के नीचे की बाजू कमीज से अलग हो गई।

तब उसने कमीज की ऊपरी बाजू को जख्म पर अच्छी तरह से बांध दिया। जिससे उसे काफी राहत महसूस हुई।

अब उसने इधर-उधर देखा।

जाहिर था कि वह वहां से निकलने का रास्ता देख रहा था। नीचे नदी में छलांग मार नहीं सकता था वह। बेशक वह अच्छा तैराक था—लेकिन नदी के तेज बहाव को चीरने की ताकत नहीं थी उसमें।

ऊपर से इतना ऊंचाई से कूदना भी बेवकूफी थी—वो भी यह जाने बिना कि नीचे नदी कितनी गहरी थी।

क्या पता जहां वह कूदे, वहां पानी के नीचे कोई चट्टान हो?

ऐसे में कूदना जानबूझ कर मौत के मुंह में छलांग लगाना होगा।

ऊपर जा नहीं सकता था। ऊपर जाने का मतलब था वापिस जेल में जाना—जहां उसकी हत्या करने के इरादे से ही उसे ऊपर से धक्का दिया गया था।

सो वह वहां से निकलने का कोई और रास्ता देख रहा था।

करीब पांच मिनट बाद उसकी नजर अपने बाईं तरफ उस पेड़ पर जा टिकी—जो कि पहाड़ी से निकल कर नदी तक पहुँच रहा था। और ऐसा ही एक

पेड़ नदी के उस पार वाली पहाड़ी से निकला हुआ था।

दोनों पेड़ों के बीच करीब दो मीटर का फासला था।

विशाल कपूर कुछ देर तो उन दोनों पेड़ों को देख कर सोचता रहा—फिर मन-ही-मन कुछ सोच कर वह उस पेड़ तक पहुंचने के रास्ते की खोज करने लगा।

करीब पांच मिनट बाद उसने वहां तक पहुंचने का अपने जेहन में मैप बनाया और अपनी पूरी हिम्मत जुटाते हुए खड़ा हो गया। उसका जिस्म हालांकि फोड़े की तरह दु:ख रहा था, मगर उसने पीड़ा को खुद पर हावी नहीं होने दिया।

"एक बार उस पहाड़ी तक पहुंच जाऊं—फिर आराम करूंगा....।"

वह मन-ही-मन बड़बड़ाया और उभरे हुए पत्थरों-दरारों का सहारा लेकर इंच-इंच आगे बढ़ने लगा।

थोड़ा सा चलने पर ही उसकी पीड़ा उस पर हावी होने लगती—और जहां भी उसे आराम करने की थोड़ी सी भी जगह मिलती, वह वहां थोड़ी देर आराम कर अपनी पीड़ा पर काबू पाता और फिर आगे बढ़ने लगता।

उस वक्त उसने आधा रास्ता ही पार किया था—जब उसके पैरों के नीचे का पत्थर उखड़ा और सीधा नीचे नदी में जा गिरा।

विशाल कपूर का कलेजा एकबारगी तो उसके मुंह में आ गया।

ऊपर दरार-सी में उसके हाथ फंसे थे—और वह हवा में लटक रहा था।

जख्मी बाजू से खून रिसने लगा।

पूरा जिस्म पसीने-पसीने हो गया।

बड़ी मुश्किल से उसने अपने आप को सम्भालने में कामयाबी पायी थी और पैर को आगे कर उसने एक दूसरे पत्थर पर टिकाया था।

तब जाकर उसने कुछ राहत महसूस की थी, वर्ना हाथों ने तो उसका वजन उठाने से ही जैसे इन्कार कर दिया था।

जैसे-तैसे हिम्मत करके वह उस पेड़ तक पहुंचा और उसके तने के दोनों

तरफ टांगें लटका तने पर ऐसे लेट गया जैसे उसमें दम ही न बचा हो।

दस मिनट तक वह अपनी टांगों को नियंत्रित करने के साथ-साथ अपनी खोई हुई ताकत को जुटाता रहा, फिर वह सीधा हुआ और वृक्ष के आस-पास की लम्बी घास को उखाड़ कर उसे आपस में चोटी की तरह गूंथने लगा।

जो-जो घास गुंथती जा रही थी, वो रस्सी की शक्ल में नीचे लटकती जा रही थी।

बीच-बीच में वह रस्सी की मजबूती की भी परख कर रहा था।

आधे घण्टे में ही उसने काफी लम्बी रस्सी तैयार कर ली।

उसने एक बार रस्सी को पुन: चैक किया, फिर उसे अपनी कमर से बांध कर पेड़ के तने पर आगे को बैठे-बैठे ही सरकने लगा।

शीघ्र ही वह पेड़ के उस स्थान पर था, जहां से आगे टहनियां इतनी पतली हो जाती थीं कि उसका बोझ सम्भालने के लायक नहीं थीं। अब आगे बढ़ना मौत को दावत देना था।

उसने नीचे लटक रही रस्सी को खींचा और उसे अपने करीब इकट्ठा कर पेड़ की एक डाल तोड़ी और उसे पत्तों रहित कर टेढ़े-मेढ़े डण्डे के रूप में ला दिया।

तत्पश्चात् उसने रस्सी का दूसरा सिरा उस डण्डे के बीच बांधा और फिर एक दूसरी डाल को पकड़ कर उस डाल पर खड़ा हो गया जिस पर वह बैठा था।

खड़ा होते ही पेड़ से ऊपर निकला नजर आने लगा।

मन-ही-मन उसने ऊपर वाले को याद किया और डण्डे को जोर लगा कर सामने वाले पेड़ की तरफ फैंका....।

डण्डा सामने वाले पेड़ पर गिरा और पत्तों के बीच कहीं जा छुपा....।

विशाल कपूर ने रस्सी को दो-तीन बार हिला कर पहले रस्सी को ढील दी—ताकि डण्डा ज्यादा से ज्यादा नीचे चला जाए।

फिर उसने रस्सी को धीरे-धीरे खींचना शुरू किया।

शीघ्र ही रस्सी का खिंचना बन्द हो गया—और वो तन गई।

विशाल कपूर ने दोनों हाथों से रस्सी को पकड़ कर पूरे जोर से तीन-चार झटके मारे, ताकि डण्डा जहां अटका है, वहां वह और भी मजबूती से अटक जाए।

पूरी तरह से आश्वस्त होने के बाद उसने रस्सी को उस डाल से मजबूती से बांधा—जिस पर वह बैठा था।

रस्सी अभी भी काफी बची थी—जिसका सिरा उसकी कमर से बंधा हुआ था।

उसने कमर से रस्सी को खोल कर अपनी बगलों के नीचे से सीने पर बांध दिया—ताकि अगर कसी हुई रस्सी टूट भी जाए तो वह नदी में नहीं गिरे।

और फिर वह बची हुई रस्सी को पकड़ पहले तो पतली डालों पर आगे बढ़ा—फिर उसने रस्सी में अपने पैर फंसाए और हाथों और पैरों से तेजी से दूसरे वृक्ष की तरफ बढ़ने लगा।

अभी वह बीच रास्ते में ही था कि उसके कानों में कड़क् की आवाज आई।

कलेजा धड़क उठा।

उसे लगा कि या तो वह डण्डा टूट रहा है—जिससे रस्सी बंधी है—या वह डाल टूट रही है—जिसमें डण्डा अटका है।

सो उसने अपनी रफ्तार और भी तेज कर दी।

"कड़क्.....।" पुन: आवाज आई।

और जैसे ही वह दूसरे पेड़ तक पहुंचा—रस्सी ढीली हो गई। साथ ही खड़-खड़ की तेज आवाज आई—जैसे डण्डा डाल को छोड़ गया हो।

मगर तब तक विशाल कपूर अपनी टांगें दूसरे पेड़ की एक डाल में फंसा चुका था।

अब वह उस डाल पर उल्टा लटक रहा था।

उसकी टांगें घुटनों के पिछवाड़े से डाल से लिपटी हुई थीं।

वह ऊपर उठा और डाल को पकड़ कर तेजी से ऊपर उठा और जल्दी-जल्दी आगे बढ़ते हुए एक मोटी डाल पर आ गया। उस डाल पर बैठ कर उसने चैन की सांस ली।

उसने अपने सीने से बंधी रस्सी खोली और फिर रेंगते हुए पेड़ की जड़ की तरफ बढ़ने लगा।

पांच छह मिनट में ही वह एक उभरी हुई चट्टान पर बैठा अपनी सांसों पर काबू पा रहा था।

अंधेरा होने से पहले-पहले वह ऊपर पहुंच जाना चाहता था।

मगर अंधेरा होने के बाद ही वह ऊपर पहुंचा।

कुछ देर आराम करने के बाद वह पहाड़ी के दूसरी तरफ से नीचे उतरने लगा।

नीचे मैदान में उसे कुछ लाईटें जलती नजर आ रही थीं—जो बता रही थीं कि वहां आबादी है।

¶¶

"आत्माराम....।"

उस दहाड़ती आवाज को सुन स्कॉच पी रहे आत्माराम, निशांत और प्रकाश बुरी तरह से उछल पड़े। पिर एकाएक ही आत्माराम का चेहरा सुलग उठा।

"यह कौन बद्तमीज है जो—मेरे ही घर में ऊंची आवाज में भौंक रही है?"

गुस्से में दहाड़ते हुए खड़ा हो गया वह।

"यह मैं हूं आत्माराम.....।" तभी दहाड़ती हुई नेहा दनदनाती हुई भीतर प्रविष्ट हुई।

उसके पीछे-पीछे बौखलाया हुआ एक नौकर भीतर प्रविष्ट हुआ और जैसे ही वह नेहा के करीब पहुंचा—नेहा ने तेजी से घूरकर एक भरपूर घूंसा उसके चेहरे पर जड़ दिया।

बुरी तरह से कराहता हुआ वह लड़खड़ाता हुआ पीछे हटा और गिर पड़ा।

"ऐ.....।" गुस्से से दहाड़ा निशांत—"कौन है तू....?"

"और तेरी हिम्मत कैसे हो गई भीतर आने की.....?" प्रकाश भी गुस्से में बोला—साथ ही उसकी निगाह उसके उभारों पर जा अटकी।

नेहा ने दोनों को खा जाने वाली निगाह से देखा—फिर आत्माराम को कहर भरी नजर से देखते हुए गुर्राई—

"तूने भी नहीं पहचाना मुझे आत्माराम....। मैं विशाल कपूर की पत्नी हूं....।"

"ओssss।" होंठ गोल हो गये आत्माराम के—"तो तू उस रिपोर्टर की बीवी है—जिसने मेरे भतीजे का स्टिंग ऑपरेशन किया था?"

"हां कमीने! मगर तूने अपनी चाल चल कर उल्टे मेरे विशू को ही फंसा दिया। उसे पहले दस साल की सजा कराई—और फिर जेल में ही उसकी हत्या करा दी....।"

आत्माराम के होठों पर जहर भरी मुस्कान फैल गई।

वह नेहा के सामने आया और उसके खूबसूरत चेहरे पर निगाह गड़ाते हुए बोला—

"बेवकूफ था विशाल कपूर जिसने शेर से दुश्मनी मोल ले ली! अब शेर से दुश्मनी लेगा तो मौत तो मिलेगी ही न! साला रिपोर्टर क्या बन गया—खुद को खुदा समझ बैठा....। सबको एक ही छड़ी से हांकने लगा। बेवकूफ को यह भी

नहीं पता था कि यहां के बादशाह हम हैं। और बादशाह के सामने सिर उठाने का मतलब होता है मौत....। मगर उसने तो हमारा तख्ता ही पलटने की कोशिश कर डाली। और तब मेरा को अपनी राजनीति खेलनी पड़ी। ऐसी चाल चली मैंने कि सांप भी मर गया और लाठी भी नहीं टूटी। जिस लड़की से अय्याशी करते मेरे स्टिंग ऑपरेशन तेरे खसम ने किया था, उस लड़की ने आत्महत्या नहीं की थी—बल्कि उसे हमने ही मारा था। और उसे आत्महत्या का रूप देकर सारा इल्जाम तेरे खसम पर डाल दिया। दस साल की सजा हो गई—मगर हरामी की हेकड़ी नहीं गई....। कल जेल में मिला था मैं उससे—तो हरामी तब भी मेरे को खत्म करने के सपने देख रहा था। सो मैंने जेलर से कह कर उसका पत्ता कटवा दिया....।"

"हमारे साथ दुश्मनी मोल लेने वाले का ऐसा ही अंजाम होता है।" निशांत आत्माराम के बराबर आ खड़ा होते हुए गुर्राया।

"अरे ऐश हम कर रहे थे—उसे क्या तकलीफ हो गई, जो उसने हमारा स्टिंग ऑपरेशन कर डाला.....।" प्रकाश भी आ कर गुर्राया।

नेहा ने खा जाने वाली आंखों से तीनों को देखा—फिर आत्माराम को देखते हुए घायल शेरनी की मानिंद गुर्राई—

“मेरे पति को मार कर तूने अभी फतह नहीं पाई आत्माराम—अभी दुश्मनी खत्म नहीं हुई....। दुश्मनी तो अब शुरू हुई है। विशू की जगह अब मैं रिपोर्टर बनूंगी....। और यह बात गांठ बांध ले—तेरे को नंगा मैं करूंगी—इस नेता की खाल के पीछे जो कमीना भेड़िया छुपा है—उसे मैं समाज के सामने लाऊंगी।”

“हा-हा-हा....।” ठहाका उबल पड़ा आत्माराम के होठों से—“तो तू मेरे को नंगा करेगी?”

“हां आत्माराम....। तेरे को नंगा करूंगी मैं....।”

आत्माराम ने उसके फूले हुए पेट पर हाथ फेरा—फिर मुस्कुराते हुए बोला—

“अभी तेरा भागदौड़ करने का वक्त नहीं है। यह घर खाली कर ले....।” उसने उसके पेट पर थपकी दी—“फिर मेरे से लड़ने की सोचना। और एक बात और गांठ बांध ले....।” एकाएक ही फुंफकार उठा आत्माराम—“इस बार तो मैं

तेरे को छोड़ रहा हूं। लेकिन अब के बाद तेरा एक भी कदम मेरी तरफ बढ़ा तो तेरे को भी वहीं पहुंचा दूंगा—जहां तेरा खसम गया है। जा दफा हो जा यहां से....।"

"जा रही हूं आत्माराम....।" नेहा उसे कहर भरी आंखों से देखते हुए गुर्राई—"अपने बचाव के लिए तू जो भी करना चाहता है, अभी से करना शुरू कर दे, क्योंकि जब मेरा कहर तेरे पर टूटेगा तो तेरे को पनाह मांगने के लिए कहीं भी जगह नहीं मिलेगी।"

"तू जाती है कि नहीं यहां से....।" गुस्से से दहाड़ा आत्माराम—"वर्ना कहीं ऐसा न हो कि यहीं तेरी इज्जत का फालूदा हो जाए? दफा हो जा यहां से....।"

नेहा उसे खा जाने वाली निगाह से देखते हुए पलटी और दरवाजे की तरफ बढ़ गई।

"साली कुतिया.....।" उसके कमरे से निकलते ही भुनभुनाया आत्माराम—"सारा नशा उतार कर रख दिया....।"

"मगर चीज बहुत बढ़िया थी चाचा जी....।" प्रकाश मुस्कुराते हुए बोला।

"मैं देख रहा था तेरे को—कैसे उसकी छातियों को घूर रहा था। अबे, उसका पेट नहीं देखा, बच्चा जनने वाली है....।"

"तो क्या हुआ....।" हंसा प्रकाश—"उससे क्या रास्ते बन्द हो जाएंगे।"

"साला हरामी बिल्कुल अपने बाप पर गया है....।" वापिस सोफे पर बैठते हुए बोला आत्माराम—"जहां लड़की देखी, वहीं राल टपकनी शुरू हो जाती है। दो चार दिन रुक, सोचते हैं तेरे को—यह हरामन जिस तरह से चैलेंज कर गई है, उससे लगता है कि उसने कुछ न कुछ सोच रखा है....। जरा उसे कुछ एक्शन लेने दे—फिर तेरे को पूरा मौका दूंगा....।"

"हा-हा-हा....।" दोनों हंस पड़े।

"अब पैग बनाओ मेरे लिए....।"

प्रकाश बोतल उठा कर पैग तैयार करने लगा।

¶¶

डिंग-डां-ग....।

कालबैल की आवाज सुनकर आशा ने अपने सामने बेड पर खेल रहे मुन्ना को उठाया और बेड से उतरते हुए गुड़िया से बोली—

“तू यहीं बैठ—मैं अभी आती हूं।”

सहमी-सहमी गुड़िया ने सिर हिला दिया।

वह छोटी तो थी—लेकिन अपने घर के हालात को वह काफी हद तक समझ रही थी—और उसे यह भी समझ में आ रहा था कि इस वक्त वह किसी और के घर में उसके सहारे है।

कमरे से निकल कर आशा मेन डोर के करीब पहुंची और कुण्डा खोल कर जैसे ही दरवाजा खोला—वह पहले तो चौंकी, फिर उसका चेहरा खिल उठा।

सामने नेहा खड़ी थी—जिसके चेहरे पर अपने पति की मौत का दु:ख तो था ही—साथ ही अब आंखों में कामयाबी की चमक भी थी।

अपनी मां को देख मुन्ना आशा की बांहों से निकलने के लिये छटपटाने लगा।

तुरन्त नेहा ने मुन्ना को उससे लेकर अपने सीने से लगाया और आशा से बोली—"मेरा काम हो गया है। मैं अपने बच्चों को लेने आई हूं....।"

"अन्दर तो आओ....।" आशा एक तरफ हटते हुए बोली—"कुछ पता तो चले कि क्या काम किया है तुमने....?"

"सुबह टी०वी० पर देख लेना—तुम गुड़िया को लेकर आओ आशा....। मुझे अभी बहुत काम करने हैं।"

गहरी सांस छोड़ते हुए आशा मुड़ी और गुड़िया के साथ-साथ वह वसीयत भी ले आई—जो नेहा उसे दे गई थी।

नेहा ने उसका दिल से धन्यवाद किया और फिर बच्चों को पीछे खड़ी मारुति में बिठाकर स्टेयरिंग के पीछे बैठी और अपने घर की तरफ रवाना हो गई।

¶¶

"मुन्ना को गिरने नहीं देना गुड़िया....।" मुन्ने को गुड़िया के करीब बेड पर लिटाते हुए बोली—"मेरे को थोड़ा काम है। अगर मेरी जरूरत पड़े तो आवाज दे देना।"

"ठीक है, मम्मी....।" गुड़िया अपने नन्हें हाथों से मुन्ना को धीरे-धीरे थपकते हुए बोली—"आप काम कीजिए....।"

नेहा ने झुक कर प्यार से उसका माथा चूमा और कमरे से निकल कर दूसरे कमरे में प्रवेश कर गई—"जिसमें कि एक कम्प्यूटर रखा हुआ था।

मगर कम्प्यूटर की तरफ बढ़ने की बजाये वह फोन की तरफ बढ़ी और रिसीवर उठा कर कोई नम्बर मिलाने लगी।

शीघ्र ही दूसरी तरफ से आवाज आई—"हैलो....।"

"महेश भैया.....मैं नेहा बोल रही हूं।" वह बोली।

"नमस्ते भाभी जी।" गम्भीर आवाज आई—"विशाल की मौत का पता चला....। बहुत ही अफसोस हुआ....। सचमुच बहुत बड़ी ट्रेजडी हुई है तुम्हारे साथ। विशाल से मेरी करीबी दोस्ती थी। मैंने उसे हमेशा सच्चाई की राह पर ही चलते देखा था—मगर सच्चाई ने ही उसे....।" दूसरी तरफ से गहरी सांस छोड़ी गई।

"सच्चाई कुर्बानी जरूर लेती है महेश भैया—मगर जब भी सामने आती है तो झूठ के तमाम दानव खत्म हो जाते हैं। तुम यहां आओ भैया।"

"कहां....?"

"मेरे घर में। एक स्टिंग ऑपरेशन मैंने भी किया है, भैया। आप तुरन्त यहां आइए....।"

"क्या....?" बुरी तरह से चौंकती आवाज—"किसका स्टिंग ऑपरेशन किया है, तुमने....?"

"यहां आओगे तो पता चल जाएगा....।"

"म.....मैं आधे घंटे में तुम्हारे पास पहुंच रहा हूं।" दूसरी तरफ से उत्तेजना से भरी आवाज आई।

नेहा ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और कम्प्यूटर के सामने आ अपनी शर्ट के बटन को बड़े एहतियात से उतारा—जो कि बटन न होकर कैमरा था।

और फिर अपनी पैन्ट की जिप खोल अपने अण्डरवियर में हाथ डाला—और उसमें से खुफिया कैमरे में काम आने वाले सामान को निकाल कर पैनड्राइव निकाला और फिर पैन्ट को पहन कर कम्प्यूटर में पैनड्राइव लगा कर कम्प्यूटर चालू किया और माऊस से कुछ देर छेड़खानी के बाद बैठ गई।

मॉनीटर पर पहले आत्माराम के घर की तस्वीरें उभरीं—साथ में गार्डों की तस्वीरें भी उभरीं—जिन्हें धकेल कर वह आत्माराम के कमरे में पहुंची थी।

और फिर आत्माराम कैमरे की तरफ बढ़ता नजर आया....। जिसने कैमरे के सामने अपना जुर्म कबूल किया था—और यह भी कबूल किया था कि मरने

वाली लड़की ने आत्महत्या नहीं की थी—बल्कि उसकी हत्या हुई थी—जो उसी ने कराई थी।

"अब तू नहीं बचेगा आत्माराम—किसी भी सूरत में नहीं बचेगा।"

वह बड़बड़ाई—साथ ही उसकी आंखों में अंगारे दहकने लगे।

"तूने मेरे विशू की जिन्दगी छीनी—अब मैं तेरी—तेरे बेटे की और तेरे भतीजे की जिन्दगी छीनूंगी.....।"

¶¶

वह बस्ती कोई ज्यादा बड़ी नहीं थी।

मुश्किल से चालीस-पचास घरों की एक छोटी-सी बस्ती थी—जिसमें छोटे तबके के लोग रहते थे।

सभी घर कच्चे थे। और विशाल कपूर उन्हीं में से एक घर की छत पर बैठा हुआ था।

अभी-अभी वह पीछे से मकान की छत पर चढ़ा था।

कुछ देर सांस लेने के बाद वह अपने स्थान से हिला और सीढ़ियों की तरफ दबे पांव बढ़ने लगा।

उस मकान की छत भी कच्ची थी—सो वह आगे ऐसे बढ़ रहा था कि उसकी हल्की सी भी धमक नीचे न जाए।

सीढ़ियों से भी वह ऐसे ही पंजों के बल उतरा और आंगन में आ गया।

एक नजर इधर-उधर डाल कर उसने बन्द दरवाजे की तरफ देखा और फिर दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

दरवाजे के सामने आकर उसने उसे आहिस्ता से भीतर की तरफ धकेला तो दरवाजा थोड़ा-सा खुल कर रुक गया।

भीतर सांकल लगी हुई थी।

दरवाजे के दोनों पल्ले थोड़े खुले हुए थे—सो विशाल कपूर ने उस थोड़ी-सी दरार से भीतर देखा तो उसका कलेजा जोरों से धड़क उठा।

कनपटियों पर ठोकरें बजने लगीं—और चेहरा एकदम से सुर्ख हो गया।

सामने एक चारपाई पर एक आदमी और औरत बिना कपड़ों के पूरे जोशो-खरोश से एक-दूसरे से जूझ रहे थे।

विशाल कपूर की आंखों के सामने नेहा के साथ बिताये रंगीन लम्हें नाचने लगे।

बड़ी मुश्किल से उसने अपने आप पर काबू पाया और एक पल्ले को अपनी तरफ खींच कर धीरे से अपनी बांह दरार में डाली और सांकल को आहिस्ता से खोल कर उसे ऐसे छोड़ा कि जरा भी आवाज न हो।

वह जानता था कि ऐसे मौके पर आदमी-औरत को कुछ भी नजर नहीं आता....। नजर आता है तो बस एक-दूसरे का जिस्म—जिसमें वे डूबे होते हैं।

धीरे से दरवाजा खोल कर वह भीतर प्रविष्ट हुआ और घुटनों तथा कोहनी के बल चलते हुए बेड के करीब जा पहुंचा, जिस पर दोनों तेज सिसकारियां निकालते हुए पूरी ताकत से लड़ रहे थे।

उनके कपड़े इधर-उधर बिखरे हुए थे।

विशाल कपूर ने गर्दन थोड़ी ऊपर उठा बेड पर इधर-उधर देखा—और

फिर आहिस्ता से एक तरफ लटक रही पैन्ट तथा शर्ट को खींच कर उन्हें अपनी बांह में लपेटा और जैसे अन्दर आया था—वैसे ही बाहर निकल गया।

दोनों पति-पत्नी को पता ही नहीं चला कि कोई उनके कपड़े चुरा ले गया है।

कमरे से बाहर आकर विशाल कपूर छत पर पहुंचा और फिर वहां अपने कैदियों वाले कपड़े उतार कर चुराये हुए कपड़े पहन लिये।

उसके बाद उसने पैन्ट की जेबें टटोलीं तो पैन्ट की पिछली जेब से उसे दो सौ तीन रुपये मिले—और शर्ट की जेब से उसे मोबाइल फोन मिला।

बिना वक्त गंवाए उसने मोबाइल का स्विच ऑफ किया और उसे पैन्ट की जेब में डाल कर जिस रास्ते से छत पर चढ़ा था, उसी रास्ते से उतर कर गली में आ गया।

वहां और ठहरना वाजिब नहीं था उसके लिए—सो वह तेज-तेज चलता हुआ वहां से दूर होता चला गया।

करीब बीस मिनट बाद वह सड़क पर था।

उसने जेब से मोबाइल निकाला और अपने घर का नम्बर मिलाने लगा।

नेहा को अपने जिन्दा होने की खबर देनी जरूरी थी उसके लिए।

नम्बर मिला कर वह मोबाइल कान से लगा कर दूसरी तरफ से घण्टी की आवाज सुनने लगा।

¶¶

"डिंग-डांग....।"

कॉलबैल की आवाज सुनते ही नेहा के होठों पर जहर-भरी मुस्कान नाच उठी।

तुरन्त वह कमरे से निकली और गेट पर पहुंच कर गेट खोल दिया।

सामने महेश खड़ा था। जिसके चेहरे पर उस वक्त गहरी उत्तेजना नजर आ रही थी।

महेश, विशाल कपूर की ही उम्र का सांवले रंग का व्यक्ति था—उसका शरीर विशाल कपूर से कुछ भारी था—और उसका निचला होंठ काफी मोटा था।

इससे पहले कि वह नेहा से कुछ पूछता—नेहा बोल पड़ी—

"यहां कुछ मत बोलना.....।"

महेश का खुला मुंह वहीं बन्द हो गया।

नेहा ने गेट बन्द किया और उसे साथ ले कम्प्यूटर वाले कमरे में आ गई।

"बैठो....।" वह गम्भीर बनी हुई बोली और स्वयं एक कुर्सी पर बैठ गई।

गम्भीर बना महेश उसके सामने एक दूसरी कुर्सी खींच कर बैठ गया और बोला—"विशू की मौत का मुझे बहुत अफसोस है भाभी....। बहुत ज्यादती हुई उसके साथ। मैं जानता हूं कि यह सब आत्माराम का किया-धरा है। लेकिन उसने चालाकी ऐसी चली है कि कोई उसे गलत कह ही नहीं सकता।"

"मगर अब कहेगा। अब कानून भी उसे गहत कहेगा—और दुनिया भी उसके मुंह पर थू-थू करेगी।"

कहकर उसने मॉनीटर वाली टेबल से पेनड्राइव निकाला और महेश को दिखाते हुए बोली—

"इसमें आत्माराम और उसके बेटे तथा भतीजे का इकबाले जुर्म है।"

बुरी तरह से उछल पड़ा महेश—"तुमने आत्माराम का स्टिंग ऑपरेशन कर डाला....।"

"हां....विशू ने मुझे ऐसे हर काम सिखा रखे थे—जो वो जानता था.....। आज वही काम मेरे काम आए।"

“म.....गर ऐसा करिश्मा कर कैसे दिया तुमने?”

उत्तर में नेहा ने पहलू बदला और उसे सब कुछ बता दिया।

“ओह गॉड!” आंखें फाड़े बोला महेश—“बहुत बड़ा रिस्क लिया तुमने—अगर उसे जरा भी शक हो जाता तो वो तुम्हें भी नहीं छोड़ता।”

“यहां जीने की तमन्ना ही कहां रह गई है महेश भैया....।” नेहा की आवाज भीग गई—“अब तो बस एक ही तमन्ना है—विशू के माथे पर लगा कलंक पौंछना और दुनिया को सच्चाई बताना।”

“मैं यह चाहती हूं कि यह पेनड्राइव तुम जाकर अपने चैनल को दो.....ताकि चैनल वालों को भी पता चले कि मेरा विशू ब्लैकमेलर नहीं था। वो एक सच्चा पत्रकार था।”

महेश ने उससे पेनड्राइव लिया और जोश भरे स्वर में बोला—

"तुम फिक्र मत करो भाभी—सुबह आठ बजे तुम टी○वी○ पर आत्माराम को नंगा होते देखोगी। अब तो आत्माराम को उसका भगवान भी नहीं बचा सकता। और....।"

"ट्रिन.....ट्रिन.....।"

तभी फोन की घण्टी घनघना उठी और महेश की बात वहीं रुक गई।

नेहा कुर्सी से उठी और फोन के करीब आकर रिसीवर उठाया और बोली —

"हैलो....।"

"ने....हा.....।"

दूसरी तरफ से आई आवाज सुनकर नेहा बुरी तरह से उछल पड़ी।

"वि....शू.....।" उसके होठों से कांपता स्वर निकला —"त...तुम.....जि.....न्दा हो......?"

उसकी बात सुनकर महेश बुरी तरह से उछल पड़ा।

तुरन्त वह कुर्सी से उठा और नेहा की तरफ लपका।

"हां नेहा.....उन कुत्तों ने तो मुझे मारने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी—मगर ऊपर वाला मेरे साथ था....। मैं बच गया।"

"कै....से.....?"

दूसरी तरफ से बताया गया।

"हे भगवान—तेरा लाख-लाख शुक्र है।" नेहा की आवाज भर्रा गई —"तुम क्या जानो....मैं तुम्हारे बिना किस कदर पागल हो उठी थी।"

"लेकिन अभी मैं तुम्हारे पास नहीं आ सकता नेहा....।"

"क्यों....?" चौंकी नेहा।

"समझने की कोशिश करो नेहा—पुलिस की—कानून की नजरों में मैं एक अपराधी हूं....। जब तक मैं खुद को निर्दोष साबित नहीं कर देता—तब तक मैं....।"

"तुम्हें निर्दोष साबित कर दिया मैंने.....।"

"य.....यह क्या कह रही हो तुम....?" दूसरी तरफ से विशाल कपूर बुरी तरह चौंकते हुए बोला।

"तुम्हारी मौत की खबर सुनकर मैं पागल हो उठी थी और गुस्से में आकर मैंने आत्माराम का स्टिंग ऑपरेशन कर डाला....।"

"क्या....?"

उत्तर में नेहा ने सारी बात कह सुनाई—फिर बोली—"पैनड्राइव मैंने महेश भैया को दे दिया है। सुबह आठ बजे टी○वी○ पर आत्माराम की असलियत सामने आ जाएगगी।

“महेश कहां है....?”

“मेरे पास ही खड़े हैं। लो....बात करो.....।”

कहकर उसने रिसीवर महेश की तरफ बढ़ा दिया।

महेश ने रिसीवर लेकर कान से लगाया और बोला—“हैलो विशू.....।”

“सुबह आठ बजे टी○वी○ पर स्टिंग ऑपरेशन आ जाना चाहिए।”

“आ जाएगा मेरे दोस्त....। मगर यह चमत्कार कैसे हो गया? तुम्हें तो गोली लगी थी.....।”

“हां....बाजू में लगी थी गोली—और उसी के साथ ही उन दोनों ने मुझे पहाड़ी के साथ धकेल दिया।”

“भगवान का लाख-लाख शुक्र है। इस वक्त कहां हो तुम.....?”

“बहुत दूर हूं।”

"तुम्हारा यूं अकेले रहना ठीक नहीं है मेरे दोस्त।" मुझे बताओ—मैं खुद तुम्हें लेने आ जाता हूं। रात तुम मेरे पास मेरे घर में रहना....।"

"नहीं महेश....। तुम बस अपना काम करो।"

"मगर तुम हो कहां—यह तो पता चले....?"

"अभी तो सड़क पर हूं—यहां से दहिसर जाऊंगा—पास ही है.....। जंगल के पास जो गुफायें बनी हैं—रात उसी में गुजारूंगा। सुबह तुम्हें फोन करके बात करूंगा....ठीक...?"

"जैसी तेरी मर्जी.....।" एक गहरी सांस छोड़ी महेश ने—"अपना ख्याल रखना.....।"

दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

महेश ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और नेहा की तरफ देखते हुए बोला—

"चलता हूं भाभी....। अभी बहुत काम करना है।"

नेहा ने मुस्कुराते हुए सिर हिला दिया।

महेश के जाने के बाद उसने मेन गेट बन्द किया और बेडरूम में आ गई।

उसके दोनों बच्चे गहरी नींद सो रहे थे।

नेहा ने प्यार से दोनों को चूमा और फिर उनके बीच लेट कर दोनों को अपने साथ चिपका लिया।

उसके होठों पर तो मन्द-मन्द मुस्कान थी—मगर दिल खुशी से फूला नहीं समा रहा था।

उसका पति जिन्दा था। भला इससे बढ़कर खुशी क्या मिल सकती थी उसे!

¶¶

"ट्रिन....ट्रिन.....।"

फोन की घण्टी बजते ही आत्माराम की गति सौ से शून्य पर आ गई।

उस वक्त वह अपने नीचे दबी एक हसीन तरीबन कमउम्र युवती पर सवार हो फुल स्पीड से दौड़ लगा रहा था।

“यह साला फोन किसने बनाया....। वक्त-बेवक्त कभी भी बज उठता है.....।” वह मुंह बनाते हुए भुनभुनाया—“और थोड़ी देर न बजता तो मैं तो पार हो जाता.....।”

अपने नीचे दबी युवती पर सवार हुए-हुए ही उसने बांह लम्बी की और रिसीवर उठा कर कान से लगाते हुए अपनी सांसों को नियंत्रित करते हुए बोला—

“हैलो....।”

“नमस्कार नेता जी....।” दूसरी तरफ से आवाज आई—“मैं आर न्यूज से रिपोर्टर महेश बोल रहा हूं।”

सुनकर आत्माराम का मुंह जैसे कसैला हो गया।

दिल किया कि वह फोन से ही घूंसा मारकर उसकी बत्तीसी निकाल दे। बड़ी मुश्किल से उसने स्वयं पर काबू पाया और बोला—

"अरे भाई—वक्त तो देखो—बारह बज गये हैं—ऐसे किसी को नींद से नहीं जगाया करते।"

"माफी चाहता हूं नेता जी—लेकिन अगर अब आप सोये रहे तो आपको जागने का मौका कभी नहीं मिलेगा.....।"

"क्या मतलब....?"

"तभी तो फोन कर रहा हूं आपको....। वो भी इस वक्त.....।"

आत्माराम समझ गया कि मामला कुछ ज्यादा ही गम्भीर है। सो वह युवती से नीचे उतरा और बोला—"क्या बात है?"

"आपके सेवक ने बहुत बड़े ईनाम का काम किया है नेता जी। बस यूं समझ लीजिये कि इस पत्रकार के हाथ में आपकी जान है....।"

“य....यह क्या बक रहा है तू?” गुर्रा उठा आत्माराम—“पूरे मुम्बई में किसी में इतनी ताकत नहीं जो आत्माराम की जान को अपनी मुट्ठी में बन्द कर सके।”

“ताकत तो मुझमें भी नहीं नेता जी....। फिर भी मेरे पास आपकी जान कैद है—जिसे आपको लौटा कर मैं अपने वारे-न्यारे करना चाहता हूं।”

“खुलकर बोल महेश—क्या कहना चाहता है तू?”

“फोन पर ऐसी बातें नहीं की जा सकतीं नेता जी—आप अपने दरबान को कह दें कि वो मुझे न रोके.....। मैं आपके पास आ रहा हूं।”

दूसरी तरफ से कहा गया और सम्बन्ध-विच्छेद हो गया।

आत्माराम की खोपड़ी घूम गई।

उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह आखिर ऐसा कौन-सा धमाका करना चाहता है—जो उसे आसमान में उछाल देगा।

मगर कुछ न कुछ तो जरूर है उसके पास—वर्ना वह मेरी जान अपनी मुट्ठी में कैद होने की बात न कहता।

उसने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और बेड पर लेटी युवती को देखते हुए बोला—

"ऐसे ही लेटी रहना....। कपड़े नहीं पहनने।"

कहकर उसने अपना गाऊन उठाया और पहनने लगा।

¶¶

"बैठ....।" अपने शानदार ड्राईंग रूम में सोफे पर बैठा आत्माराम महेश को देखते हुए बोला।

महेश हल्के से मुस्कुराया और उसके सामने वाले सोफे पर बैठ गया।

"अब बोल—ऐसी कौन-सी गीदड़सिंगी है तेरे पास—जिससे तू मेरे को डरा रहा है?" उसे गहरी नजरों से देखते हुए बोला आत्माराम।

महेश ने बैठे-बैठे ही पहलू बदला और बोला—

“उससे पहले मैं आपको एक ऐसी खबर देता हूं—जिसे सुनकर आप यकीनन उछल कर खड़े हो जायेंगे।”

“घबरा नहीं—मरूंगा नहीं मैं.....। तू खबर तो सुना....।”

“विशाल कपूर जिन्दा है।” महेश ने जैसे विस्फोट किया।

आत्माराम इतनी जोरों से चौंका कि उछल कर खड़ा हो गया।

चेहरे पर अविश्वास और सख्त हैरानी के भाव उभर आये।

“य.....यह क्या बक रहा है तू....?” वह हैरानी से बोला।

“मैं गलत नहीं बक रहा नेता जी—वह यकीनन जिन्दा है—पुलिस की गोली उसके सीने में नहीं, बल्कि बाजू में लगी थी। और दो आदमियों के धक्का

देने के बाद भी वह नीचे नदी में नहीं गिरा—बल्कि पहाड़ी से लुढ़कते हुए एक उभरी हुई चट्टान पर जा गिरा था।"

आत्माराम का कलेजा धक् से रह गया।

"यह क्या कह रहा है तू?" अपने आप पर काबू पाने की कोशिश करते हुए बोला आत्माराम—"तू तो ऐसे कह रहा है—जैसे जेल में उसकी हत्या करने की कोशिश की गई हो?"

महेश के होठों पर रहस्यमयी मुस्कान नाच उठी।

"अनजान मत बनिए नेता जी...।" वह बोला—"सब कुछ आप ही के कहने पर तो हुआ था। जेलर से आप ही ने तो कहा था कि विशाल कपूर की हत्या कर दी जाये।"

"बकवास बन्द कर रिपोर्टर!" फुंफकार उठा आत्माराम—"तू मुझ पर इल्जाम लगा रहा है।"

“सॉरी नेता जी...। मैं सिर्फ सच्चाई बता रहा हूं। और मैं आपको कोई नुकसान पहुंचाने नहीं आया...। क्योंकि मैं विशाल कपूर की तरह बेवकूफ नहीं हूं। जो सिर्फ अपने फर्ज की खातिर इतनी बड़ी मुसीबत मोल ले बैठा।”

आत्माराम ने उसे गहरी नजर से घूरा—फिर गहरी सांस छोड़ते हुए वापिस सोफे पर बैठ गया।

“कैसे पता चला कि वो जिन्दा है?”

“मैंने खुद फोन पर बात की है उससे—और मुझे यह भी पता है कि वह कहां छुपा हुआ है।”

“तू जानता है?”

“उसने खुद बताया था मेरे को...।”

“कहां छुपा है वो?”

“दहिसर के जंगल की गुफाओं में छुपा है।”

सुनकर आत्माराम की आंखें सिकुड़ गईं। माथे पर बल पड़ गए।

"खबर तूने वाकई जोरदार सुनाई है।" वह कुछ सोचते हुए बोला।

"वो भी बिल्कुल फ्री...। इस खबर का कोई ईनाम नहीं लूंगा मैं।" महेश अपनी जांघ पर हाथ फेरते हुए बोला।

"तेरे अलावा और भी किसी को उसके जिन्दा होने का पता है?"

"उसकी बीवी को पता है। उसके फोन पर ही तो बात हुई थी मेरी उससे। और मैं वहीं से सीधा यहां आ रहा हूं।"

बुरी तरह से चौंका आत्माराम—"तू रात के इस वक्त उसके पास क्या करने गया था?"

"उसने बुलाया था मेरे को।"

"क्यों...? तेरा टांका भिड़ा है उसके साथ?"

“कैसे बात करते हो, नेता जी!” महेश ने बेशर्मी से दांत फाड़े—“उसे भाभी कहता हूं मैं—और फिर उसका बच्चा होने वाला है...।”

“पेट फूला होने से या भाभी कह देने से दरवाजा तो बन्द नहीं हो जाता। जब इतना बता रहा है तो यह बताने में क्या मुसीबत है।”

“ऐसा कुछ नहीं हमारे बीच...। वो ऐसी औरत नहीं—अपने पति के

अलावा वो किसी दूसरे को गलत नजर से ना तो देखती है, न ही किसी को देखने देती है।”

“तो फिर क्यों बुलाया था उसने तेरे को?”

“आपकी जान मेरे हवाले करने।”

“क्या...?” एक तेज झटका लगा आत्माराम को।

“जी हां नेता जी...। पति की मौत का बदला लेने के लिए उसने आप पर ऐसा जाल फैंका कि आप उस में बुरी तरह से फंस कर रह गए ...।”

“यह...यह क्या कह रहा है तू?” बौखला उठा आत्माराम।

“वो आपके पास आई थी?”

“हां...हरामजादी मेरे को चैलेंज कर रही थी कि मेरे को नहीं छोड़ेगी।”

“और आपने हेकड़ी में आकर उसे सब कुछ बता दिया—यह भी कहा कि उस लड़की की हत्या निशांत ने नहीं की, बल्कि आपने उसकी हत्या की थी और आपकी वही हेकड़ी आप पर भारी पड़ गई। उसने जानबूझ कर आपसे ऐसी बात की थी।”

“क्या मतलब...?”

“आपका स्टिंग ऑपरेशन कर गई थी वो...।”

आत्माराम उछल कर खड़ा हो गया। उसके चेहरे पर एक साथ कई रंग आ कर ठहर गए। कलेजा हलक में आ फंसा।

“य...यह क्या कह रहा है तू?” उसके होठों से थर्राई आवाज निकली।

महेश सोफे से उठा और उसके सामने आकर जेब से पेनड्राइव निकाली और उसकी तरफ बढ़ाते हुए बोला—"यह है वो चीज—जिसमें आपकी जान कैद है। कम्प्यूटर तो है ही आपके पास—खुद ही देख लें।"

आत्माराम ने बड़ी मुश्किल से थूक सटकी और उससे पेनड्राइव लेकर बोला—"आ मेरे साथ...।"

दोनों ड्राइंग रूम से निकले और एक दूसरे कमरे में आ गए—जिसमें कि कम्प्यूटर लगा हुआ था।

महेश को सोफे पर बैठने को कहकर वह खुद कम्प्यूटर के सामने बैठा और उसे ऑन करके उसमें पेनड्राइव लगा कर की-बोर्ड पर उंगालियां नचाईं और फिर एंटर का बटन दबा दिया।

एल○सी○डी○ स्क्रीन पर वो सब उभरने लगा—जो उसने नेहा से कहा था।

जैसे-जैसे फिल्म आगे बढ़ रही थी—उसके रंग उड़ते जा रहे थे।

फिर जब फिल्म खत्म हुई तो वह बड़बड़ाया—"यह साली तो मेरा पूरा कुनबा ही खत्म करने जा रही थी...।"

"आप ठीक कह रहे हैं नेताजी।"

तभी अपने पीछे महेश की आवाज सुनकर उसने चिहुंकर पीछे देखा।

महेश उसके पीछे खड़ा मुस्करा रहा था। निश्चय ही उसने बड़बड़ाहट सुन ली थी।

"यह तो नेहा ने मेरे को पेनड्राइव देने के लिए बुला लिया...।" वह बोला—"और मैं ठहरा आपका वफादार...। वर्ना अगर वह किसी और को मिलती तो सुबह टी○वी○ पर यह सब कुछ आ जाना था।"

गहरी सांस छोड़ते हुए आत्माराम खड़ा हुआ और मुड़ कर उसके कंधे पर थपकी दी।

"तूने वाकई ईनाम का काम किया है, महेश...।" वह बोला—"बोल—क्या इनाम चाहिए तेरे को?"

अब तक वह खुद को पूरी तरह से सम्भाल चुका था। महेश ने खीसे निपोर दिए—“आप समझदार हैं, नेता जी...। आप जो भी देंगे—मैं उसे खुशी-खुशी कबूल कर लूंगा।”

“आ मेरे साथ...।”

कहकर आत्माराम उसे लिए बाहर निकला और अपने बेडरूम में आ गया—जहां बेड पर वह हसीन तरीन युवती लेटी थी।

आत्माराम के साथ किसी और को देखकर वह पहले तो बुरी तरह से हड़बड़ाई—फिर उसने जल्दी से चादर खींच ली। मगर तब तक महेश का कलेजा जोरों से धड़क उठा था। उस युवती की एक झलक ने ही उसके खून में इतनी गर्मी भर दी थी कि उसकी नसें फटने लगी थीं।

‘‘चादर उतार...।” तभी बोला आत्माराम।

अब हुक्म आत्माराम का था—न मानने का सवाल ही पैदा नहीं होता था।

युवती ने चादर फेंक दी।

"यह मेरी प्रॉपटी है।" आत्माराम ने महेश के कंधे पर हाथ रखा—"और यह बेडरूम भी मेरा है; मगर जो काम तूने किया है— उससे खुश होकर मैं तेरे को सुबह पाँच बजे जब तक ऐश करने की इजाजत दे रहा हूं। सुबह पाँच बजे जब तू यहाँ से जायेगा—बीती रात के हसीन लम्हों की यादों के साथ तेरे पास पांच लाख की नकदी भी होगी...।"

सुन कर महेश का कलेजा बल्लियों उछलने लगा।

"थ...थेंक्यू नेता जी।" वह थूक सटकते हुए बोला।

"और यह बात दिल से निकाल दे तू की कल को तेरे को विशाल कपूर या उसकी बीवी उलाहना देंगे कि तूने उनसे गद्दारी की। जा ऐश कर....।" कह कर उसने उसके कंधे को थपका और कमरे से बाहर निकल गया।

महेश ने मुड़कर दरवाजा बंद किया और सिटकनी चढ़ा कर बेड की तरफ मुड़ा—जहां बैठी युवती की आंखों में ऐसी चमक थी मानो वर्षों बाद उसे बढ़िया

खाना मिल रहा हो।

महेश भरपूर जवान था—और सेहत में भी अच्छा खासा था— सो युवती को पूरी उम्मीद थी कि उसकी प्यास जरूर बुझेगी।

बिना वक्त गंवाये महेश ने जल्दी-जल्दी कपड़ों से निजात पाई और युवती पर छलांग लगा दी।

''उई....।'' युवती हौले से चीख पड़ी—''आराम से....कहीं भागी नहीं जा रही मैं.....।''

लेकिन महेश ने उसकी बात नहीं सुनी—वो तो जैसे पागल हुआ जा रहा था।

पगलों की तरह वह उसके उभारों में मुंह मार रहा था—उसके हाथ युवती के जिस्म पर रेंग रहे थे।

युवती की जो इच्छायें आत्माराम ने अधूरी छोड़ दी थीं—वो फिर से सिर उठा कर खड़ी हो गईं।

महेश का सुलगता वजूद उसके जिस्म से स्पर्श करता उसे बहुत अच्छा लग रहा था।

फिर युवती के होठों से एक उत्तेजक सिसकारी फूट पड़ी—मुंह थोड़ा-सा खुल गया।

उसके हाथ अपने आप ही महेश की पीठ पर फिरने लगे—और महेश हांफते हुए पूरी रफ्तार से दौड़ते हुए अपने लक्ष्य की तरफ बढ़ने लगा।

और फिर....

¶¶

"डिंग...डां...ग...।"

कालबेल की आवाज सुनकर करवट में लेटी, मुन्ने को अपने सीने से लगाये नेहा की आंखें खुल गईं।

सोई नहीं थी वह...। सिर्फ आंखें बन्द किए लेटी थी। नींद आनी भी कहां थी उसे!

वह तो सुबह आठ बजने का इंतजार कर रही थी—और फिर कल्पनाओं में वह आत्माराम—उसके बेटे और भतीजे को गिरफ्तार होते देख रही थी—साथ ही विशाल के रिहा होने और उसके साथ सुनहरे भविष्य की कल्पनाओं में खोई थी।

मुन्ने को आहिस्ता से पीछे कर उसने अपनी कमर पर पड़ी गुड़िया की टांग उठा कर नीचे की और उठ कर बेड से उतरी और चप्पल पहन कर दरवाजे की तरफ बढ़ी।

वह यही समझी थी कि उसका विशु आया था। रात के उस वक्त किसी और के आने का मतलब ही नहीं था।

विशाल ही हो सकता है— महेश के वहां होने की वजह से यह कहा हो कि वह नहीं आयेगा। और अब वह आ गया हो।
सो वह तेजी से दरवाजे की तरफ बढ़ी ।

उसके बेडरूम से निकलते-निकलते पुनः घण्टी बजी।

"डिंग....डांग"

तेज-तेज चलती हुई वह गेट तक पहुंची और कुण्डा खोलकर उसने जैसे ही दरवाजा खोला—

उसका कलेजा उछल कर उसके हलक में आ फंसा।

सामने आत्माराम खड़ा था और उसके दायें-बायें निशांत और प्रकाश खड़े थे।

नेहा के जेहन में तब तक एक ही शब्द गूंजा—

''खतरा....।''

सो वह तुरन्त पीछे हटी और तेजी से दरवाजा बन्द करना चाहा।

मगर उससे भी तेजी से प्रकाश ने आगे बढ़ कर उसे पीछे धकेला और फिर उसके गले में बांह डाल कर दूसरे हाथ से उसका मुंह बन्द कर दिया।

तब तक निशांत और आत्माराम भी भीतर आ चुके थे। निशांत ने मुड़ कर गेट बन्द किया और कुण्डा लगा लिया।

और फिर वे उसे लिए बेडरूम में आ गए।

निशांत ने बेडरूम का भी दरवाजा बन्द कर भीतर से सिटकनी चढ़ा दी। जबकि आत्माराम नेहा के सामने आ खड़ा हुआ।

"हरामजादी...।" वह उसे घूरते हुए फुंफकारा—"मेरा स्टिंग ऑपरेशन करती है? जानती नहीं कितना जहरीला नाग हूँ—"अब देख...मैं क्या हालत करता हूं तेरी...।" गुर्राया आत्माराम—और उसके सामने से हटकर बच्चों की तरफ बढ़ा।

उसके इरादे समझ नेहा अपनी पूरी ताकत से प्रकाश की पकड़ से छूटने की कोशिश करने लगी।

मगर अपनी पूरी ताकत लगाने के बाद भी वह कामयाब नहीं हुई।

आत्माराम ने झुक कर मुन्ना को उठाया, उसको उल्टा कर उसकी टांग पकड़ कर एक घूंसा उसके सिर पर दे मारा।

नींद में ही मुन्ना बेहोश हो गया।

तभी शोर सुनकर गुड़िया की आंख खुल गई।

वहां का माहौल देख वह उठ कर रोने लगी....। लेकिन तभी निशांत ने उसके बाल पकड़े और उन्हें खींच कर खड़ा करते हुए गुर्राया—"खबरदार! अगर रोई तो तेरी मां को मार डाला जायेगा।"

गुड़िया के होंठ वहीं भिंच गए—लेकिन उसके आंसुओं ने रफ्तार पकड़ ली।

"इसे भी बेहोश कर दे बेटे....।" आत्माराम बोला—"वर्ना यह शोर मचायेगी।"

निशांत ने बिना देर किए घूंसा मार कर गुड़िया को भी बेहोश कर दिया।

आत्माराम ने मुन्ना की टांगें पकड़े हुए अपने सिर से ऊपर उठाया और प्रकाश से बोला—

’’इसका मुंह खोल दे भतीजे....।’’

प्रकाश ने नेहा के मुंह से हाथ हटाया तो नेहा बिलख पड़ी।

“इन बच्चों ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?’’

आंसू बहाते हुए गिड़गिड़ाई नेहा।

’’कपड़े उतार अपने और नंगी होकर फर्श पर लेट जा।’’

’’न...हीं....।’’ बुरी तरह से कांप उठी वह—’’त....तेरे इरादे ठीक नहीं आत्माराम....।’’

’’मेरे इरादे कभी सही होते ही नहीं। यूं भी मेरे भतीजे का तेरे पर दिल आ गया है...।

’’न...नहीं....म....मैं ऐसा नहीं करूंगी।’’

’’मत कर....। अब अपनी आंखों के सामने अपने बेटे की मौत देख...।’’

“न...हीं...।” चीख उठी नेहा—“म...मेरे बच्चों को कुछ मत कहना।”

“तो फिर वो कर, जो मैंने कहा है। वर्ना तेरा बेटा छोड़ दूंगा मैं...।”

“अ...रे राक्षस...कुछ तो शर्म कर...।” जोर-जोर से रोने लगी वह अबला —“कुछ तो शर्म कर...। म...मां बनने वाली हूं।”

“शर्म? हा...हा...अरी बेवकूफ! मैं अपने बच्चों के सामने शर्म नहीं कर रहा तो फिर तेरी शर्म कहां से करूंगा? यूं भी इन दोनों ने कभी फूले हुए पेट वाली औरत की सवारी नहीं की। चल उतार कपड़े—वर्ना तेरे बेटे का सिर फर्श से टकरा जायेगा।“

मजबूर हो गई थी वह।

अपने बच्चों की खातिर वह नग्न होने को तैयार हो गई।

रोते हुए वह अपने कपड़े उतारने लगी तो प्रकाश उसे छोड़ पीछे खड़ा हो गया।

कुछ ही देर में नेहा पूरी तरह निर्वस्त्र सिर झुकाये खड़ी थी।

उसका फूला पेट देख प्रकाश की हालत खराब होने लगी।

उसने आत्माराम से भी इजाजत नहीं ली और बेदर्दी से नेहा को उठा कर फर्श पर पटक दिया।

नेहा के होठों से घुटी-घुटी चीख उबल पड़ी, साथ ही पीड़ा से उसका चेहरा विकृत हो उठा।

मगर उस शैतान को उसकी पीड़ा से क्या लेना-देना था! उसे तो बस अपनी पड़ी थी।

वह जानवरों की तरह उस पर सवार हुआ और अपनी इच्छा पूरी करने में लग गया।

उसने यह भी शर्म नहीं की कि आत्माराम सामने खड़ा है और न ही आत्माराम या निशांत की आंखों में शर्म थी।

वो तो इस नजारे को मजे ले-लेकर देख रहे थे।

उन दोनों शैतानों के सामने तीसरे शैतान ने पूरी बेदर्दी से नेहा की अस्मत को तार-तार कर दिया।

वह हांफते हुए उस पर से उठा और अपनी जिप बन्द करते हुए मुस्कुराया—"अभी भी टनाटन है...।"

नेहा कराहते हुए उठी और रोते हुए बोली—

"अ...अब तो मेरे बच्चे को छोड़ दो।"

"ले...छोड़ दिया...।" कहने के साथ ही उस राक्षस से मुन्ना की टांगें छोड़ दीं।

मुन्ना तेजी से नीचे गिरा और उसका सिर फर्श से जा टकराया।

फचाक् की आवाज के साथ उस मासूम का भेजा बाहर बिखर गया।

"म...मु...न्...ना...।"

नेहा के होठों से भयानक चीख उबल पड़ी।

कुछ देर तो वह फटी-फटी आंखों से अपने बेटे को देखती रही—जो जिन्दगी के आखिरी झटके ले रहा था। फिर एकाएक ही उसकी आंखों में अंगारे दहकने लगे।

चेहरा सुलग उठा।

"कमीने...कुत्ते! तूने मेरे बच्चे को मारा...म...मैं तेरे को जिन्दा नहीं छोड़ूंगी।"

अपनी नग्नता की परवाह न करते हुए वह भूखी शेरनी की तरह आत्माराम पर झपटी।

मगर उस तक पहुंच नहीं पाई वह। उससे पहले ही आत्माराम की लात पूरे वेग से उसके पेट पर जा पड़ी।

बुरी तरह से चीखते हुए नेहा उछल कर पीछे जा गिरी।

पीड़ा से उसका चेहरा विकृत हो उठा।

"खत्म कर दे इसकी लौंडिया को भी!" फुंफकारा आत्माराम—"हरामजादी मुझ पर झपटती है!"

तुरन्त निशांत ने गुड़िया की भी टांगें पकड़ीं और उसे अपने सिर के ऊपर से घुमाते हुए दीवार पर दे मारा।

"फचा...क...।"

गुड़िया का सिर जोरों से दीवार से टकराया और भेजा बाहर निकल कर खून के साथ दीवार पर चिपक गया।

दीवार से लगे हुए ही गुड़िया दीवार की जड़ में आ गिरी और झटके लेने लगी।

दीवार पर जहां उसका सिर टकराया था—वहां खून का बड़ा धब्बा बन गया था तथा उसके चारों तरफ खून की लकीरें खिंच गई थीं।

इससे पहले कि नेहा चीखती, प्रकाश ने एक भरपूर लात उसके पेट पर दे मारी।

नेहा की आंखें बाहर को उबल पड़ीं।

उसकी जांघों के बीच खून का तालाब बनने लगा।

जिस्म ऐसे ऐंठने लगा, जैसे वह पीड़ा के अचानक दौर से गुजर रही हो।

एक लात और मार साली को!" तभी गुर्राया आत्माराम—"ताकि बचने का कोई चांस न रहे।"

प्रकाश ने पूरी शक्ति से नेहा के पेट में एक ठोकर और जड़ दी।

नेहा का जिस्म जोरों से ऐंठा, मुंह पूरा का पूरा खुल गया।

बहने वाले खून की रफ्तार और भी तेज हो गई।

और फिर नेहा की आंखें बन्द हो गईं।

"हरामजादी...।" आत्माराम ने नफरत से उसे देखा—"हमारा स्टिंग करती है! चलो...।"

वह निशांत और प्रकाश से बोला और दरवाजे की तरफ मुड़ गया।

निशांत ने आगे बढ़ कर दरवाजा खोला और बाहर निकल गया।

तीनों मकान से बाहर निकले तो निशांत ने गेट बन्द किया और आत्माराम तथा प्रकाश के साथ उधर बढ़ने लगा जहां कुछ दूर उनकी कार खड़ी थी।

कुछ ही देर में तीनों कार में बैठे थे।

ड्राईविंग सीट पर प्रकाश बैठा था।

कार आगे बढ़ी तो आत्माराम बोला—"यह तो गई...। और थोड़ी देर में उस हरामी की मौत की खबर भी मिल जायेगी। जाकिर को मैंने उसे खत्म करने के लिए भेजा है...और जाकिर आज तक अपने मिशन में कभी फेल नहीं हुआ।"

¶¶

स्कोर्पियो गाड़ी जंगल में बनीं गुफाओं के सामने रुकी और देखते ही देखते उसमें से दस आदमी बाहर निकले।

चारों तरफ घना जंगल था—जिनमें वह छोटा-सा पहाड़ी हिस्सा था, जिसमें वे गुफायें बनी थीं।

पहाड़ियां क्या थीं—उन्हें बड़े-बड़े टीले कहना ज्यादा उचित था—जिनमें से कई तो बिल्कुल ही कच्चे थे और कई पथरीले टीले थे। जंगल में वह स्थान काफी डरावना नजर आता था।

हालांकि दिन के वक्त कभी कभार वहां टूरिस्ट आ जाते थे। मगर रात को तो वहां कोई भी नहीं फटकता था।

खूंखार जानवरों के नाम पर वहां सिर्फ तेंदुए और सांप का खतरा था। बाकी वहां जितने भी जानवर थे, सभी घासखोर थे।

बाहर निकलते ही सभी आदमियों ने टार्चें जला लीं और उसी के साथ ही वहां प्रकाश फैल गया।

"एक-एक गुफा चैक करो...।" स्कोर्पियो के बोनट के साथ लग कर खड़ा जाकिर आदेश भरे स्वर में बोला—"उसकी बाजू पर
गोली लगी है और वह इन्हीं गुफाओं में से किसी एक में छुपा है...। छोड़ना नहीं उसे...न ही कोई बात करनी है। बस देखते ही गोली से उड़ा दो।"

सभी गुण्डे टार्चें लिए अलग-अलग गुफाओं की तरफ बढ़ गए—जबकि जाकिर वहीं बोनट से अपना पिछवाड़ा लगाये खड़ा रहा।

¶¶

वह एक विशाल राक्षस की मूर्ति थी। जिसका मुंह भेड़िये जैसा था और वो अपने पैने दांत दिखा रहा था। उसके सिर पर सींग उगे हुए थे—साथ ही उसके हाथों में तलवार और फरसा था।

बड़ा ही भयानक राक्षस नजर आ रहा था वह।

शर्तिया ही जब डेढ़ सौ साल पहले मूर्तिकार ने वह मूर्ति बनाई होगी—तब वह भी उसे देख कर होश ही खो बैठा होगा।

हालांकि वह मूर्ति अब जीर्ण-शीर्ण हो गई थी, मगर फिर भी अभी भी उसे देख कर आदमी के रोंगटे खड़े हो जाएं।

उसी विशालकाय मूर्ति के साथ लग कर विशाल कपूर आंखें बन्द किए बैठा था।

हालांकि वह बुरी तरह से थका हुआ था; मगर फिर भी उसकी आंखों में नींद नहीं थी। वह बड़ी बेताबी से सुबह होने का इंतजार कर रहा था—जब नेहा द्वारा किया गया स्टिंग ऑपरेशन टी○वी○ पर दिखाया जायेगा।

उसके बाद उसे पूरा विश्वास था कि वह आजाद हो जायेगा। कोर्ट उसे बाइज्जत बरी कर देगी।

"उसके बाद तुम्हें देखूंगा, रीमा राठौर...।" वह मन-ही-मन बड़बड़ा रहा था—"मुझ बेगुनाह को तूने सजा दिलवाई। जिससे यही साबित होता है कि तूने आत्माराम से पैसा खाया था। तब मैं तेरा स्टिंग ऑपरेशन करूंगा और पूरी दुनिया को दिखाऊंगा कि कानून की पुजारिन बनने का मुखौटा लगाने वाली का असली चेहरा क्या है...।"

"खड़...खड़...खड़...।"

तभी किसी पत्थर के लुढ़कने की आवाज सुन कर विशाल कपूर की आंखें एकदम से खुल गईं।

आंखें खुलते ही वह बुरी तरह से चौंक उठा।

टार्च की रोशनी उसके दाईं तरफ वाली दीवार पर पड़ रही थी।

जिस गुफा में वह था—वह गुफा आगे जाकर बाईं तरफ मुड़ रही थी। और वहीं से रोशनी आकर उसके दाईं तरफ वाली दीवार पर पड़ रही थी।

"खतरा...।"

फौरन उसके जेहन में यह शब्द गूंजा।

"देख के चल...।" तभी एक आवाज उसके कानों में पड़ी।

"यार, रास्ते में पत्थर पड़ा था। ठोकर लग गई...।" दूसरी आवाज।

तुरन्त विशाल कपूर उठा और उस मूर्ति के पीछे जा पहुंचा।

घुप्प अंधेरे में हाथों के स्पर्श से ही वह उस गुफा में पहुंचा था और स्पर्श से ही उसने जाना था कि वह उस मूर्ति के पास है, जिसे वह पहले भी कई बार

देख चुका था।

उन गुफाओं की तो उसने अपने चैनल पर विस्तृत रिपोर्ट भी दी थी।

मूर्ति के साथ लगते ही उसे महसूस हुआ कि मूर्ति के पीछे का हिस्सा पीठ से टूटा हुआ है।

तेजी से उसने टूटे हुए हिस्से को टटोला। मूर्ति अन्दर से खोखली थी। वह उसी में समा गया।

उसके जेहन में यह नहीं उभरा कि भीतर कोई सांप-बिच्छू भी हो सकता है।

ठीक तभी वो दोनों गुण्डे गुफा में प्रविष्ट हुए।

"उफ्...।" एक गुण्डा मूर्ति पर टार्च की रोशनी डालते हुए बोला—"कितनी डरावनी मूर्ति है यह...।"

"अबे, उस हरामी को ढूंढ—जिसे खत्म करने के लिए हम यहां आये हैं...।" दूसरा बोला—"नजारे देखने बाद में आ जाना।"

मूर्ति के भीतर छुपे विशाल कपूर का कलेजा जोरों से धड़क उठा।

उनकी बात सुन ली थी उसने—जो इस तरफ इशारा कर रही थी कि आत्माराम को उसके जिन्दा होने और वहां छुपे होने की खबर लग गई थी।

"कैसे...?"

उसके यहां छुपे होने का पता या तो नेहा को था या फिर महेश को।

उनके अलावा तो उसने किसी को फोन नहीं किया था।

फिर आत्माराम को उसके यहां होने का पता कैसे चल गया?

जरूर कुछ गड़बड़ है। या तो महेश गद्दारी कर गया है—या फिर नेहा से आत्माराम किसी तरीके से जान गया है।

"यहां तो कोई नहीं...।" तभी पहली आवाज उसके कानों में पड़ी।

"मूर्ति के पीछे देख...।" दूसरा बोला—"इतनी बड़ी मूर्ति है—उसके पीछे छुपा हो सकता है...।"

और फिर मूर्ति के पीछे टार्च की रोशनी फैली। मगर वह तो मूर्ति के भीतर घुसा हुआ था। और गुण्डा उसे साइड से देख रहा था।

हां—अगर वह मूर्ति के पीछे आता तो निश्चय ही वह उसे देख लेता।

"नहीं है।" साइड से देखने वाला गुण्डा बोला।

पूरी गुफा को अच्छी तरह से देख कर दोनों गुण्डे बाहर निकल गए। लेकिन विशाल कपूर वहीं दुबका रहा।

बाहर नहीं निकला वह।

क्या पता फिर से तलाशी हो—इसलिए उसने आध पौन घण्टा और वहीं मूर्ति में ही छुपे रहने का फैसला कर लिया।

११

"ट्रिन-ट्रिन...।"

फोन की घण्टी बजते ही आत्माराम ने झपटने वाले अंदाज से रिसीवर उठाया और कान से लगाते हुए बोला—

"हैलो।"

इस वक्त वह ड्राईंग रूम में बैठा जाकिर के फोन का इंतजार कर रहा था।

निशांत और प्रकाश उसके सामने वाले सोफों पर बैठे थे।

"जाकिर बोल रहा हूं, नेता जी...।" दूसरी तरफ से जाकिर की आवाज आई।

"हां बोल, जाकिर—काम हो गया?" तुरन्त पूछा आत्माराम ने।

"यहां कोई होता तो ही काम होता न नेता जी...।"

“क्या मतलब...?”

“इंसान तो क्या यहां चिड़िया का बच्चा भी नहीं मिला—फिर खत्म किसे करते?”

बुरी तरह से चौंक उठा आत्माराम—“यह क्या कह रहा है तू? उसे तो वहीं होना चाहिए। तू अच्छी तरह से देख। एक-एक ईंट उखाड़ के देख...। वह वहीं छुपा हुआ है।”

“वो यहां नहीं है, नेता जी। हर गुफा के एक-एक कोने को देखा गया है।”

“फिर जरूर उसे तेरे वहां पहुंचने का पता चल गया होगा—और वो वक्त रहते कहीं और गायब हो गया।”

“गुफाओं में तो वह हरगिज नहीं था, मन्त्री जी। हां—वह किसी पेड़ पर छुपा हुआ हो तो कह नहीं सकता। अब रात के अंधेरे में पेड़ों की तलाशी तो ली नहीं जा सकती...।”

आत्माराम के चेहरे पर निराशा फैल गई।

“आ जा वापिस...।” वह गहरी सांस छोड़ते हुए बोला और रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया।

“क्या कह रहा था जाकिर?” तभी पूछा निशांत ने।

आत्माराम ने उसे देखा और बोला—“लगता है वो जाकिर के वहां पहुंचने से पहले ही गुफायें छोड़कर कहीं और जा छुपा था...।”

“यह भी हो सकता है अंकल कि”—प्रकाश बोला—“वो अभी भी वहीं छुपा हो और जाकिर उसे ढूंढ न पाया हो...।”

“अब क्या कहा जा सकता है।” निशांत बोला—“मतलब तो उसके हाथ आने से था—जो कि वो नहीं आया।“

“फिर भी—अभी भी पता चल सकता है उसका...।” प्रकाश उसे देखते हुए बोला।

दोनों बाप-बेटा चौंक कर उसे देखने लगे।

"अब कैसे पता चल सकता है?" आत्माराम उसे हैरानी से देखते हुए बोला।

प्रकाश ने पहलू बदला और बोला—"अगर वो जाकिर को देख कर छुपा है तो उसके जेहन में सबसे पहला सवाल यही उभरेगा कि जाकिर को कैसे पता चला कि वह वहां छुपा है। यह सवाल दिल में आते ही उसके जेहन में दो ही चेहरे उभरेंगे जिन्हें उसने फोन करके अपने वहां छुपे होने की बात कही थी। ऐसे में वह यही सोचेगा कि या तो महेश गद्दार निकला है या उसकी जोरू को आपने टार्चर करके जाना है। ऐसे में वह अपनी बीवी का पता करने के लिए अपने घर आयेगा और उसका घर की तरफ बढ़ने वाला हर कदम उसे मौत के करीब लाता जायेगा।"

कहते हुए उसके होंठों पर जहरीली मुस्कान नाच उठी।

सुनकर आत्माराम की आंखें चमकने लगीं।

चेहरा खिल उठा।

"वाह, भतीजे! क्या दूर की सोची है तूने...।" वह खुशी भरे स्वर में बोला —"वाकई बड़ा तेज दिमाग है तेरा...।"

कह कर उसने तुरन्त रिसीवर उठाया और उसे कान से लगाते हुए कोई नम्बर मिलाया।

"हैलो।" शीघ्र ही दूसरी तरफ से बौखलाई आवाज आई।

"मैं बोल रहा हूं।" हल्के से गुर्राया आत्माराम।

"ह...हुक्म नेता जी।" दूसरी तरफ से बौखलाई आवाज आई।

"विशाल कपूर को देख रखा है तूने...?"

"वो रिपोर्टर—जिसने आपसे टकराने की बेवकूफी की थी?"

"हां, वही।"

"वो तो जेल में था—और वो, सुबह मर गया था।"

“नहीं, वो हरामजादा जिन्दा है।”

“क्या...?”

“हां...तू उसके घर के आस-पास कुछ आदमी तैनात कर दे—ऐसे कि किसी को शक न हो—वो अपने घर जा सकता है।”

“जी...।”

“जैसे ही वह आये, उसे खत्म कर दिया जाए। मेंरे को हर हाल में उसकी मौत चाहिए।”

“जो हुक्म नेता जी।”

“महेश के घर भी पहरा बिठा दीजिए पापा।” तभी निशांत बोल पड़ा—“वो वहां भी पहुंच सकता है।”

आत्माराम ने सिर हिलाया और फोन पर महेश का पता बता कर विशाल कपूर के वहां पहुंचने का भी अंदेशा जताया और कहा—“दोनों जगहों पर पूरी

निगरानी होनी चाहिए।”

“जी, नेता जी।”

आत्माराम ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और गहरी सांस छोड़ते हुए सोफे की पुश्त से टेक लगा ली।

“दुश्मन को जिन्दा छोड़ना सांप को दूध पिलाने के बराबर होता है।” वह गम्भीरता से बोला—”उस हरामजादे को मेंरे को किसी भी सूरत में पाना है।”

“वो तो मरेगा ही—और जरूर मरेगा।” प्रकाश बोला—“आपसे दुश्मनी लेने वाले के बचने का कोई घर नहीं बचता; मगर आप भी खुद को कानून से बचने का रास्ता तलाश कर लो। विशाल के बीवी-बच्चों की मौत हुई है और...।”

“उसकी चिंता मत कर तू।” जहर भरी मुस्कान फैल गई आत्माराम के होंठों पर—“वो रास्ता मैंने पहले ही बना रखा है।”

“क्या...?”

"रीमा राठौर...।"

सुनकर दोनों पहले तो चौंके, फिर उनके होठों पर भी जहर भरी मुस्कान नाच उठी।

¶¶

उन दोनों गुण्डों के जाने के करीब पन्द्रह मिनट बाद विशाल कपूर मूर्ति से बाहर निकला।

सोचा तो उसने पौन घण्टे बाद निकलने का था—लेकिन नेहा के लिए वह इस कदर फिक्रमंद हो गया था कि वह इतना लम्बा इंतजार नहीं कर सका।

मूर्ति के पास से हट कर वह एक एक कदम सम्भल-सम्भल कर रखते हुए दीवार के करीब पहुंचा और दीवार के सहारे चलते हुए बिना कोई आवाज पैदा किए गुफा के मुहाने पर आ गया। सभी जा चुके थे।

फिर भी उसने आंखें फाड़-फाड़ कर हर तरफ देखा कि कोई कहीं छुपा तो नहीं हुआ.....। मगर पुप्प अंधेरे में उसे क्या खाक नजर आना था।

हां—आहट जरूर सुन सकता था वह—जो उसे सुनाई नहीं दी।

अपनी तरफ से पूरी तसल्ली हो चुकने के बाद कि सभी चले गए थे—उसने जेब से मोबाइल निकाल के उसका स्विच ऑन किया और अपने घर के नम्बर मिला कर मोबाइल कान से लगा दिया।

दूसरी तरफ से घण्टी बजने की आवाज उसके कान के पर्दे से टकराने लगी। और वह बड़ी बेसब्री से फोन उठाये जाने का इंतजार करने लगा।

लेकिन घण्टी बज-बज कर खत्म हो गई—किसी ने फोन नहीं उठाया।

विशाल कपूर ने दोबारा फोन किया; मगर इस बार भी किसी ने फोन नहीं उठाया।

अब तो विशाल कपूर के चेहरे पर चिंता नजर आने लगी। नेहा की नींद के बारे में वह जानता था—वह कितनी भी गहरी नींद में क्यों न हो, हल्के से खटके से ही उसकी नींद खुल जाती थी।

मगर यहां तो दो-दो बार फोन करने पर भी नेहा की नींद नहीं खुली थी।

जरूर कुछ गड़बड़ है।

उसने जल्दी-जल्दी कुछ सोचा और फिर आशा का नम्बर मिलाने लगा।

"ट्रिन-ट्रिन...।"

फोन की घण्टी की आवाज सुन आशा की आंखें खुल गईं।

उसने अपने पहलू में सो रहे अपने पति को देखा—जो सिर से पांव तक निर्वस्त्र टांगें फैलाये गहरी नींद में सो रहा था।

खुद आशा भी पूरी तरह से निर्वस्त्र थी।

उसके पति ने आज कुछ ज्यादा ही मेहनत की थी, जो वह इतनी गहरी नींद में सो रहा था।

आशा की नजर भटक कर अपने लक्ष्य पर पड़ी तो उसके भीतर एक गुदगुदी-सी होने लगी-साथ ही होठों पर मुस्कान फैल गई

लेकिन लक्ष्य को छेड़ा नहीं उसने.....।

वह उठी और बेड की पुश्त पर रखे फोन का रिसीवर उठा कर कान से लगाते हुए बोली—

"हैलो...।"

"आशा...।"

दूसरी तरफ से अपना नाम पुकारे जाते देख वह चौंक उठी।

फिर सख्त स्वर में बोली—"कौन बोल रहा है?"

"मैं बोल रहा हूं विशू... तुम्हारा जीजू...।"

बुरी तरह से उछल पड़ी आशा।

"जी... जू... तु...।"

"हां मैं...।"

"मगर नेहा तो कह रही थी कि तुम...।"

"हां... ठीक सुना था उसने...। लेकिन मैं बच गया और मैंने नेहा को तब फोन कर सब कुछ बता दिया था, जब वह मुन्ना और गुड़िया को तुमसे लेकर घर पहुंची थी।"

"भगवान का लाख-लाख शुक्र है जीजू कि तुम ठीक हो।"

"मेरा एक काम करो, आशा।"

"क्या...?"

"मैंने नेहा को अभी-अभी फोन किया था; लेकिन दूसरी तरफ से कोई फोन उठा ही नहीं रहा। तुम राकेश को साथ लेकर मेरे घर जा कर पता करो । मेरा दिल बैठा जा रहा है। प्लीज आशा...।"

“हां...हां...जाती हूं...अभी जाती हूं।” तुरन्त बोली आशा।

“राकेश को साथ ले जाना और उससे कहना कि अपना मोबाइल पास रखे.....। मैं आधे घण्टे बाद उसके मोबाइल पर फोन करूंगा।”

“ठीक है।”

कह कर आशा ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और अपने पति राकेश को देखा—जो लेटा हुआ उसी की तरफ देख रहा था।

“कौन था?” वह बोला।

“जीजू का फोन था.....।” आशा उसे सब कुछ बताती चली गई। साथ ही वह अपने कपड़े भी पहन रही थी।

उसकी बात सुन कर राकेश ने भी कपड़े पहने और आशा को साथ ले कर अपनी बाइक पर विशाल कपूर के घर की तरफ रवाना हो गया।

¶¶

बाइक विशाल कपूर के घर के गेट के सामने रुकी तो कुछ दूर एक अंधेरे कोने में छुपे दो आदमी चौंक पड़े।

"यह कौन है.....?" पहला धीरे से बोला—"और उसके साथ छोकरी कौन हूं....मैं.....।"

"विशाल कपूर तो यह हरगिज नहीं.....।" दूसरा फुसफुसाया—"उसे जानता हूं मैं....।"

"क्या इसे भी खत्म कर दें?" पहला बोला।

"नहीं.....।" दूसरा झटके से गुर्राया—"अगर इसे मार डाला और ऊपर से विशाल कपूर आ गया तो वह दूर से ही लाश देखकर समझ जायेगा कि यहाँ गड़बड़ है—और वो हमें नजर आये बिना ही वापस चला जायेगा।"

"तो क्या कुछ न कहें इन्हें.....?"

"इन्हें भीतर जाने दे—नेता जी से बात करता हूं—जैसा वो कहेंगे—वैसा करेंगे। अगर वो खत्म करने को बोलेंगे तो घर में घुसकर मार देंगे.....।"

इधर बाइक के पीछे बैठी आशा ने डोर-बैल बजाई।

मगर भीतर से कोई जवाब नहीं आया।

तब तक राकेश बाइक को खड़ा करके लॉक लगा चुका था।

आशा ने पुनः पुश बटन दबाया.....। मगर इस बार भी कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई।

उसने अपने करीब खड़े राकेश की तरफ देखा।

"मेरा तो जी घबरा रहा है, जी...।" वह अपने सीने पर हाथ रखते हुए बोली—"भगवान भला करे....।"

राकेश ने गेट पर हाथ रख कर उसे भीतर धकेला तो गेट थोड़ा-सा पीछे हटा और हुड़के से अटक गया।

यानि भीतर से कुण्डा नहीं लगा हुआ था।

उसने धड़कते दिल से हुड़का हटाया और आशा को साथ लिए गेट को धकेलते हुए भीतर प्रवेश कर गया।

"न...ने.....हा.....।" आगे बढ़ते हुए उसने आवाज लगाई ।

मगर आवाज ऐसे निकली जैसे वह कुएं पे खड़ा बोल रहा हो। उसकी आवाज से ही उसके भीतर की घबराहट महसूस हो रही थी।

कोई जवाब नहीं मिला...।

भारी कदमों से चलते हुए दोनों जैसे ही नेहा के बेडरूम में प्रविष्ट हुए—

"आऽऽ...।"

आशा के मुंह से इतनी तेज चीख निकली कि पूरा मकान उसकी चीख से दहल उठा।

राकेश के होठों से भी भयानक चीख उबल पड़ी। कलेजा उछल कर हलक में आ फंसा।

फटी-फटी आखों से वह तीनों लाशों को देख रहा था।

तभी झूलती हुई आशा उससे टकराई तो—तब जा कर राकेश को कुछ होश आया।

तेजी से उसने आशा को सम्भाला और उसको एक तरफ से घसीटते हुए लॉबी में लाकर सोफे पर बिठा दिया।

सोफे पर बैठते ही आशा एक तरफ झूल गई।

बेहोश हो चुकी थी वह। ऐसे में राकेश और भी घबरा गया।

उसका पूरा जिस्म पसीने-पसीने हो गया।

टांगें बुरी तरह से कांपने लगीं।

वह इस बुरी तरह से घबराया हुआ था कि उसका दिमाग काम करना बन्द कर गया।

आखिर उसने बड़ी मुश्किल से खुद पर काबू पाया और मोबाइल निकाल कर पुलिस थाने का नम्बर मिलाने लगा।

उसका हाथ इस बुरी तरह से कांप रहा था कि ऐसा लग रहा था कि मोबाइल उसके हाथ से गिरा कि गिरा।

नम्बर भी ढंग से नहीं मिलाया जा रहा था उससे।

जैसे-तैसे उसने नम्बर मिलाया और मोबाइल कान से लगा लिया।

¶¶

फोन की घण्टी बजते ही आत्माराम ने रिसीवर उठा कर कान से लगाया और बोला—“हैलो...।”

उसके सामने सोफों पर बैठे निशांत और प्रकाश की निगाह उसी पर टिकी हुई थीं।

"यहां तो कोई और आया है, नेता जी...।" आत्माराम के कान में आवाज पड़ी—"उसके साथ एक औरत भी है और...।"

बोलते-बोलते दूसरी तरफ से आने वाली आवाज रुक गई और उसके स्थान पर आत्माराम के कान में चीख की आवाज पड़ी।

"यह चीख कैसी...?" वह चौंका—"कौन चीखा...?"

"लगता है भीतर कुछ लफड़ा हुआ है नेता जी...।" दूसरी तरफ से आवाज आई—"ओह! यह तो अड़ौस-पड़ौस की लाईटें भी जलने लगी हैं...। लगता है चीख ने पड़ोसियों को जगा दिया है...।"

आत्माराम के होठों से गहरी निराशा भरी सांस निकल गई।

"अब कुछ नहीं करना।" वह बोला—"वहां से वापिस आ जाओ तुम...।"

“जी, नेता जी।”

आत्माराम ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और निशांत और प्रकाश को देखा।

“क्या हुआ पापा...?” उत्सुकता से बोला निशांत।

“उसका कोई रिश्तेदार आ टपका है। और भीतर लाशें देख कर वह चीख पड़ा है, जिससे पड़ोसी जाग गए हैं। सो मैंने उन्हें वापिस भेज दिया है।”

“तो क्या अब विशाल कपूर नहीं मरेगा?”

“मरेगा क्यों नहीं—मौत तो उसकी हो कर ही रहेगी; मगर अब पहले हालात देखने होंगे—उसके बाद ही अगला कदम उठाया जायगा।’’

’’ओह़!’’

’’तुम दोनों आराम करो जा कर। अब तुम्हारे जागने की जरूरत नहीं।’’

दोनों खड़े हो गए।

¶¶

"ट्रिन...ट्रिन"...।"

फोन की घण्टी घनघना उठी।

अपने फ्लैट में बिस्तर पर गहरी नीद सो रहे सिकन्दर ठाकरे की आंखें तीसरी घण्टी पर जाकर खुलीं।

लेट-लेट ही उसने करवट ली और साईड स्टूल पर रखे फोन का रिसीवर टटोल कर उठाया और नींद में डूबे हुए स्वर में बोला—

"है...लो....।"

"मैं मुन्शी शिरके बोल रहा हूं सर।"

दूसरी तरफ से थाने के मुन्शी की आवाज सुनकर सिकन्दर ठाकरे का सारा आलस एकदम से गायब हो गया।

रात के इस वक्त फोन आने का मतलब था—कहीं-न-कहीं कुछ-न-कुछ गड़बड़ है।

"हां बोलो, शिरके...।" उसकी आवाज अब चौकस थी।

"विशाल कपूर के साढ़ू का फोन आया है, सर....। वह अपनी पत्नी के साथ विशाल कपूर के घर में है...। किसी ने विशाल कपूर की बीवी और उसके दोनों बच्चों का कत्ल कर दिया है।"

"क्या.....?" बुरी तरह से चौंकते हुए उठ बैठा सिकन्दर ठाकरे।

"यस सर...।" वह बुरी तरह से घबराया हुआ है सर।"

"तुम सब-इंस्पेक्टर रमेश पाण्डे को सिपाहियों के साथ उधर भेजो—मैं वहीं पहुंच रहा हूं।"

"यस सर।"

सिकन्दर ठाकरे ने रिसीवर रखा और उछल कर खड़ा हो गया।

लाईट जला कर उसने वार्डरोब से अपनी वर्दी निकाल कर जल्दी जल्दी पहनी और फिर दरवाजे की तरफ बढ़ा।

दरवाजे के करीब पहुंचते ही वह ठिठका—मुड़ा, वापिस फोन के करीब आकर रिसीवर उठाया और रीमा राठौर का नम्बर मिलाने लगा।

¶¶

कमरे में नीले रंग की हल्की रोशनी फैली हुई थी—जिसमें शानदार डीलक्स साईज के बेड पर रीमा राठौर लेटी सो रही थी।

कपड़े के नाम पर उसके बदन पर धागे का एक रेशा तक नहीं था।

ऐसा लग रहा था जैसे स्वर्ग से उतरी कोई अप्सरा बेड पर सो रही हो।

उसके सांस लेने से उसके उभार ऊपर-नीचे होते हुए ऐसे प्रतीत हो रहे थे—जैसे दो पहाड़ों की चोटियों में हरकत पैदा हो रही हो।

“ट्रिन...ट्रिन...।”

तभी बेड की पुश्त पर रखे फोन की घण्टी घनघना उठी।

पहली ही घण्टी पर रीमा राठौर की आंखें खुल गईं।

करवट बदल कर उसने बांह ऊंची कर रिसीवर उठाया और कान से लगाते हुए बोली—“हैलो...।”

“विशाल कपूर की बीवी और बच्चों का कत्ल हो गया है।”

दूसरी तरफ से ठाकरे की बात सुनकर रीमा राठौर एकदम से उठ बैठी।

उसके उठते ही उसके भारी उभार आपस में ऐसे टकराये कि बिजलियां कड़क उठीं। मगर रीमा राठौर का ध्यान उन पर नहीं था।

“यह क्या कह रहे हो तुम...?” वह भौंचक्की होकर बोली।

“अभी-अभी थाने से फोन आया है। मैं वहीं जा रहा हूं...।”

“मैं भी पहुंच रही हूं।” रीमा राठौर बोली और रिसीवर रख कर तेजी से उठी और वार्डरोब की तरफ बढ़ी।

¶¶

करीब आधे घण्टे बाद विशाल कपूर ने राकेश के मोबाइल का नम्बर मिलाया और मोबाइल कान से लगा लिया।

आशा को फोन करने के बाद का वक्त उसने किस तरह से बिताया था—यह वह ही जानता था।

एक-एक पल उसे एक-एक घण्टे के सामने प्रतीत हो रहा था।

बार-बार वह मोबाइल स्क्रीन ऑन कर वक्त देख रहा था कि कब आधा घण्टा पूरा हो और वह फोन करे।

इस वक्त वह उसी गुफा के मुहाने पर बैठा था, जिसमें से निकला था।

शीघ्र ही दूसरी तरफ से राकेश की थर्राई आवाज उसके कान के पर्दे से टकराई...।

"हैलो...।"

"मैं विशू बोल रहा हूं, राकेश। सब ठीक है न...?" धड़कते कलेजे से बोला वह।

"स-सब खत्म हो गया, भाई साहब...।" दूसरी तरफ से आने वाली आवाज भर्रा गई।

"य-यह क्या कह रहा है तू...? क्या खत्म हो गया?"

"बहन जी नहीं रहीं...। अ...और गुड़िया तथा मुन्ना की भी हत्या हो गई है...।" दूसरी तरफ से रोनी आवाज आई।

बड़ाम...बड़ाम...।

विशाल कपूर के जेहन में एक साथ कई विस्फोट हुए।

आंखों के आगे अंधेरा छाने लगा।

उसे ऐसा लगा—जैसे वह अन्तरिक्ष से कलाबाजियां खाते हुए नीचे गिरा जा रहा हो।

"स...स...ब मर गए?" उसके होठों से कांपता स्वर निकला।

"हां...आशा अभी भी बेहोश पड़ी है। म...मैंने पुलिस को फोन कर दिया है।"

विशाल कपूर ने आगे कुछ नहीं सुना। मोबाइल कान से हटाया और उठ कर गुफा में ऐसे प्रविष्ट हुआ—जैसे उसके कदमों में जान ही नहीं हो।

लड़खड़ाते हुए वह दीवार का सहारा लेते हुए मूर्ति के करीब पहुंचा और उससे लग कर आंसू बहाने लगा।

एक ही झटके में उसका सब कुछ खत्म हो गया।

उसकी बीवी...उसके बच्चे—सब खत्म।

रह-रह कर उसकी आंखों के सामने कभी मुन्ना भी तस्वीर उभरती तो कभी गुड़िया की।

और फिर नेहा का मुस्कुराता हुआ चेहरा उसके जेहन में उभर आता।

नेहा के साथ बिताई जिन्दगी कितनी खुशी से गुजर रही थी उसकी।

उसकी प्रेरणा थी वह।

हर नेक काम के लिए वह उसे प्रोत्साहन देती थी।

अपनी नेहा के साथ बिताये वक्त की तस्वीरें उसकी कल्पनाओं में कौंधने लगीं और वह पता नहीं कब अतीत की गहराइयों में डूबता चला गया।

¶¶

“मेरे पीछे जो मकान आप देख रहे हैं—इसी मकान में बैठ कर आतंकियों ने इस शहर पर हमले की साजिश रची थी; मगर पुलिस और खुफिया

तन्त्र की सक्रियता ने वक्त रहते हुए शहर को बचा लिया—वर्ना न जाने कितने मासूम और निर्दोषों के खून से यह आतंकी अपने हाथ रंग लेते। इस वक्त मकान को पुलिस द्वारा सील किया जा चुका है। जिसके कारण इस मकान में दाखिल नहीं हो सकते...। मगर एक शख्स ऐसा है—जो इस मकान के भीतरी हिस्से से वाकिफ है। उसी शख्स ने पुलिस को सूचित किया था...।" आइए...आपको उस शख्स से रूबरू कराते हैं।"

कट...।

तभी कैमरे के सामने खड़ा विशाल कपूर बोला और कैमरामेन ने कैमरा बन्द कर दिया।

विशाल कपूर ने हाथ में पकड़ा माइक ऑफ कर उसे कैमरामेन को दिया और बोला—

"सामान समेटो और रोहित कालोनी के लिए निकलो। एक घण्टे में रिपोर्ट तैयार करके स्टूडियो पहुंचानी है।"

कैमरामैन ने कैमरा स्टैण्ड से उतार कर उसे बैग में डाला और फिर स्टैण्ड को फोल्ड करने लगा।

विशाल कपूर ने जेब से सिगरेट का पैकेट तथा लाइटर निकाल कर पैकेट में से एक सिगरेट निकाली और उसे होठों से दबा
कर लाईटर के सिरे को सुलगाया और पैकेट और लाइटर जेब में रख कर छोटे-छोटे कश लगाने लगा।

कैमरामैन अपना तामझाम समेट रहा था।

तभी विशाल कपूर की जेब में रखे मोबाइल का म्यूजिक बजने लगा।

“ट्रिन...न....न....।”

उसने बायें हाथ से जेब से मोबाइल निकाला और उसकी स्क्रीन पर नजर मारी।

एक हल्की-सी मुस्कान फैल गई उसके होठों पर।

नेहा का फोन था।

तुरन्त उसने कनेक्टिंग का बटन दबाया और मोबाइल कान से लगाते हुए बोला—

"हैलो...।"

"वक्त क्या हुआ है?" दूसरी तरफ से नाराजगी भरी आवाज आई।

"कमाल है—सिर्फ वक्त पूछने के लिए फोन किया था क्या...।" अपनी कलाई घड़ी पर नजर मारते हुए बोला वह—"आठ बजे हैं अभी तो।"

"और तुमने घर पहुंचने का क्या वक्त दिया था?"

सुनकर बुरी तरह से उछल पड़ा विशाल कपूर।

"ओ माई गॉड—मुझे तो ध्यान ही नहीं रहा था...। सॉरी मैडम...।"

"कोई सॉरी वॉरी नहीं....पन्द्रह मिनट में घर पहुंचो...। चाहे उड़ कर ही क्यों न आना पड़े। पन्द्रह के सोलह मिनट नहीं होने चाहिये। समझे....।" दूसरी तरफ से आदेश भरे स्वर में कहा गया।

सुनकर विशाल कपूर गम्भीर हो उठा।

"सॉरी नेहा...मेरा अभी कहीं पहुंचना बहुत जरूरी है। यह रिपोर्ट सबसे पहले मेरे चैनल पर पहुंचनी बहुत जरूरी है।"

"लेकिन आशा और राकेश आ चुके हैं—मुन्ना और गुड़िया भी तैयार हो चुके हैं...।"

"प्लीज नेहा—मेरी मजबूरी को समझो...। मुझे यह रिपोर्ट फौरन कलेक्ट करनी है। तुम मेरी तरफ से गुड़िया को विश कर दो। मुझे थोड़ी देर लग जायेगी। सॉरी अगेन....।"

कह कर विशाल कपूर ने मोबाइल डिस्कनेक्ट कर दिया

आज उसकी गुड़िया का जन्म-दिन था और सुबह घर से निकलते वक्त उसने नेहा से वादा किया था कि वह आठ बजे तक हर हाल में घर पहुंच जायेगा। साथ ही गुड़िया को वादा किया था कि वह उसके लिए ढेर सारे खिलौने लेकर आयेगा। मगर सारा दिन वह इस तरह काम में मसरूफ रहा कि उसे ध्यान ही नहीं रहा कि उसने वक्त पर घर पहुंचना था।

अपने काम के प्रति वह किस तरह से समार्पित था, इसका पता उसके नेहा को दिए जवाब से चलता था कि याद आने के बाद भी उसने पहले अपना काम पूरा करना समझा।

रात साढ़े दस बजे विशाल कपूर ने कार अपने घर के गेट के सामने रोकी और कार से निकल कर पिछले दरवाजे के सामने आया और दरवाजा खोल कर पिछली सीट पर पड़े खिलौनों के ढेर को उठा कर दरवाजा बन्द किया और गेट के सामने आकर डोरबेल बजा दी।

"डिंग...डांग।"

भीतर कहीं मधुर संगीत गूंजा।

शीघ्र ही दरवाजा खुला।

सामने मुंह फुलाये नेहा खड़ी थी।

विशाल कपूर को देख नेहा ने कुछ नहीं कहा—बस मुंह फुलाये हुए ही एक तरफ हट गई।

विशाल कपूर हल्के-से मुस्कुराया और भीतर दाखिल हो गया।

नेहा ने दरवाजा बन्द किया और मुड़ी तो विशाल कपूर उसकी तरफ मुंह किए खड़ा था।

"नाराज हो?" खिलौनों वाला हाथ उसकी पीठ के पीछे ले जाकर उसे अपने साथ लगाते हुए बोला वह।

"हटो...।" नेहा उसे पीछे धकेलते हुए आगे बढ़ी और बेडरूम में प्रवेश कर गई।

भीतर बेड पर गुड़िया और मुन्ना सो रहे थे।

कमरे में कागज की झंड़ियाँ लटक रही थीं। दीवारों पर कागज के लम्बे स्प्रिंगदार झूमर लटक रहे थे, जो कि पंखे की हवा से झूमते हुए नजर आ रहे थे।

एक तरफ एक बड़ी टेबल पर कटा हुआ केक रखा था...। टेबल फूलों से सजी हुई थी।

टेबल के दाईं तरफ दीवार से लगा कर पांच कुर्सियाँ लगी हुई थीं।

साफ नजर आ रहा था कि जन्म-दिन मनाया जा चुका है और सभी मेहमान अपने-अपने घर जा चुके हैं।

विशाल कपूर ने खिलौने बेड पर एक तरफ रखे और बेड के करीब खड़ी नेहा के करीब आ खड़ा हुआ।

“अभी भी नाराज हो...।” वह उसकी कमर में हाथ डाल उसके फूले हुए पेट को अपने पेट से लगाते हुए बोला।

"पता भी है—गुड़िया केक नहीं काट रही थी...। वह कह रही थी कि जब तक पापा नहीं आयेंगे, केक नहीं काटूंगी...। आशा और राकेश भी बुरा मान गए थे।"

विशाल कपूर ने उसकी पीठ पर हाथ बांध उसे अपने साथ लगाया और उसकी आंखों में झांकते हुए बोला—"यह तुम्हारी ही प्रेरणा है नेहा—जो कानून की सेवा कर रहा हूं—समाज की आंखें खोल रहा हूं...। तुम्हीं ने कहा था कि सबसे पहले देश, फिर कानून और फिर अपना घर...।"

"इस देश में एक घर तुम्हारा भी है विशू...जहां तुम्हारे बच्चे...तुम्हारी पत्नी रहती है। इस देश के कानून में यह भी दर्ज है कि अपने परिवार की देख-रेख करने की जिम्मेदारी परिवार के मुखिया पर होती है। मैं तुमसे यह तो नहीं कह रही कि तुम घर में ही बैठ जाओ। मैं तो यह कह रही हूं कि अपने काम के साथ-साथ अपने घर के फर्ज को भी निभाओ...। कुछ वक्त अपने परिवार के लिए भी दो।"

"सॉरी...।" मुस्कुराया विशाल कपूर और नेहा के होंठ चूम लिए।

"सॉरी मुझे नहीं—गुड़िया को कहो...। तुम्हारा इंतजार करते-करते सो गई।"

विशाल कपूर ने हल्के-से नेहा के उभारों को दबाया और फिर बेड पर सो रही गुड़िया के करीब आ कर झुका और गुड़िया को उठा कर उसे चूम कर बोला—

"हैप्पी बर्थ डे टू यू, माई गुड़िया...।"

नींद में गुड़िया पहले तो कुनमुनाई—फिर उसने आंखें खोल दीं।

"देखो...पापा अपनी गुड़िया के लिए कितने खिलौने लाये हैं...।"

कहते हुए उसने बांये हाथ से खिलौने उठा कर गुड़िया को दिखाये।

नींद से बोझिल आंखों से गुड़िया ने खिलौने देखे तो वह खुश हो गई।

तुरन्त उसने दोनों हाथों से खिलौने पकड़े और बोली—

"पता है पापा...मौसी क्या गिफ्ट लाई थीं?"

अपने पापा को उलाहना देना ही भूल गई थी वह।

"क्या लाईं थीं?" आंखें फैलाये हुए बोला विशाल कपूर।

गुड़िया उसकी बांहों से फिसल कर बेड से उतरी और बेड के परली तरफ जा कर उतरी और एक बड़ा डिब्बा उठाकर बेड पर रखते हुए बोली—

"ट्रेन है यह पापा...।"

"ट्रेन...।" आश्चर्य व्यक्त करते हुए बोला विशाल कपूर।

"हां...इसमें छह बोगी हैं...और लाईटें भी जलती हैं। सीटी भी बजती है।"

"अच्छा...।"

"चला कर दिखाऊं...?"

"दिखाओ...।"

गुड़िया ने डिब्बा खोल कर डिब्बे में से पहले पटरियां निकाल कर बेड पर ही बिछाईं, फिर उस पर ट्रेन रख कर बटन दबा दिया।

ट्रेन पटरियों पर दौड़ने लगी।

“अरे वाह! तुम्हारी मौसी तो बहुत बढ़िया गिफ्ट लाई है।”

“आपके गिफ्ट भी अच्छे हैं।” गुड़िया ऐसे बोली जैसे अपने बाप का दिल रख रही हो।

“अब अपने पापा को केक खिलाओ...।”

तुरन्त गुड़िया बेड से उतरी और कागज की प्लेट में केक का बड़ा टुकड़ा रख कर ले आई।

विशाल कपूर ने गुड़िया को गोद में बिठा कर पहले गुड़िया को थोड़ा-सा केक खिलाया और फिर बाकी का केक खुद खाने लगा।

दस मिनट बाद ही गुड़िया उसकी गोद में ही सो गई।

“खाना खाया...?” तभी नेहा ने पूछा।

“वक्त ही कहां मिला...।” बोला विशाल कपूर—“पहले खाना खाऊंगा...फिर तुम्हें...।” कहते हुए उसने बाईं आंख दबाई।

नेहा के चेहरे पर शर्म की लाली फैल गई।

“अब तो सब्र कर लिया करो...।” वह अपने पेट पर हाथ फेरते हुए बोली।

“सब्र तो अब मर कर ही होगा। जीते जी तो छोड़ूंगा नहीं तुम्हें...।”

“मरे तुम्हारे दुश्मन...।” गुस्से से बोली नेहा—“खबरदार जो अब ऐसी बात की तो...।”

“खाना मिलेगा?”

“हाथ धोओ—मैं खाना गर्म करती हूं।”

कह कर नेहा बाहर निकल गई।

विशाल कपूर ने गुड़िया को आहिस्ता से गोद से निकाल कर बेड पर लिटाया। उसकी ट्रेन को डिब्बे में डाला और फिर हाथ धोने के लिए कमरे से बाहर निकल गया।

¶¶

रमन ने साइकिल स्टैण्ड से अपनी बाइक हासिल की और स्टैंड से निकल कर बाहर आ गया। यहां उसकी पत्नी खड़ी उसका इंतजार कर रही थी।

उसका लाल जोड़ा—बांहों में लाल चूड़ा—हाथों में लगी मेंहदी तथा खूबसूरत चेहरे पर फैली शर्मोहया की लाली ही बता रही थी कि हाल ही में रमन और वह शादी के सूत्र में बंधे हैं।

खुद रमन भी चमक रहा था और उसके चेहरे पर वैसी ही चमक थी—जैसी नवविवाहित के चेहरे पर होती है।

'फन' में दोनों नाइट शो देख कर निकले थे।

रमन के बाइक रोकते ही उसकी पत्नी उसके पीछे सट कर बैठ गई और उसकी बगल के नीचे से बांह निकाल उसके सीने पर हाथ रख दिया।

इस उम्र में सिर्फ स्पर्श ही लड़के-लड़की में एक सुखद अनुभूति ला देता है। दोनों के खून की गर्दिश तेज हो जाती है।

और उनकी शादी को तो अभी सिर्फ दो दिन हुए थे—ऐसे में युवती का रमन के साथ सटना ही रमन को हवाओं में उड़ाने लगा था।

उसकी पत्नी जिसका नाम कामना था...के उभार उसकी पीठ में धंसते हुए उसे बहुत अच्छे लग रहे थे।

रमन ने बाइक आगे बढ़ाई और बोला—

"फिल्म कैसी लगी....?"

"तुम्हें कैसी लगी....?" पीछे बैठी कामना बोली।

"मैंने देखी ही कहा...।" गहरी सांस छोड़ी रमन ने—"सारा वक्त तुम्हें ही देखता रहा—या तुम्हें हाथ लगाता रहा...।"

कामना हंस पड़ी। और हंसते हुए बोली—"घर पर चल कर सारी कहानी सुना दूंगी।"

"न बाबा न—कहानी सुनकर मुझे अपनी रात खराब नहीं करनी...।"

कामना पुनः खिलखिला उठी।

"कल की रात कैसी बीती थी...?" तभी रमन बोला।

"हुश्त...।" पीछे बैठी कामना और भी सटते हुए शर्म भरे लहजे में बोली—"ऐसी बातें नहीं पूछते और...आ...ह...।"

हल्की-सी चीख निकल गई उसके होंठों से।

बाइक चला रहे रमन को एक तेज झटका लगा और बाइक तेजी से लहराई।

पीछे से किसी गाड़ी की टक्कर लगी थी बाइक को।

दोनों पति-पत्नी सड़क पर गिर पड़े और बाइक दूर तक घिसटती चली गई।

रमन का सिर जोरों से सड़क से टकराया और वह बेहोशी की गर्त में डूबता चला गया।

बेहोश होते-होते उसने बस इतना ही देखा था कि एक कार खड़ी हो रही थी। उससे आगे क्या हुआ—उसे नहीं पता चला।

कार में से तीन आदमी निकले थे, जो कि सीधे कामना की तरफ लपके थे।

आनन-फानन उन्होंने कामना को उठाया और कार में डाल कर यह जा वो जा....।

¶¶

चेहरे पर गीलेपन का आभास होने पर रमन ने हड़बड़ा कर आंखें खोलीं तो एक आदमी को अपने चेहरे पर छींटें मारते पाया।

उसके बायें हाथ में पानी का गिलास था और आठ-दस आदमी उसके चारों तरफ खड़े थे।

कुछ पलों तक तो वह खाली नजर से सबको देखता रहा—फिर वह हड़बड़ा कर उठ बैठा।

उठते ही उसके सिर में तेज दर्द हुआ-मगर दर्द की परवाह किए बिना वह चीखा—"कामना....।"

सुनकर उसे होश में लाने वाला चौंका।

"कामना कौन है, बेटे?" वह बोला।

"मेरी पत्नी है कामना—वो बाइक पर मेरे साथ थी—जब किसी ने पीछे से टक्कर मारी थी...।"

"हमें तो तुम सड़क पर अकेले ही मिले थे बेटे...।" हैरान होते हुए बोला वह आदमी—"इन भाई साहब का घर यही है...।
इन्हीं की मदद से हम तुम्हें इनके घर में ले कर आये हैं। सड़क पर तुम्हारी बाइक के अलावा और कुछ नहीं था।"

"ह...हम दोनों फिल्म देख कर आ रहे थे।" रुआंसा-सा बोला रमन।

“लगता है इसकी पत्नी को किसी ने किडनैप कर लिया है....।“ एक अन्य बोला।

“न....हीं......।” कांप उठा रमन।

“मुझे भी ऐसा ही लगता है....।” दूसरा बोला—“अगर वो होती तो हमें नजर न आती क्या....। और अगर कोई उसे अस्पताल ले गया है—तो वो इसे भी तो ले जाता।”

सुन कर रमन का कलेजा धाड़-धाड़ करता उसकी पसलियों से टकराने लगा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह करे तो क्या करे?

जब उसे कुछ नहीं सूझा तो उसकी आंखों से आंसू बहने लगे।

“रोओ नहीं, बेटे....।” उसे होश में लाने वाला कंधे पर हाथ रखते हुए दिलासा भरे स्वर में बोला—“हो सकता है वह घर से तुम्हारे लिए सहायता लेने गई हो....। घर कहां है तुम्हारा?”

"करतार....कालोनी में....।" आंसू बहाते हुए बोला वह, फिर जेब टटोल कर उसमें से मोबाइल निकाला और अपने घर फोन करने लगा।

और जो जवाब उसे घर से मिला, उसे सुनकर उसके आंसू और भी तेज हो गए।

"मेरी कामना घर नहीं पहुंची....।" वह रोते हुए बोला।

"उसका किडनैप ही हुआ है.....।" एक व्यक्ति बोला—"पिछले दो महीने से यह अपहरण की सातवीं वारदात है। अपहरण होता है और चार-पांच दिन बाद उस लड़की की लाश मिल जाती है। और हर बार पोस्टमार्टम में यही आता है कि अपहरण होने वाली के साथ बुरी तरह से रेप किया गया है।"

सुनकर रमन की हड्डियां तक कांपने लगीं।

"और पुलिस अभी तक कुछ भी नहीं कर पा रही।" एक बोला।

"हौसला रखो बेटे...।" रमन के साथ बैठा व्यक्ति बोला—"ऊपर वाले ने चाहा तो सब ठीक होगा—तुम थाने जाकर रिपोर्ट दर्ज कराओ।"

"म.....मेरे पापा आ रहे हैं यहां....। उनके आने के बाद जाऊंगा....।" रोते हुए बोला रमन।

उसकी आंखों के सामने कामना का गुलाब-सा खिला चेहरा नाच रहा था।

¶¶

थाने के ऑफिस की टेबल पर स्कॉच की बोतल रखी थी। साथ में एक प्लेट में तंदूरी चिकन रखा था...।

एक प्लेट में हड्डियां पड़ी थीं और इंस्पेक्टर शम्भूनाथ केलकर पैग को झूमते हुए उठा रहा था—जब रमन अपने पिता और बड़े भाई के साथ उसके ऑफिस में प्रविष्ट हुआ।

पैग पकड़े हुए शम्भूनाथ ने तीनों बाप-बेटों को नशे में डूबी आंखों से देखा और झूमते हुए बोला—

"क्या है...?"

"मेरी पुत्रवधु का अपहरण हो गया है साहब...।" मन-ही-मन कुढ़ते हुए बोला पिता।

"तो...?"

"अभी दो दिन ही हुए हैं मेरे बेटे की शादी को...।" पिता ने रमन के सिर पर हाथ रखा—"कुछ कीजिये, सर।"

शम्भूनाथ ने पैग हलक में उड़ेला और टेबल पर रखी घण्टी को बजा कर प्लेट में से लेग पीस उठाया और उसे दांतों से उधेड़ने लगा।

शीघ्र ही एक सिपाही भीतर दाखिल हुआ।

"सर...।"

शम्भूनाथ ने सुर्ख आंखों से उसे घूरा और गुर्राया—"साले हरामी—रात के वक्त क्यों आने दिया तूने किसी को?"

“वो सर...।”

“मुन्शी के पास ले जा इन्हें...।” कहकर उसने हाथ से तीनों बाप-बेटों को बाहर निकलने का इशारा किया।

बुरी तरह से हड़बड़ाते हुए तीनों सिपाही के साथ बाहर निकले और करीब ही बने एक कमरे में प्रवेश कर गए—जहां का माहौल वैसा ही था—जैसा इंस्पेक्टर के ऑफिस का माहौल था।

चार सिपाही बैठे शराब पी रहे थे। एक तरफ टेबल पर दोनों बांहें बांधे एक हवलदार बांहों पर माथा रखे सो रहा था।

“मुन्शी जी...।” सिपाही करीब आकर टेबल को ठकठकाते हुए बोला।

हवलदार जो कि मुन्शी था—ने सिर ऊपर उठाया और आंखें मिचमिचाते हुए पहले तीनों बाप-बेटों को देखा, फिर सिपाही को देखने लगा।

"यह रिपोर्ट लिखवाने आये हैं। साहब ने आपके पास भेजा है।" सिपाही ने तीनों की तरफ इशारा करते हुए कहा।

मुन्शी ने बाप पर नजर गड़ाई।

"म-मेरी पुत्रवधु का अपहरण हो गया है...।" भर्राये गले से बोला पिता।

"कब...?"

"दोनों फिल्म देखकर आ रहे थे...कि पीछे से किसी ने टक्कर मार दी...जिससे मेरा बेटा बाइक से गिर कर बेहोश हो गया और कोई मेरी पुत्रवधु को अगवा कर ले गया।"

मुन्शी ने रमन को देखा—फिर पुनः बाप को देखते हुए मुंह बनाते हुए बोला—

"साले खुद ही गलतियां करते हो—फिर यहां रोने आ जाते हो...। क्या जरूरत थी अपनी बहू और बेटे को नाईट शो पर भेजने की?"

तीनों बाप-बेटे हक्के-बक्के से उसे देखने लगे। उन्हें समझ नहीं आया कि वे उसके इस उल्टे सवाल का जवाब क्या दें।

“अब ऐसे क्या देख रहा है? कौन ले गया तेरी बहू को?”

“अ...अब हमें क्या पता मुन्शी जी...?” घिघियाया-सा बोला बाप।

“यह भी तो हो सकता है कि वो अपने किसी यार के साथ खुद ही चली गई हो?”

तीनों बाप-बेटों के चेहरे अपमान से सुर्ख हो उठे।

कहां वे वहां फरियाद ले कर आये थे और कहां वे अपमानित हो रहे थे।

“वो...ऐसी-वैसी लड़की नहीं है...।” आखिर रमन हिम्मत करके बोला।

“तू उसके भीतर घुसा हुआ है क्या—जो तू उसके बारे में जानता है? अपनी बीवी के लापता होने की रिपोर्ट लिख दे।”

"ल...लेकिन उसका अपहरण हुआ है...।" बोला रमन।

"बकवास मत कर—क्या किसी ने देखा है उसे उठा कर ले जाते हुए? लापता होने की रिपोर्ट लिख दे—तफ्तीश शुरू की जायेगी।"

मरता क्या न करता!

रमन ने कामना के लापता होने की रिपोर्ट लिख दी।

जिस तरह से पुलिस उनसे पेश आई थी—उससे उन्हें वहां से किसी भी परिणाम की उम्मीद नहीं थी।

¶¶

चेहरे पर पानी के छींटे पड़ते ही कामना ने हड़बड़ाते हुए आंखें खोलीं तो अपने सामने निशांत और प्रकाश को खड़े देखा। उसका चेहरा पीला पड़ गया।

दोनों सिर से पांव तक निर्वस्त्र थे। पूरी तरह से बेलिबास।

कामना ने तुरन्त मुंह परे किया और तेजी से जैसे ही उठने को हुई—उसकी सिर्फ गर्दन ही उठ सकी।

बेड से बंधी हुई थी वह।

घिग्गी बंध गई कामना की...। और जब उसने गर्दन उठा कर अपना बदन देखा तो उसका रोयां-रोयां कांप उठा।

उसके बदन पर से सारे कपड़े उतरे हुए थे और वह पूरी तरह से बेलिबास थी।

उसकी टांगें चौड़ी हो रही थीं—और दो रस्सियां उसके टखनों से बंध कर बेड के पायों के साथ बंधी थीं।

ऐसे ही उसकी बाहें फैल कर उसके सिरहाने वाले पायों के साथ रस्सियों से बंधी हुई थीं।

वह या तो अपनी कमर ऊपर-नीचे कर सकती थी—या फिर अपनी गर्दन हिला सकती थी। बस और कुछ नहीं कर सकती थी।

लेकिन फिर भी वह अपनी इज्जत बचाने के लिए संघर्ष करने लगी।

मगर रस्सियां खुलने की बजाये और कस गईं।

“कर ले...थोड़ी और कोशिश कर ले, जानेमन...।” निशांत हंसते हुए बोला—“हो सकता है कामयाब हो जाये...।”

“अगर चीखना चाहती है तो चीख कर भी देख ले।” प्रकाश उसकी कमर के करीब बैठ कर उसके उभारों को भींचते हुए बोला—“मगर तेरी चीख इस कमरे से बाहर नहीं जा पायेगी; क्योंकि यह कमरा पूरी तरह से साउंडप्रूफ है।”

“नहीं...।” रोने लगी कामना—“मैं किसी की ब्याहता हूं...। भगवान के लिए मुझे छोड़ दीजिये...।”

“घबरा नहीं, जानेमन...।” निशांत उसकी जांघों पर हाथ फेरते हुए बोला—“बस दो-चार दिन तू हमारी कैद में रहेगी...। हमें खुश करेगी...। फिर तेरे को छोड़ दिया जायेगा। अब तू आराम से हां कर या न कर— इज्जत तो तेरी लुट कर ही रहेगी। क्योंकि हमने अपने बाप आत्माराम से यही सीखा है कि हाथ आई चीज

को तभी छोड़ो जब उससे मन भर जाये...। और किसी एक लड़की से हमारा मन तीन-चार दिन में ही ऊब जाता है।"

"नहीं...म...मैं अपनी जान दे दूंगी...लेकिन अपनी इज्जत नहीं गंवाऊंगी।"

"इज्जत तो तेरी लुट कर ही रहेगी, मेरी जान...।" प्रकाश ने उसके पेट पर हाथ फेरते हुए कहा—"रही बात जान देने की तो तेरी मौत से न तो हमें कोई फर्क पड़ेगा—न ही हमारा कुछ बिगड़ेगा।"

"यार, वक्त क्यों खराब कर रहा है। चल जुट जा—आज पहल तेरी है।" निशांत प्रकाश से बोला—"चल खड़ा हो और शुरू हो जा।"

प्रकाश तुरंत उठा और बेड पर चढ़ कर कामना की फैली टांगों के बीच आ बैठा।

"नहीं...।" चीख उठी कामना—"दूर रह मुझसे कुत्ते—कमीने...छोड़ दे मुझे।"

मगर उसकी चीख किसी काम नहीं आई।

प्रकाश उस पर छाता चला गया।

कामना और भी जोर से चीखने लगी। वह अपने कूल्हे हिला-हिला कर खुद को बचाने की कोशिश करने लगी।

मगर उसकी कोई कोशिश कामयाब नहीं हुई।

सहसा ही उसके होठों से चीख उबल पड़ी। उसे ऐसा महसूस हुआ—जैसे कोई धधकता ज्वालामुखी उसमें समा गया हो। उसकी आंखें बाहर को उबल पड़ीं।

लेकिन उस दरिंदे को उस पर जरा भी दया नहीं आई।

वह रोती रही—चीखती रही—रहम की भीख मांगती रही; मगर वे बहरे बने उसकी इज्जत लूटते रहे।

बार-बार लूटते रहे।

सुबह चार बजे जब वे दोनों वहां से गए तो कामना बेहोशी की हालत में थी।

उसका पूरा बदन फोड़े की तरह दु:ख रहा था।

¶¶

"हां बोलो पाण्डुरंग—कोई खास खबर है क्या...?"

"रात फिर एक अपहरण हो गया।"

बुरी तरह से चौंक उठा विशाल कपूर।

सुबह साढ़े सात बजे उसके मोबाईल की घण्टी बजी थी। दूसरी तरफ से सिपाही पाण्डुरंग ने उसे उसके ऑफिस में पहुंचने को कहा था।

फोन सुनकर ही विशाल कपूर समझ गया था कि कोई गम्भीर बात हो गई है। सो पन्द्रह मिनट में ही फ्रैश होकर वह घर से निकल गया और आधे घण्टे बाद वह अपने ऑफिस में था।

ऑफिस में अपनी कुर्सी पर नहीं बैठा था वह—बल्कि पीछे बनीं सीढ़ियां चढ़ कर ऑफिस के ऊपर बने कमरे में जा पहुंचा था।

पाण्डुरंग थाने में उसका एक तरह से जासूस था...। जो उसे खबरें देता रहता था...। बाकी खबरों की जांच खुद विशाल कपूर करता था। ऐसे में पाण्डुरंग बहुत सम्भल कर, किसी की नजर में आये बिना उससे मिलता था।

इसीलिए विशाल कपूर आया था।

करीब बीस मिनट बाद सर्दी में पाण्डुरंग ऊपर वाले कमरे में आया और दरवाजा बन्द करके विशाल कपूर के सामने रखी एक कुर्सी पर बैठ गया।

"किसका अपहरण हुआ...।" विशाल कपूर ने चौंकते हुए पूछा।

"कामना नाम है उस लड़की का—जिसकी रमन से सिर्फ दो दिन पहले शादी हुई थी...। वह दोनों फिल्म देख कर आ रहे थे, तो उनकी बाइक को पीछे से किसी ने टक्कर मार दी। जिससे दोनों बाइक से गिर पड़े और बेहोशी से जब रमन उठा तो कामना गायब थी।"

"कहां रहता है रमन...?"

"पटेल नगर में। तीन सौ चार नम्बर मकान है उसका।"

"रिपोर्ट दर्ज कराई रमन ने?"

"अपने बाप और भाई को लेकर पहुंचा था थाने। उस वक्त इंस्पेक्टर भीतर बैठा पी रहा था—फिर मैंने उन्हें भीतर भेज दिया, जिससे कि मेरे को उसकी गालियां सुननी पड़ीं...। फिर उसके हुक्म से मैं उन्हें मुन्शी के पास ले गया, जहां मुन्शी ने अपहरण की रिपोर्ट लिखने से मना कर दिया....।"

"क्यों...?"

"लापता होने की रिपोर्ट लिखी उसने—यह कह कर कि वह अपने किसी यार के साथ गई हो सकती है। रिपोर्ट भी सिर्फ कागज पर लिखवा कर ले ली...। अब तुम समझते ही हो कि" पाण्डुरंग ने गहरी सांस छोड़ी—"ऐसी रिपोर्टों में से पचास प्रतिशत तो रद्दी की टोकरी में पहुंच जाती हैं। सिर्फ उन्हीं रिपोर्टों को

सम्भाला जाता है, जिनकी रिसीव दी जाती है—क्योंकि उनका सुबूत रिपोर्टकर्ता के पास होता है।”

कहकर पाण्डुरंग चुप हुआ तो विशाल कपूर ने एक गहरी सांस छोड़ी।

“तुम्हारे थाने के इलाके की यह इस महीने की तीसरी घटना है...।” वह गम्भीरता से बोला—“जिनमें से दो की लाशें बरामद हो चुकी हैं। और अब कोई पता नहीं कि तीसरी की भी लाश मिले। और पिछली दोनों लाशों की पोस्टमार्टम रिपोर्ट में यही आया है कि उनके साथ वहशियाना ढंग से बलात्कार किया गया था। फिर गला घोंट कर उनकी हत्या की गई थी।”

“और पुलिस अभी तक उन दोनों के हत्यारों को नहीं खोज पाई।” पाण्डुरंग दु:खी रूप से बोला—“और मेरे से लिखवा लो, कि हत्यारा कभी पकड़ा भी नहीं जायेगा।”

“यह...यह क्या कह रहे हो तुम...?”

“मैं ठीक कह रहा हूं विशू...।” पाण्डुरंग की जैसे आत्मा ही रो रही थी —“जो पुलिस ऐसे और पहुंच वालों के तलवे चाटती हो—शाम होते ही शराब में डूब जाती हो—अपने फर्ज को न समझती हो—वो भला अपराधियों को क्या पकड़ेगी? कसम से, कई बार तो दिल करता है कि दे दूं इस्तीफा इस नौकरी से और कोई छोटी-मोटी दुकान खोल लूं...। लेकिन फिर यह सोचकर अपना इरादा त्याग देता हूं कि दुकान के लिए पैसा कहां से लाऊंगा? बच्चे कहां से पालूंगा...?”

विशाल कपूर ने बांह लम्बी करके उसके कंधे पर थपकी दी और गम्भीर लहजे में बोला—

“हिम्मत मत हारो पाण्डु—जुर्म की उम्र लम्बी नहीं होती...। देख लेना—कभी न कभी ऐसा मसीहा आयेगा जो जुर्म को तहस-नहस करके रख देगा। तुम अपना फर्ज निभाते रहो।”

“मैं तो निभा ही रहा हूं—अब तुम भी अपना फर्ज निभाओ...।”

"वो तो मैं निभाऊंगा ही...। तुम्हारे थानेदार की उतार कर न रख दी तो कहना...।"

कहते हुए उसका चेहरा सुर्ख हो उठा। मगर तुरन्त ही उसने स्वयं को सम्भाला और बोला—"पिछले दोनों अपहरण की रिपोर्ट भी लापता के रूप में लिखी गई थीं न?"

"हां...।"

"फिर तो मैं शर्तिया कह सकता हूं कि शम्भूनाथ को पता है कि अपहरण करने वाला कौन है...।"

"वो तो मैं भी जानता हूं। पिछली बार जब अपहरण हुआ था तो दो रोज बाद कुण्डू आया था इंस्पेक्टर से मिलने...। मेरी ड्यूटी तो इंस्पेक्टर के ऑफिस के बाहर होती है। तब मैंने उसकी पैन्ट की जेबें नोटों से फूली देखी थीं। और जब वह बाहर निकला था तो उसकी जेबें खाली थीं।"

सुनकर विशाल कपूर के माथे पर बल पड़ गए।

"कही तुम यह तो नहीं कहना चाहते कि कुण्डू ने ही पीछे वाले अपहरण किए थे?"

"वो मेरे को नहीं पता—हो सकता है वह किसी और सिलसिले में इंस्पेक्टर को रिश्वत देने आया हो...।"

"तुम नजर रखना। अगर अब कुण्डू आये तो बताना।"

पाण्डुरंग ने सिर हिला दिया।

कुण्डू को जानता था विशाल कपूर—एक मामूली गुण्डा था वह; लेकिन उसकी महत्वाकांक्षा ऊंची थी। तभी तो वो राजनेताओं के चमचों का भी चमचा बना हुआ था।

विशाल कपूर खड़ा हुआ और दरवाजे की तरफ बढ़ गया। जबकि पाण्डुरंग वहीं बैठा रहा।

अब नीचे रास्ता साफ होने का सिग्नल मिलने पर ही उसे वहां से निकलना था।

सीढ़ियां उतर कर विशाल कपूर नीचे अपने ऑफिस में आया और चलता हुआ ऑफिस से बाहर आ खड़ा हुआ।

सड़क के दोनों तरफ अच्छी तरह से देख कर वह मुड़ा और टेबल पर रखे सफेद रंग के छोटे से रिमोट का बटन दबा दिया।

शीघ्र ही ऊपर से पाण्डुरंग उतरा और विशाल कपूर से अंजान बना बाहर निकल गया।

उसके जाते ही विशाल कपूर की आंखें सिकुड़ गईं।

कुछ पल वह सोचों में डूबा रहा—फिर उसने जेब से मोबाइल निकाला और अपने कैमरामैन को फोन करने लगा।

जिस वक्त विशाल कपूर रमन के घर पहुंचा—वहां कोहराम मचा हुआ था।

कामना के मां-बाप वहां थे और रमन तथा उसके मां-बाप से झगड़ा कर रहे थे—उनसे कोई सफाई देते नहीं बन रही थी।

तब विशाल कपूर ने वहां पहुंच कर बड़ी मुश्किल से कामना के मां-बाप को समझाया था कि कामना के अपहरण में रमन का कोई दोष नहीं—और फिर उसने रमन से कहा—

"अब आप मुझे सारी बात बतायें...।"

कैमरामैन ने अपना कैमरा आन कर दिया।

रमन ने सब कुछ कह सुनाया। उसने थाने में पहुंचने और वहां हुई अपनी बेइज्जती की बात बताई और यह भी बताया कि पुलिस ने कामना के लापता होने की रिपोर्ट ली है।

"आप मेरे साथ चलिए...।" विशाल कपूर बोला—"पुलिस को रिपोर्ट लिखनी ही पड़ेगी अपहरण की...।"

आवेश में भरी हुई थी उसकी आवाज।

११

"क्या पुलिस को अब तीसरी लाश का इंतजार है?" थाने में कम्पाऊंड के शम्भूनाथ के ऑफिस के बाहर विशाल कपूर कैमरे के सामने बोला—"क्योंकि पीछे जो अपहरण हुए थे, उनके बारे में भी पुलिस ने लापता होने की रिपोर्ट लिखी थी। मगर उन दोनों निर्दोष लड़कियों की सिर्फ लाशें ही मिली थीं। जिनके साथ बर्बरता से रेप करके उनका कत्ल किया गया था। क्या कामना का भी वही हाल होगा या उसकी खोज-खबर के लिए पुलिस कुछ हाथ-पैर भी हिलायेगी? आईये, इन प्रश्नों के उत्तर इंस्पेक्टर शम्भूनाथ से जानते हैं...।"

यह कहकर विशाल कपूर ने कैमरे की तरफ पीठ की और दरवाजे पर पाण्डुरंग के पास से होते हुए ऑफिस में प्रवेश कर गया।

पीछे-पीछे कैमरामैन दाखिल हो गया।

भीतर टेबल के पीछे अपनी कुर्सी पर शम्भूनाथ बैठा था। उसे पाण्डुरंग ने पहलें ही बता दिया था कि रिपोर्टर आया है—सो वह खुद को मानसिक तौर पर

तैयार कर चुका था।

कैमरामैन के पीछे-पीछे रमन—उसका बाप तथा भाई और कामना के मां-बाप थे।

विशाल कपूर ने कैमरे के सामने आकर माईक को अपने सीने से थोड़ा ऊपर उठाया और बोला—

"मेरे साथ इंस्पेक्टर शम्भूनाथ हैं—जिन पर रमन ने आरोप लगाया है कि रात साढ़े ग्यारह बजे जब वे अपनी पत्नी कामना के अपहरण की रिपोर्ट लिखवाने आये थे तो इंस्पेक्टर साहब शराब पी रहे थे और वे उनसे बद्तमीजी से पेश आये थे...। आप इस बारे में क्या कहेंगे इंस्पेक्टर साहब?"

"बकवास कर रहा है यह....। मैं उस वक्त राऊंड से वापिस ही लौटा था...।" हल्के से गुस्से का इजहार किया शम्भूनाथ ने—"मैं कोई शराब नहीं पी रहा था। झूठ...।" एक ही शब्द बोला शम्भूनाथ—"सच यह है कि रात को यह तीनों बाप-बेटे मेरे पास रमन की पत्नी कामना के लापता होने की रिपोर्ट लेकर आये थे...। मैंने इन्हें मुन्शी के पास भेज दिया था।"

कैमरा रमन की तरफ घूमा—"आप क्या कहते हैं...?"

"यह झूठ बोल रहे हैं। रात जब हम आये थे तो इस टेबल पर शराब की बोतल और मीट रखा था—और यह शराब पी रहे थे...। मेरे पापा ने जब इन्हें कामना के अपहरण की बात सुनाई तो इन्होंने बाहर खड़े सिपाही को बुला कर उसे गंदी गालियां बकीं और हमें मुन्शी के पास ले जाने को कहा...।"

"और मुन्शी ने अपहरण की रिपोर्ट लिखने से मना करते हुए यह कहा कि कामना अपने किसी यार के साथ भागी होगी...।"

रमन का बाप तैश भरे स्वर में बोला—"जिसका हमने विरोध किया तो हमें गालियां सुनने को मिलीं और फिर हमसे जबरदस्ती लापता होने की रिपोर्ट लिखवाई गई।"

"यह झूठ है...। इस थाने में किसी से बदसुलूकी नहीं की जाती है।" शम्भूनाथ गुर्राया।

“तो क्या अब आप अपहरण की रिपोर्ट लिखने को राजी हैं?“ बोला विशाल कपूर।

“हमें क्या इन्कार हो सकता है...? यह जैसी रिपोर्ट देंगे—हम वही दर्ज करेंगे।”

खोखले स्वर में बोला शम्भूनाथ।

“क्या उस रिपोर्ट पर कार्यवाई भी होगी?” विशाल कपूर चुभते स्वर में बोला।

“आप क्या समझते हैं—पुलिस नकारा है? वो हाथ धरे बैठी रहती है?”

“मैं ऐसा नहीं कह रहा—लेकिन पीछे जो दो लड़कियां लापता हुई थीं, उनकी लाशें ही पुलिस को मिली थीं। इससे तो ऐसा ही लगता है।”

“उनके कत्लों की जांच चल रही है।“ मुंह बनाया शम्भूनाथ ने ।

शम्भूनाथ की तरफ पीठ कर विशाल कपूर ने कैमरे की तरफ रुख किया और बोला—"भगवान करे दुनिया को कामना की लाश न देखनी पड़े—और पुलिस पूरी मुस्तैदी दिखाते हुए अपहरणकर्ता तक पहुंच जाये।

कैमरामैन शहिद के साथ मैं, विशाल कपूर, आर न्यूज।"

कहकर उसने कट किया और रमन को कामना की रिपोर्ट नये सिरे से लिखने को कहकर अपने कैमरामैन के साथ वहां से निकल गया।

¶¶

उस वक्त शाम के छह बजे थे—जब विशाल कपूर की जेब में रखे मोबाइल का म्यूजिक बजा था।

"डिग...डिग...डिग...।"

उस वक्त वह अपने ऑफिस के ऊपर बने कमरे में बिछे दीवान पर लेटा आराम कर रहा था।

उसने लेटे-लेटे ही जेब से मोबाइल निकाल कर कान से लगाया और बोला—"हैलो...।"

"विशू...।"

दूसरी तरफ से पाण्डुरंग की आवाज सुन वह एकदम से चौंकन्ना होते हुए बैठ गया।

"हां बोलो पाण्डु—कोई नई रिपोर्ट...?"

"कुण्डू आया था...। अभी दस मिनट पहले ही गया है...। मैं अपनी जगह दूसरे सिपाही को खड़ा कर टायलेट के बहाने वहां से हटा हूं...। इस वक्त मैं टायलेट से ही बोल रहा हूं।"

"कुछ पता लगा कि उसने शम्भूनाथ से क्या बात की थी?"

"नहीं—यह तो पता नहीं चला—मगर इतना तय है कि वह इंस्पेक्टर को पैसा दे कर गया है।"

"ठीक है—मैं देखता हूं कि मैं क्या कर सकता है...।"

कहकर उसने मोबाइल कान से हटा कर आंखों के सामने किया और कोई नम्बर मिला कर फिर से कान से लगा लिया।

"हैलो शामू...।" दूसरी तरफ से आवाज आते ही वह बोला—"मैं विशाल कपूर बोल रहा हूं...अरे आर न्यूज का रिपोर्टर...अब पहचाना...एक काम है तुमसे...हां पैसा मिलेगा...तुम्हारे इलाके में एक आदमी रहता है...कुण्डू नाम है उसका...हां वही...उसके बारे में पूरी जानकारी चाहिये—आज-कल वह किससे मिलता है—किसके लिए काम करता है—उसके पास कौन आता है—पूरी कुण्डली बनानी है उसकी...कब तक...ठीक है—पता चलते ही मुझे फोन कर देना...ठीक है।"

कह कर मोबाइल कान से हटा कर जेब में डाला और गहरी सोचों में डूब गया।

दूसरी तरफ से शामू ने उससे यह कहा था कि कुण्डू आजकल कॉफी पैसा खर्च करने लगा है—बाकी रिपोर्ट उसने कल शाम तक देने को कहा था।

अब वह यही सोच रहा था कि कुण्डू के पास इतना पैसा आता कहां से है?

क्या वह दो नम्बर का कोई धंधा करने लगा है—जिसमें उसके वारे-न्यारे होने लगे हैं...। और इसी धंधे के मद्देनजर वह शम्भूनाथ को रिश्वत देता था।

अगर ऐसा है तो फिर तो उसका कामना के अपहरण से कोई रिश्ता न हुआ।

"यह भी तो हो सकता है कि...।" उसके जेहन में नई बात उभरी—"वह दो नम्बर वाला धंधा अपहरण का ही हो? वह अपहरण करके लड़की को उस आदमी को देता हो—जो उसका मालिक है—और मालिक से उसे मोटा पैसा मिलता हो...।"

"देखते हैं शामू क्या रिपोर्ट देता है...।" उसने एक गहरी सांस छोड़ी।

¶¶

“प्रणाम नेता जी...।” उस अधगंजे व्यक्ति ने आगे बढ़कर आत्माराम के पैरों को छुआ—फिर उसके पैरों में ऐसे बैठ गया—जैसे वह अब कभी भी वहां से नहीं उठेगा।

कमरे में आत्माराम के अलावा निशांत और प्रकाश बैठे थे। उस वक्त वे किसी बात पर हंस रहे थे—जब उस अधगंजे ने कमरे में प्रवेश किया था।

आत्माराम ने उसके सिर के गंजे वाले हिस्से पर हाथ फेरा और बोला—

“अभी तेरे मतलब का मेरे पास कोई काम नहीं है, शामू...। घबरा नहीं—जब काम होगा—मैं तेरे से अवश्य बात करूंगा।”

“मैं आज काम के लिए नहीं आया, नेता जी...।” हाथ जोड़ते हुए बोला वह—जो कि शामू था।

“तो...?”

“आपको एक सूचना देने आया हूं...।”

"सूचना?" हल्के से चौंका आत्माराम—"कैसी सूचना? अभी डेढ़-दो घण्टा पहले आर न्यूज के रिपोर्टर विशाल कपूर का फोन आया था। मेरे से कुण्डू के बारे में पूछ रहा था कि वह कहां जाता है—क्या करता है—किससे मिलता है...।"

सुनकर आत्माराम के माथे पर बल पड़ गए।

"फिर...?"

"मैंने कह दिया कि दो दिन में उसे कुण्डू की सारी खोज खबर निकाल कर दूंगा।"

"कहीं तू उसी कुण्डू की बात तो नहीं कर रहा जो तेरे इलाके में रहता है...।"

"जी हां...।"

"तो फिर मेरे पास क्यों आया है...?" थोड़ा गुस्सा दिखाते हुए बोला आत्माराम—"उसकी खोज-खबर निकाल और जाकर बता उस रिपोर्टर को।"

शामू ने दांत दिखा दिए—"कैसी बात करते हैं आप, नेता जी—कुण्डू आपका आपका गुलाम है—उसने खुद मुझसे कहा था—ऐसे में मैं उसके खिलाफ कैसे बोल सकता हूं...?"

"यह क्या कह रहा है तू...?" हल्के से चौंकते हुए बोला आत्माराम —"मेरा उससे कोई रिश्ता नहीं—ऐसे आदमियों का भला मेरे पास क्या काम...? उसने झूठ बोला है तेरे से...। ठीक तरह से तसल्ली कर उसकी और रिपोर्ट दे दे रिपोर्टर को।"

शामू का मुंह उतर गया।

कहां तो वह सोच कर आया था कि आत्माराम उसे शाबाशी देते हुए अपनी सरपरस्ती में ले लेगा और कहां आत्माराम सिरे से ही मुकर गया था—जबकि उसे पक्का पता था कि कुण्डू उसी का गुलाम है।

मगर अपनी बात पर वह दावा भी तो नहीं जता सकता था!

गहरी सांस छोड़ते हुए वह खड़ा हुआ और हाथ जोड़ते हुए बोला —"अच्छा नेता जी...चलता हूं।"

"चक्कर लगाते रहना शामू—मुझे उम्मीद है कि जल्दी ही तुम्हारे लिए काम निकलेगा मेरे पास...।"

मुस्कुराते हुए बोला आत्माराम। शामू ने सिर हिलाया—आत्माराम के पैर छुए और दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

उसके बाहर निकलते ही प्रकाश बोल पड़ा—

"यह आपने क्या किया अंकल...? यह तो काम की खबर लाया था—और आपने उसे खाली हाथ भेज दिया?"

आत्माराम के होठों पर जहर भरी मुस्कान फैल गई।

उसने कुछ न कहते हुए सोफे के दाईं तरफ रखे शीशे के स्टूल पर रखे फोन का रिसीवर उठाया और कोई नम्बर मिला कर दूसरी तरफ से फोन उठाये जाने का इंतजार करने लगा।

शीघ्र ही दूसरी तरफ से आदर भरी आवाज आई—"हुक्म नेता जी।"

"शामू को जानता है...। जो कुण्डू के घर से कुछ दूर रहता है...?"

"जी हां, नेता जी। जानता हूं।"

"वो अपने घर नहीं पहुंचना चाहिये...। और कुण्डू को भी उसके साथ ऊपर भेज दे।"

"जो आज्ञा नेता जी।"

आत्माराम ने रिसीवर रखा और मुस्कुराते हुए निशांत और प्रकाश को देखा—जो आंखें फाड़े उसे देख रहे थे।

उनके चेहरों पर उलझनें थीं—और फटी आंखों में कई सवाल कौंध रहे थे।

"य...यह क्या गोरखधंधा है, पापा...?" आखिर पूछा निशांत ने—"शामू तो हमारे भले के लिए आया था—फिर उसे मारने का हुक्म क्यों...?"

"हां, अंकल—मारना तो कुण्डू को चाहिये...। लेकिन आपने तो शामू को भी उड़ाने का हुक्म दे दिया?"

प्रकाश भी बोल पड़ा।

आत्माराम के होठों पर रहस्य से भरी मुस्कान नाच उठी।

"यही तो है राजनीति, मेरे बच्चों...।" वह बोला—"शामू ने यहां आकर जिस तरह से बात की थी—उससे साफ नजर आ रहा था कि वह मेरे प्रति वफादार नहीं था—बल्कि वह काम के लिए यहां आया था...। यानि मुझ पर अहसान चढ़ा रहा था। ऐसा आदमी अपने फायदे के लिए कभी भी किसी को भी किसी को भी धोखा दे सकता है। हां—अगर यह मुझे बता कर चला जाता तो शायद मैं इसे छोड़ देता...। और अगर यह मेरे पास आने की बजाये कुण्डू के पास जाता और कुण्डू इसे लेकर मेरे पास आता तो फिर सिर्फ कुण्डू ही मरता और मैं इसे कुण्डू की जगह दे देता।"

दोनों को आत्माराम की कुछ बात तो समझ में आई—कुछ नहीं आई...।

"मगर फिर कुण्डू को मारने की क्या जरूरत है?" निशांत बोला—"जब शामू को मारने का हुक्म दिया है तो...।"

"वो विशाल कपूर की निगाह में आ चुका है। विशाल कपूर के बारे में मैं काफी कुछ जानता हूं...। वह एक बार जिसके पीछे पड़ जाये—उसकी तह तक पहुंच कर ही रहता है; इसीलिए उसका मरना तो बहुत ही जरूरी है।"

"ओह!"

"तुमने आर न्यूज पर देखा नहीं—किस तरह से उसने शम्भूनाथ को उस लड़की के अपहरण की रिपोर्ट लिखने को मजबूर कर दिया था...। और कुण्डू ने भी कह दिया था कि अब दो-तीन महीने तक शम्भूनाथ के एरिये से कोई लड़की नहीं उठेगी—शम्भूनाथ ने मना किया है।"

"तो फिर हम लड़की के बिना कैसे रहेंगे...?" प्रकाश ने मुंह बनाया।

"अरे, कैसी बात कर रहा है भतीजे...। एक इलाका बन्द होने से लड़कियों का अकाल तो नहीं पड़ जायेगा! बहुत बड़ी है मुम्बई...।"

"फिर ठीक है...।" खुश होते हुए बोला प्रकाश।

"मगर अभी कुछ रोज उसी छोकरी से ही काम चलाना...। मेरी बात अरब देश के एक शेख से चल रही है। अगर बात सिरे चढ़ी तो उस छोकरी को अरब में बेच दिया जायेगा...। और ऐसे ही आगे चलता रहेगा...। दो-चार दिन बरतो—फिर बेच दो..। उसको मारना भी नहीं पड़ेगा और कमाई भी होने लगेगी।"

सुनकर निशांत और प्रकाश के चेहरे खिल उठे।

"वाह...! यह बढ़िया रहेगा...।" निशांत बोला।

"अब तुम पैग लगाओ—खाना खाओ और जा कर उस छोकरी को खुश करो—जो बेड पर लेटी तुम्हारा इंतजार कर रही है।"

सुनकर दोनों हंस पड़े।

¶¶

"ट्रिन...न...न...न...।"

मोबाइल का म्यूजिक बजते ही कुण्डू ने जेब से मोबाइल निकाल कर कान से लगाया।

"हैलो...।" वह बायें हाथ से पैग उठाते हुए बोला।

कुण्डू करीब तीस साल का सख्त चेहरे वाला, आंखों से क्रूर नजर आने वाला व्यक्ति था।

उस वक्त वह अपने मकान में बैठा पैग लगा रहा था।

"जाकिर बोल रहा हूं...।"

दूसरी तरफ से जाकिर की आवाज सुनकर कुण्डू ने पैग वापिस टेबल पर रखा और बोला—"हुक्म जाकिर साहब...।"

"कहां से बोल रहा है?"

"घर में हूं, जाकिर साहब...।"

"अभी खड़ा हो और शामू के घर पहुंच जा...। अगर वह घर नहीं हो तो उसका इंतजार कर और जैसे ही वो आये—उसे खत्म कर दे।"

बुरी तरह से उछल पड़ा कुण्डू—"यह...यह आप क्या कह रहे हैं, जाकिर साहब...? शामू ने तो हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ा—वो तो इस लायक भी नहीं कि हमारा कुछ बिगाड़ सके—वैसे मैं...।"

"तेरे को सवाल करने कहां से आ गए, कुण्डू...?" दूसरी तरफ से गुर्राहट उभरी—"सवाल पूछने का मतलब जानता है तू...?"

कुण्डू का पूरा चेहरा पसीने-पसीने हो गया...। चेहरे पर बदहवासी उभर आई।

"स...सॉरी, जाकिर स...साहब...।" वह बुरी तरह से थर्राये स्वर में बोला।

"जो कहा है, वो कर...। और काम पूरा होने के बाद सीधे छावनी वाले ठिकाने पर पहुंच जाना...। वहां तेरे को दूसरा काम दिया जायेगा।"

"जो हुक्म जाकिर साहब।"

दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

कुण्डू ने मोबाइल कान से हटा कर जेब में डाला और टेबल पर रखा पैग उठा कर उसे एक ही सांस में खाली किया और खड़ा हो गया।

आस्तीन से होंठ पौंछते हुए वह बेड के करीब आया और झुक कर सिरहाने के नीचे से रिवॉल्वर निकाल कर पैन्ट की बैल्ट में फंसाई और शर्ट को ऊपर कर दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

¶¶

शामू ने बाइक अपने घर के दरवाजे के आगे रोकी और उसे साईड स्टैण्ड पर लगा कर अपने घर के मेन गेट के सामने आया और जेब से चाबी निकाल कर

ताला खोल कर दरवाजे को पूरा खोला और फिर बाइक के पास पहुंच कर उसे धकेलते हुए भीतर प्रवेश कर गया।

छोटा-सा मकान था शामू का...। सिर्फ पच्चीस गज का...।

जिसमें एक कमरा, किचन और बाथरूम था...। और बाइक खड़ी करने लायक छोटा-सा आंगन था।

मां-बाप से बस वही मकान विरासत में मिला था उसे...।

मगर उसकी महत्वाकांक्षायें काफी ऊंची थीं...। वह बड़े-बड़े बंगलों का ख्वाहिशमंद था। ठाठ की जिन्दगी जीना चाहता था...। सो अपने सपनों को पूर करने के लिए वह दो नम्बर के काम में घुस गया...।

पहले तो उसने घर में जुआ खिलाना शुरू किया...। मगर तीसरे ही रोज पुलिस का छापा पड़ गया।

बड़ी मुश्किल से जान छुड़ा पाया वह।

फिर उसके सुल्फे और गांजे को बेचने का धंधा किया।

उसमें वह साल भर तक बढ़िया कमाता रहा...। मगर साल बाद वह पुलिस के हत्थे ऐसा चढ़ा कि साल भर में उसने जो कमाया था—वो एक ही झटके में खत्म हो गया। पुलिस को सब कुछ देने के बाद ही उसकी जान छूटी...।

मगर उससे कुछ फायदा भी मिला।

वह दुनिया की निगाह में आ गया...। लोग अब उसे जानने लगे थे। और उन्हीं लोगों में वो भी थे जो दो नम्बर के धंधे करते थे..। सो वह उन्हीं में से एक के हत्थे चढ़ गया और फिर से पैसा कमाने लगा।

साथ ही अब उसे यह भी अक्ल आ गई कि गलत काम करना है तो पुलिस से बनाकर रखनी होगी।

छह-सात महीने में ही उसने फिर से बढ़िया कमा लिया...।

लेकिन उस कमाई का आधा हिस्सा तो वही ले गया—जिसके लिए वह काम करता था और बाकी बचे आधे में से आधा पुलिस को पूजना पड़ा।

अब वह अपने बांस से छुटकारा चाहता था...। और यह काम वह पुलिस के जरिये नहीं कर सकता था। आखिर पुलिस उससे भी तो खाती थी।

सो उसने अपने दिमाग का इस्तेमाल किया और फिर एक दिन विशाल कपूर से सम्पर्क करके उसे यह बता दिया कि आज रहीम नाम का व्यक्ति शिवाजी पार्क के पास एक व्यक्ति से आधा किलो स्मैक हासिल करेगा।

अब रिपोर्टर पुलिस को इन्फार्मेशन दे तो पुलिस को कार्यवाही करनी ही थी।

इस तरह विशाल कपूर की मदद से उसका बॉस पकड़ा गया—खबर टी○वी○ में भी आ गई थी, इसलिए पुलिस को उसके बॉस के खिलाफ पूरी कार्यवाही भी करनी पड़ी।

और इस तरह से वह खुद अपने दम पर काम करने लगा।

लेकिन शामू अपने दम पर वैसा काम नहीं कर पाया जैसा वह अपने बॉस के अण्डर रह कर करता था।

बस अपना खर्चा ही चला पा रहा था वह; लेकिन बीते वक्त में उसने अण्डरवर्ल्ड के बारे में काफी कुछ जान जरूर लिया था—और उसे पता चल गया था कि आत्माराम अण्डरवर्ल्ड की बहुत बड़ी तोप है।

वह उससे मिला ताकि वह उसकी सरपरस्ती में काम कर सके।

लेकिन आत्माराम ने उसे घास नहीं डाली—हां, पुचकार जरूर दिया था। और यह कहा था कि उसके मतलब का काम होगा तो वह उसे याद करेगा।

उसके बाद भी वह आत्माराम से मिलता रहा...। लेकिन हर बार उसे सांत्वना ही मिली।

आज तो उसे पूरी उम्मीद थी कि आत्माराम उसे अपनी शरण में ले लेगा; लेकिन आज भी उसे निराशा ही हाथ लगी।

तभी तो वह बुरी तरह से मायूस घर लौटा था।

बाइक को स्टैण्ड पर लगा कर वह मुड़ा और मेन डोर बन्द करने के लिए उधर बढ़ा।

अभी वह मेन डोर के करीब पहुंचा ही था कि तभी कुण्डू ऐन उसके सामने आ कर रुका।

उसे देख कर शामू पहले तो चौंका—फिर उसके होठों से एक गहरी सांस छूट गई। साथ ही वहीं रुक गया।

कुण्डू भीतर दाखिल हुआ और मुड़ कर दरवाजा बन्द करके कुण्डा लगाया और मुड़कर उसकी तरफ बढ़ते हुए बोला—"कहां से आ रहा है तू...?"

शामू कुछ नहीं बोला—बस मुड़ा और कमरे में प्रवेश कर गया—जहां सिंगल बेड लगा था तथा दो कुर्सियां और एक सेंटर टेबल रखी थीं।

आगे बढ़ कर वह एक कुर्सी पर बैठ गया।

"तूने बताया नहीं...कहां गया था तू...?" उसके पीछे-पीछे भीतर आ कर उसके सामने वाली कुर्सी पर बैठते हुए बोला कुण्डू—"और ऐसा क्या कर दिया

तूने—जो नेता जी तेरे से नाराज हो गए हैं?"

सुनकर बुरी तरह से चौंक उठा शामू।

"यह क्या कह रहा है तू? नेता जी मेरे से नाराज हो गए हैं? अरे, मैं तो उन्हें सावधान करने गया था।"

“सावधान...?"

“हां...वो आर चैनल का रिपार्टर विशाल कपूर तुम्हारे बारे में पूछ रहा था...।" उसने सारी बात कह सुनाई—फिर बोला—“अब बताओ—ऐसा क्या किया है मैंने—जो वो मेरे से नाराज हों?"

कुण्डू ने गहरी सांस छोड़ी और शर्ट उठाकर रिवॉल्वर खींच ली।

“जरूर तेरे मुंह से ऐसा कुछ निकला होगा"—वह उस पर रिवॉल्वर तानते हुए बोला—“तभी तो तेरे को खत्म करने का आर्डर मिला है।"

सुन कर शामू के होश ही उड़ गए।

"य...यह क्या कर रहा है तू, कुण्डू...?" वह बुरी तरह से कांपते हुए बोला।

"वही जो नेताजी का हुक्म है। मुझे तेरे को मारते हुए दु:ख तो हो रहा है...। लेकिन नेताजी का हुक्म नहीं ठुकरा सकता...। गुडबाई मेरे दोस्त...।"

मौत जब सामने हो तो इंसान तो क्या—चींटी भी बचने के लिए जद्दोजहद करती है।

शामू भी समझ गया कि अब उसका बचना नामुमकिन था—सो खुद को बचाने के लिए उसने बिना वक्त गंवाये कुण्डू पर छलांग लगा दी।

कुण्डू को उससे ऐसे दुस्साहस की उम्मीद हरगिज नहीं थी।

सो वह बुरी तरह से हड़बड़ा उठा और उसी हड़बड़ी में उससे ट्रिगर दब गया।

"धांय...।"

गोली शामू की बांह को झुलसाती निकल गई।

दूसरा फायर करने का मौका नहीं मिला उसे। उससे पहले ही शामू उस पर आ पड़ा और उसे लिए हुए कुर्सी समेत पीछे पलट गया।

नीचे गिरते ही कुण्डू के हाथ से रिवॉल्वर छूट गई—साथ ही उसके सिर का पृष्ठभाग नीचे फर्श से जा टकराया।

उसके ऊपर पड़े हुए ही शामू ने उस पर घूंसे बरसाने शुरू कर दिए।

कुण्डू के होठों से तेज कराहें फूटने लगीं।

तभी शामू का घुटना कुण्डू की रिवॉल्वर से टकराया तो उसकी गर्दन रिवॉल्वर की तरफ घूमी।

रिवॉल्वर पर नजर पड़ते ही उसने झपट कर उसे उठाया और खड़ा होकर रिवॉल्वर उस पर तानते हुए गर्राया—

"मुझे मारेगा तू, हरामजादे—मुझे मारेगा—अब तू मर!"

गुस्से में फुंफकारते हुए उसने ट्रिगर दबा दिया।

"धांय...धांय...धांय...।"

तीन गोलियां कुण्डू के जिस्म में और वो वहीं फर्श पर पड़ा-पड़ा ही ऊपर को रवाना हो गया।

मगर शम्भू का गुस्सा अभी भी शांत नहीं हुआ था।

नथुनों से लम्बी-लम्बी फुंफकारें छोड़ते हुए वह गुर्राया—

"आत्माराम, मैंने तो तेरी शरण में आना चाहा था...। मगर तूने मेरे को ही मारने का हुक्म दे दिया...। अब देख...मैं क्या करता हूं तेरे साथ।"

उसने रिवॉल्वर बेड पर फैंकी और जेब से मोबाइल निकाल कर विशाल कपूर का नम्बर मिलाने लगा।

"डिंग...डिंग...डिंग...।"

मोबाइल का म्यूजिक बजते ही विशाल कपूर ने नेहा के उभारों से मुंह निकाला और बैठ कर बेड की पुश्त पर रखे मोबाइल को उठा कर उसका हरा बटन दबाते हुए कान से लगा लिया।

उसके बैठते ही नेहा थोड़ा नीचे सरक कर खिलौने से खेलने लगी।

“हैलो...।” विशाल कपूर बोला।

“मैं शामू बोल रहा हूं, विशाल...।”

दूसरी तरफ से शामू की आवाज सुन कर विशाल कपूर के कान खड़े हो गए।

“हां बोलो, शामू...। कोई खास खबर है क्या?”

“कुण्डू, एम०एल०ए० आत्माराम का आदमी था...।”

“था...।” चौंका विशाल कपूर।

"हां...था...उसकी लाश मेंरे सामने पड़ी है...। मेंरे घर में...। मुझे खत्म करने आया था। आत्माराम के हुक्म पर...। लेकिन दांव मेरा चल गया। उसी की रिवॉल्वर से मैंने गोली से उड़ा दिया।"

"यह क्या कह रहे हो तुम...?" चौंकते हुए बोला विशाल कपूर।

"लालच इंसान को मौत के कितना करीब ला देता है, उसका पता मेंरे को अब चल रहा है। मेंरे को कुण्डू का पहले से ही पता था कि वह आत्माराम का गुलाम है...। मैं भी उसका गुलाम बनना चाहता था...सो...।"

दूसरी तरफ से शामू ने सारी बात कह सुनाई।

सुनकर विशाल कपूर सन्न रह गया।

"अब मुम्बई में मेंरे लिए कोई जगह नहीं रह गई, विशाल, इसलिए मैं यहां से जा रहा हूं...। क्योंकि अगर मैं यहां रहा तो आत्माराम के कुत्ते मुझे मार डालेंगे।"

"नहीं शामू, तुम भागना नहीं...। खुद को पुलिस के हवाले कर दो...।"

"तब भी नहीं बचूंगा, दोस्त—यहां की पुलिस भी तो उसकी गुलाम है। तुम उसकी ताकत नहीं जानते; लेकिन मैं जानता हूं कि वह कितना ताकतवर है।"

"लेकिन, शामू...।"

"मेरे पास इतना वक्त नहीं है...जो मैं तुमसे लम्बी बात करूं...गुडबाई।"

दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

एक गहरी सांस छोड़ कर विशाल कपूर ने मोबाइल बेड की पुश्त पर रखा और गम्भीरता से नेहा को देखा...। जो अब उसके सामने बैठी थी।

विशाल कपूर की बातें सुनकर ही वह समझ गई थी कि मामला गम्भीर था...। सो वह उसे छेड़ना छोड़ कर बैठ गई थी।

दोनों निर्वस्त्र थे; मगर उस वक्त दोनों के भीतर कोई आग नहीं उठ रही थी।

“कौन था फोन पर...?” पूछा नेहा ने।

उत्तर में विशाल कपूर ने उसे सारी बात कह सुनाई।

“फिर तो कामना का अपहरण अवश्य ही आत्माराम ने ही किया है।“ नेहा बोली।

“हो सकता है तुम ठीक कह रही होओ...लेकिन बिना सुबूत के इतने बड़े आदमी के खिलाफ कुछ नहीं बोला जा सकता।”

“तो सुबूत ढूंढो न...। ऐसे आदमी का यूं खुला रहना देश और समाज के लिए बहुत ही घातक होता है।”

“तुम ठीक कह रही हो...।” हौले से मुस्कुराया विशाल कपूर—“सुबह तक हो सकता है मैं कुछ ऐसा सोच लूं जिससे मुझे यह पता लग जाये कि कामना को उसने कहां कैद कर रखा है। फिलहाल तो तुम लेट जाओ...।”

कहते हुए उसने नेहा को आराम से बेड पर लिटाया और उसके अंगों पर हाथ फेरने लगा।

¶¶

"अरे...यह तो शामू बाहर निकल रहा है।"

शामू के घर से कुछ दूर एक अंधेरे स्थान पर छुपे दो आदमियों में से एक चौंकते हुए बोला।

"लगता है...शिकारी खुद ही शिकार हो गया...।" दूसरा बोला—"शामू ने कुण्डू को मार डाला है।"

"फिर क्या करें...?" पहला बोला।

"करना क्या है? मरना तो दोनों को था...। जिस तरह से शामू जल्दबाजी में है, उससे साफ नजर आता है कि यह भागने की फिराक में है। खत्म कर दो उसे।"

कहते हुए उसने रिवॉल्वर निकाल ली।

दूसरे ने भी रिवॉल्वर निकाल ली—दोनों अंधेरे का सहारा लेते हुए तेजी से शामू की तरफ बढ़े।

इस वक्त शामू अपने घर का दरवाजा बन्द कर बाइक पर बैठ रहा था...जब दोनों एक साथ उसके सामने आ खड़े हुए।

जैसे ही दोनों के रिवॉल्वर उसकी तरफ तने—शामू के होश फाख्ता हो गए।

उसके उड़े होश फिर वापिस नहीं लौटे।

धांय...धांय...धांय...।"

चार गोलियां उसके जिस्म में जा घुसीं और वह बाइक समेत वहीं गिर पड़ा।

वो दोनों जैसे प्रकट हुए थे...वैसे ही गायब हो गए।

कुछ ही देर में शामू की लाश के आस-पास लोगों की भीड़ जमा होने लगी।

¶¶

बेड पर बंधी कामना की हालत खराब हो रही थी।

चौबीस घण्टे हो गए थे उसे वैसे ही बंधे हुए। ऐसे में उसकी हालत का अंदाजा स्पष्ट लगाया जा सकता था।

एक ही पोजीशन में लेटे-लेटे उसका पूरा जिस्म दु:खने लगा था। ऊपर से वह कल से भूखी-प्यासी थी।

उसके कंधे और कूल्हे बुरी तरह से दु:खने लगे थे।

सुबह निशांत और प्रकाश के जाने के बाद से वह कई बार रोई थी।

रह-रह कर उसे अपने मां-बाप तथा रमन की याद आ रही थी—और जब भी याद आती, वह रोने लगती थी।

और अब तो रो-रो कर उसके आंसू भी सूख गए थे।

"खड़...खड़...।"

तभी बाहर से दरवाजा खुलने की आवाज आई तो उसने गर्दन उठाकर दरवाजे की तरफ देखा।

दरवाजा खुला...।

पहले प्रकाश भीतर दाखिल हुआ—फिर निशांत...।

निशांत ने मुड़कर दरवाजा बन्द किया और सिटकनी चढ़ा कर वापिस मुड़ा और बेड के दूसरी तरफ आ कर कामना के उभारों पर हाथ फेरते हुए धूर्तता से मुस्कुराया।

"अब तक काफी आराम कर चुकी हो तुम...।" वह बोला—"अब खेल खेलें...?"

कामना ने जोरों से थूक सटकी और बोली—

"म...मैं हार गई। इतनी तकलीफ नहीं सही जा रही मुझसे...। भगवान के लिए मुझे खोल दो।"

"अगर तू भाग गई तो...?"

"अब भाग कर जाऊंगी कहां...। मेरा पति मेरे को अपनाने से मना कर देगा...। मां-बाप को तो पहले ही छोड़ चुकी हूं। अब तो बस यहीं इसी कमरे में ही बाकी की जिंदगी गुजारने का फैसला किया है।"

"चालाकी तो नहीं खेल रही?"

"आप लोग दो हैं और मैं अकेली—वो भी बेलिबास...। ऊपर से कमरे में कैद...। क्या मैं भाग सकती हूं?"

निशांत ने प्रकाश की तरफ देखा।

"खोल दे...।" प्रकाश बोला—"अगर चालाकी खेलेगी तो फिर बांध देंगे।" प्रकाश बोला।

दोनों ने कामना के हाथ-पैर खोल दिए।

कामना कराहते हुए उठी और अपनी टांगों को मोड़ कर कंधों को दबाने लगी।

"मुझे भूख लगी है।" यह निशांत से बोली—"कल से पानी का घूंट तक नहीं पिया।"

"खाना लाये हैं हम तेरे लिए...।" प्रकाश बोला—"तेरे को मरने थोड़े ही देंगे हम...।"

कहते हुए उसने बेड के करीब फर्श पर रखे टिफिन को उठा कर उसके सामने रख दिया।

कामना ने एक नजर टिफिन पर डाली...। फिर बोली—

"मैं पहले फ्रैश हो लूं—फिर खाना खाऊंगी।"

"फ्रैश हमारे सामने होगी तू...।" निशांत सख्ती से बोला—"हम तेरे पर एतबार करके कोई रिस्क नहीं लेना चाहते।"

"मुझे कोई एतराज नहीं...।" कामना हल्के से मुस्कुराई।

और फिर वहीं कमरे में ही बने ज्वाइंट बाथरूम में वह दोनों के सामने फ्रैश हुई—नहाई भी...। और फिर बेड पर आकर उसने पेट भर कर खाना खाया।

बाकी बचे खाने को टिफिन में ही छोड़ कर उसने टिफिन बन्द किया और उसे उठा कर बेड के पहलू में फर्श पर रख सीधी होते हुए बोली—

"अब मैं पूरी ताकत से तुम दोनों से लड़ सकती हूं...। पहले कौन आयेगा?"

उसकी बात सुनकर दोनों की बांछें खिल गईं।

तुरन्त निशांत उसके सामने आया और बोला—"चल...पहले मेरे को खुश कर।"

कहते हुए वह अपने कपड़े उतारने लगा।

और फिर कामना दोनों को बारी-बारी से खुश करने लगी।

जैसे-जैसे वे कहते रहे... वैसे-वैसे वह करती रही...। अपनी तरफ से वह दोनों पर पूरा विश्वास जमाने की कोशिश करती रही।

सुबह तीन बजे तक दोनों दरिंदे उसके साथ जी भर के मनमानी करते रहे थे और वह उनके इशारों पर नाचती रही थी।

उसके बाद जाकर कामना को चैन की कुछ सांस नसीब हुई थी।

दोनों पर वह अपना विश्वास जमा चुकी थी। सो दोनों उसे बांध कर नहीं गए थे...। हां, बाहर से दरवाजा जरूर बंद कर गए थे।

उनके जाते ही कामना के चेहरे पर पहले तो पीड़ा उभरी—फिर उसकी आंखों में आंसू भरने लगे।

रोम-रोम दु:ख रहा था उसका...। पीड़ा इतनी थी कि उससे ढंग से बैठा भी नहीं जा रहा था।

मगर उसने अपने आंसुओं को आंखों से बाहर नहीं निकलने दिया...।

भीतर-ही-भीतर पी गई वह अपने आंसू और फिर सहसा ही उसके चेहरे पर चट्टान की सी सख्ती उभर आई।

"कमीनो...।" वह धीरे से फुंफकारी—"मेरी जिन्दगी तो बर्बाद कर दी तुमने...। मगर मैं किसी और की जिंदगी बर्बाद नहीं होने दूंगी...।"

उसने झटके से अपने पीछे छत की तरफ देखा।

छत से थोड़ा-सा नीचे रोशनदान बना हुआ था।

कुछ देर तक तो वह रोशनदान को देखती रही, फिर वह बेड से उठी और उस पर से चादर उठा कर गद्दे को उठाकर नीचे गिराया और फिर बेड आराम से धीरे-धीरे से खिसका कर इस तरह से दीवार के पास ले गई कि जरा भी आवाज न हो।

एक तो वो बेहद थकी हुई थी...। ऊपर से उसका पूरा शरीर दुःख रहा था और अब उसे भारी बेड उठाने के लिए मेहनत करनी पड़ रही थी।

कराहें फूटने लगीं उसके मुंह से।

उसे ऐसा लग रहा था कि वह बेड को खड़ा नहीं कर पायेगी।

मगर हिम्मत नहीं हारी उसने...। और वह अपनी पीड़ा को बर्दाश्त करते हुए अन्त में बेड को खड़ा करने में कामयाब हो ही गई।

पन्द्रह मिनट तक वह अपनी खोई हुई ताकत को इकट्ठा करने में लगी रही...। फिर वह उठी और चादर को उठा कर उसे तह किया और बेड के ऊपरी सिरे पर फेंक दिया...।

उसके हल्के से उछलने से ही उसके उभार जानलेवा अंदाज में उछले और उसकी जांघें ऐसे थरथराईं कि देखने वाले के होश ही उड़ जायें।

चादर ऊपर वाले पाये पर जा अटकी।

कामना ने बेड के नीचे लगी लकड़ी की सपोर्टों का सीढ़ी की तरह इस्तेमाल किया और धीरे-धीरे ऊपर चढ़ती हुई बेड के ऊपरी हिस्से पर आ गई।

चादर को उठा कर उसने अपने कंधे पर रखा और फिर दीवार का सहारा लेकर वह धीरे-धीरे ऊपर खड़ी होने लगी।

रोशनदान उसके सीने की ऊंचाई तक था...। सो शीघ्र ही वह रोशनदान के सामने थी।

एक हाथ में रोशनदान को पकड़ उसने हाथ से कंधे से चादर उतारी और रोशनदान में रख कर थोड़ा झुकी और गर्दन को रोशनदान में डाल कर बाहर झांका...।

कलेजा मुंह को आ गया उसका।

बाहर काफी नीचे लॉन नजर आया उसे।

जितना नीचे वहां से फर्श था...उतना ही नीचे लॉन था।

जहां से कूदना उसके बस की बात नहीं थी।

मगर उसके इरादे मजबूत थे...। सो उसने जो होगा देखा जायेगा....सोचा और चादर को बाहर फेंक कर खुद आगे को सरकने लगी।

पहले उसकी गर्दन रोशनदान से बाहर निकली, फिर उसके उभार बाहर आये और फिर जैसे ही उसके पेट का हिस्सा पार हुआ, उसने रोशनदान पकड़े हुए ही अपनी टांगें बाहर खींचीं तो उसका जिस्म कलाबाजी खाकर नीचे लटक गया।

दांतों को भींचते हुए उसने अपने हाथ छोड़ दिए।

'धप्' से उसके पैर लॉन पर पड़े तो उसे ऐसा लगा जैसे उसकी टांगें उसके कूल्हों में धंस गई हों।

पीड़ा से उसका चेहरा विकृत हो उठा और वह वहीं गिर पड़ी।

अपने होठों को सख्ती से भींच कर उसने अपनी चीख को रोका और इधर-उधर देखने लगी।

कोई भी नहीं था।

छोटा-सा लॉन पार करके चारदीवारी थी।

उसने हिम्मत जुटाई और खड़ी हो गई।

खड़े होते ही वह जोरों से लड़खड़ाई...। उसकी टांगों में तेज दर्द उठा था।

मगर खुद को गिरने नहीं दिया उसने।

झुक कर उसने चादर उठाई और शराबी की तरह लड़खड़ाते हुए चलती हुई वह लॉन पार कर चारदीवारी के करीब पहुंची और जैसे-तैसे उसे पार कर गली में कूद गई।

गली में आते ही उसने चादर खोल कर उससे अपना बदन ढका... फिर गली से निकल कर सामने सड़क पर आई और उस कोठी के बन्द गेट के सामने आ कर उसके नम्बर को पढ़ा और फिर वहां से हट गई।

इस वक्त उसके चेहरे पर सख्ती थी और आंखों में इन्तकाम के शोले भड़क रहे थे।

¶¶

थाने के गेट के पास ही बाईं तरफ बनी टॉयलेट्स में से एक का दरवाजा खुला और उसमें से पाण्डुरंग बाहर निकला।

रात वह थाने में ही एक कमरे में सोया था।

वजह थी शम्भूनाथ का अपने ऑफिस में ही सोना।

शराब पीकर वह अपनी कुर्सी पर ही सो गया था। सो रात बारह बजे पाण्डुरंग ने एक दूसरे सिपाही को ऑफिस के बाहर खड़ा किया और खुद सो गया था।

तब का सोया वह अब उठा था। और अब फ्रेश होकर टायलेट से बाहर निकला था।

तभी वह बुरी तरह से उछल पड़ा।

निगाह कामना पर जा पड़ी—जो बदन पर चादर लपेटे थाने के गेट में प्रवेश कर रही थी।

उसके बाल बिखरे हुए थे और चेहरा सफेद पड़ रहा था।

"ऐ...कौन है तू...?" वह तुरन्त उसके करीब आकर पुलिसिया अंदाज में बोला।

"मैं...आत्माराम के बेटे और भतीजे के खिलाफ रिपोर्ट लिखाने आई हूं...।" कराहते हुए बोली कामना—"उन्होंने मेरा अपहरण किया था और मेरी इज्जत लूटी है। बड़ी मुश्किल से मैं जान बचा कर वहां से यहां आई हूं...। मेरे कपड़े भी नहीं हैं। उनके बेड की चादर लपेट रखी है मैंने...।"

सुन कर पाण्डुरंग के जेहन में तुरन्त कामना का नाम गूंजा।

"क्या नाम है तुम्हारा...?" वह बोला।

“कामना...।”

“तुम्हारा अपहरण कर कहां ले गए थे वे तुम्हें...?”

“राजाजी नगर में दो सौ इक्कीस नम्बर कोठी में कैद थी मैं—वहीं वे मेरी इज्जत लूटते रहे—और अब मैं रोशनदान से निकल कर भागी हूं...।”

पाण्डुरंग के चेहरे पर उसके लिए तरस के भाव उभर आये।

“तुम्हारे पति और मां-बाप ने तुम्हारे अपहरण की रिपोर्ट लिखवा रखी है।” वह बोला—“जाओ, थानेदार सो रहा है। जाकर उसे उठाओ और अपराधियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराओ।”

कामना उसके पास से होते हुए आगे बढ़ गई।

“अब तो साहब को कार्यवाही करनी ही पड़ेगी!” वह हाथ धोने के लिए उधर बढ़ते हुए बड़बड़ाया था—जिधर टूंटियां लगी थीं।

“ऐ...कौन है तू...?”

"हटो—मुझे साहब से मिलना है।"

"साहब यहां नहीं हैं...। दस बजे के बाद आना...। अभी जा यहां से।"

"मुझे अभी साहब से मिलना है—इसी वक्त...।" लड़की की गुर्राती आवाज आई।

कुर्सी पर सो रहे शम्भूनाथ की आंखें खुल गईं।

उसने सीधे होते हुए अपने सीने पर इकट्ठी हो रही राल को पौंछा और दूसरे हाथ से अपने होठों को पौंछते हुए सीधा हो कर बैठ गया।

"तू है कौन...? और साहब से क्यों मिलना चाहती है?" तभी उसके कानों में सिपाही की आवाज पड़ी।

"कामना है मेरा नाम...। मेरा अपहरण और रेप हुआ है...। मैं वहां से भाग कर आ रही हूं...।"

सुन कर बुरी तरह से उछल पड़ा शम्भूनाथ—साथ ही उसका कलेजा जोरों से धड़क उठा।

तुरन्त उसने घण्टी बजाई और बोला—"लड़की को अन्दर भेज दो।"

शीघ्र ही कामना चादर लपेटे भीतर दाखिल हुई।

उसके चादर लपेटने के ढंग से ही शम्भूनाथ समझ गया कि चादर के नीचे वह नंगी थी।

"क्या है—क्यों शोर मचा रही हो...?" वह आंखों से उंगली के पोर से गीद खुरचते हुए बोला।

"मेरा नाम कामना है, साहब...। पटेल नगर में मेरी शादी हुई है। परसों मैं अपने पति के साथ रात का शो देख कर आ रही थी तो पीछे से किसी वाहन ने हमें टक्कर मार कर हमें बेहोश किया और मुझे अगवा करके ले गए...। कल सारी रात और आज सारी रात वो दोनों शैतान मेरा रेप करते रहे...।"

कहते हुए कामना की आंखों से आंसू बहने लगे।

“अब बड़ी मुश्किल से मैं रोशनदान से कूद कर वहां से भागी हूं...।”

“तू जानती है उन रेपिस्टों को...?”

“हां...उनके नाम निशांत और प्रकाश हैं—एक एम०एल०ए० आत्माराम का भतीजा है और दूसरा बेटा।”

“बैठ।” गम्भीर स्वर में बोला वह ।

कामना एक कुर्सी पर सिमट कर बैठ गई।

“अपने घर नहीं गईं तुम अभी...?”

“नहीं...मैं उन दोनों कमीनों को पकड़वा कर ही घर जाऊंगी...।“ कहते हुए उसका लहजा क्रूर हो उठा।

“और यह चादर...?” शम्भूनाथ ने चादर की तरफ इशारा किया।

"जिस कमरे में मेरे को कैद किया गया था—उसमें मेरे कपड़े नहीं थे—सो उस कमरे के बेड की चादर लपेट कर आई हूं।"

"ओह...तो नंगी है तू?"

"ह...हां...।" फंसे स्वर में बोली वह।

"घबरा नहीं...।" दराज में से एक कागज निकाल कर उसके आगे रखते हुए बोला शम्भूनाथ—"वो दोनों तो समझ ले
गए जेल में—तू इस पर अपनी रिपोर्ट लिख दे...।" कह कर उसने पेन स्टैण्ड से पेन निकाल कर कागज पर रखा और खड़ा हो गया—"मैं मुंह धोकर आ रहा हूं...।"

कामना ने पेन उठा लिया—जबकि शम्भूनाथ ऑफिस से बाहर निकल गया।

¶¶

"ट्रिन...ट्रिन...।"

फोन की घण्टी घनघनाई तो आत्माराम की आंखें खुल गईं।

उस वक्त वह एक कमउम्र हसीना के साथ चिपक कर सो रहा था।

आंखें मिचमिचाते हुए उसने बेड की पुश्त पर रखे फोन का रिसीवर उठा कर कान से लगाया और आलस भरे स्वर में बोला—“हैलो...।”

“इंस्पेक्टर शम्भूनाथ बोल रहा हूं, नेताजी...।”

दूसरी तरफ से शम्भूनाथ की आवाज सुनकर आत्माराम का जैसे मूड ही बिगड़ गया।

“आधी रात को फोन कर रहा है—ऐसी क्या आफत आ पड़ी जो...?”

“सुबह के पांच बजने वाले हैं, नेता जी।” उसकी बात को काटते हुए दूसरी तरफ से शम्भूनाथ बोला—“और बहुत बड़ी आफत आन पड़ी है।”

सुनकर आत्माराम तुरन्त उठ बैठा।

उसके साथ लगी युवती भी हल्के से हड़बड़ाते हुए उठ बैठी।

नीले रंग की रोशनी में उसके शानदार उभार किसी की जान निकालने का माद्दा रखते थे।

"क्या हुआ...?" उस युवती से बेखबर आत्माराम चौंकते हुए बोला।

"कामना नाम की जिस लड़की का अपहरण हुआ था—वो भागने में कामयाब हो गई है।"

"क्या...?"

"जी हां—इस वक्त वो थाने में है...। निशांत और प्रकाश बाबू के खिलाफ रिपोर्ट लिख रही है। मैं अपने ऑफिस के बाहर
से अपने मोबाइल से आपको फोन कर रहा हूं।"

सुनकर आत्माराम का कलेजा धड़क उठा—"और कौन है उसके साथ?"

“कोई नहीं...। वह वहां से सीधा यहां आई है। अभी तक उसने किसी से कुछ नहीं कहा।”

“खत्म कर दे उसे—शाम को तेरा ईनाम पहुंच जायेगा।”

“आपका आशीर्वाद ही मेरा ईनाम है नेता जी—फोन तो मैंने इसलिए किया था कि आप निशांत बाबू को समझा दें कि ऐसी लापरवाही ठीक नहीं।”

“मैं समझा दूंगा...। काम होने के बाद मेरे को फोन कर देना।”

“जी नेताजी।”

दूसरी तरफ से सम्बन्ध-विच्छेद हो गया।

आत्माराम ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और उठ कर बेड पर एक तरफ पड़े अपने गाऊन को उठाया और उसे पहनते हुए युवती से बोला—

“तू जा...।”

युवती इधर-उधर बिखरे अपने कपड़े उठाने लगी।

आत्माराम दरवाजा खोल कर बाहर निकला और निशांत के कमरे की तरफ बढ़ गया।

वाकई दोनों ने बहुत भारी गलती की थी, वर्ना कामना भाग नहीं सकती थी। उसी बाबत वह उसे उठाने जा रहा था।

निशांत के कमरे को चार-पांच बार खड़काने के बाद ही दरवाजा खुला।

"क्या है, अंकल...?" प्रकाश उसे देखते हुए जम्हाई लेते हुए बोला—"चार बजे आये हैं हम घर में... और आप...।"

"अबे बेवकूफो—वो छोकरी फरार हो गई है।"

उसे एक तरफ धकेल कर भीतर प्रवेश करते हुए भुनभुनाते हुए आत्माराम भीतर प्रविष्ट हुआ।

बेड पर बैठा निशांत बुरी तरह से उछल पड़ा।

प्रकाश भी बुरी तरह से उछल पड़ा।

"य...यह आप क्या कह रहे हैं, पापा...?" निशांत घबराये लहजे में बोला।

"वही जो तू सुन रहा है। अभी-अभी इंस्पेक्टर का फोन आया था। वो वहां पहुंची हुई है। मैंने उसे खत्म कर देने के लिए कह दिया है।"

"ओह...!" बेड के किनारे बैठते हुए प्रकाश के मुंह से निकला।

"कैसे भाग सकी वो...?" गुर्राया आत्माराम।

दोनों की नजरें झुक गईं।

"अरे गधो—मैं तुमसे पूछ रहा हूं—कैसे भागी वो...?"

"इसमें हमारी ही गलती थी, अंकल...।" प्रकाश अपराधी की तरह सिर झुकाये हुए बोला—"हमें उस पर विश्वास नहीं करना चाहिए था।"

"क्या मतलब...?"

उत्तर में प्रकाश ने सारी बात कह सुनाई।

एक सोफा चेयर पर बैठते हुए आत्माराम ने माथे पर हाथ मारा—"लॉनत है तुम पर...। समझ में नहीं आता कि मेरी विरासत कैसे सम्भालोगे तुम? अरे बेवकूफो—विश्वास किया ही क्यों तुमने उस पर...?"

"सॉ...री पापा...।"

"सॉरी का बच्चा! अब तब तक जान टंगी रहेगी जब तक वह मर नहीं जाती...।"

गुस्से में भुनभुनाते हुए बोला आत्माराम।

¶¶

शम्भूनाथ ऑफिस में प्रविष्ट हुआ और रिपोर्ट लिख रही कामना के करीब आ कर खड़ा हो गया।

"लिख ली रिपोर्ट...?"

"हां...।" कागज उठा कर उसे देते हुए बोली कामना।

शम्भूनाथ ने एक उड़ती निगाह रिपोर्ट पर डाली और उसे तह करके जेब में डालते हुए बोला—

"उठो...। अब देखना—कैसे मैं उन दोनों को जूते मारते हुए लाता हूं। बहुत कहर मचा रखा है सालों ने यहां....।"

जोश तथा गुस्से में भरी कामना खड़ी हो गई।

थाने के प्रांगण में आकर शम्भूनाथ ने उसे जिप्सी में बैठाया

और राजाजी नगर की तरफ रवाना हो गया।

वातावरण में अभी भी अंधेरा छाया हुआ था। हां, इक्का-दुक्का लोग सैर करने के लिए जरूर निकल पड़े थे।

करीब दस मिनट बाद शम्भूनाथ ने जिप्सी एक सुनसान सड़क के किनारे खड़ी की और जिप्सी से उतर कर बोनट के आगे से होते हुए कामना के पास पहुंचा और बिना कुछ बोले उसके बाल पकड़ कर उसे खींच कर जिप्सी से बाहर गिराया और घसीटते हुए ही सड़क के नीचे पेड़ों के बीच ले जाने लगा।

इस दौरान कामना चीखती रही—चिल्लाती रही; लेकिन वह शैतान तो जैसे बहरा हो गया था।

पेड़ों के बीच पहुंचते-पहुंचते कामना के जिस्म से चादर उतर चुकी थी।

अब वह पूरी तरह से निर्वस्त्र थी।

उसका संगमरमरी बदन देख कर एक बार तो शम्भूनाथ का मन भी डोल गया; मगर उसके पास वक्त नहीं था।

पौ फटने वाली थी।

सो—अपने मन को मारते हुए उसने जेब से रिवॉल्वर निकाली—जो कि वह मुन्शी के कमरे से ले कर आया था और फिर कामना को नीचे गिरा कर उसके

सीने में गोली उतार दी।

कामना का नग्न बदन जोरों से उछला और शांत हो गया।

“साली—नेता जी के खिलाफ सिर उठाती है...।”

वह बड़बड़ाया और रिवॉल्वर जेब में डालते हुए वापिस मुड़ा और जिप्सी की तरफ बढ़ गया।

सड़क के करीब आकर उसने चादर उठाई और उसे तह करके जिप्सी में डाला और स्टेयरिंग के पीछे बैठ कर जिप्सी को आगे बढ़ा दिया।

अगले चौराहे से उसने जिप्सी मोड़ी और एक दूसरी सड़क से थाने की तरफ रवाना हो गया।

जिप्सी चलाते हुए ही उसने मोबाइल निकाला और आत्माराम को फोन करने लगा।

¶¶

“ट्रिन...ट्रिन...।”

फोन की घण्टी बजते ही आत्माराम ने रिसीवर उठा कर कान से लगाया।

“हैलो...।” बेसब्री भरे स्वर में बोला वह।

“बेफिक्र हो जाइए, नेता जी...। काम हो गया है।”

सुनकर आत्माराम ने राहत भरी गहरी सांस छोड़ी।

“बहुत बढ़िया किया तूने, शम्भू...।” वह बोला।

“वो वहां से चादर चुरा कर भागी थी—उसे अभी मंगवा लीजिये...।”

“चादर...?” हल्के-से चौंका आत्माराम।

“नंगी थी न! पहनने को कपड़ा नहीं था—सो बेड की चादर लपेट कर भागी थी वह । अब उसे उस पर छोड़ा तो नहीं जा सकता था न...। वर्ना वह चादर ही एक बड़ा सुबूत बन जाती।”

"ओह! बढ़िया किया। अभी थोड़ी देर में जाकिर पहुंच जायेगा वहां—उसे दे देना चादर।"

"जी, नेता जी...।"

आत्माराम ने रिसीवर रखा और गहरी सांस छोड़ते हुए दोनों को देखा।

"इस बार तो बच गए...। आगे से ध्यान रखना...। वर्ना बहुत बड़ी मुसीबत हो जायेगी।"

दोनों ने चुपचाप सिर हिला दिए।

¶¶

अस्पताल के पोस्टमार्टम रूम के बाहर रमन—उसका बड़ा भाई—उसके मां-बाप तथा कामना के मां-बाप के अलावा उनके रिश्तेदारों की भीड़ लगी हुई थी।

कोहराम मचा हुआ था वहां। सभी एक-दूसरे के गले से लग कर जार-जार रो रहे थे।

कुछ पत्रकार रिश्तेदारों से सवाल-जवाब कर रहे थे—जबकि विशाल कपूर एक तरफ कैमरे के सामने खड़ा बोल रहा था—"आखिर कामना भी लाश में तब्दील हो गई। वो नर-पिशाच अपने इरादों में कामयाब हो गए—जिन्होंने कामना को अगवा किया था। कामना की लाश पुलिस को बेलिबास मिली है—जो साफ इशारा करती है कि उसके साथ रेप हुआ था। और निश्चित ही पोस्टमार्टम की रिपोर्ट में भी यही आयेगा...। तीसरी लाश मिली है पुलिस को और पुलिस का रटा-रटाया जवाब भी आपने सुन लिया—पुलिस तफ्तीश कर रही है...।

आखिर कब होगी असल तफ्तीश—कब पकड़े जायेंगे अपराधी—कब वो नर-पिशाच जेल की सलाखों के पीछे होंगे जिन्होंने एक मासूम औरत के साथ रेप करके उसे गोली मार दी? इन सवालों के साथ कैमरामैन शाहिद के साथ मैं विशाल कपूर, आर न्यूज...।"

"कट" कह कर उसने कैमरा बन्द करवाया और माईक को कैमरामैन को देते हुए बोला—"सभी रिश्तेदारों को शूट कर लो।"

"ट्रिन...न...न...।"

तभी उसकी जेब में रखा मोबाइल बज उठा।

उसने मोबाइल निकाल कर उसकी स्क्रीन पर देखा।

घर से फोन आया था।

बटन दबाते हुए उसने मोबाइल कान से लगाया और बोला—"हां, बोलो नेहा—क्या काम है?"

"फौरन घर आओ...।" नेहा की आवाज आई।

"खैरियत तो है नेहा?"

"पाण्डुरंग भैया आये हैं। बहुत जरूरी खबर है...। मुझे भी नहीं बता रहे...। कह रहे हैं कि सिर्फ आपको बताऊंगा।"

"मैं आ रहा हूं।"

तुरन्त बोला विशाल कपूर और मोबाइल जेब में रखकर कैमरामैन को काम करके ऑफिस पहुंचने को कह कर अपनी कार की तरफ बढ़ गया।

पाण्डुरंग ने उसे फोन भी नहीं किया था और उसके ऑफिस जाने की बजाये घर पहुंचा था—जो यही बता रहा था कि खबर बहुत ही अहम थी।

ऐसे में उसने फौरन वहां से निकलना ही बेहतर समझा।

कुछ ही देर में वह अपनी कार में बैठा अपने घर की तरफ उड़ा जा रहा था।

¶¶

बुरी तरह से उछल पड़ा विशाल कपूर...।

नेहा तो उछल कर खड़ी हो गई थी...। शुक्र था कि मुन्ना उसके हाथों से नहीं गिरा था। खड़ी होते हुए उसने मुन्ने को सम्भाले रखा था।

"य...यह क्या कह रहे हो तुम, पाण्डु...?" विशाल कपूर अविश्वास भरे स्वर में बोला—"कामना का अपहरण आत्माराम के बेटे और भतीजे ने किया था?"

"हां...।"

"नहीं!" सिर दायें-बायें हिलाया विशाल कपूर ने—"तुम्हें किसी ने गलत सूचना दी है। मैं नहीं मानता...।"

"यह सूचना मुझे खुद कामना ने अपने मुंह से दी थी, विशू...।" पाण्डुरंग बोला।

एक और झटका लग विशाल कपूर को।

"य...यह क्या कह रहे हो तुम, पाण्डु...?" विशाल कपूर हक्का-बक्का-सा रह गया—"तुम्हें वो सूचना कैसे दे सकती है?"

एक गहरी सांस छोड़ी पाण्डुरंग ने—फिर ऐसे बोला जैसे उसका दिल फट रहा हो।

“सब भ्रष्ट हैं...। पूरा पुलिस महकमा ही भ्रष्ट है। शम्भूनाथ भ्रष्ट तो था ही—अब वो कातिल भी हो गया है।”

“यह क्या बक रहा है तू, पाण्डु...?”

“हां दोस्त—कामना का कत्ल किसी और ने नहीं—खुद शम्भूनाथ ने किया है।”

विशाल कपूर का जेहन हवाओं में उड़ने लगा।

उसकी खोपड़ी अन्तरिक्ष में गोते खाने लगी।

ऐसा ही हाल नेहा का भी हो रहा था।

“म...मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा, पाण्डु!” विशाल कपूर दोनों हाथों से अपना सिर दबाते हुए बोला—“मुझे सही बात विस्तार से समझाओ...। शम्भूनाथ कातिल कैसे बन गया कामना का और कामना ने तुम्हें कैसे बता दिया?”

पाण्डुरंग ने बेचैनी से पहलू बदला और बोला

"दरअसल कामना उन दोनों शैतानों की कैद से भागने में कामयाब हो गई थी। भाग कर वह सीधा थाने में आई थी। बेचारी ने सिर्फ एक चादर लपेट रखी थी...। उसके कपड़े तो वहीं थे। इत्तफाक से जब वह थाने में प्रविष्ट हुई, मैं टायलेट से निकला था। मैंने उससे पूछताछ की तो उसने मुझे सारी बात बता दी

—तब मैंने उसे साहब से मिलने को कहा। मैं तब यही सोच रहा था कि अब वो कमीने किसी भी सूरत में नहीं बचेंगे...। शम्भूनाथ को उन दोनों के खिलाफ एक्शन लेना ही पड़ेगा। मगर मेरी यह सोच गलत साबित हुई...। मैंने दोनों को गाड़ी में बैठ कर थाने से निकलते देखा था तो यही समझा था कि शम्भूनाथ उन्हें गिरफ्तार करने जा रहा है। उनके जाने के बाद मुझे घर से फोन आ गया—मेरी बीवी की तबीयत कुछ खराब थी.....। घर पहुंचकर मैं अपनी बीवी को अस्पताल ले गया...। एक घण्टे बाद मैं उसे वापिस ले कर आया और टी०वी० खोल कर बैठ गया...। दोनों की गिरफ्तारी की खबर सुनना चाहता था मैं। मगर कोई खबर नहीं आई.....। साढ़े आठ बजे ब्रेकिंग न्यूज में मैंने कामना की लाश मिलने की खबर पढ़ी—तो मेरे पैरों तले से धरती खिसक गई।" बात खत्म कर उसने एक

गहरी सांस छोड़ी और आगे बोला—"अब तुम खुद ही बोलो—कौन है कातिल...?"

"सरासर शम्भूनाथ ही है!" सुलगते स्वर में बोला विशाल कपूर—फिर नेहा से मुन्ने को ले अपनी गोद में रखते हुए नेहा से बोला—"तुम चाय बना लाओ।"

नेहा उठ कर कमरे से बाहर निकल गई।

"अब तो यह स्पष्ट हो गया है कि"—गहरी सांस छोड़ते हुए बोला विशाल कपूर—"पीछे जो दो अपहरण हुए थे—वो भी उन दोनों हरामियों निशांत और प्रकाश ने ही कराये थे। शामू ने भी फोन पर कहा था कि कुण्डू आत्माराम का आदमी है और उसने कुण्डू को मार डाला है; लेकिन बेचारा शहर छोड़ कर नहीं भाग सका...। बाहर उसकी मौत उसका इंतजार कर रही थी—जो उसके बाहर निकलते ही उस पर झपट पड़ी।"

"देख लो विशू—मैं सब कुछ जानता हूं; लेकिन मैं कुछ भी नहीं कर सकता। तुम भी कुछ नहीं कर सकते; क्योंकि शम्भूनाथ ने सब सुबूत नष्ट कर दिए होंगे। और तुम बिना सुबूत के आत्माराम के खिलाफ कुछ नहीं बोल सकते।

वो बाहुबली नेता है। उसके खिलाफ मुंह खोलने के लिए बहुत बड़े सुबूत की जरूरत पड़ेगी। तभी तुम सुरक्षा मांग सकोगे...वर्ना।"

"तुम फिक्र मत करो, पाण्डु!" आंखों में आग लिए गुर्राया विशाल कपूर —"अब आत्माराम की और उसके बच्चों की उम्र की उल्टी गिनती शुरू हो गई है। रही सुबूत मिलने की बात—तो ऊपर वाले ने चाहा तो मैं कुछ न कुछ जुटा लूंगा। तुम बस शम्भूनाथ पर नजर रखना...। एक बार उसके खिलाफ छोटा-सा भी सुबूत मिल गया तो मैं उसके गिरेबान तक भी पहुंच जाऊंगा।"

तभी नेहा चाय ले आई।

"यह आत्माराम तो बड़ा ही खतरनाक है।" पाण्डुरंग के जाने के बाद नेहा मुन्ना को अपनी गोद में लिटाकर उसे धीरे-धीरे थपकते हुए बोली—"और उसका बेटा और भतीजा तो उससे भी जहरीले निकले।"

विशाल कपूर ने एक गहरी सांस छोड़ी और गम्भीरता ओढ़ते हुए बोला —"यह इस देश का दुर्भाग्य है कि आत्माराम जैसे लोग इस देश को चला रहे हैं। बस कुछ गिने-चुने लोग ही हैं जो देश-सेवा के लिए राजनीति में आते हैं। वर्ना हर

कोई यही सोच कर राजनीति करता है कि पांच सालों में वह इतना कमा ले कि उसकी पुश्तें दौलत से खेलती रहें। विधायक या सांसद बनने के लिए यह नेता लोग किसी भी हद तक जाने से नहीं झिझकते और पब्लिक बेबस हो उन्हें देखती रहती है। उसने एक गहरी सांस छोड़ी और अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए बोला —"बड़े-बड़े बुद्धिजीवी यह कहते हैं कि युवा वर्ग को राजनीति में आना चाहिये...। ईमानदारों को आगे बढ़ कर देश को सम्भालना चाहिये...। मगर वो यह बात कहते हुए भूल जाते हैं कि ईमानदार को यह लोग राजनीति में घुसने ही कहां देते हैं। ईमानदार के पास न तो दौलत होती है न ताकत...। जबकि बेईमान के पास यह दोनों चीजें होती हैं। वह अपनी दौलत और ताकत के बल पर ईमानदार को या तो खत्म कर देते हैं—या फिर बैठने पर मजबूर कर देते हैं। और अगर कोई ईमानदार जीत भी जाता है तो उसके हाथ में इतनी पॉवर नहीं होती कि वह इन गुण्डा तत्वों से लड़ सके।"

"तुम आज हारी-हारी बातें क्यों कर रहे हो, विशू...?" नेहा गम्भीरता से बोली।

"मैं अपनी भारत मां के दुर्भाग्य को रो रहा हूं, नेहा...। पता नहीं कब वो दिन आयेगा—जब इस देश के नेता ईमानदार होंगे...।"

"ऊपर वाला सब भली करेगा।" नेहा उसे हौसला देते हुए बोली—"तुम अपना फर्ज निभाओ—ऐसे नेताओं के चेहरों से पर्दा हटाओ...। शम्भूनाथ जैसे पुलिस वालों की असलियत सामने लाते रहो। शुरूआत में हर काम में मुश्किल आती है—लेकिन धीरे-धीरे पूरी दुनिया तुमसे जुड़ती जायेगी...। तुम शुरूआत तो करो...। कौन कहता है कि आसमान में छेद नहीं हो सकता—अरे, तबीयत से एक पत्थर तो फेंको!"

विशाल कपूर के होठों पर मुस्कान फैल गई।

उसकी आंखों में नेहा के लिए इज्जत के भाव उभर आये।

उसे हंसते हुए देख मुन्ना भी खिलखिलाने लगा।

"अरे...तू क्यों हंस रहा है?" विशाल कपूर मुन्ना के गाल पर प्यार भरी चिकोटी भरते हुए बोला।

"अपने बाप के चेहरे पर हंसी देख कर खुश हो रहा है।" नेहा मुन्ना के सीने पर थपकी देते हुए बोली—फिर बोली—"कुछ सोचा है तुमने कि असलियत

सामने कैसे लाओगे...?"

"एक रास्ता नजर आ रहा है मेरे को...।" पुनः गम्भीर होते हुए बोला विशाल कपूर।

"कौन-सा रास्ता...?"

नेहा उत्सुकता से बोली।

"पाण्डु ने कहा था कि कामना थाने में आई थी तो सिर्फ बेड की चादर लपेटे हुए थी...।"

"हां...यही कहा था उसने...। और यह भी कहा था कि चादर के नीचे वह नंगी थी।"

"इसका मतलब कामना के कपड़े उसी कोठी में होने चाहिएं...। अगर वे कपड़े मिल जायें तो उन कपड़ों के दम पर ही आत्माराम के बेटे और भतीजे का भाण्डा फूट सकता है। मैं आज रात को उस कोठी की तलाशी लूंगा...। भगवान करे कामना के कपड़े वहां से मिल जाएं...।"

सुनकर नेहा ने सिर हिलाते हुए उसकी बात पर अपनी सहमति की मोहर लगा दी।

¶¶

विशाल कपूर ने कार सड़क के दाईं तरफ मोड़ी और राजाजी नगर की दो सौ इक्कीस नम्बर कोठी के बराबर में बनी गली में प्रवेश कर कार को थोड़ा आगे जाकर रोका और दरवाजा खोल कर बाहर आ गया।

कैमरा वह अपने साथ लेकर आया था; लेकिन उसने कैमरे को कार से निकाला नहीं था।

वह पहले पूरी कोठी को चैक कर लेना चाहता था। उसके बाद ही उसने कैमरे को प्रयोग में लाना उचित समझा था।

दरवाजा लॉक करके वह गली से बाहर निकला और कोठी के सामने से ऐसे निकला जैसे उसे कोठी से कोई वास्ता नहीं हो।

बिल्कुल लापरवाह नजर आ रहा था वह; लेकिन भीतर से वह पूरी तरह से सतर्क था।

गेट पर ताला लगा हुआ था। और भीतर से भी उसे ऐसा महसूस हो रहा था कि भीतर कोई भी नहीं है।

रात के साढ़े ग्यारह बज रहे थे; मगर पूरी कोठी अंधेरे में डूबी नजर आ रही थी।

गेट के आगे से निकलते हुए वह बाऊंड्री-वाल के आखिरी छोर पर पहुंचा और वहां से बाईं तरफ भीतर की तरफ मुड़ गया...।

कुछ ही देर में वह कोठी के पीछे की गली में खड़ा था।

इस वक्त उसका कलेजा धड़क रहा था।

जिंदगी में पहली बार वह किसी घर में चोरों की तरफ प्रवेश कर रहा था।

कलेजा तो धड़कना ही था उसका; मगर उसके इरादों में नरमी नहीं आई थी।

हल्के-से उछल कर उसने बाउंड्री-वाल के ऊपरी सिरे को पकड़ा और हिम्मत करके आहिस्ता से भीतर कूद गया।

लॉन पर पैर पड़ते ही वह वहीं बैठ गया और सतर्कता से इधर-उधर देखने लगा।

उस वक्त उसकी हालत यह थी कि अगर कोई उसके पीछे से 'हू' करके उसे जरा भी डरा देता तो कोई बड़ी बात नहीं थी कि उसका हार्टफेल हो जाता।

घूमती हुई उसकी निगाह उस रोशनदान पर जा टिकी—जिसमें से कामना निकली थी।

कामना ने पाण्डु से यही कहा था कि वह रोशनदान से निकल कर भागी थी।

कहीं यह वही रोशनदान तो नहीं...?

वहां तक पहुंचना उसके लिए मुमकिन नहीं था। सो वह वहां से उठा और लॉन पार कर कोठी के बराबर से होते हुए आगे के कम्पाऊंड में आया और दरवाजों को चैक करने लगा।

शीघ्र ही उसे सफलता मिली।

टायलेट का दरवाजा हल्की-सी कोशिश के बाद खुल गया।

वह टायलेट में प्रविष्ट हुआ और उसके भीतर की तरफ खुलने वाले दरवाजे से होते हुए भीतर लॉबी में आ गया।

कुछ पलों तक तो वह वहीं खड़ा अपनी धड़कनों को काबू करता रहा—फिर उसने अपनी पेंट की बैल्ट में फंसी टार्च निकाली और उसे आन कर दिया। तेज प्रकाश का एक बड़ा दायरा सामने की दीवार पर फैल गया...। जिसकी हद में एक दरवाजा भी था।

उसने पहले तो टार्च की रोशनी घुमा कर हर तरफ का जायजा लिया कि वहां कोई है या नहीं? फिर वह वहां की तलाशी लेने में जुट गया।

नीचे कुल पांच कमरे थे—जिनमें से एक ड्राईंग रूम था—तथा एक गैस्ट रूम...। बाकी के तीन बेडरूम थे।

एक-एक कमरे की तलाशी ली उसने... मगर उसे कोई भी जनाना सूट या साड़ी वगैरह वहां से नहीं मिली...। यहां तक कि मर्दाना कपड़े भी नहीं मिले उसे...। वह कोठी तो उसे ऐसे नजर आ रही थी...जैसे कोई वहां रहता ही न हो।

तलाशी लेते हुए वह उस कमरे में पहुंचा जिसमें कामना कैद थी।

बेड अब यथास्थान रखा हुआ था—उस पर गद्दा तथा गद्दे के ऊपर चादर बिछी थी।

चादर साफ नजर आ रही थी कि नई थी...।

एक डेढ़ घण्टे तक वह वहां की तलाशी लेने के बाद बाहर निकला तो उसके चेहरे पर मायूसी थी।

एक छोटा-सा भी सुराग उसके हाथ नहीं लगा था—जिससे वह यह साबित कर पाता कि कामना को उसी कोठी में कैद किया गया था। टायलेट के

रास्ते ही वह कम्पाऊंड में आया और टायलेट का दरवाजा बन्द करके इधर-उधर देखने लगा।

घूमती हुई उसकी निगाह गेट के बाईं तरफ बाऊंड्री-वाल की जड़ में पड़े छोटे से ढेर पर पड़ी—जिसमें कोई चीज चमक रही थी।

उत्सुकता वश वह लॉन में होते हुए वहां पहुंचा और झुक कर उस चमकती चीज को उठाने को हुआ तो उसे महसूस हुआ कि वह चमकती चीज बटन था।

विशाल कपूर फौरन समझ गया कि वह राख कामना के कपड़ों की थी और वह बटन उन्हीं कपड़ों का था।

यानि उस सुबूत को आत्माराम ने जड़ से ही मिटा दिया था।

सिर्फ उस बटन के दम पर आत्माराम के बेटे और भतीजे को अपराधी साबित नहीं किया जा सकता था।

सो—चेहरे पर निराशा लिए वह कोठी के पीछे पहुंचा और बाऊंड्री-वाल फांद कर बाहर निकल गया।

उसकी मेहनत बेकार गई थी।

¶¶

"आज हफ्ता हो गया है अंकल—कोई नया फल नहीं खाया...।"

आत्माराम के सामने सोफे पर बैठा प्रकाश उसे देखते हुए बोला।

"हां पापा...।" उसके बराबर बैठा निशांत भी राल टपकाते हुए बोला —"एक हफ्ते में ही ऐसा लगने लगा है—जैसे किसी लड़की का मुंह देखे बरसों हो गए हैं...।"

"अब तो कामना वाला मामला भी ठण्डा पड़ गया है.....।" प्रकाश बोला।

"तो मैंने कब मना किया है...।" आत्माराम बोला—"यूं भी मेरी उस व्यक्ति से बात हो गई है—जो यहां की खूबसूरती को अरब देशों में भेजने का काम करता है...।"

"तो फिर जाकिर से कह दीजिये...। वो शाम तक हमारे लिए किसी नये और स्वादिष्ट व्यंजन का बंदोबस्त करे...।"

निशांत आंखें चमकाते हुए बोला।

"वो तो हो जायेगा...। लेकिन तुम दोनों इस बार ध्यान रखना...। जरा भी रिस्क नहीं लेना। न ही उस छोकरी पर तरस खाना।"

दोनों ने सिर हिला दिए...। साथ ही उनके होठों पर धूर्त मुस्कान फैल गई।

आत्माराम ने मुस्कुराते हुए अपने सोफे की बगल में रखे स्टूल पर रखे फोन का रिसीवर उठाया और कोई नम्बर मिलाकर दूसरी तरफ से आवाज आने का इंतजार करने लगा।

“जाकिर...।” दूसरी तरफ से आवाज आते ही वह बोला—“भई, बच्चों का दिल मचल रहा है...शम्भूनाथ वाले इलाके में हाथ मत मारना...हां...ठीक है...।”

उसने रिसीवर रखा और सामने बैठे निशांत और प्रकाश को देखते हुए मुस्कुराया—”लंगोट कस लो। और यह बात अपने जेहन में बिठा लो कि आने वाली को सिर्फ दो दिन ही यूज करोगे तुम—तीसरे दिन उसे बेच दिया जायेगा।”

दोनों ने मुस्कुराते हुए सिर हिला दिए।

आंखें चमकने लगी थीं उनकी।

¶¶

अंजली ने किताबें समेटीं और उन्हें बैग में डाल कर अन्य लड़के-लड़कियों के साथ क्लास से बाहर आ गई।

एस०डी० कालेज में अंजली बी०कॉम० फाईनल में पढ़ रही थी। और यह उसका आज का आखिरी लैक्चर था।

खूबसूरती में पूरे कालेज में अंजली सबसे अव्वल थी।

ऊंचा लम्बा कद...छरहरा जिस्म...भारी और तने हुए उभार—नीली आंखें...सुराहीदार गर्दन...। एक-एक अंग तराशा हुआ नजर आता था उसका।

लड़के उससे दोस्ती करने के इच्छुक रहते थे; मगर वह किसी को घास भी नहीं डालती थी। रिजर्व किस्म की लड़की थी वह...। किसी से...यहां तक कि लड़कियों से भी वह ज्यादा घुलती-मिलती नहीं थी। उसके शब्दों में, वह कॉलेज में पढ़ने के लिए आती है, ऐश करने के लिए नहीं।

तभी तो वह पढ़ाई में भी अव्वल थी।

बैग को कंधे पर लटकाये वह कम्पाऊंड में झुण्ड बना कर खड़े लड़के-लड़कियों के पास से होते हुए निकली और गेट की तरफ बढ़ने लगी।

तभी उसे अपने पीछे ठण्डी आंहें भरने की आवाजें आईं।

निश्चय ही झुण्ड में खड़े लड़कों में से तीन-चार ने आहें भरी थीं।

मगर क्या मजाल जो उसने गर्दन पीछे मोड़ी हो।

चलती हुई वह गेट के करीब ही बने स्कूटर स्टैण्ड में पहुंची...। वहां से अपनी 'एक्टिवा' उठाई और उस पर सवार हो गेट से निकली और अपने घर की तरफ रवाना हो गई।

घर ज्यादा दूर नहीं था उसका...। सिर्फ दो-ढाई किलोमीटर ही दूर था। जहां वह पैदल भी आ-जा सकती थी।

लेकिन उसके मां-बाप ने यह कह कर कि जमाना खराब है...उसे 'एक्टिवा' ले दी थी...। ताकि वह वक्त पर घर से निकले और वक्त पर घर पहुंचे...।

मां-बाप की इकलौती संतान थी वह और बाप सरकारी महकमें में लगा था। यहां से उसे काफी अच्छी तनख्वाह मिल रही थी। मां भी एक स्कूल में लगी हुई थी—और खर्चा था बहुत ही कम। ऐसे में उनके पास काफी पैसा था।

कुल मिलाकर वह एक रसूखदार मां-बाप की इकलौती बेटी थी और शराफत के गुण उसे अपने मां-बाप से मिले थे।

मगर आज का दिन अंजली के लिए बहुत बुरा सिद्ध होने वाला था।

कॉलेज के सामने एक कार में बैठे तीन गिद्धों की नजर उस पर पड़ गई थी।

"बहुत बढ़िया...।" ड्राईवर बोला—"ऐसी खूबसूरती तो मैं पहली बार देख रहा हूं।"

"अंग-अंग तराशा हुआ नजर आ रहा है इसका तो...।" दूसरे ने चटकारा लिया।

"निशांत और प्रकाश बाबू देखेंगे तो इसका हुस्न देख कर वो अपने होश ही खो देंगे...।" तीसरा बोला।

"जल्दी से लग पीछे और कोई मुनासिब जगह पर उसे उठा।" दूसरा पहले से बोला—जो ड्राइविंग सीट पर बैठा था।

तुरन्त ड्राईवर ने कार अंजली के पीछे लगा दी।

उस वक्त अंजली अपने घर से बस कुछ ही दूर थी...। जब एकाएक ही वह कार उसकी 'एक्टिवा' के बराबर से निकल कर उसके आगे इस तरह जा खड़ी हुई कि अंजली को अपनी स्कूटी रोकनी ही पड़ी।

स्कूटी रोकने के साथ ही उसके चेहरे पर गुस्से और नाराजगी के भाव उभर आये।

"बेवकूफ...।" वह बड़बड़ाई—"कार चलानी भी नहीं आती...?"

अभी वह बड़बड़ा ही रही थी कि कार के पिछले दोनों दरवाजे खुले और पीछे बैठे दोनों गुण्डे कार से निकल कर तेजी से उसकी तरफ लपके।

इससे पहले कि अंजली कुछ समझ पाती—दोनों उसके सिर पर आ पहुंचे।

एक ने झपट कर उसका मुंह दबोचा और स्कूटी से खींच लिया।

'एक्टिवा' वहीं फुटपाथ पर गिर पड़ी।

दूसरे ने जल्दी से उसकी टांगें पकड़ीं और वो उसे उठाये कार में प्रवेश कर गए।

अंजली को सीट पर पटक कर उसके मुंह को दबाने वाले ने उसकी कनपटी पर घूंसा दे मारा।

अंजली के मुंह से ढंग से चीख भी नहीं निकल पाई और वह वहीं बेहोश हो गई।

उसी के साथ ही कार तेजी से आगे भागी।

कार में बैठे गुण्डों ने पहले दरवाजे बन्द किए—फिर अंजली को अपने बीच बिठा कर दोनों उसके दायें-बायें बैठ गए।

¶¶

"डिंग...डांग...। खड़...खड़...खड़...।"

पहले कालबेल बजी—फिर दरवाजा ऐसे पीटा गया जैसे बाहर खड़ा शख्स दरवाजा खुलवाने के लिए मरा जा रहा हो।

बेड पर अधलेटी अवस्था में बैठी शांतारानी के चेहरे पर नागवारी के भाव उभरे।

उसने करीब पड़ा रिमोट उठा कर सामने चल रहे टी○वी○ की आवाज बन्द की और तनिक ऊंचे सुर में बोली—

"देखना तो जरा गंगूबाई—कौन तोड़ रहा है दरवाजा!"

किचन में काम कर रही गंगूबाई ने गैस की आंच धीमी की और बाहर निकल गई।

टी○वी○ की आवाज बन्द किए शांतारानी आने वाले का इंतजार करती दरवाजे की तरफ देख रही थी।

शीघ्र ही पड़ोस की बारह वर्षीय पूनम बुरी तरह घबराई हुई बेडरूम में प्रविष्ट हुई।

"आंटी...आंटी...।"

"अरे क्या हुआ...?" उसके उड़े रंग और खौफ से भरे चेहरे को देख शांतारानी चौंकी—"सब खैरियत तो है न? रंग क्यों उड़े हैं तेरे?"

"अंजली दीदी को कुछ लोग कार में डाल कर ले गए हैं...।"

बुरी तरह से कांपते हुए बोली पूनम।

शांतारानी के सिर पर जैसे कमरे का लेंटर आ गिरा।

उसके हाथ-पैर बुरी तरह से कांपने लगे।

"य...यह क्या कह रही है तू?" बुरी तरह से कांपते हुए बोली वह।

"मैंने अपनी आंखों से देखा है, आंटी...।" बुरी तरह से हांफते हुए बोली पूनम—"फौजी अंकल के घर के बाहर वो लोग अंजली दीदी को उठा कर ले गए...। दीदी की 'एक्टिवा' वहीं गिरी पड़ी है।"

शांतारानी के काटो तो खून नहीं।

हाथ-पैर सुन्न पड़ गए उसके...चेहरा पीला जर्द पड़ गया।

"अं...जली...।" तभी वह जोरों से चीखी और बेड पर गिर पड़ी।

बेहोश हो गई थी वह।

¶¶

उस वक्त सिकन्दर ठाकरे शाम की चाय पी रहा था...।

जब ऑफिस में दीनदयाल बुरी तरह से घबराया हुआ प्रविष्ट हुआ।

उसकी उड़ी रंगत—आंखों में भरे आंसू देख कर ही ठाकरे समझ गया कि मामला गम्भीर था।

सो उसने चाय का कप वहीं टेबल पर रखा और दीनदयाल को देखते हुए बोला—"घबराइए नहीं...। अपनी समस्या बताइए।"

“म...मेरी बेटी का अपहरण हो गया है इंस्पेक्टर...।” बिलख पड़ा दीनदयाल—“मेरी बेटी का पता लगाइए...।”

सुनकर सिकन्दर ठाकरे पहले तो चौंका—फिर उसकी आंखें सुलगने लगीं।

“ठाकरे के इलाके में इतना घिनौना जुर्म करने की हिमाकत किसने की?”

“म...मुझे नहीं पता...। मुझे दफ्तर में फोन आया था....दफ्तर से मैं सीधा यहां आ रहा हूं...।”

तुरन्त खड़ा हो गया ठाकरे।

चाय पीनी भूल गया वह...।

“आइये...।” बोला—“और हिम्मत रखिये—आपकी बेटी को कुछ नहीं होगा।”

मगर दीनदयाल कहां हिम्मत रखने वाला था...। वह तो रोये जा रहा था — बस रोये ही जा रहा था।

¶¶

जिस वक्त ठाकरे की जिप्सी दीनदयाल की कार के पीछे उसके घर के सामने रुकी तो वहां कोहराम मचा हुआ था। जिप्सी से उतर कर ठाकरे मकान में प्रविष्ट हुआ तो लॉबी में उसे शांतारानी नजर आई—जिसे रह-रह कर गश आ रहे थे।

अड़ोस-पड़ोस की औरतें उसे दिलासा दे रही थीं।

शांतारानी होश में आती...कुछ पल रोती...फिर अंजली कह कर चीख कर पीछे गिर पड़ती।

उस अधेड़ा की हालत देख सिकन्दर ठाकरे को उस पर तरस आने लगा।

तभी दीनदयाल बिलखता हुआ शांतारानी के करीब आया और उसे स्वयं से लिपटा कर बार-बार रोने लगा।

बहुत ही मार्मिक दृश्य था वह।

सिकन्दर ठाकरे ने अपनी भावनाओं पर काबू पाया और बोला—"आप ऐसे ही रोते रहेंगे...तो मैं आपकी बेटी को कैसे ढूंढ पाऊंगा...। प्लीज, खुद पर काबू रखिये और मुझे बताइए कि अपहरण कहां हुआ?"

"वो पूनम जानती है, इंस्पेक्टर साहब...।" तभी गंगूबाई उसके सामने आकर बोली।

"तुम कौन...?" सिकन्दर ठाकरे उसे देखते हुए बोला।

"मैं गंगूबाई—काम वाली बाई...।" अपने सीने पर हाथ रखते हुए बोली गंगूबाई—"सुबह दस से शाम सात बजे तक मेरी ड्यूटी ईदर ही होता...।"

"पूनम कौन है...जिसके बारे में तुम बोल रही हो?"

"पड़ोस की छोकरी होती..। वही मालकिन को बताया कि अंजली मेमसाहब का किडनेप हो गया...।"

“पूनम कहां है?”

“वो रही पूनम...।” गंगूबाई ने पूनम की तरफ इशारा किया...। जो कमरे के दरवाजे से लग कर घबराई हुई खड़ी नजर आ रही थी।

पूनम ने ठाकरे को अपनी तरफ बढ़ते देखा तो वह और भी डर गई।

उसके करीब पहुंच कर ठाकरे ने बड़े प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा और बोला—

“डरो नहीं बेटे—मेरे से बात करोगी न?”

पूनम ने जोरों से थूक सटकते हुए सिर हिला दिया।

“शाबाश—आओ अन्दर बैठ कर बात करते हैं...।”

कह कर ठाकरे उसे भीतर ले आया।

वह अंजली का बेडरूम था जिसमें शानदार बेड लगा था।

बेड के करीब ही एक टेबल पर किताबें रखी थीं।

ठाकरे ने पूनम को उठा कर बेड पर बिठाया और स्वयं उसके करीब बैठते हुए बोला—

“मुझे बताओ बेटे—क्या देखा तुमने...?”

पूनम के गले की घण्टी पुनः उछली और वह बुरी तरह से सहमें अंदाज में बताने लगी—

“म...मैं तब कमरे से बाहर निकली थी...। जब मैंने अपनी दीदी की 'एक्टिवा' के सामने एक कार से दो आदमी उतरते देखे, और वे दोनों दीदी को उठा कर कार में डाल कर ले गए...।”

“घर कहां है तुम्हारा...?”

“पास ही है।” पूनम ने बाजू उठा कर एक दिशा की तरफ इशारा किया।

"मुझे दिखाओगी अपना घर...?"

पूनम ने सहमति से सिर हिला दिया।

"शाबाश...। तुम तो बहुत बहादुर बच्ची हो...आओ...। वहां चलते हैं...वहीं बातें करेंगे।"

पूनम ने सिर हिलाया और बेड से नीचे उतर गई।

ठाकरे उसे लिए घर से बाहर निकला और उसके साथ-साथ घटनास्थल पर पहुंच गया।

अंजली की स्कूटी अभी भी वहीं गिरी पड़ी थी।

"वो 'एक्टिवा' अंजली दीदी की है...।" पूनम ने गिरी पड़ी 'एक्टिवा' की तरफ उंगली की।

सिकन्दर ठाकरे 'एक्टिवा' के करीब पहुंचा—कुछ पल गिरी पड़ी 'एक्टिवा' को देखा। फिर पूनम की तरफ देखते हुए बोला—

"तुम्हारा घर कहां है...?"

"वो—एक सौ सत्रह नम्बर...।"

पूनम ने सड़क पार दो घर आगे एक साधारण से मकान की तरफ इशारा किया—जिसके दरवाजे के करीब दीवार पर '117' लिखा हुआ था।

"तुमने वह कार देखी थी, बेटे..." ठाकरे पुनः उसे देखते हुए बोला —"जिसमें वो अंजली को ले गए थे?"

पूनम ने हां में सिर हिलाया।

"कौन-सी कार थी वह?"

"स...सफेद रंग की थी...।"

"कार का नम्बर देखा...?"

पूनम ने सिर दांये-बांये हिला दिया।

"तुमने उन दोनों को देखा था—जो अंजली को ले गए थे...?"

पूनम ने आंखें बड़ी करते हुए सिर ऊपर-नीचे किया।

"शाबास...।" सिकन्दर ठाकरे ने उसके सिर पर थपकी दी—"दिखने में कैसे थे दोनों...?"

पूनम ने थूक सटकी—फिर अपनी बाहें फैलाते हुए बोली—

"एक तो मोटा था...। उसके मुंह पर दाढ़ी थी और वो काले रंग का था। उसने दीदी का मुंह दबाया था।"

"और दूसरा कैसा था...?"

"वो भी काला था—आधा गंजा था।"

"तुम उन्हें देखोगी तो पहचान लोगी?"

पूनम सोच में डूब गई...। जैसे वह समझ न पा रही हो कि वह उन्हें पहचान पायेगी कि नहीं।

"घबराओ नहीं बेटे—मैं रात को एक आर्टिस्ट के साथ तुम्हारे घर आऊंगा। तुम उसे बताना कि वो कैसा था। फिर वह तुम्हें एक तस्वीर बना कर दिखायेगा—तुम उसे देख कर बताना कि वह वही है या कोई और...।"

"ल...लेकिन पुलिस अंकल...मेरा स्कूल वर्क पड़ा है।"

"अपनी दीदी के लिए क्या तुम एक दिन का स्कूल का काम नहीं छोड़ सकतीं...।"

"और मम्मी-पापा...।"

"उन्हें मना लूंगा मैं...। ठीक...।"

पूनम ने भोलेपन से सिर हिला दिया।

¶¶

निशांत और प्रकाश आत्माराम के बेडरूम में प्रविष्ट हुए और बेड से थोड़ा परे सोफे पर बैठ गए।

“जाकिर का फोन आया था...। माल आ गया है।”

आत्माराम दोनों पर निगाह गड़ाते हुए बोला।

सुनकर दोनों की आंखों में कुत्ते की सी चमक उभर आई।

“कैसा है...?” निशांत होठों पर जुबान फेरते हुए बोला।

“जाकिर कह रहा था कि अब तक अगवा की गई सबसे हसीन लड़की है वो...।”

“फिर तो हम आज जल्दी ही वहां पहुंच जायेंगे...।” प्रकाश अपनी जांघों पर हाथ फेरते हुए बोला।

अब तक की सबसे हसीन लड़की का नाम सुन कर ही उसके भीतर सनसनी दौड़ने लगी थी। खून की गर्दिश एकदम से कई गुणा बढ़ गई थी।

“नहीं...।” आत्माराम सख्ती से बोला—“अपने वक्त पर ही जायेगा तू। कोई जल्दबाजी नहीं करनी...।”

“तो...।” निशांत चौंक उठा—“क्या हम दोनों नहीं जायेंगे?”

“आज प्रकाश अकेला जायेगा...। तू अभी कल्याण जायेगा—वहां से तीस लाख की पेमेंट ले के आनी है। अगर रात बारह बजे से ही पहले हमने पेमेंट नहीं ली तो तीस लाख डूब जायेंगे।”

“तो प्रकाश और मैं इकट्ठे चले जाते हैं...।”

“हां, अंकल...।” प्रकाश तुरन्त बोला पड़ा—“हम दोनों ही कल्याण चले जाते हैं।”

“चीते के पास जाना है।“ आत्माराम बोला।

सुन कर निशांत गहरी सांस छोड़ कर रह गया। उसने प्रकाश की तरफ गर्दन मोड़ी और बोला—“वहां तू नहीं जा सकता। तू क्या, कोई भी नहीं जा

सकता। सिर्फ मेरे को ही जाना होगा वहां...। अगर मेरे साथ कोई दूसरा होगा तो न तो पेमेंट मिलेगी, न ही मेरे साथ गया आदमी बचेगा।"

"य...यह क्या कह रहा है तू...?" बुरी तरह से हड़बड़ा उठा प्रकाश —"और यह चीता कौन है...?"

"सब्र कर—अभी अण्डरवर्ल्ड में घुसा नहीं तू...।" आत्माराम उसे समझाते हुए बोला—"अण्डरवर्ल्ड में बड़ी गहराई से घुसने के बाद ही चीते का पता चलता है...।"

"बस इतना जान ले कि वह पूरी मुम्बई का इकलौता बाप है।" बोला निशांत—"बस इससे ज्यादा जानने की जरूरत नहीं तेरे को...। आज तू अकेला ही मजे ले। मैं अगर रात को वक्त पर आ गया तो पहुंच जाऊंगा—नहीं तो कल कसर पूरी कर लूंगा...।"

बोला कुछ नहीं वह—बस सिर हिला दिया।

¶¶

नेहा ने थर्मामीटर विशाल कपूर के मुंह से निकाला और उसे ट्यूबलाईट की तरफ करके देखा।

"निन्यानवे...। वह थर्मामीटर पर से निगाह हटाते हुए बोली और उसे प्लास्टिक कवर में डालते हुए बोली—"शुक्र है तुम्हें आराम मिला—वर्ना परसों रात को तुम पूरी तरह से तप रहे थे।"

विशाल कपूर हौले से मुस्कुरा पड़ा।

"मैं सिर दबा दूं पापा...?" तभी उसके पास बैठी गुड़िया बोली और फिर विशाल कपूर के बिना कहे ही खड़ी होकर अपने नन्हें हाथों से उसका सिर तीन-चार बार दबा कर बोली—"अब तो दर्द नहीं कर रहा?"

कहते हुए उसने बड़े अंदाज से अपनी गर्दन टेढ़ी की।

नेहा और विशाल कपूर बेसाख्ता ही हंस पड़े।

विशाल कपूर ने गुड़िया को पकड़कर धीरे से चूमा और बड़े ही प्यार से बोला—"तेरा हाथ लगते ही मेरा सारा दर्द दूर हो गया मेरी बिटिया रानी। चलो—

अब तुम अपने भैया के पास सो जाओ...।”

गुड़िया ने सिर हिलाया—विशाल का माथा चूमा और बेड से उतर कर अपने कमरे की तरफ बढ़ गई।

“मैं तुम्हारे लिए खिचड़ी ले कर आती हूं...।” तभी नेहा बोली।

“रिमोट देती जाना...।” बोला विशाल कपूर—“सुबह से टी○वी○ चलाकर नहीं देखा...। नौ बजे के समाचार देख लेता हूं।”

नेहा ने करीब ही सेन्टर टेबल पर पड़ा रिमोट उठाकर उसकी गोद में रखा और बाहर निकल गई।

विशाल कपूर ने रिमोट उठाकर उसे कोने में रखे टी०वी० की तरफ किया और उसे ऑन कर दिया।

शीघ्र ही स्क्रीन रोशन हुई।

आर न्यूज लगा हुआ था।

“नमस्कार।” समाचार वाचक स्क्रीन पर बोल रहा था—“मैं आशुतोष—खबर नौ बजे में आपका स्वागत है।

सबसे पहले अब तक की चार बड़ी खबरों पर एक नजर...

तुरन्त उसका चेहरा स्क्रीन से गायब हुआ और उसके स्थान पर स्क्रीन पर कसाव की तस्वीर उभरी...। साथ ही म्यूजिक के साथ बैकग्राउंड से आवाज आई—

“कसाब पर दस हजार पन्नों की चार्जशीट अदालत में दाखिल...। हर रोज जेल में ही होगी सुनवाई।”

“अमेरिका ने आज फिर पाकिस्तान पर निशाना साधते हुए उसे लताड़ा...।”

स्क्रीन पर अमेरिका के राष्ट्रपति की भाषण देती तस्वीर उभरी।

“मुम्बई में एक और लड़की का अपहरण...।”

स्क्रीन पर अंजली की तस्वीर उभरी।

"और भारत और न्यूजीलैंड का पहला वनडे कल से।"

मगर विशाल कपूर को वो खबर तो जैसे सुनाई ही नहीं दी...।

उसकी आंखों के सामने अंजली की फोटो नाच रही थी—जिसका अपहरण हुआ था।

वह पूरी खबर सुनना चाहता था...। और फौरन सुनना चाहता था...। मगर आर चैनल पर खबरों की शुरूआत आतंकी कसाब से शुरू हुई थी।

सो उसने तुरन्त चैनल बदला कि हो सकता है कोई और चैनल पहले उस खबर को दिखा रहा हो।

स्टार न्यूज पर उसकी इच्छा पूरी हुई।

दीपक चौरसिया स्क्रीन पर वही खबर सुना रहा था।

"अभी हफ्ता भर पहले ही कामना नाम की एक लड़की का अपहरण हुआ था—और आज अंधेरी की पांचवीं सड़क से अंजली नाम की एक लड़की का उस वक्त अपहरण हो गया—जब वो कॉलेज से घर लौट रही थी।

बारह साल की एक प्रत्यक्षदर्शी के अनुसार, एक सफेद कार से दो आदमी निकलकर उसे स्कूटर से खींच कर उठा कर ले गए।

क्या अब पुलिस पिछली लड़कियों की तरह अंजली की भी लाश मिलने का इंतजार करेगी—या हाथ-पैर हिलायेगी?

पिछले तीन महीने में मुम्बई में दस लड़कियों का अपहरण हो चुका है—जिनमें से नौ की लाशें पुलिस को हासिल हो चुकी हैं...। दसवीं का अभी तक पता नहीं चल पाया।

क्या अंजली की भी लाश मिलेगी—या पुलिस उसे सही-सलामत हासिल कर पायेगी? यह तो आने वाला वक्त ही बतायेगा...। वैसे इंस्पेक्टर सिकन्दर ठाकरे जी जान से अपहरणकर्ताओं को ढूंढने में लगे हुए हैं। पूनम नाम की बच्ची की मदद अपहरणकर्ताओं की तस्वीर बनाने के लिए ली जा रही है।"

विशाल कपूर के कानों में सांय-सांय हो रही थी।

टी०वी० देखने में वह इस कदर खो गया था कि उसे अपने पास खड़ी नेहा भी नजर नहीं आई-जो खिचड़ी की प्लेट पकड़े टी०वी० देख रही थी।

दोनों की निगाह टी०वी० से तभी हटीं—जब वह खबर खत्म हो गई।

खबर में पुलिस की काफी लानत मलानत की गई थी—सरकार को कोसा गया था।

अपने करीब नेहा को देख विशाल हल्के से चौंका—फिर थोड़ा सीधा बैठ कर उससे प्लेट ले अपनी गोद में रखते हुए बोला—"खबर देखी तुमने...?"

"हां...।" नेहा बोली—"और मुझे लगता है कि यह काम भी आत्माराम के बेटे और भतीजे का ही है...।"

"तुम्हें तो लगता है; मगर मुझे तो पूरा विश्वास है कि यह काम उन्हीं का है; मगर अब के बाद वे ऐसी घिनौनी हरकत नहीं कर पायेंगे...!"

“बिल्कुल ठीक कह रहे हो तुम विशू—अभी पुलिस को फोन करो और उसे बता दो कि अंजली कहां कैद हो सकती है...।”

“पागल हो गई हो क्या तुम...?”

“क्यों...गलत कहा मैंने?” हल्के-से हड़बड़ाई नेहा।

“कामना की बारी क्या हुआ था—भूल गई हो क्या तुम? उस इंस्पेक्टर ने अपने हाथों से गोली मार दी थी बेचारी को...। पुलिस पर से मेरा भरोसा उठ चुका है...। अगर मैंने पुलिस को सूचित कर दिया और अंजली के साथ कुछ हो गया तो मैं खुद को कभी माफ नहीं कर सकूंगा।”

“तो क्या खुद पकड़ोगे उसे?”

“नहीं...मैं तो सुबूत तैयार करूंगा—आत्माराम से लड़ने की ताकत तो नहीं मुझमें...। मगर मेरा कैमरा उसे ऐसी पटखनी देगा कि वो किसी को मुंह दिखाने लायक नहीं रहेगा...। और पुलिस को भी मजबूर होकर आत्माराम के बेटे और भतीजे को पकड़ना ही पड़ेगा।”

"क्या करोगे तुम...?"

"स्टिंग ऑपरेशन...।"

"मगर तुम्हें तो बुखार है?" हड़बड़ाते हुए बोली वह।

"इतने बुखार की परवाह नहीं करता मैं...। तुम जल्दी से पानी लाओ—मैं यह खिचड़ी खाकर दवा ले कर निकलता हूं।"

कहकर वह चम्मच से खिचड़ी खाने लगा।

नेहा ने एक गहरी सांस छोड़ी और पानी लेने चली गई।

¶¶

विशाल कपूर ने कार कोठी के पीछे वाली गली के बाहर खड़ी की और अपने करीब सीट पर रखे हैंडीकैम को उठाया और दरवाजा खोल कर बाहर आ गया।

दरवाजा बन्द करके वह गली में प्रविष्ट हुआ और कैमरे को गले में लटका कर बाऊंड्री-वाल को धीरे से पार कर भीतर लॉन में आ गया।

उस वक्त रात के साढ़े ग्यारह बज रहे थे।

दबे पांव चलते हुए वह लॉन पार कर कोठी के साईड में बनी चौड़ी गली के करीब पहुंचा तो ड्राईव-वे पर खड़ी कार को देखकर उसका कलेजा जोरों से धड़क उठा।

कार की वहां मौजूदगी ही बता रही थी कि कोठी में कोई है और कोठी में कौन होगा—यह वह समझ रहा था।

अपने धड़कते दिल पर काबू पाने की कोशिश करते हुए उसने तुरन्त हैंडीकैम चालू किया और कार—उसकी नम्बर प्लेट तथा कार के आसपास की दीवारों को कैमरे में कैद करने लगा।

इस काम से निपट कर वह दबे पांव आगे बढ़ा और आगे के कम्पाऊंड में आ गया।

उस वक्त उसका कलेजा इस कदर धड़क रहा था कि अपनी धड़कनों को वह अपने कानों से सुन रहा था।

एक तो बुखार—ऊपर से जान का खतरा।

पसीने से लथपथ हो रहा था वह; मगर उसके इरादे कमजोर नहीं पड़े थे।

वह जानता था कि अगर वह उनके हत्थे चढ़ गया तो उसकी मौत निश्चिंत है।

मगर कानून की मदद के लिए उसने अपनी जान को खतरे में डालना ठीक समझा...।

कम्पाऊंड में आकर उसने वहीं से एक बार फिर कोठी का वीडियो बनाया—फिर उसी शाट में कम्पाऊंड का वीडियो बनाया और फिर कैमरा ऑन किए हुए ही टायलेट के दरवाजे पर ट्राई मारी—जिसमें से वह पहले भी भीतर जा चुका था।

दरवाजा खुल गया।

वह टॉयलेट से होते हुए लॉबी में आया और लॉबी की रील उतारने लगा।

उसके बाद वह उस कमरे के दरवाजे की तरफ बढ़ गया—जिसमें से उसे हल्की-हल्की चीखों की आवाजें आ रही थीं।

बेड पर अंजली वैसे ही बंधी हुई थी—जैसे कामना को बांधा गया था।

उसके चारों हाथ-पैर बेड के पायों से बंधे हुए थे और वह खुद पर सवार हो रहे प्रकाश से बचने के लिए जूझ रही थी।

"आह...छोड़ दे मुझे कमीने...।"

"अब तो सारी रात तेरे पर चढ़ूंगा...।" उसके उभारों को बेदर्दी से मसलते हुए क्रूरता से हंसा प्रकाश—"और तू अभी से छोड़ने की बात कर रही है...।"

"नहीं...म...मुझ पर रहम करो...। तरस खाओ मु...झ पर आ...आई..।"

सहसा ही उसके मुंह से पीड़ा भरी चीख उबल पड़ी।

चेहरा विकृत हो उठा—आंखें ऐसे उबल पड़ीं—जैसे कटोरों से बाहर गिर पड़ेंगी।

उसे ऐसा लगा—जैसे वह अब जिन्दा नहीं बचेगी...।

मगर प्रकाश उसकी पीड़ा से बेपरवाह अपनी धुन में आगे...और आगे बढ़ता जा रहा था।

अंजली का मुंह ऐसे खुल गया...जैसे उसकी जान मुंह के रास्ते से बाहर निकलने जा रही हो।

आंखों में आंसुओं के साथ-साथ पीड़ा के भाव स्पष्ट नजर आ रहे थे।

इज्जत लुट चुकी थी उसकी।

एक दहकते ज्वालामुखी ने उसकी इज्जत का रोयां-रोयां जला डाला।

उसका जिस्म जोर-जोर से हिल रहा था...। लेकिन पीड़ा की अधिकता की वजह से वह चीख भी नहीं पा रही थी...।

वह लुटती रही...लुटती रही और लुटती रही।

उस पर सवार दरिंदा अपनी तेज रफ्तार से उसे पीड़ा पर पीड़ा दिए जा रहा था। उसकी आग उगलती सांसें अंजली को झुलसाये जा रही थीं।

सहसा ही वह उस पर गिरा और अंजली की छातियों में मुंह दे कुत्ते की तरह हांफने लगा।

अभी वह अपनी सांसों पर पूरी तरह से नियन्त्रण भी नहीं पा सका था कि तभी दरवाजे की तरफ से हल्की-सी आहट उसके कानों में पड़ी।

चौंका तो नहीं वह—हां, गर्दन उठा कर दरवाजे की तरफ जरूर घुमाई थी।

जैसे ही उसकी नजर दरवाजे पर पड़ी—उसका कलेजा जोरों से उछल पड़ा।

दरवाजा थोड़ा-सा खुला हुआ था और उसमें से एक लैंस झांकता नजर आ रहा था।

तुरन्त छलांग मार कर वह बेड से उतरा और दरवाजे की तरफ लपका।

मगर तब तक कैमरा वहां से हट चुका था।

तेजी से वह दरवाजे तक पहुंचा और उसे खोल कर बाहर निकला तो उसे विशाल कपूर टॉयलेट में प्रवेश करता नजर आया।

वह उसके पीछे भागा...।

कम्पाऊंड तक उसका पीछा भी किया—मगर उससे आगे वह जा नहीं सकता था।

सिर से पांव तक नंगा था वह...।

सो उसके देखते ही देखते विशाल कपूर बाऊंड्री-वाल फांद कर वहां से फरार हो गया।

प्रकाश के चेहरे पर बदहवासी साफ नजर आ रही थी।

उसके जिस्म के तमाम मसामों में से पसीने के ट्यूबवैल फूट पड़े थे।

कलेजा जोर-जोर से धड़क रहा था...।

बदहवासी में वह वापिस मुड़ा और कमरे में आकर अपने कपड़ों के करीब पहुंचा और शर्ट की जेब में से मोबाइल निकाल कर जल्दी-जल्दी आत्माराम का नम्बर मिलाने लगा।

¶¶

"ट्रिन...ट्रिन...।"

फोन की घण्टी घनघना उठी।

उस वक्त आत्माराम बेड पर लेटा हुआ था और एक हसीना उसकी जांघों पर बैठी उसके सीने पर हाथ फेर रही थी।

घण्टी बजते ही युवती थोड़ा आगे को झुकी, बेड की पुश्त पर रखे फोन का रिसीवर उठा कर आत्माराम के कान से लगा दिया।

"हैलो...।" आत्माराम रिसीवर को पकड़ते हुए बोला।

"अं...क...ल...।"

दूसरी तरफ से प्रकाश की बुरी से घबराई आवाज सुन कर आत्माराम चौंक उठा। वह यही समझा कि पकड़ी गई लड़की भागने में कामयाब हो गई है—और तो कुछ सोच भी नहीं सकता था वह।

"क्या हुआ...?" वह बोला—"तू इतना घबराया हुआ क्यों है? सब ठीक तो है न...?"

"कुछ भी ठीक नहीं है, अंकल...।"

“क्या हुआ…? कुछ बोल तो सही…।”

“किसी ने मेरी रेप करते हुए की फिल्म बना ली है…।”

आत्माराम इतनी जोरों से चौंक कर उठा कि युवती उसकी जांघों से उछल कर एक तरफ बेड पर जा गिरी।

मगर आत्माराम ने उसकी तरफ देखा तक नहीं।

प्रकाश की बात सुन कर तो उसके हाथों के तोते ही उड़ गए थे।

“य…यह क्या कह रहा है तू…?” बड़ी मुश्किल से बोल पाया वह।

दूसरी तरफ से प्रकाश ने सारी बात कह सुनाई।

“कौन था वो हरामजादा…?”

“प…ता नहीं अंकल…म…मैं उसकी सूरत नहीं देख सका। अ…अब क्या करूं, अंकल…।”

"घबरा नहीं...कुछ नहीं होने दूंगा मैं तुझे...तू फौरन कपड़े पहन और यहां आ जा। मैं देखता हूं मैं क्या कर सकता हूं...।"

"जी...जी, अंकल...।"

आत्माराम ने रिसीवर वापिस क्रेडिल पर रखा—तेजी से कुछ सोचा और फिर रिसीवर उठाकर जाकिर का नम्बर मिलाने लगा।

"हैलो...।" शीघ्र ही दूसरी तरफ से जाकिर की आवाज आई।

"जाकिर...।" हल्के से गुर्राया आत्माराम।

"हां, बोलिए, नेताजी।"

उत्तर में आत्माराम उसे समझाने लगा।

¶¶

प्रकाश ने जल्दी-जल्दी कपड़े पहने और बेड पर बंधी अंजली को देखा—जो कहर बरपाती आंखों से उसे ही देख रही थी।

"अच्छा हुआ कमीने जो तेरा स्टिंग ऑपरेशन हुआ...। भगवान करे फिल्म उतारने वाला कोई पत्रकार हो और सुबह तक पूरे भारत में तेरी और तेरे उस कुत्ते अंकल की हकीकत सामने आ जाये...।" वह गुर्राई।

मगर प्रकाश ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया।

उस वक्त उसकी हालत काफी पतली हो रही थी और वह जवाब देने की स्थिति में नहीं था।

सो वह उसे बस घूर कर ही रह गया।

मगर जब अंजली पर उसके घूरने का असर नहीं हुआ तो उसने मुंह परे किया और दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

उसके जाने के बाद अंजली की आंखों के कोरों से आंसू बह निकले।

"मुझे माफ करना, ममा...मैं अपनी इज्जत नहीं बचा पाई...।" वह रोते हुए बड़बड़ाई—"उस नरपिशाच ने मेरी इज्जत तार-तार कर डाली...।"

कहते हुए उसकी आंखों से बहने वाले आंसुओं में तेजी आ गई।

अभी प्रकाश को वहां से गए दस मिनट ही हुए थे कि किसी के कदमों की आहट सुन कर उसने गर्दन उठा कर दरवाजे की तरफ देखा।

वही दोनों आदमी कमरे में प्रविष्ट हुए—जिन्होंने उसका किडनैप किया था।

उसमें से दाढ़ी वाले के हाथ में उसके कपड़े थे।

उसने कपड़े अंजली के पेट पर फेंके और उसके हाथ खोलते हुए बोला—"चल—पहन ले कपड़...।"

कहते हुए उसने उसकी कलाई पर बंधी रस्सी खोल दी और दूसरी रस्सी खोलने के लिए बेड के परली तरफ जाने के लिए बेड पर चढ़ा और उसे फांद कर परली तरफ पहुंच गया।

दूसरा अधगंजा उसके पैरों को खोल रहा था।

"जल्दी कर...।" वह बोला—"वर्ना कहीं ऐसा न हो हमारा सब्र जवाब दे जाये और तेरे को कपड़े पहनने ही न दें...।"

हाथ-पैर आजाद होते ही अंजली आंसू बहाते हुए कपड़े पहनने लगी। उस अधगंजे की बात से वह और भी डर गई थी।

जैसे ही उसने कपड़े पहने—दाढ़ी वाले ने बिना वक्त गंवाये उसकी कनपटी पर घूंसा दे मारा।

अंजली को सम्भलने का मौका ही नहीं मिला...उससे पहले ही वह बेहोश होकर बेड पर गिर पड़ी।

दोनों ने उसे उठाया और बाहर की तरफ बढ़ गए।

¶¶

"अरे नहीं, अंकल—उसके बाल ऐसे नहीं थे...।"

पूनम आर्टिस्ट द्वारा बनाये गए चित्र के बालों को देखते हुए बोली।

करीब बैठे सिकन्दर ठाकरे के होठों पर सहसा ही मुस्कान नाच उठी।

पूनम उससे काफी खुल गई थी...। उसने पूनम के दिल से पुलिस का डर इस तरह से भगा दिया कि अब वह पूरी तरह से अपने स्वभाविक रूप में थी और उनका पूरा साथ दे रही थी।

पिछले दो घण्टों से आर्टिस्ट पूनम से मगज मार रहा था...।

मगर अभी तक वह किसी खास चेहरे के करीब भी नहीं पहुंचा था।

मगर बोर नहीं हुआ था वह। वह जानता था ऐसे काम में कई बार पूरा-पूरा हफ्ता लग जाता है। जबकि यहां तो अभी सिर्फ शुरूआत ही हुई थी।

'डिंग...डिंग...डिंग...।"

तभी ठाकरे की जेब में रखे मोबाइल का म्यूजिक बज उठा।

उसने अपनी मुस्कान पर ब्रेक लगाई और जेब से मोबाइल निकाल कर उसकी स्क्रीन पर नजर मारी।

थाने से फोन आया था।

"जरूर कोई खास बात है—वर्ना रात के इस वक्त फोन क्यों आयेगा...।"

वह मन-ही-मन बड़बड़ाया और हरा बटन दबाते हुए मोबाइल कान से लगाते हुए बोला—"हैलो...।"

"हैलो, मैं आर न्यूज से रिपोर्टर विशाल बोल रहा हूं, इंस्पेक्टर साहब।"

"कहिये रिपोर्टर साहब...क्या खबर देना चाहते हैं आप?"

"मुझे पता लगा है कि आप अंजली के अपहरणकर्ता को पकड़ने के लिए बहुत भाग-दौड़ कर रहे हैं सर।"

"भई, वो तो धंधा है अपना। वर्दी पहनी है...तो फर्ज तो निभाना ही पड़ेगा।"

"तो फिर थाने आ जाईये...। मैं आपको मय सुबूत के उस अपहरणकर्ता के बारे में बताता हूं।"

सुनकर बुरी तरह से उछल पड़ा सिकन्दर ठाकरे—"तुम"—आर्टिस्ट से बोला—"चलो।"

"लेकिन, सर...अभी तो मैं शुरू ही हुआ हूं।" आर्टिस्ट बोला।

"वक्त देखो—दो बज रहे हैं। बच्ची की आंखों में नींद भरी हुई है।" उसने पूनम के सिर पर हाथ फेरा—"अभी तुम सो जाओ। हम सुबह आयेंगे।"

पूनम ने सहमति से सिर हिला दिया।

आर्टिस्ट ने अपने सारे पेपर और तामझाम समेटा और खड़ा हो गया।

दोनों कमरे से निकले तो बाहर कुर्सी पर बैठा पूनम का बाप खड़ा हो गया।

सिकन्दर ठाकरे ने उसके कुछ बोलने से पहले ही थैंक्यू कहा और आर्टिस्ट के साथ मेन गेट की तरफ बढ़ गया।

¶¶

विशाल कपूर ठाकरे को उसके ऑफिस के बाहर ही एक कुर्सी पर बैठा मिला—जो उसे देखते ही खड़ा हो गया।

"आप ही ने बुलाया था...?" ठाकरे सीधे मतलब की बात पर आते हुए बोला।

"जी हां...।"

"आईये...।" कहकर वह ऑफिस में प्रवेश कर गया।

विशाल कपूर उसके पीछे-पीछे भीतर प्रविष्ट हुआ और उसके कहने से पहले ही एक कुर्सी पर बैठते हुए बोला—"सॉरी सर...मुझे बुखार है, ज्यादा देर खड़ा नहीं रह सकता मैं...। पहले ही बहुत ज्यादा मेहनत करने के कारण कमजोरी आ गई है। इसलिए आपसे पहले ही बैठ गया।"

"कोई बात नहीं...।" कुर्सी पर बैठ कर बोला ठाकरे और टेबल पर रखा पानी का गिलास उठा कर उसके आगे रखते हुए बोला—"पानी पीजिये...।"

विशाल कपूर ने गिलास उठा कर पानी पीया और वापिस टेबल पर रख कर जेब से एक सीडी निकाली और उसकी तरफ बढ़ाते हुए बोला—"यह लीजिये सुबूत...।"

"क्या है इसमें...?"

"एक बड़े आदमी का भतीजा अंजली से रेप कर रहा है। उसी का स्टिंग ऑपरेशन है।" बोला विशाल कपूर—"और आपकी जानकारी के लिए यह भी बता दूं कि इसकी एक कॉपी 'आर न्यूज' में पहुंच चुकी है...जो सुबह आठ बजे दिखा दी जायेगी।"

कहकर वह ठाकरे को ऐसे देखने लगा—जैसे कह रहा हो कि अब उसे कार्रवाई करनी ही पड़ेगी।

ठाकर ने उसे पहले तो घूरा—फिर उससे सीडी लेते हुए बोला—"लगता है मेंरे बारे में कुछ खास नहीं जानते आप...। वर्ना जिस तरह से आप मुझे देख रहे हैं...वैसे न देख रहे होते।"

सुन कर विशाल कपूर पहले तो हड़बड़ाया—फिर सामान्य हो गया।

बोला कुछ नहीं वह।

ठाकरे ने अपनी टेबल की नीचे वाली ड्राअर खींच कर उसमें से लेपटॉप निकाला और उसे खोल कर उसे ऑन किया और सी०डी० को उसमें डाल कर की बोर्ड-पर उंगलियां नचाईं, फिर स्क्रीन पर निगाह गड़ा दी।

स्क्रीन पर पहले कार का दृश्य उभरा—फिर उसकी नम्बर प्लेट को फोकस किया और फिर आस-पास की दीवारों पर कैमरा घूमा। और पहले कोठी के कम्पाऊंड, फिर टायलेट में से होते हुए कैमरा लॉबी में पहुंचा।

और फिर कमरे में बेड पर बंधी अंजली के साथ रेप होते देख सिकन्दर ठाकरे के तो रोंगटे खड़े हो गए।

और जब उसने बलात्कारी का चेहरा देखा तो पहले तो उसकी आंखें सिकुड़ीं—फिर एकदम से फैल गईं।

"य...यह तो आत्माराम का भतीजा लग रहा है...।" वह बोला।

"वही है।" अर्थपूर्ण अंदाज में मुस्कुराया विशाल कपूर—"मेरा ख्याल है अब आप आत्माराम को फोन करेंगे और उससे पूछेंगे कि क्या प्रकाश वहां है। और...।"

बोलते-बोलते रुक गया विशाल कपूर।

ठाकरे झटके से खड़ा हो गया था और कहर भरी आंखों से उसे देख रहा था।

"सभी को एक ही तराजू में नहीं तौला करते रिपोर्टर साहब...।" वह गुर्राया—"किस जगह पर है अंजली...?"

"मैं साथ ले चलता हूं आपको।" कहते हुए विशाल कपूर भी खड़ा हो गया—"वैसे मुझे उम्मीद नहीं कि अंजली अब वहां होगी।"

“क्यों...?”

“प्रकाश ने मुझे देख लिया था—ऐसे में मेरे को उम्मीद नहीं कि वह अंजली को वहां रखने का रिस्क लेगा।”

“देखते हैं। अंजली वहां नहीं मिली तो मैं आत्माराम के हलक में बांह देकर उससे उगलवाऊंगा।”

“वो एम०एल०ए० है।”

“फिर भी कानून से नीचे है। विधायक क्या प्रधानमंत्री भी हो—तो वो भी कानून से ऊपर नहीं हो सकता। चलो...।”

कहकर उसने लैपटाप में से सी०डी० निकाल कर उसे तथा लैपटॉप को बन्द करके दराज में रखा और विशाल कपूर को साथ ले दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

कुछ ही देर में वह विशाल कपूर की कार में बैठा राजाजी नगर की तरफ जा रहा था। उसके पीछे पुलिस की जिप्सी थी जिसमें सात-आठ सिपाही बैठे थे।

¶¶

"ट्रिन...ट्रिऩ...।"

फोन की घण्टी बजते ही आत्माराम ने झपटने वाले अंदाज में रिसीवर उठाया और अपने सामने बैठे प्रकाश को देखते हुए रिसीवर कान से लगाते हुए बोला—"हैलो...।"

"निरंजन बोल रहा हूं, नेता जी...।" दूसरी तरफ से आवाज आई।

"हां, बोल निरंजन—क्या रिपोर्ट है?" आत्माराम बोला।

"पुलिस कोठी में पहुंची है, नेता जी।" आवाज आई।

सुनकर आत्माराम के माथे पर बल पड़ गए—"कोई और भी है पुलिस के साथ?" उसने पूछा।

"जी हां...आर न्यूज का रिपोर्टर विशाल कपूर है।"

एक गहरी सांस छोड़कर रह गया आत्माराम।

"ठीक है...तू जा...। तेरा वहां का काम पूरा।" वह बोला और पलंजर दबाकर जाकिर का नम्बर मिलाया।

"हैलो...।" शीघ्र ही दूसरी तरफ से जाकिर की आवाज उसके कान में पड़ी।

"पुलिस पहुंच गई है कोठी पर...।" वह बोला—"तेरे को मैंने समझा रखा है न कि क्या करना है...?"

"जी मंत्री जी।"

"तो शुरू हो जा।"

कहकर उसने रिसीवर रखा और प्रकाश को देखते हुए बोला—"गाड़ी ले जा और जब मैं फोन करूं...तभी आना...।"

प्रकाश ने थूक सटकते हुए सिर हिलाया और खड़ा हो गया।

"तेरे को पता है न कि क्या करना है...?"

"हां...।"

"हिम्मत से काम ले। अपने अंकल पर भरोसा रख—कुछ भी नहीं होने दूंगा मैं तेरे को ।"

प्रकाश जबरदस्ती मुस्कुराया और ड्राइंग रूम से बाहर निकल गया।

¶¶

"मैंने कहा था न सर कि यहां से कुछ मिलने की उम्मीद नहीं।" विशाल कपूर सिकन्दर ठाकरे से बोला—"देखिये...बेड की चादर का क्या हाल हो रहा है और वो चारों रस्सियां भी बेड पर पड़ी हैं—जिनसे अंजली बंधी हुई थी और रस्सियों के दूसरे सिरे अभी भी बेड के पायों से बंधे हुए हैं...।"

ठाकरे ने उसकी बात के जवाब में कुछ नहीं कहा। उसने पहले तो कमरे का जायजा लिया—फिर विशाल कपूर को देखते हुए बोला—“अब आप जाईये। सुबह जब टी०वी० पर आपका स्टिंग ऑपरेशन दिखाया जा रहा होगा—उस वक्त प्रकाश हवालात में होगा।”

विशाल कपूर ने सहमति में सिर हिलाया और बोला—

“मैंने तो अपना रिपोर्टर होने का फर्ज निभा दिया है, इंस्पेक्टर साहब—अब आप अपना फर्ज भूलिएगा...।”

“लगता है पुलिस के बारे में आपका तजुर्बा कुछ ठीक नहीं?” उसे घूरते हुए बोला ठाकरे।

कुछ नहीं बोला विशाल कपूर—बस हौले से हंसा और बाहर निकल गया।

ठाकरे ने पहले उस कमरे के साथ-साथ पूरी कोठी को खंगाला—फिर उसने वहां दो सिपाही तैनात किए और बाकी सिपाहियों के साथ बाहर निकल

कर जिप्सी में बैठा और आत्माराम की कोठी की तरफ रवाना हो गया।

इस वक्त उसके चेहरे पर सख्ती के भाव थे।

दांत आपस में इस कदर भिंचे हुए थे कि अगर उनमें लोहा भी दबा होता तो वह भी चूर-चूर हो जाता।

आत्माराम और उसके बेटे तथा भतीजे के बारे में उसने काफी कुछ सुन रखा था...। उसे पता था कि वह बाहुबल से विधायक बना था और अब वह गुण्डों का सरताज माना जाता था।

लेकिन न तो वह उसके इलाके में पड़ता था और न ही उसे ऊपर से आदेश आया था कि उसके खिलाफ सुबूत जुटाये जायें; मगर अब उसके खिलाफ सुबूत था—सो अब वह बिना ऊपर वालों की परमीशन के उस पर हाथ डाल सकता था।

¶¶

चेहरे पर पानी के छींटे पड़ते ही अंजली ने हड़बड़ा कर आंखें खोलीं तो उसके चेहरे पर छींटे मार रहा व्यक्ति गिलास को पकड़े पीछे हट गया।

अंजली हड़बड़ाये हुए उठी तो उसकी नजर सामने कुर्सी पर बैठे जाकिर पर जा पड़ी—जो होठों पर वहशियाना मुस्कान लिए उसे देख रहा था।

जाकिर कुर्सी से खड़ा हुआ और कुर्सी की बैक पकड़ कर उसे घसीटते हुए अंजली के करीब आया और उस पर पुनः बैठ गया।

मारे खौफ के अंजली अपने आप में और भी सिमट गई।

"बड़ी किस्मत वाली है तू...।" उसे गहरी नजर से देखते हुए बोला जाकिर —"जो प्रकाश बाबू का तेरे पर दिल आ गया है...। वो तेरे से शादी करना चाहते हैं...।"

"न...हीं...।" अंजली का चेहरा सख्त हो उठा—"मैं मरना कबूल कर लूंगी; मगर उस कुत्ते से शादी हरगिज नहीं करूंगी—जिसने मेरी इज्जत तार-तार की है।"

"वो तो तेरे को करनी ही पड़ेगी वर्ना...।"

"बॉस...।" तभी एक आदमी घबराया हुआ भीतर प्रविष्ट हुआ—"हमारे माल को...।"

आगे के शब्द नहीं बोल पाया वह...।

जाकिर ने रिवॉल्वर निकाल कर उस पर तान दी...।

"तू जानता है हरामखोर कि जब मैं काम पर लगा होऊं तो किसी को भी बीच में बोलने की इजाजत नहीं होती...?"

"स...सारी बॉस...मैं...।"

"धांय...।"

बेचारा अपनी बात पूरी नहीं कर पाया कि जाकिर की रिवॉल्वर गर्ज उठी और वो व्यक्ति चीखता हुआ सीना पकड़े वहीं गिर पड़ा।

“ले जाओ इसे और लाश को किसी गटर में फेंक दो।”

जाकिर अंजली को पानी के छींटे मारने वाले से बोला।

तुरन्त उस आदमी ने गिलास वहीं फर्श पर रखा और लाश की टांगें पकड़ कर उसे घसीटते हुए बाहर ले गया।

जाकिर ने गहरी सांस छोड़ते हुए रिवॉल्वर की नाल में फूंक मारी और अंजली को देखा—जो आंखें फाड़े दरवाजे की तरफ देखे जा रही थी—जिसमें से वो आदमी लाश को खींच कर ले गया था।

“मेरा हुक्म न मानने वाले का यही हश्र होता है...।” वह बोला।

अंजली ने बुरी तरह से चिहुंक कर उसकी तरफ गर्दन मोड़ी और बुरी तरह से कांपते हुए जोरों से थूक सटकी।

“प्रकाश बाबू तेरे से प्यार करने लगे हैं...।” जाकिर मुस्कुराते हुए बोला—“और तेरी जानकारी के लिए बता दूं कि तेरे साथ रेप की फिल्म बन गई है। एक प्रेस रिपोर्टर ने स्टिंग ऑपरेशन किया है...। अब प्रेस रिपोर्टर ने किया है तो

जाहिर है कि सुबह टी०वी० पर रेप की फिल्म दिखाई जायेगी और फिर तेरी जो बदनामी होगी—वो तो तू समझ ही रही है। इसलिए बेहतरी इसी में है कि चुपचाप शादी के लिय हां कर दे।”

“न...हीं...।” कांपते हुए मगर मजबूत स्वर में बोली अंजली—“मैं अपनी बदनामी बर्दाश्त कर लूंगी; मगर उस कुत्ते को उसके किए की सजा दिलवा कर ही रहूंगी।”

“तो तू शादी नहीं करेगी?”

“नहीं...।”

“ठीक है...जा...।” बोला जाकिर—“लेकिन इतना याद रख ले; अगर प्रकाश बाबू को जरा सी भी आंच आई तो न तो तेरा बाप बचेगा न मां...। तू देख ही चुकी है...कत्ल करने में न तो मेरे को वक्त लगता है—न ही मेरे हाथ कांपते हैं। और अगर तू यह समझती है कि पुलिस तेरे मां-बाप को प्रोटेक्शन देगी तो यह बात अपने दिमाग में अभी से बिठा ले कि पुलिस भी हमारी गुलाम है। यानि तू

कुछ भी नहीं बिगाड़ पायेगी—कुछ भी नहीं कर पायेगी और तेरे मां-बाप खामखां में शहीद हो जायेंगे।"

"न...हीं...।" रो पड़ी अंजली—"मेरे मम्मी-पापा को कुछ मत कहना। मैं...मैं किसी से कुछ भी नहीं कहूंगी।"

"तेरे न कहने से कुछ नहीं होने वाला...। फिल्म देखकर ही सारी कहानी सामने आ जायेगी। और उसके साथ ही तेरे मां-बाप ऊपर पहुंच जायेंगे।"

"न...हीं...।" अंजली जोर-जोर से रोने लगी।

"अभी मेरी बात खत्म नहीं हुई...।" क्रूरता से मुस्कुराया जाकिर—"तेरे मां-बाप की मौत से यह किस्सा खत्म नहीं हो जायेगा...। उसके बाद तेरी बारी होगी...। मरेगी नहीं तू—बल्कि तेरे को उठा कर किसी शेख के हाथों बेच दिया जायेगा...। तू जानती है...शेख के हरम में औरतें कैसे रहती हैं? उन्हें पहनने को कपड़े नहीं दिए जाते...। शेख अपना जुनून पूरा करते वक्त औरत का वो हाल कर देते हैं कि वो पनाह मांगने लगती है; लेकिन उसे पनाह नहीं मिलती...।"

रोते हुए ही अंजली ने जोरों से झुरझुरी ली।

"नहीं...म...मैं...ऐसी जिन्दगी नहीं जीना चाहती...।" वह रोते हुए बोली।

"तो फिर शादी के लिए हां कर दे। ऐश करेगी ऐश! तेरी—तेरे मां-बाप की इज्जत कई गुणा बढ़ जायेगी...। तू रानियों की तरह राज करेगी।"

"म...मैं तैयार हूं। मम्मी-पापा के लिए मैं कुछ भी करने को तैयार हूं।"

"शाबाश...।" जाकिर की आंखें चमकने लगीं—"अब तुम...तुम...नहीं—आप हमारे प्रकाश बाबू की होने वाली पत्नी हो गईं।"

"ल...लेकिन स्टिंग ऑपरेशन में तो मेरे साथ रेप हो रहा है—उसका जवाब क्या दूंगी मैं...।"

"वो तो मैं समझा देता हूं आपको, मैडम...।"

कहकर जाकिर ने उसे समझाया तो अंजली का रोयां-रोयां कांप उठा।

उसने आंसू पौंछते हुए थूक सटकी और सहमति में सिर हिला दिया।

“निरंजन...।” जाकिर ने विजयी भाव से ऊँचे स्वर में आवाज लगाई।

शीघ्र ही एक आदमी भीतर प्रविष्ट हुआ।

“यस बॉस...।” वह सिर को तनिक झुकाते हुए बोला।

“मैडम के लिए कांपी-पेन ले कर आओ।”

निरंजन ने खुशी भरे अंदाज में अंजली को देखा—“तो प्रकाश बाबू शादी करने जा रहे हैं?”

“हां...।”

“अभी लाया।”

वह खुशी से झूमते हुए बोला और बाहर निकल गया।

"कॉपी पेन किसलिए...?" थूक सटकते हुए पूछा अंजली ने।

"कुछ नहीं मैडम—बस अपने हाथ पक्के करने हैं हमने।"

"म...मैं कुछ समझी नहीं...?"

"आपको एक सुसाईड नोट लिखना होगा—जिसमें आप यह लिखेंगी कि आप प्रकाश बाबू से बेहद प्यार करती हैं और आप ही के कहने पर उन्होंने आपसे रेप किया था; मगर स्टिंग ऑपरेशन की वजह से आप किसी को मुंह दिखाने लायक नहीं रहीं...। अपनी ही नजर में गिर गईं। सो आप आत्महत्या करने जा रही हैं।"

"न...ही...मैं...मैं ऐसा हरगिज नहीं लिखूंगी।" कांपते हुए बोली वह।

"समझने की कोशिश कीजिये मैडम, शादी होते ही आप उसे फाड़ देना। यह तो बस अपनी सुरक्षा के लिए है।"

तभी निरंजन एक कॉपी और पैन ले आया।

"लिखो...।"

मजबूर थी अंजली—सो जो-जो जाकिर बताता गया, वह लिखती रही।

"अब नीचे अपने दस्तखत कर दो।" सब कुछ लिखवा कर बोला जाकिर।

अंजली ने नीचे साईन कर दिए।

मन-ही-मन उसने यह सोच लिया था कि अगर उसने कोई चाल चली तो वह बिना कोई परवाह किए पूरी दुनिया में शोर मचा देगी।

जाकिर ने उससे कॉपी-पेन लिया और खड़ा होते हुए बोला—"उठिये मैडम...।"

किसी तरह से खुद को सम्भालते हुए अंजली खड़ी हो गई।

"निरंजन...।"

तुरन्त निरंजन भीतर दाखिल हुआ।

"मैडम को पूरी इज्जत से घर छोड़ कर आओ...।" हुक्म दिया उसने।

निरंजन ने अंजली के सामने सिर झुकाया और दरवाजे की तरफ बांह लम्बी करते हुए बोला—"चलिए मैडम...।"

अंजली सहमी हुई-सी उसके साथ दरवाजे की तरफ बढ़ गई।

उसके जाते ही जाकिर के होठों पर एक क्रूर मुस्कान फैल गई।

तुरन्त उसने अपना मोबाइल निकाला और आत्माराम का नम्बर मिलाने लगा।

¶¶

'ट्रिन...ट्रिन...।"

फोन की घण्टी बजते ही आत्माराम ने रिसीवर उठा कर कान से लगाया और बोला—"हैलो...।"

"जाकिर बोल रहा हूं, नेताजी।" दूसरी तरफ से आवाज आई।

“हां बोल जाकिर—क्या रिपोर्ट है?”

“काम हो गया है, नेता जी...। उसने लिख कर भी दे दिया है।”

“शाबास...।” खुशी से आत्माराम की आंखें चमकने लगीं—“घर भेज दिया उसे?”

“जी हां...अभी-अभी निरंजन लेकर गया है।”

“उसके पहुंचते ही मेरे को घण्टी मार देना...।”

“जी नेताजी।”

आत्माराम ने रिसीवर रखा और बेड पर लेट गया।

उसके चेहरे पर अब जरा भी तनाव नहीं था। होठों पर मुस्कान थी।

“अब देखते हैं पुलिस कब आती है यहां पर...।” वह बड़बड़ाया और आंखें बन्द कर लीं।

¶¶

जिप्सी आत्माराम की कोठी के गेट के सामने रुकी तो गेट पर खड़ा दरबान चौंक कर ठाकरे को देखने लगा—जो कि जिप्सी से नीचे उतर रहा था।

उसके पीछे-पीछे सभी सिपाही भी नीचे उतर आये।

ठाकरे गार्ड के सामने आकर रुका और उसके चेहरे पर निगाह गड़ाते हुए बोला—"प्रकाश कहां है...?"

"साहब तो घर में नहीं हैं।" गार्ड बोला।

"मैंने यह पूछा है कि वो कहां है?"

"अब मुझे क्या पता साहब...? मालिक लोग कहां जाते हैं, यह पूछने का मेरा अधिकार नहीं है...।"

"नेता जी?"

“वो सो रहे हैं।”

“तेरे को कैसे पता कि वो सो रहे हैं?”

“सुबह के चार बजने वाले हैं, साहब...। इतना तो कोई भी जान सकता है कि वो सो रहे होंगे...।”

“उन्हें उठाओ...। मेरा उनसे मिलना जरूरी है।”

“माफी चाहता हूं, साहब... उनकी नींद में खलल डाल की इजाजत नहीं मुझे—आप सुबह आठ बजे के बाद आकर उनसे मिल लें...।

“मैंने क्या कहा—मैंने अभी मिलना है!” इस बार ठाकरे की आवाज में गुर्राहट थी—“अगर तुमने कानूनी काम में रोड़ा अटकाया तो तुझ पर भारी पड़ सकता है।”

गार्ड ने जोरों से थूक सटकी और जेब से वॉकी-टॉकी निकाल कर अंगूठे से उसके साईड में लगा बटन दबाया।

“यस....।” तभी वाकी-टाकी से आवाज आई।

गार्ड ने अंगूठा छोड़ा और बोला—“पुलिस आई है....और नेता जी से अभी मिलना चाहती है।”

कहकर उसने पुनः अंगूठे से बटन दबाया।

“कौन है...?”

“इंस्पेक्टर है...।” अंगूठा हटाते हुए बोला वह और उसकी जेब पर लगे टैग पर निगाह गड़ाते हुए बोला—“सिकन्दर ठाकरे।”

“क्यों मिलना चाहते हैं?”

“प्रकाश बाबू के बारे में पूछ रहे हैं...।”

“भेज दे...।”

गार्ड ने वॉकी-टॉकी पैन्ट की जेब में डाला और खिसियानी मुस्कान के साथ ठाकरे को देख कर गेट पर हाथ मारा।

“कौन है...?”

“गेट खोल...। पुलिस भीतर जाना चाहती है।”

शीघ्र ही गेट थोड़ा-सा खुला और गेट के पीछे एक भारी चेहरे वाला व्यक्ति नजर आया।

“जाईये...।” गार्ड बोला।

ठाकरे ने एक सिपाही को वहीं रुकने का आदेश दिया और बाकियों के साथ भीतर प्रवेश कर गया।

लम्बे ड्राईव-वे पर आगे-पीछे तीन कारें खड़ी थीं।

ठाकरे ने उन कारों के नम्बरों पर नजर मारी; मगर उनमें से वह कार कोई नहीं थी जिसे उसने अपने लैपटॉप पर देखा था।

सामने आत्माराम की आलीशान तीन-मंजिल कोठी थी।

कोठी के कम्पाउंड में पहुंचते ही बाईं तरफ से ठाकरे को आवाज पड़ी—

"इधर सर...।"

ठाकरे ने उधर देखा।

एक साधारण-सा ऑफिस बना था वह—जिस में एक आदमी कुर्सी पर बैठा था।

ठाकरे भीतर प्रविष्ट हुआ तो वह उसके सम्मान में खड़ा हो गया।

"जी सर...।" वह आदमी बोला।

"तुम्हें दरबान ने बताया नहीं कि मैंने नेता जी से मिलना है?"

"बताया था सर। मैं बस यह पूछ रहा हूं कि क्या उनसे मिलना इतना जरूरी है कि उनकी नींद खराब की जाये?"

"हां...इतना ही जरूरी है।"

“आप बैठिये...मैं ट्राई करता हूं।”

कहकर उसने टेबल पर रखे फोन का रिसीवर उठाया और एक डिजिट दबा कर दूसरी तरफ से आवाज आने का इंतजार करने लगा।

शीघ्र ही दूसरी तरफ से आवाज आई तो वह बोला—“इंस्पेक्टर सिकंदर ठाकरे आये हैं सर। आपसे मिलना चाहते हैं...कह रहे हैं कि अभी मिलना है...यस सर...जी...यस सर।”

उसने रिसीवर रखा और आवाज लगाई—“शम्भू...।”

शीघ्र ही एक व्यक्ति भीतर प्रविष्ट हुआ।

“साहब को ड्राइंग रूम में छोड़ आओ—जाइये, सर।”

ठाकरे ने सिपाहियों को वहीं रहने को कहा और शम्भू के साथ एक दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

कुछ ही देर में वह आलीशान ढंग से सजे ड्राइंग रूम में एक सोफे पर बैठा था।

करीब पांच मिनट बाद आत्माराम गाऊन की डोरी बांधते हुए भीतर प्रविष्ट हुआ तो ठाकरे उसके सम्मान में खड़ा हो गया।

“बैठो-बैठो...।” गम्भीरता से बोला आत्माराम और उसके सामने वाले सोफे पर बैठ गया।

“क्या नाम है तुम्हारा...?”

“ठाकरे...सिकंदर ठाकरे।” सोफे पर वापिस बैठते हुए बोला ठाकरे।

“एक सिकंदर ठाकरे के बारे में मैंने भी सुना है... जो एडवोकेट रीमा राठौर का दोस्त है।”

“मैं वही हूं।”

“ओह! कहो—इस वक्त ऐसा क्या हो गया जो तुम सुबह का इंतजार नहीं कर पाये?”

“राजाजी नगर में कोठी नम्बर दो सौ इक्कीस किसकी है?”

“हमारी ही है। अभी हाल ही में ली है हमने वह कोठी... क्यों...?”

“उस कोठी में एक रेप हुआ है...।”

“रेप...?” बुरी तरह से उछल पड़ा आत्माराम।

“जी हां...और रेप किया है आपके भतीजे प्रकाश ने।”

एक-एक शब्द को चबाते हुए बोला ठाकरे।

“क्या बकते हो, इंस्पेक्टर...?” आत्माराम का चेहरा तमतमा उठा —“जानते हो क्या कह रहे हो तुम...?”

"वही...जो आप सुन रहे हैं, नेता जी...। और मैं प्रकाश को एक लड़की का अपहरण करने और उसके साथ बलात्कार के जुर्म में गिरफ्तार करने आया हूं।"

"यह क्या बकवास लगा रखी है तुमने? कोई सुबूत है तुम्हारे पास—जो तुम प्रकाश पर इतना बड़ा इल्जाम लगा रहे हो?"

"सुबूत तो ऐसा है नेता जी कि पहली ही पेशी में उसे ऐसी सजा होगी कि वह जेल से तभी बाहर निकलेगा जब वह किसी औरत के करीब जाने लायक भी नहीं रहेगा।"

"इंस्पेक्टर...।" गुर्रा उठा आत्माराम।

"अगर आप यह जानते हैं कि मैं रीमा राठौर का दोस्त हूं तो फिर आपको यह भी पता होगा कि मैं कैसा हूं। मुझ पर यूं गुर्राने से मेरे पर कोई असर नहीं होने वाला...। इंस्पेक्टर सिकन्दर ठाकरे सिवाये कानून के और किसी से नहीं डरता।"

सुनकर आत्माराम हौले से हड़बड़ाया—फिर अपनी आवाज को थोड़ा नरम बनाते हुए बोला—"मेरे भतीजे के बारे में तुम्हें गलतफहमी हुई है। वह रेप जैसा घृणित काम कर ही नहीं सकता...।"

"और मैं कह रहा हूं कि मेरे पास पुख्ता सुबूत है।"

"मगर...?"

"मैं उसे गिरफ्तार करने आया हूं, नेता जी...और मैं उम्मीद करता हूं कि आप कानून का साथ देंगे।"

"मगर वो घर में नहीं है।"

"कहां गया है वो...?"

"यह कहकर गया था कि उसके किसी दोस्त के घर पार्टी है।"

"वो पार्टी में नहीं गया था, बल्कि राजाजी नगर वाली कोठी में गया था। जहां उसने एक लड़की से रेप किया। आपके पास उसका मोबाइल नम्बर तो होगा

ही—उसे फोन करें और फौरन यहां आने को कहें...।"

एक गहरी सांस छोड़ी आत्माराम ने और अपने सोफे के बराबर में स्टूल पर रखे फोन का रिसीवर उठाते हुए बोला—

"मुझे विश्वास नहीं हो रहा...कि प्रकाश ऐसा कर सकता है।"

कहकर वह नम्बर मिलाने लगा।

"हैलो...।" दूसरी तरफ से आवाज आते ही वह बोला—"कहां से बोल रहा है... क्या हुआ...अरे कुछ बोलेगा भी कि नहीं...बोलता क्यों नहीं...तो फिर घर आ...मुझे कुछ नहीं सुनना...एक घण्टे में तू मुझे यहां चाहिये...।"

कहकर उसने रिसीवर रखा और ठाकरे को देख कर नजर ऐसे झुकाई जैसे अब उसे भी लग रहा हो कि वह सच्चा है।

"वो काफी दूर है—घण्टा लग जायेगा उसे पहुंचने में...।"

"कोई बात नहीं...मैं इंतजार कर लूंगा...।"

"किस लड़की से रेप किया है उसने?"

"वो खुद ही बतायेगा।"

एक गहरी सांस छोड़ी आत्माराम ने और फिर नौकर को बुला कर चाय लाने का आर्डर दे कर खड़ा होते हुए बोला—"तुम बैठो...मैं जरा फ्रैश हो लूं।"

कहकर वह दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

उस वक्त अगर ठाकरे उसका चेहरा देख लेता तो शायद वह उसकी चाल के बारे में सब कुछ समझ जाता।

जहर बुझी मुस्कान नाच रही थी उसके होठों पर।

¶¶

कोठी की लॉबी में सोफे पर दीनदयाल और शांतारानी ऐसे बैठे थे—जैसे उनमें जान ही न बची हो।

बस उनकी आंखें ही बता रही थीं कि वे जिन्दा हैं—वर्ना उनका जिस्म तो कोई हरकत ही नहीं कर रहा था।

सारी रात हो गई थी उन्हें जागते हुए।

अड़ोस-पड़ोस के लोग रात दस बजे तक अफसोस करने तथा उन्हें सांत्वना देते रहे थे। उसके बाद से वे बुत बने हुए थे।

बीच-बीच में किसी टाईम शांतारानी हिचकियां लेने लगती थी...। मगर अब तो उसका रोना भी नहीं निकल रहा था।

बस बुत बने दोनों पति-पत्नी शून्य में निहार रहे थे...। कभी कहीं हल्की-सी आहट होती तो वो दोनों चौंक कर उधर देखने लगते...। फिर पुनः अपनी बेटी के ख्यालों में खो जाते।

तभी—"डिंग...डांग...।"

कॉलबैल का मधुर संगीत उनके कानों में ऐसे गूंजा जैसे नगाड़े बजे हों।

मगर अब दोनों जरा भी नहीं चौंके।

दिन निकलने वाला था।

जरूर कोई रिश्तेदार या पड़ोसी अंजली का पता करने आया होगा।

यही बात उभरी दोनों के मन में।

शांतारानी की हालत ज्यादा खराब थी, सो दीनदयाल गहरी सांस छोड़ते हुए सोफे से उठा तो उसकी आंखों के आगे अंधेरा सा छा गया।

एक ही रात में वह इतना कमजोर हो गया था कि चक्कर आने लगे थे।

उसने तुरन्त सोफे के हत्थे का सहारा लेकर खुद को गिरने से बचाया—फिर सम्भल कर सीधा हुआ और मैन डोर की तरफ बढ़ गया।

"डिंग...डांग।"

तभी पुनः कालबैल बजी।

वह मेनडोर के करीब पहुंचा और सिटकनी गिरा कर जैसे ही दरवाजा खोला—

बुरी तरह से उछल पड़ा वह—साथ ही उसकी आंखों में खुशी से भरी चमक उभर आई।

"अं...जली...!"

"पा...पा...।"

दरवाजे में खड़ी अंजली तुरन्त आगे बढ़ी और उसके सीने से जा लगी।

उधर शांतारानी के कानों में अंजली की आवाज पड़ी तो उसने तुरन्त उधर देखा...और फिर वह खुशी से चीखती हुई उठ खड़ी हुई।

"अं...ज...ली...मेरी बच्ची...!"

वह बांहें फैलाये अंजली की तरफ लपकी।

अंजली दीनदयाल से अलग हुई और अपनी मां से लिपट गई।

"मां....।"

"मेरी बच्ची...।" शांतारानी ने उसे जोरों से अपने साथ भींच लिया। फिर वह उसे स्वयं से अलग कर उसे पागलों की तरह चूमने लगी।

"कहां चली गई थी, मेरी बच्ची...। कौन ले गया था मेरी लाडली को...।"

वह रोते हुए उससे पूछती भी जा रही थी और चूमती भी जा रही थी।

उधर दीनदयाल यह देखने के लिए बाहर निकला कि अंजली को वहां छोड़ने कौन आया है?

लेकिन बाहर कोई भी नजर नहीं आया उसे।

वह वापिस भीतर आया और दरवाजा बन्द कर सिटकनी चढ़ा कर पलटा और अंजली की तरफ बढ़ा...जिसे शांतारानी अभी भी चूमे जा रही थीं।

वह यही सोच रहा था कि उसकी बेटी अपहरणकर्ताओं की कैद से किसी तरह से निकल भागने में कामयाब हो गई और यहां पहुंच गई।

अगर पुलिस ने उसे बचाया होता या किसी और ने बचाया होता तो वह उसके साथ जरूर होता—जबकि वह अकेली थी।

वह दोनों मां-बेटी के करीब पहुंचा और बोला—"आओ....अन्दर बैठ कर बात करते हैं...। तुम अंजली के लिए कुछ खाने को ले आओ, शांता...।"

"हां...मेरी बच्ची भूखी होगी...मैं लेकर आती हूं।"

खुशी से झूमती हुई बोली शांतारानी और किचन की तरफ बढ़ गई।

दीनदयाल अंजली को उसके बेडरूम में ले आया और उसके कंधे पकड़ कर उसे बेड पर बिठाते हुए बोला—"बैठो बेटी....।"

अंजली बैठी तो वह खुद भी उसके सामने पालथी मार कर बैठ गया।

"कौन ले गया था तुम्हें...?" सीधे मतलब की बात पर आते हुए बोला दीनदयाल।

"क...कोई नहीं...।" फंसे स्वर में बोली अंजली।

बुरी तरह से उछल पड़ा दीनदयाल।

"य...यह क्या कह रही हो तुम?" वह आंखें फाड़े उसे देखते हुए बोला—"पूनम ने खुद अपनी आंखों से देखा था तुम्हारा अपहरण होते हुए—दो आदमी तुम्हें कार में डाल कर ले गए थे। तुम्हारी 'एक्टिवा' भी वहीं गिरी पड़ी थी—और तुम कह रही हो कि तुम्हारा अपहरण हुआ ही नहीं...?"

"सा...री पापा...।" सिर झुकाते हुए बोली अंजली—"दरअसल यह मेरी और प्रकाश की चाल थी...।"

"चाल...!"

एक बार फिर चौंका दीनदयाल—साथ ही उसके चेहरे पर भूचाल नजर आने लगा।

"हां...।"

"कैसी चाल...? और यह प्रकाश कौन है?"

"व...वो मेरा ब्वायफ्रैंड है।" इतनी बात कहने में ही अंजली को कितना जोर लगाना पड़ा था...यह वो ही जानती थी।

इस वक्त उसका कलेजा छलनी-छलनी हो रहा था। दिल कर रहा था कि वह दहाड़े मार कर रोने लगे और अपने पापा को सब कुछ बता दे।

लेकिन सच बताने की सजा वह जानती थी। तब न तो उसका बाप बचता, न ही मां...। और मां-बाप को वह किसी भी कीमत पर खोना नहीं चाहती थी।

इसी वजह से वह अपने भीतर की रुलाई को चेहरे पर आने से रोके हुए थी।

उसके मुंह से ब्वायफ्रेंड का नाम सुनकर दीनदयाल का चेहरा एकदम से सख्त हो उठा।

"कौन है यह प्रकाश...?" वह हल्के से गुर्राया—"और तेरी दोस्ती कब से है उससे?"

अंजली ने जोरों से थूक सटकी और बोली—

"खार के एम०एल०ए० आत्माराम का भतीजा है...। ह...हम दोनों छह महीने से एक-दूसरे को प्यार करते हैं।"

आत्माराम का नाम सुन कर एक तेज झटका लगा दीनदयाल को। साथ ही उसके चेहरे पर एक साथ कई रंग आकर लौट गए। आंखों में बदहवासी-सी उभर आई।

"तू...तू जानती है आत्माराम कितना बड़ा गुण्डा है? और उसका बेटा और भतीजा तो उससे भी ज्यादा बदनाम हैं। वाह बेटी—अपना जीवन-साथी भी चुना तो एक गुण्डे को चुना...।"

"वो... वो गुण्डे नहीं हैं, पापा—उन्हें विरोधी दल वालों ने बदनाम किया हुआ है।"

"वाह! तू तो सियासत भी सीख गई।" दीनदयाल कड़वे स्वर में बोला —"वो कितने बड़े गुण्डे हैं—वो मैं तेरे से कहीं बेहतर जानता हूं।"

"मगर पापा...वो तो...।"

"रहने दे...बात किस हद तक आगे बढ़ चुकी है...तू बोल?" उसकी बात को बीच में ही काटते हुए बोला दीनदयाल।

अंजली ने सिर झुका लिया—जिसका मतलब दीनदयाल बखूबी समझ गया।

उसने हताशा भरी एक गहरी सांस छोड़ी और बोला—"अगर बात मेरे हाथ की होती तो मैं तुझे मार-मार कर खत्म कर देता। मगर अब कानून ऐसा बन गया है कि मैं तेरे अच्छे-बुरे की सलाह भी नहीं दे सकता तुम्हें। मगर यह चाल क्या चली तुमने...?"

अंजली ने थूक सटकी और अपने भीतर हिम्मत पैदा करते हुए बोली —"ह...हम दोनों शादी करना चाहते थे। लेकिन प्रकाश को डर था कि उसके अंकल इस शादी को हरगिज नहीं होने देंगे। सो हम दोनों ने मिल कर चाल चली और प्रकाश ने मेरे अपहरण का नाटक खेला...। और इस तरह मैं प्रकाश के पास पहुंच गई।"

"तो फिर वापिस क्यों आई तू...?" दांत भींचते हुए बोला दीनदयाल।

"निशांत के कारण...।" बोली अंजली—"आत्माराम के बेटे और प्रकाश में बहुत बनती है। रात को प्रकाश ने निशांत को फोन करके सारी बात बताई तो उसने प्रकाश को खूब बुरा-भला कहा कि सिर्फ यह सोच कर कि आत्माराम हम दोनों की शादी नहीं होने देंगे, हमने ऐसा बेवकूफी भरा कदम उठा लिया। कम से कम प्रकाश को उनसे पूछना तो चाहिये था।"

"फिर...?"

"उसने वादा किया कि वह हम दोनों की शादी करने के लिए अपने पापा से बात करेगा—साथ ही उसने प्रकाश को मुझे वापिस घर छोड़ कर आने के लिए

कहा।"

"मगर तुम तो अकेली आई हो?"

"वो...बाहर मुझे छोड़ कर चला गया था।"

दीनदयाल पहलू बदल कर रह गया।

"निशांत ने कहा कि आप और मम्मी सुबह दस बजे मेरी और प्रकाश की शादी के लिए आत्माराम से बात करने जाएं।"

सिर झुकाते हुए बोली अंजली।

तभी शांतारानी चाय और हल्का नाश्ता लेकर भीतर प्रविष्ट हुई।

"तू ठीक तो है न मेरी बच्ची...?" ट्रे को दोनों बाप-बेटी के बीच रखते हुए बोली वह।

"यह तो पांच छह महीने पहले ही खराब हो चुकी है!" चुभते स्वर में बोला दीनदयाल।

"य...यह क्या कह रहे हैं जी आप?" शांतारानी अंजली के करीब बैठ कर उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोली—"ऐसा क्या कर दिया है मेरी फूल-सी बच्ची ने...जो आप इस कदर भड़क रहे हैं?"

उत्तर में जब दीनदयाल ने उसे सारी बात बताई तो शांतारानी का कलेजा दहल उठा।

चेहरे पर बदहवासी उभर आई।

"हे भगवान...अब क्या होगा?" वह अपने सीने पर हाथ रखते हुए रुआंसे स्वर में बोली।

"होना क्या है—जो होना था—वो तो हो चुका। अब तो अपनी इज्जत बचाने के लिए हमें आत्माराम के पास इसके रिश्ते की बात करने जाना ही पड़ेगा...।"

दीनदयाल ऐसे बोला—जैसे वह इस रिश्ते से कतई खुश न हो।

शांतारानी के चेहरे पर अब अंजली के लिए वो भाव नहीं थे—जैसे पहले थे।

और अंजली...उसका तो कलेजा छलनी-छलनी हुआ जा रहा था।

वह मजबूर थी—वर्ना उन्हें पता नहीं था कि उसके भीतर कैसे तूफान उठ रहे थे।

¶¶

एक के भी डेढ़ घण्टे बाद प्रकाश वहां पहुंचा...।

तब दिन के उजाले ने अपने आने की दस्तक दे दी थी...।

काफी घबराया हुआ और परेशान नजर आ रहा था वह...। उसकी आंखों में बदहवासी भरी हुई थी और चेहरे पर चिंता के बादल घुमड़ रहे थे।

ठाकरे को देख कर वह घबराया नहीं। आत्माराम से जरूर नजर चुरा रहा था।

"कहा था तू रात भर?" छूटते ही बोला आत्माराम।

जवाब में प्रकाश ने थूक सटकी और बिना कुछ बोले सोफे पर बैठ गया। साथ ही उसने अपना सिर झुका लिया।

"अरे, कुछ बोलता क्यों नहीं तू...? ऐसा क्या कर दिया है तूने जो तेरे को इस तरह से सिर झुकाना पड़ रहा है?"

गुस्से में तिलमिलाकर बोला आत्माराम।

प्रकाश ने सिर उठाया तो उसकी आंखें भरी हुई थीं।

"मैंने ऐसा कुछ नहीं किया अंकल—जिससे मुझे ग्लानि हो; मगर मेरे साथ ऐसा कुछ हो गया है...जो हम दोनों की जिंदगी तबाह कर सकता है।"

"हम दोनों...?" चौंका आत्माराम—"यह दूसरा कौन है...? और क्या हो गया है तेरे साथ...?"

"मुझे बात करने दीजिये, नेता जी।" तभी बोल पड़ा ठाकरे और प्रकाश को घूरते हुए गुर्राया—"अंजली कहां है?"

"व...वो अपने घर में है...।"

बुरी तरह से चौंक उठा सिकन्दर ठाकरे—उसे सपने में भी उम्मीद नहीं थी कि उसे ऐसा जवाब मिलेगा। वह तो यह सोच रहा था कि प्रकाश अंजली को जानने से ही मुकर जायेगा; मगर वो तो उसके घर होने की बात कर रहा था।

तेजी से उसने स्वयं को सम्भाला और बोला—"मैं तुम्हें अंजली के अपहरण करने और उसके साथ बलात्कार करने के जुर्म में गिरफ्तार करने आया हूं।"

"म...मैंने रेप नहीं किया...। मैं रेप करूंगा ही क्यों...जब हम दोनों एक-दूसरे को चाहते हैं तो फिर मैं उससे रेप क्यों करूंगा?"

"यह बहाना मेरे सामने नहीं चलेगा प्रकाश। तुम्हारे उसके साथ बलात्कार करने के सुबूत हैं मेरे पास...। किसी को बांध कर प्यार नहीं किया जाता—बल्कि वो रेप कहलाता है—और प्रेमिका का यूं अपहरण नहीं किया जाता...।"

प्रकाश ने जोरों से थूक सटकी और सिर झुका लिया।

"है कोई जवाब तुम्हारे पास...?"

"जवाब मैं देता हूं, इंस्पेक्टर...।" तभी दरवाजे की तरफ से आवाज आई।

ठाकरे ने दरवाजे की तरफ गर्दन मोड़ी।

निशांत भीतर दाखिल हो रहा था।

"तुम...।" चौंका आत्माराम—"तुम तो सो रहे थे...?"

"नहीं, पापा...।" आगे बढ़ कर सोफे पर बैठते हुए बोला निशांत—"प्रकाश की तरह मैं भी भाग-दौड़ में जुटा हुआ था।"

“कैसी भाग-दौड़ में जुटे हुए थे तुम...? कुछ मुझे भी तो पता चले।”

“अभी सब पता चल जायेगा।”

कहकर निशांत ने ठाकरे को देखा और बोला—

“शर्मिन्दगी की वजह से यह तुम्हारी बात का जवाब नहीं दे सकता इंस्पेक्टर...। मगर मैं सब कुछ जानता हूं।”

“क्या जानते हो तुम...?” ठाकरे गम्भीरता से बोला।

“प्रकाश और अंजली दोनों एक-दूसरे से प्यार करते हैं। और शादी से पहले ही उन सभी हदों को वहां तक पार कर चुके हैं जो शादी के बाद की जाती हैं...।”

“तो...।” हल्की-सी मुस्कान के साथ बोला ठाकरे। वह मन-ही-मन यह कह रहा था कि प्यार करने में और रेप करने में बहुत अंतर है; मगर बोला कुछ

नहीं वह...। वह पहले निशांत की बात सुन लेना चाहता था—फिर उसने एक ही झटके में उसकी सारी कहानी की धज्जियां उड़ाने का फैसला किया था।

"दोनों प्यार में इस कदर खुल चुके थे कि जब भी प्यार करने को जी चाहता—यह नये तरीके सोचने लगते...जिससे कि दोनों के प्यार में ज्यादा रोमांच पैदा हो।"

"फिर?"

"इस बार इन बेवकूफों ने प्यार करने का नया तरीका अपनाया। अंजली ने प्रकाश से कहा कि वह उससे रेप करे—वो भी ऐसे कि हर तरफ सनसनी फैल जाये। और फिर प्रकाश ने पहले से ही आपस में बनाई स्कीम के तहत अंजली का किडनैप कराया और हमारी राजाजी नगर वाली कोठी में ले जा कर अंजली को बेड पर बांध कर उससे रेप किया।"

ठाकरे ने हैरानी से प्रकाश को देखा—जो सिर झुकाये ऐसे बैठा था...जैसे उसे शर्मिन्दगी हो रही हो।

आत्माराम के चेहरे पर भी हैरानी उभरी।

"अरे बेवकूफ...।" वह गुस्से तथा हैरानी से बोला—"यह क्या किया तुमने? क्या ऐसे भी कभी प्यार किया जाता है? तूने यह भी नहीं सोचा कि अपहरण होने के बाद उस लड़की के मां-बाप पर क्या बीतेगी?"

प्रकाश की गर्दन और झुक गई।

"बेवकूफ...। अक्ल का अंधा...।" गुस्से से बड़बड़ाया आत्माराम। फिर उसने निशांत की तरफ देखा—"मगर तुम भाग दौड़ कैसी कर रहे थे...?"

"उस वक्त...।" निशांत बोला—"जब प्रकाश अंजली की रजामंदी से उससे रेप कर रहा था—तभी किसी ने उसकी फिल्म उतार ली। जिसका प्रकाश को पता चल गया; मगर चूंकि यह निर्वस्त्र था, इसीलिए यह उसका पीछा भी नहीं कर सकता था। ये दोनों बुरी तरह से घबरा गए। और फिर कपड़े पहन कर दोनों उस शख्स को ढूंढने निकले पड़े। उसी दौरान प्रकाश ने मुझे फोन कर दिया। तब मैंने भी उसे खूब बुरा भला कहा और उससे यह कहा कि वह अंजली से कहे कि वह अपने मां-बाप को रिश्ते के लिए आपके पास भेज दे।"

"यह तूने ठीक किया...। उस बेवकूफ लड़की के मां-बाप को कुछ तो राहत मिलेगी।"

"मगर वह व्यक्ति नहीं मिला—हमने खूब खोजा उसे; लेकिन वह नहीं मिला...।" कहकर गहरी सांस छोड़ी निशांत ने—"प्रकाश और अंजली की शादी होने से वह आदमी इन्हें ब्लैकमेल तो नहीं कर सकेगा; लेकिन मुझे डर है कि वह कहीं उसका गलत इस्तेमाल करके हमारा तमाशा न बना दे...।"

आत्माराम ने गहरी सांस छोड़ी और फिर ठाकरे की तरफ देखते हुए बोला—

"अब तो तुम्हें पता चल गया होगा इंस्पेक्टर कि यह रेप दोनों की रजामंदी से हुआ था...।"

"यह तो अंजली के मिलने और उससे बात करने पर ही पता चलेगा कि सच क्या है? हो सकता है उसको धमकी दी गई हो!"

"बेशक...मैं खुद यही चाहता हूं कि तुम पूरी तसल्ली करो।" गम्भीरता से बोला आत्माराम।

ठाकरे खड़ा हो गया।

उसने प्रकाश को देखा और गुर्राया—"तुम कहीं भी भागने की कोशिश नहीं करोगे।"

"इसकी जिम्मेदारी मैं लेता हूं...। यह कहीं नहीं भागेगा।" आत्माराम बोला।

ठाकरे ने वहां से विदा ली और बाहर निकल कर कम्पाऊंड में आ गया—जहां सिपाही खड़े थे।

सभी के साथ कोठी से बाहर निकल कर उसने सिपाहियों को बस से थाने पहुंचने के लिए कहा और फिर अंजली के घर की तरफ रवाना हो गया।

¶¶

सुबह के साढ़े सात बज चुके थे।

टी०वी० स्क्रीन पर समाचार वाचक का चेहरा उभरा और फिर उसके होंठ हिले—"आर न्यूज आज एक ऐसा खुलासा करने जा रहा है जो आपको हिला कर रख देगा। हमारे देश को चलाने वाले नेताओं की संतानें इस हद तक पहुंच चुकी हैं कि इनके लिए मां-बेटी की इज्जत की कोई अहमियत ही नहीं रही। यह किसी की भी बहन-बेटी को उठा लेते हैं...और उसका रेप कर देते हैं।

आपने कल की खबरों में देखा कि अंधेरी के दीनदयाल जी की बेटी अंजली का अपहरण किस तरह से दिन-दहाड़े कर दिया गया; मगर हमारे विशेष संवाददाता विशाल कपूर न सिर्फ अंजली का पता लगा लिया—बल्कि उसके साथ रेप करते हुए शख्स का स्टिंग ऑपरेशन कर डाला...। आप यह जानने को बेताब हो रहे होंगे कि अपहरण करने वाला कौन था? किसने किया अंजली से रेप?

तो पहले इस तस्वीर को देखिये...।"

स्क्रीन पर आत्माराम की तस्वीर उभरी...साथ ही बैकग्राऊंड से आवाज आई—

"यह हैं खार के एम○एल○ए○ आत्माराम जी, जिनके बारे में सभी जानते हैं कि यह अपनी लोकप्रियता से नहीं बल्कि अपने बाहुबल से चुनाव जीते थे। मौजूदा वक्त में इन पर चार केस चल रहे हैं। वो भी आपराधिक केस। और यह है प्रकाश—आत्माराम के भतीजे...।"

स्क्रीन पर प्रकाश की तस्वीर उभरी। साथ ही ग्राऊंड से आवाज आई—

"इन जनाब ने एक बेगुनाह का अपहरण करके उसकी इज्जत तार-तार कर डाली। अंजली का अपहरण करके प्रकाश ने उसके हाथ-पैर बेड से बांध कर उसकी अस्मत लूट ली। यह है राजाजी नगर की कोठी नम्बर दो सौ इक्कीस...।"

स्क्रीन पर स्टिंग ऑपरेशन चलने लगा...साथ ही बैकग्राऊंड से आवाज आ रही थी—

“हमारे संवाददाता विशाल कपूर ने हिम्मत से काम लेते हुए पीछे की दीवार फांद कर कोठी में प्रवेश किया और यह देखिये, यह वह कार है जिसमें प्रकाश यहां पहुंचा था। यह उस कोठी का कम्पाऊंड है। हमारे संवाददाता ने इस टॉयलेट के जरिये लॉबी में प्रवेश किया और इस कमरे में एक बेगुनाह की इज्जत लूटी गई!” स्क्रीन पर बलात्कार की धुंधली फिल्म दिखाई जाने लगी। बस प्रकाश का चेहरा ही साफ नजर आ रहा था, बाकी कुछ भी साफ नहीं था...; मगर देखने वाले को पता चल रहा था कि रेप हो रहा है।

स्टिंग ऑपरेशन पूरा होने के बाद समाचार वाचक का चेहरा स्क्रीन पर उभरा—

“हमारे संवाददाता इस वक्त आत्माराम की कोठी के बाहर मौजूद हैं। वहां के क्या हालात हैं... इन्हीं से जानते हैं।

विशाल...क्या हालात हैं कोठी के बाहर तथा भीतर के?”

स्क्रीन पर विशाल कपूर का चेहरा उभरा—

“अभी बाहर से तो सब कुछ नार्मल नजर आ रहा है।” वह माईक अपने सामने किए बोल रहा था—“मैंने अंधेरी के इंस्पेक्टर सिकन्दर ठाकरे को सारी हकीकत बताने के साथ-साथ उन्हें इस स्टिंग ऑपरेशन की एक कॉपी भी दी थी। आईये देखते हैं कि इंस्पेक्टर साहब ने अभी तक क्या कार्यवाही की है...।”

पीछे कोठी के गेट की तरफ बढ़ते हुए बोला विशाल कपूर...जहां खड़ा दरबान उसे ही देख रहा था।

“आपकी ड्यूटी रात से यहीं पर है?” विशाल कपूर बोला और माईक दरबान के सामने कर दिया।

“हां...।” दरबान बोला।

“क्या नाम है आपका?” माईक अपने आगे कर पूछा विशाल कपूर ने और पुनः माईक उसकी तरफ किया।

“सतपाल...।”

“प्रकाश जी क्या इस वक्त कोठी में हैं?”

"हां...हैं...।"

"रात को कब आये वो...?"

"सुबह छह-साढ़े छह बजे आये थे प्रकाश बाबू।"

"क्या पुलिस भी आई थी यहां...?"

"हां...जब प्रकाश बाबू आये थे...तब पुलिस यहीं थी। उनके आने के बाद ही गई थी पुलिस...।"

"तो क्या प्रकाश को गिरफ्तार नहीं किया गया?"

"यह तो पुलिस को पता होगा...।"

"सुना आपने...।" कैमरे के सामने मुंह करते हुए बोला विशाल कपूर —"सुबूत हाथ में होते हुए भी इंस्पेक्टर सिकन्दर ठाकरे ने प्रकाश को गिरफ्तार

नहीं किया...क्यों...? यह सवाल इस वक्त हर हिन्दुस्तानी के जेहन में गूंज रहा होगा।

और शायद हर कोई जवाब से भी वाकिफ होगा। मैं भीतर जाकर नेता जी और उनके बेटे से बात करने की कोशिश करता हूं। देखते हैं नेता जी इस बारे में अपनी क्या सफाई पेश करते हैं।"

कैमरे के आगे-आगे चलते हुए विशाल कपूर कोठी में प्रविष्ट हुआ और कुछ ही देर में वह लॉबी में आत्माराम के दांई तरफ खड़ा था।

"मेरे साथ इस वक्त आत्माराम जी बैठे हैं...। आईये उनसे जानते हैं कि वे इस बलात्कार के बारे में क्या कहते हैं...।"

कहकर विशाल कपूर ने माईक आत्माराम की तरफ किया—जिसके चेहरे पर गुस्से तथा नाराजगी के भाव साफ नजर आ रहे थे।

"सबसे पहले तो मैं यह बता देना चाहता हूं कि प्रकाश ने कोई बलात्कार नहीं किया...।" आत्माराम सख्ती से बोला—टी०वी० पर जो बलात्कार दिखाया

जा रहा है...वो दोनों की रजामंदी थी। प्रकाश और अंजली एक-दूसरे से प्यार करते हैं। और दोनों ही शादी करने जा रहे हैं।"

"कहीं ऐसा तो नहीं कि कानून से बचने के लिए प्रकाश शादी कर रहा हो?"

"शादी के लिए दोनों पक्षों की रजामंदी जरूरी है रिपोर्टर साहब...। सिर्फ हमारे हां करने से बात नहीं बनने वाली।"

"हो सकता है आपके डर से अंजली ने शादी के लिए हां की हो—और अंजली कहां है?"

"वो अपने घर में है। और जो प्रश्न आपने मुझसे पूछा है, उसका उत्तर आपको अंजली ही बेहतर दे सकती है...कि उस पर मेरा दबाव है या वह प्रकाश से प्यार करती है।"

विशाल कपूर ने मुंह कैमरे की तरफ किया और बोला—

“दर्शक समझ सकते हैं कि स्टिंग ऑपरेशन में प्यार हो रहा है कि रेप। बाकी कानून अपना काम करेगा। मैं विशाल कपूर, आर न्यूज...।”

स्क्रीन पर पुनः स्टिंग ऑपरेशन दिखाया जाने लगा।

सिकन्दर ठाकरे ने टी०वी० पर से निगाह हटाई और अंजली की तरफ देखा, जो सिर झुकाये अपराधियों की तरह बैठी हुई थी।

दीनदयाल और शांतारानी के चेहरे भी झुके हुए थे।

“क्या अब भी तुम यही कहोगी कि तुम्हारे साथ रेप नहीं हुआ?” सिकन्दर ठाकरे अंजली को गहरी नजर से घूरते हुए बोला—“जबकि यह स्टिंग ऑपरेशन चीख-चीख कर कह रहा है कि यह सरासर रेप है?”

“सब कुछ हम दोनों की मर्जी से ही हुआ था।” सिर झुकाये हुए बोली अंजली—साथ ही उसकी आंखों में से आंसू टपक कर उसके उभारों के सिरों पर आ गिरे।

एक गहरी सांस छोड़ी ठाकरे ने और खड़ा हो गया।

"अगर तुम मजबूर होकर...किसी दबाव में आकर ऐसा कह रही हो तो मैं कुछ नहीं कर सकता। लेकिन अगर यह सब तुम्हारी मर्जी से हुआ है तो मैं यही कहूंगा कि मैंने तुमसे निर्लज्ज औरत पहले कभी नहीं देखी।" कह कर उसने दीनदयाल और शांतारानी की तरफ देखा और बोला—"आप अपनी बेटी का रिश्ता लेकर जा रहे हैं?"

"ह...हां...।" आंखें झुकाये हुए बोला दीनदयाल। सिकन्दर ठाकरे और कुछ नहीं बोला—बस दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

तभी उसे अपने पीछे सिसकी की आवाज आई।

वह ठिठका—गर्दन मोड़ी और अंजली को देखते हुए बोला—

"तुम्हारी सिसकी ही बता रही है कि तुम्हें आत्माराम की तरफ से धमकी मिली है।"

"न...हीं...।" आंसू पौंछते हुए बोली अंजली—"प्रकाश से शादी करके मैं बहुत खुश हूं।"

"तो फिर रो क्यों रही हो?"

"अपनी बदनामी पर...।" कहते हुए उसके आंसू फिर से बहने लगे—"इस स्टिंग ऑपरेशन से पूरी दुनिया को पता चल गया है कि मैं...मैं एक कामुक लड़की हूं।"

ठाकरे पहले तो उसे यह कहने को हुआ कि वह विशाल कपूर पर मानहानि का दावा कर सकती है—लेकिन फिर उसने अपना इरादा बदल दिया।

और कुछ नहीं पूछा उसने।

गर्दन सीधी की और बाहर निकल गया।

उसके जाते ही दीनदयाल ने शांतारानी की तरफ देखा और बोला—"ऐसी औलाद से बेहतर हम बेऔलाद ही ठीक रहते।
कितना घमण्ड था हमें अपनी बेटी पर; मगर इसने एक ही पल में हमें आसमान से जमीन पर ला पटका...।"

"दिल छोटा मत करो जी...।" शांतारानी बोली—"शादी के बाद सब ठीक हो जायेगा। चलिए...कपड़े बदल लीजिये। अपनी बेटी का रिश्ता लेकर भी तो जाना है...।"

¶¶

फलों के टोकरे और मिठाई के पांच डिब्बों के साथ दीनदयाल तथा शांतारानी आत्माराम की कोठी पर पहुंचे तो आत्माराम ने खुद आगे बढ़कर उनकी कार का दरवाजा खोल कर उनका स्वागत किया था।

"धन्य भाग्य हमारे—जो आपके पैर हमारे घर में पड़े...।"

उनके बाहर निकलते ही वह बोला और फिर उसने दीनदयाल को अपने गले से लगा लिया।

गेट पर निशांत और प्रकाश भी खड़े थे...। साथ में तीन-चार नौकरों के अलावा फोटोग्राफर तथा मीडिया के कुछ लोग भी खड़े थे।

दीनदयाल से गले मिलकर आत्माराम ने हाथ जोड़ कर शांतारानी का अभिवादन किया और प्रकाश को इशारा किया।

तुरन्त प्रकाश आगे बढ़ा और झुककर पहले शांतारानी के पैर छुए, फिर दीनदयाल के। जबकि निशांत ने हाथ जोड़ कर दोनों को नमस्ते की।

उनके हर एक्शन की तस्वीरें खींची जा रही थीं—फिल्म बन रही थी।

"आईये...।" तभी आत्माराम दोनों से बोला।

"य...यह सामान...।" दीनदयाल ने कार की पिछली सीट पर पड़े फल और मिठाई की तरफ इशारा किया।

"सतपाल...।" आत्माराम ने तुरन्त दरबान को आवाज दी। साथ ही कार की तरफ इशारा किया।

तुरन्त सतपाल आगे बढ़कर कार के करीब पहुंचा और पिछला दरवाजा खोल कर उसमें से डिब्बे निकालने लगा।

आत्माराम दोनों को साथ ले भीतर लॉबी में आया...। जहां फर्श पर गद्दे बिछे हुए थे और उन पर सफेद चादरें बिछी थीं।

गद्दों पर एक पण्डित बैठा था। जिसके आगे एक थाली में पूजा-पाठ का कुछ सामान रखा था।

साथ में कुछ और आदमी भी बैठे थे।

"बच्चों ने जो किया गलत किया...।" आत्माराम दोनों के साथ गद्दे की तरफ बढ़ते हुए बोला—"बेवकूफों ने हद ही पार कर दी...। ऊपर से हमारी जो बेइज्जती हुई, वो अलग। यह तो मैंने अपने रसूख का इस्तेमाल करके प्रसारण रुकवा दिया, वर्ना न्यूज चैनल वाले तो उसे सारा दिन चलाने का प्रोग्राम बनाये हुए थे। साथ ही मैंने उस रिपोर्टर पर मानहानि का दावा करने का भी फैसला कर लिया है। आप भी कीजियेगा।"

"वो तो करूंगा ही, नेता जी।" दीनदयाल बोला।

जितनी इज्जत उन्हें वहां मिल रही थी, उसे देख दोनों पति-पत्नी अपना सारा दु:ख, अपनी सारी बेइज्जती भूल गए थे।

"बैठिये...।" गद्दों के करीब आकर बोला आत्माराम।

दोनों पति-पत्नी ने जूते उतारे और पण्डित के दांई तरफ बैठ गए।

मीडिया ने गद्दे के चारों तरफ से उन्हें घेर लिया था।

और फिर पण्डित के कहने पर प्रकाश दोनों के सामने बैठ गया।

"एक तौलिया ले लो, प्रकाश बाबू...।" पण्डित बोला।

शीघ्र ही एक तौलिया उसकी गोद में फैला हुआ पड़ा था।

पण्डित ने मन्त्र पढ़ने शुरू किए—फिर दोनों पति-पत्नी को प्रकाश को तिलक लगाने को कहा।

दीनदयाल ने प्रकाश के माथे पर टीका लगाया—फिर उसकी गोद में फैले तौलिए में गुड़, सूखा नारियल रखा।

शांतारानी ने अपने पर्स से ग्यारह हजार निकाल कर प्रकाश की गोद में रखे।

फिर उसका मुंह मीठा कराया जाने लगा।

¶¶

इधर प्रकाश का दीनदयाल और शांतारानी रोकना कर रहे थे—उधर घर में अंजली के आंसू रुकने का नाम नहीं ले रहे थे।

एक ही दिन में किस्मत ने उसे क्या से क्या बना दिया था!

इतना पानी तो उसकी पूरी जिन्दगी में उसकी आंखों से नहीं निकला था—जितना वह आज बहा रही थी।

पहले उसकी इज्जत लुटी और अब उसकी जिंदगी पर तबाही की मोहर लग रही थी।

प्रकाश के बारे में वह कुछ नहीं जानती थी; लेकिन जो कुछ उसने उसके साथ किया था—उसके हिसाब से वह अच्छा इंसान तो किसी भी सूरत में नहीं हो सकता था।

वह खतरनाक भी था। उसके आदमियों ने उसके सामने ही एक आदमी को गोली मार दी थी। जब उसका गुलाम इतना खतरनाक हो सकता है तो वो खुद कितना खतरनाक होगा...।

दिल में तो वह प्रकाश को ऐसी सजा दिलाना चाहती थी कि उसे देख कर दूसरों को नसीहत मिले; मगर अपने मां-बाप की वजह से मजबूर हो गई थी।

अगर वह शादी से इन्कार करती तो वो शैतान उसके मां-बाप को मरवा देता और अपने मां-बाप का अहित वह सोच भी नहीं सकती थी।

इसीलिए वह उस नर्क में कूदने को तैयार हुई थी। और इसी वजह से वह इस तरह सिसक-सिसक कर रो रही थी।

तभी कालबेल बजी।

"डिंग...डांग...।"

अपने आंसू पौंछते हुए वह बेड से उतरी और कमरे से निकल कर लॉबी पार कर वह मेन गेट के करीब पहुंची।

बांह ऊपर कर उसने सिटकनी गिराई और जैसे ही दरवाजा खोला—

वह बुरी तरह से हड़बड़ा उठी—साथ ही उसका कलेजा जोरों से धड़क उठा।

सामने निरंजन के साथ दो आदमी खड़े थे।

कुछ बोल नहीं पाई वह—बस थूक सटकते हुए प्रश्न भरी निगाह से उन्हें देखने लगी।

“नमस्ते मैडम...।“ निरंजन होंठ फैलाते हुए बोला—“प्रकाश बाबू ने भेजा है हमें...।”

“उन्होंने आपको गुड विशिज भेजी हैं...साथ में आपके लिए एक गिफ्ट भेजा है।” दूसरा बोला।

“अन्दर आने को नहीं कहेंगी, मैडम...।” तीसरे ने दांत दिखाये—“अब तो हम आपके भी सेवक हैं—और सेवक को यूं दरवाजे पर नहीं रोका जाता...।”

अंजली कुछ नहीं बोली—बस एक तरफ हट गई।

पहले निरंजन भीतर प्रविष्ट हुआ—फिर उसके पीछे दूसरा और तीसरा भी प्रविष्ट हो गए।

तीसरा भीतर प्रवेश करते ही पलटा और दरवाजा बन्द कर सिटकनी लगाई—तो अंजली का कलेजा दहल उठा।

“द...रवाजा क्यों बन्द किया?” वह थूक सटकते हुए फंसे स्वर में बोली।

तभी पीछे से निरंजन ने उसके गले में अपनी बांह सांप की तरह लपेटी और उसके कान के पास मुंह ले जाकर सांप की तरह फुसफुसाया—“प्रकाश बाबू ने आपके लिए मौत का गिफ्ट भेजा है मैडम...। वही गिफ्ट देने आये हैं हम आपको...।”

अंजली की तो जैसे सांसें ही रुक गईं।

“न...हीं...।” वह कांप उठी—“ऐसा न...ही हो सकता।”

“ऐसा ही है मैडम...।” बोला वह शैतान—“और अब हम तुम्हें खत्म करने आये हैं।”

कहने के साथ ही उसने दूसरे हाथ से उसका मुंह बन्द कर दिया।

दूसरे ने अंजली को कमर के नीचे से पकड़ कर उठा लिया।

अंजली उन शैतानों की पकड़ से छूटने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगाने लगी।

वह चीख-चीख कर पूरे शहर को आकर्षित करना चाहती थी।

लेकिन वह न तो खुद को आजाद करा पाई—न ही चीख पाई।

तीनों शैतान उसे उठाये हुए उसके बेडरूम में ले आये।

वहीं बेड पर अंजली का दुपट्टा पड़ा था।

तीसरे ने दुपट्टा उठा कर उसका फंदा बनाया और उसे अंजली के गले में डाल कर उसे कसता चला गया।

बेड पर औंधे मुंह पड़ी अंजली को निरंजन और दूसरा गुण्डा दबोचे हुए थे—उसका मुंह बेड से चिपका हुआ था।

जरा भी विरोध नहीं कर पाई वह—हां, हाथ-पैर जरूर पटके थे उसने।

थोड़ी देर बाद उसका शरीर शांत पड़ गया।

वह मर चुकी थी।

निरंजन ने एक लम्बी सांस छोड़ी और बेड से उतर कर कमरे से बाहद निकल गया।

शीघ्र ही वह वापिस लौटा तो उसने एक हाथ से ऊंचा स्टूल उठा रखा था।

स्टूल को पकड़े हाथ पर उसने रुमाल लपेट रखा था, ताकि उस पर उसकी उंगलियों के निशान न पड़ें।

उसने स्टूल को बेड पर ऊपर छत में लगे पंखे के नीचे खड़ा किया और दोनों से बोला—

"मैडम को खड़ा करो स्टूल पर...।"

दोनों ने मिलकर अंजली की लाश को उठाया और उसे स्टूल पर खड़ा कर दिया।

निरंजन ने दोनों बाहों का घेरा बनाते हुए लाश को सम्भाला और दूसरे से बोला—"तू उसके कंधे पर चढ़ जा और दुपट्टे को पंखे से बांध दे।"

तुरन्त दूसरा तीसरे के कंधे पर जा बैठा और अंजली के गले से लटक रहे दुपट्टे को पकड़ कर उसे पंखे से ऐसे बांध दिया कि दुपट्टा थोड़ा ढीला रहे।

"ठीक है...?" वह बोला।

"हां ठीक है...।" निरंजन बोला—"नीचे उतर...।"

दूसरा नीचे उतर आया।

"बेड की चादर ठीक करो...।" निरंजन बोला।

दोनों नीचे उतरे और चादर को खींच कर सारी सिलवटें निकाल दीं।

अब बस निरंजन के पैरों तले तथा स्टूल के पायों के नीचे की जगह पर ही सिलवटें थीं।

निरंजन ने अंजली की लाश को छोड़ दिया।

तुरन्त लाश आगे को थोड़ा झुकी और स्थिर हो गई।

निरंजन बेड से उतरा और चादर को ठीक करके उसने रुमाल लिपटे हाथ से स्टूल को पीछे की तरफ लुढ़का दिया।

एक तेज झटके के साथ लाश हवा में झूलने लगी।

निरंजन ने लाश को देखा—मुस्कुराया और फिर अपनी कमीज ऊपर उठा कर अपनी पैन्ट में फंसी कॉपी निकाल कर वहीं बेड के करीब ही स्टूल पर खोलकर रखी और पेन निकाल कर कॉपी के ऊपर रख दिया।

यह वही कॉपी थी—जिसमें अंजली का सुसाईड नोट लिखा हुआ था।

“चलो...।”

वह बोला और कमरे से बाहर निकल गया।

पीछे-पीछे उसके दोनों साथी थे।

¶¶

दीनदयाल ने कार अपने घर के गेट के सामने रोकी तो उसके पास बैठी शांतारानी दरवाजा खोल कर बाहर आ गई।

दोनों पति-पत्नी अब खुद को काफी हल्का महसूस कर रहे थे।

आत्माराम के यहां उन्हें जो सम्मान मिला था—उससे उनका सारा दु:ख काफूर हो गया था।

अब तो वे खुद को एक बहुत बड़े लीडर का समधी बनने पर खुश हो रहे थे।

कुल मिला कर वे रात की पीड़ा तथा अंजली की बातों के दु:ख को भूल गए थे और खुद को तनाव से मुक्त समझ रहे थे।

शांतारानी ने आगे बढ़ कर गेट खोला तो दीनदयाल ने कार गेट में प्रविष्ट की और ड्राईव-वे के अंत में खड़ी कर दी।

शांतारानी ने गेट बन्द कर हुड़का लगाया और मुड़कर ड्राईव-वे पार कर कम्पाऊंड में मेन डोर के सामने खड़े दीनदयाल के पास आ खड़ी हुईं।

दीनदयाल ने दीवार पर लगे स्विच बोर्ड पर लगे स्विचों में से उस बटन को दबाया जिस पर घण्टी का सिम्बल बना हुआ था।

"डिंग...डांग...।"

भीतर कहीं घण्टी बजी।

मगर कुछ देर बीतने पर भी कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई तो दीनदयाल ने हैरानी से शांतारानी को देखा।

"सारी रात जागती रही है—अब सो रही होगी...।" शांतारानी बोलीं।

दीनदयाल ने पुनः बैल बजाई, साथ ही दरवाजा थपथपाया।

दरवाजे पर दबाव पड़ा तो वह भीतर को रेंग गया।

"सो रही है...।" शांतारानी बोली—"तभी तो उसने भीतर से दरवाजा खोल रखा है...।"

दीनदयाल दरवाजे को धकेलते हुए भीतर प्रविष्ट हुआ।

पीछे-पीछे शांतारानी भी प्रविष्ट हुईं।

"उठायें उसे...?" दीनदयाल ने पूछा।

"हां...मंगनी की रस्म पूरी होने की खबर तो देनी है न उसे...।" शांतारानी मुस्कुराईं।

दोनों अंजली के बेडरूम की तरफ बढ़े।

जैसे ही दोनों अंजली के बेडरूम के दरवाजे पर पहुंचे—"अं...जली...।"

शांतारानी के होठों से चीख उबल पड़ी।

दीनदयाल भी जोरों से चीख उठा।

¶¶

लॉबी में फर्श पर बिछी दरी पर अड़ोस-पड़ोस के लोगों के अलावा आत्माराम, प्रकाश और निशांत बैठे थे।

प्रकाश का चेहरा तो ऐसे हो रहा था—जैसे उसका सब कुछ लुट चुका हो।

आत्माराम गम्भीर बना सिर झुकाये बैठा था।

शांतारानी और दीनदयाल की हालत तो ऐसी हो रही थी कि हर किसी को उन पर तरस आ रहा था।

भीतर अंजली के बेडरूम में ठाकरे लाश का मुआयना कर रहा था।

तभी वह बाहर निकला।

उसके हाथ में एक कॉपी थी।

वह दीनदयाल के करीब आया और गहरी सांस छोड़ते हुए बोला—"अंजली ने आत्महत्या की है—यह उसका सुसाईड नोट है।

आप देखिए—यह उसी की हैंडराईटिंग है...।"

रोते हुए दीनदयाल ने उससे कॉपी लेकर उसे खोला और उस पर लिखा अंजली का सुसाईड नोट पढ़ने लगा।

मुझे माफ करना प्रकाश—मैं अपनी इज्जत का ढिंढोरा पिटते बर्दाश्त नहीं कर सकती।

पूरी दुनिया को पता चल गया है कि हमने कामुकता में अंधे होकर अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए कैसा कदम उठाया था। बेशक मैं तुम्हारी पत्नी बनने जा रही हूं—लेकिन लोग जब मुझे मुस्कुरा कर देखेंगे तो मैं लोगों की निगाहों का सामना नहीं कर पाऊंगी। इसलिए मैं जा रही हूं—मुझे माफ करना।

मेरे मम्मी पापा-मुझे माफ कर देना...। और हो सके तो उस व्यक्ति को उसके किए की सजा अवश्य देना जिसने मेरी और प्रकाश की मुहब्बत का तमाशा बना दिया।

मैं अपनी मर्जी से अपनी जिन्दगी खत्म कर रही हूं...। इसलिए किसी को भी परेशान न किया जाये।

अंजली।

दीनदयाल कॉपी को सीने से लगाये जोर-जोर रोन लगा।

"मेरी बच्ची-यह क्या किया तूने...।"

तभी गम्भीर बने आत्माराम ने उससे कॉपी ली और उस पर लिखे नोट को पढ़ने लगा।

पढ़कर उसने गहरी सांस छोड़ी और हल्के से गुर्राया—

"मेरी बेटी समान बहू को मरने पर मजबूर करने वाले रिपोर्टर—अब मैं तुम्हें बताऊंगा कि मैं क्या हूं!"

"आप कानून अपने हाथ में नहीं ले सकते, नेता जी।" तभी बोल पड़ा ठाकरे।

आत्माराम खड़ा हुआ और ठाकरे के सामने आकर बोला—"रीमा राठौर तो तुम्हारी दोस्त है इंस्पेक्टर...। तुम उससे हमारी बात करा सकते हो?"

"आप खुद ही उससे बात कर लें। मुझे विश्वास है कि वो इन्कार नहीं करेगी।"

गम्भीरता से बोला ठाकरे।

¶¶

रीमा राठौर अपने ड्राइंगरूम में प्रविष्ट हुई तो सोफों पर बैठ आत्माराम, प्रकाश, दीनदयाल और शांतारानी खड़े हो गए।

उस वक्त रीमा राठौर जीन्स और टी-शर्ट पहने थी।

उसकी टी-शर्ट इतनी टाइट थी कि उसके शानदार उभार टी-शर्ट को फाड़कर बाहर आने को बेताब हो रहे थे।

उसने सिर को हल्के से हिला कर उनका अभिवादन किया और बोली —"बैठिये...।"

कहते हुए वह स्वयं एक सोफा चेयर पर बैठ गई।

सभी अपने स्थान पर वापिस बैठ गए।

तभी पार्वती एक ट्राली धकेलते हुए भीतर प्रविष्ट हुई।

लम्बी सेन्टर टेबल के करीब पहुंच कर उसने ट्रॉली रोकी और उस पर चाय तथा तले हुए काजुओं की दो प्लेटें रख कर बिना कुछ बोले वापिस चली गई।

"चाय पीजिये...।" रीमा राठौर गम्भीर बनी हुई बोली।

उसकी आवाज में ऐसा जादू था कि किसी ने भी इन्कार करने के लिए एक शब्द भी नहीं कहा।

सभी चाय पीने लगे।

चाय पीकर रीमा राठौर ने सब पर निगाह दौड़ाई—और फिर दीनदयाल पर निगाह स्थिर करते हुए बोली—"अब कहिये—क्या कहना चाहते हैं आप...?"

"मेरा नाम आत्माराम है।" दीनदयाल की जगह आत्माराम बोल पड़ा।

रीमा राठौर ने दीनदयाल से निगाह हटाकर उसकी तरफ देखा।

"खार इलाके का विधायक हूं मैं...।" आत्माराम हाथों को धोने वाले अंदाज में मलते हुए बोला।

रीमा राठौर की आंखें सिकुड़ गईं।

"आपका नाम सुना हुआ है मैंने...। आप उन नेताओं में गिने जाते है जो कानून से बचने के लिए और अपनी ताकत बढ़ाने के लिए राजनीति में आते हैं।"

बुरी तरह से हड़बड़ा उठा आत्माराम...। रीमा राठौर उसके मुंह पर ही ऐसी बात कह देगी—यह उसे सपने में भी उम्मीद नहीं थी।

"न...हीं...।" वह हड़बड़ाते हुए बोला—"ए...ऐसी बात नहीं...। मैं राजनीति में सेवा के इरादे से आया हूं...। बदनाम तो मुझे विपक्ष ने किया हुआ है।"

"छोड़िये उस बात को...।" हल्के से मुस्कुराई रीमा राठौर—"मतलब की बात कीजिये...।"

"यह दीनदयाल जी हैं...।" आत्माराम ने दीनदयाल की तरफ इशारा किया—"मेरे भतीजे प्रकाश...।" उसने अपने करीब बैठे प्रकाश के कंधे पर हाथ रखा—"और दीनदयाल जी की बेटी अंजली का आपस में प्यार था। हमें भी इस रिश्ते पर एतराज नहीं था। सो जिस दिन हमने दोनों का रिश्ता पक्का किया—अंजली ने आत्माहत्या कर ली।"

"क्यों...?"

"बदनामी को बर्दाशत नहीं कर पायी वह।"

"कैसी बदनामी...?"

उत्तर में आत्माराम ने सारी बात कह सुनाई—फिर बोला—"इस केस की तफ्तीश आपके दोस्त सिकन्दर ठाकरे ने की थी...।
उन्हीं के कहने पर मैं दीनदयाल जी को आपके पास लेकर आया हूं।"

रीमा राठौर ने गर्दन दीनदयाल की तरफ मोड़ी और बोली—"आप बताईये दीनदयाल जी...। सारी कहानी आप अपने मुंह से सुनाईये...।"

दीनदयाल ने भी उसे वही कहानी सुनाई जो कि आत्माराम ने सुनाई थी। फिर वह बोला—"मेरी बेटी का हत्यारा है वो रिपोर्टर...। जिसने ब्लैकमेल करने के इरादे से दोनों बच्चों का स्टिंग ऑपरेशन किया था। आप उसे सजा दिलायेंगी तो मेरे दिल को सुकून और मेरी बेटी की आत्मा को शान्ति मिलेगी।"

कहकर वह चुप हो गया। मगर उसकी आंखों में आंसू भर आये थे।

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ते हुए पहलू बदला।

ठाकरे से वह उस केस के बारे में जान चुकी थी। हालांकि प्यार करने का यह तरीका उसे काफी अटपटा और हैरतअंगेज लगा था; मगर दोनों लड़का-

लड़की ही जब इसे प्यार का एक नया आसन कबूल कर रहे थे तो फिर कानून को क्या एतराज हो सकता था!

उसने कुछ देर सोचा—फिर बोली—“ओ...के...मैं आपका केस लड़ूंगी। क्योंकि रीमा राठौर हमेशा सच्चाई के लिए ही लड़ती है।”

सुनकर आत्माराम का चेहरा खिल उठा। जबकि दीनदयाल उसे ऐसे देखने लगा—जैसे वह उसका अहसानमंद हो।

¶¶

अगले ही दिन विशाल कपूर को कोर्ट की तरफ से सम्मन पहुंच गया...। जिसमें उस पर यह आरोप लगाये गए थे कि उसने अपने पेशे का गलत इस्तेमाल करते हुए स्टिंग ऑपरेशन किया और अंजली को आत्महत्या करने पर मजबूर कर दिया।

सम्मन देख कर विशाल कपूर के पैरों तले से धरती ही खिसक गई। उसे समझ में नहीं आया कि उसने अपने पेशे का गलत इस्तेमाल कहां किया था?

उसने तो सच्चाई सामने लाने और आत्माराम की तथा उसके भतीजे की असलियत सामने लाने के लिए स्टिंग ऑपरेशन किया था।

परसों की तारीख थी उसकी।

सो उसने पहले नेहा से सलाह मश्विरा किया और फिर जा पहुंचा अपने वकील केलकर के पास।

केलकर ने उससे पूरी बात सुनी और बोला—"घबराने की जरूरत नहीं विशू—मैं अदालत में साबित कर दूंगा कि यह सारी आत्माराम की चाल है। बस यूं समझ लो कि तुम पर केस करके आत्माराम ने अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारी है।"

अदालत में मुजरिमों के कटघरे में खड़े विशाल कपूर ने जब रीमा राठौर को अदालत में प्रवेश करते देखा तो वह बुरी तरह से चौंक उठा।

साथ ही उसका कलेजा जोरों से धड़क उठा।

रीमा राठौर के बारे में अभी तक उसने जो कुछ भी सुन रखा था—उसके अनुसार वह हमेशा सच्चाई का ही साथ देती है—और उसने आज तक एक भी

केस नहीं हारा था।

मगर वह तो झूठ का साथ देने वहां पहुंची हुई थी।

यानि उसने रीमा राठौर के बारे में गलत सुना था।

उधर केलकर भी रीमा राठौर को देखकर हैरान रह गया था—मगर वह बोला कुछ नहीं।

दर्शक-दीर्घा में बस तीस-चालीस लोग ही बैठे थे।

उसके अगली लाईन में दीनदयाल, उसकी पत्नी शांता तथा प्रकाश और आत्माराम बैठे थे।

तभी मजिस्ट्रेट की खाली पड़ी कुर्सी के पीछे दीवार पर बाबा आदम के वक्त की दीवार घड़ी ने घण्टे बजाने शुरू कर दिए।

"टन्न...टन्..."

पूरे दस घण्टे बजे और फिर वहां शान्ति छा गई।

तभी कुर्सी के बाईं तरफ वाली दीवार में लगे दरवाजे पर लटक रहा पर्दा हटा और मजिस्ट्रेट अपने चैम्बर से निकल कर कुर्सी की तरफ बढ़े।

अदालत में मौजूद हर शख्स उनके सम्मान में खड़ा हो गया।

अपनी कुर्सी के आगे आकर टेबल पर दोनों हाथ रखते हुए मजिस्ट्रेट ने सिर को हल्के से झुका कर अभिवादन किया और कुर्सी पर बैठ गए।

उनके बैठते ही सभी लोग बैठ गए—साथ ही दर्शक-दीर्घा में हल्की-हल्की खुसर-फुसर शुरू हो गई।

"आर्डर...आर्डर...।" टेबल पर दो बार लकड़ी का हथौड़ा मारा मजिस्ट्रेट ने।

तुरन्त वहां ऐसा सन्नाटा छा गया—मानो वहां कोई हो ही न।

मजिस्ट्रेट ने एक नजर कटघरे में खड़े विशाल कपूर पर डाली—फिर अपने सामने रखी फाईल को खोल कर उस पर नजर मारी और फिर कुर्सी की पुश्त से टेक लगाते हुए बोले—"प्रोसीड...।"

रीमा राठौर अपनी कुर्सी से खड़ी होकर मजिस्ट्रेट के सामने आई और अपने लम्बे काले कोट के दोनों पल्लों को पकड़ कर सिर को हल्के से झुकाया और बोली—

"लोकतन्त्र का चौथा स्तम्भ प्रैस है, मीलार्ड...। सरकार ने, कानून ने मीडिया को पूरी आजादी दे रखी है—ताकि मीडिया हकीकत को जनता तक पहुंचा कर देश को जागरूक बनाये। मगर विशाल कपूर जैसे कुछ"—उसने विशाल कपूर की तरफ बांह लम्बी की—"ऐसे भी स्वार्थी मीडिया में घुस आये हैं—जो प्रेस के पेशे को अपना पेट भरने के लिए नहीं—बल्कि अपना घर भरने के लिए अपनाये हुए हैं। ब्लैकमेलिंग इनका मुख्य धंधा है। इस धंधे में जो पकड़ा गया—वो तो गुनाहगार—जो न पकड़ा गया वो ठीक। यह विशाल कपूर की बदकिस्मती है कि वह पकड़ा गया।

इसने...।" उसने विशाल कपूर की तरफ उंगली भाले की तरह सीधी की —"अपना घर भरने के लिए एक बेगुनाह लड़की को आत्महत्या करने पर मजबूर कर दिया...। इसने एक नया घर बसने से पहले ही उजाड़ डाला—इस शख्स ने एक रसूखदार व्यक्ति को बदनाम किया और उसने एक मां-बाप को बेऔलाद कर दिया।"

"क्या किया विशाल कपूर ने...?" मजिस्ट्रेट की भारी आवाज गूंजी।

रीमा राठौर विशाल कपूर के कटघरे के पास पहुंची और उसके कोने पर लगे बड़े से लट्टू पर कोहनी रखते हुए बोली—"विशाल कपूर ने एक स्टिंग ऑपरेशन किया मीलार्ड...। बलात्कार होने का स्टिंग ऑपरेशन। शायद आपने भी आर न्यूज पर वह स्टिंग ऑपरेशन देखा हो...। उसमें विधायक आत्माराम के भतीजे प्रकाश द्वारा एक लड़की अंजली का बलात्कार किया जा रहा था; लेकिन मीलार्ड—वह बलात्कार नहीं था...। वह प्यार करने का एक तरीका था...।"

"वाह!" तभी केलकर ताली मारते हुए कुर्सी से उठा और व्यंग्य भरी मुस्कान छोड़ते हुए मजिस्ट्रेट के सामने आकर बोला—"क्या तरीका था प्यार करने का—हाथ-पैर बेड के पायों से बंधे हुए हैं—अंजली खुद को छोड़ देने की

दुहाई दे रही है—वो रो रही है—गिड़गिड़ा रही है—और मेरी फाजिल दोस्त उसे प्यार करने का तरीका बता रही हैं। नहीं मीलार्ड—वह प्यार नहीं था—रेप था रेप...। अंजली का पहले अपहरण हुआ—फिर प्रकाश द्वारा उसका रेप किया गया —जिसका कि मेरे मुवक्किल ने स्टिंग ऑपरेशन किया...।"

"और उसी रात विधायक आत्माराम को फोन करके बीस लाख की मांग कर डाली।"

रीमा राठौर उसकी बात को काटते हुए बोली।

"यह झूठ है!" केलकर चीखते हुए बोला—"मेरे मुवक्किल विशाल कपूर ने आत्माराम से कोई मांग नहीं की, बल्कि उसने अपने कम्प्यूटर से उस स्टिंग ऑपरेशन की दो सी०डी० तैयार करके एक आर न्यूज को दी और दूसरी इंस्पेक्टर सिकन्दर ठाकरे को दी। ताकि वह मुलजिम को गिरफ्तार कर सके। वह सरासर बलात्कार था मीलार्ड—जिसे आरोपी ने खुद को बचाने के लिए प्यार करने के तरीके में बदला है। भला यह भी प्यार करने का कोई तरीका है?"

"प्यार में रोमांच पैदा करने के लिए आदमी नये से नये तरीके ढूंढता रहता है, मीलार्ड...।" रीमा राठौर केलकर की तरफ बढ़ते हुए बोली—"एक इंसान ही ऐसा जानवर है, जो सैक्स करने के नये-नये तरीके ईजाद करता रहता है। वर्ना सैक्स तो दृष्टि का हर प्राणी करता है—और एक ही तरीके से करता है...लेकिन इंसान नये-नये तरीकों से सैक्स करता है—मेरे फाजिल दोस्त बतायें कि क्या उन्होंने अपनी पत्नी से हमेशा एक ही तरीके से सैक्स किया है?"

सुनकर केलकर हड़बड़ा उठा। कुछ भी बोलते नहीं बना उससे...। पल भर में ही उसके जेहन में ऐसे कितने ही आसन घूम गए जो उसने अपनी पत्नी के साथ किए थे।

लेकिन ऐसा सैक्स तो उसने भी नहीं किया था।

"प्यार—यह तो प्यार करने का तरीका नहीं था।" वह किसी तरह से खुद को सम्भालते हुए बोला।

"दोनों ने कुछ हट के करने की सोची और यह तरीका अपना डाला।"

"लेकिन...।"

"अंजली ने अपने सुसाईड नोट में साफ लिखा है मीलार्ड कि वह प्रकाश से प्यार करती है—और वह ऐसी जिंदगी नहीं जी सकती जिसमें उसे लोगों की उपहास भरी नजरों का सामना करना पड़े। यानि उसे भी अहसास था कि प्यार करने का वह तरीका गलत था। अंजली की हैंडराइटिंग की वैज्ञानिक जांच हो चुकी है, मीलार्ड—वह सुसाईड नोट खुद उसी ने ही लिखा था।"

"सुसाईड नोट अंजली से जबरदस्ती भी तो लिखवाया गया हो सकता है।"

"कब...जब अंजली के मां-बाप उसकी मंगनी करने गए थे?"

"बिल्कुल...।"

"अगर ऐसा था तो अंजली अपने मां-बाप से वही कहती जो मेरे फाजिल दोस्त कह रहे हैं....कि उसके साथ रेप हुआ है...।

लेकिन अंजली ने अपने मां-बाप के सामने वही कहा जो सच था। अंजली ने आत्महत्या इसलिए नहीं कि उसे प्रकाश से प्यार करने के तरीके पर अफसोस था—उसने आत्महत्या इसलिए की कि विशाल कपूर ने उसे कहीं मुंह दिखाने लायक नहीं छोड़ा था। दोनों आपस में प्यार करते थे...जिसका सुबूत वह सुसाईड नोट है—जो अंजली ने आत्महत्या करने से पहले लिखा था।"

"वह जबरदस्ती लिखवाया गया हो सकता है...।" चीखते हुए बोला केलकर।

"आप कोई तर्क दे सकते हैं मिस्टर केलकर?" मजिस्ट्रेट बोले—"जिससे विश्वास किया जा सके कि सुसाईड नोट जबरदस्ती लिखवाया गया है?"

"बेशक दे सकता हूं, मीलार्ड।

"दीजिये...।"

"विशाल कपूर के द्वारा स्टिंग ऑपरेशन किए जाने का पता प्रकाश को उसी वक्त लग गया था—ऐसे में प्रकाश समझ गया कि उसका स्टिंग ऑपरेशन या

तो किसी ब्लैकमेलर ने किया है या रिपोर्टर ने। और दोनों ही स्थितियों में वह बुरी तरह से कानून के शिकंजे में फंसता था। खुद को कानून के शिकंजे से बचाने के लिए प्रकाश ने अंजली को डरा-धमका कर उससे सुसाईड नोट लिखवा लिया और उससे शादी करने को कहकर उसे घर भेज दिया...।”

“घर पहुंच कर तो अंजली आजाद थी...।” उसकी बात काटते हुए बोली रीमा राठौर—“वह अपने मां-बाप को हकीकत बता सकती थी। पुलिस को कह सकती थी कि उससे जबरदस्ती सुसाईड नोट लिखवाया गया है; मगर उसने ऐसा कुछ नहीं कहा—बल्कि उसने सच को स्वीकार किया और बदनामी के डर से आत्महत्या कर ली।“

“मेरा मुवक्किल बेगुनाह है, मीलार्ड। उसने अपने फर्ज को अंजाम दिया था...।”

“अपनी फाजिल दोस्त का मैं अभी मुंह बन्द कर सकती हूं, मीलार्ड। मुझे आरोपी विशाल कपूर से पूछताछ करने की इजाजत दी जाये।”

“इजाजत है।”

“थैंक्यू मीलार्ड...।” रीमा राठौर ने सिर को हल्के से झुकाया और फिर कटघरे में खड़े विशाल कपूर के करीब पहुंच कर बांह कटघरे के ऊपर रख उसकी आंखों में झांकते हुए बोली—“अंजली के अपहरण का पता कब लगा तुम्हें...?”

“रात आठ बजे...।” विशाल कपूर बोला।

“कैसे...?”

“मुझे बुखार था, इसलिए मैं दो दिन से घर में ही था। उस रात आठ बजे मैंने टी०वी० पर खबरें देखीं—सो मुझे अंजली के अपहरण का पता लगा।”

“और तुम सीधे वहां पहुंच गए—जहां तुम्हारे अनुसार प्रकाश अंजली से रेप कर रहा था।”

“हां...।”

“इस प्वाइंट को नोट किया जाये मीलार्ड!” रीमा राठौर विशाल कपूर को देखते हुए ही बोली—“कि विशाल कपूर अपने घर से सीधा राजाजी नगर की

कोठी नम्बर दो सौ इक्कीस में पहुंचा था...। यही कहा न तुमने...?"

"हां...।" बिना घबराये बोला विशाल कपूर।

"यानि तुम्हें पहले से ही पता था कि अंजली और प्रकाश आपस में मिलते थे?"

"मैं उस जगह को पहले से दूसरे कारण से जानता था।"

"किस कारण से...?"

"मुम्बई में पिछले दो-ढाई महीने से सात-आठ अपहरण हो चुके हैं, और हर बार अपहरण हुई लड़की की लाश ही पुलिस को मिली और हर लाश के पोस्टमार्टम में यही आया कि उसके साथ बेदर्दी से रेप किया गया...।"

"मैं यह पूछ रही हूं कि दो सौ इक्कीस नम्बर के बारे में कैसे जानते थे तुम...?"

"वही बता रहा हूं...। पिछली बार कामना नाम की एक लड़की का अपहरण हुआ था...। उस लड़की ने हिम्मत की और वहां से फरार होने में कामयाब हो गई और वहां से सीधा खार थाने में जा पहुंची थी। इत्तफाक से वह थाने में प्रवेश करते ही पाण्डुरंग नाम के सिपाही से टकरा गई—उसने उससे सारी बात सुनी और इंस्पेक्टर शम्भूनाथ के पास भेज दिया...। और सुबह कामना की लाश मिली।"

"तुम कहीं यह तो नहीं कहना चाहते कि कामना का कत्ल शम्भूनाथ ने किया है?"

"इसके बारे में मैं कुछ नहीं कह सकता। वैसे हालात यही कह रहे थे कि कत्ल उसी ने ही किया था।"

"फिर...?"

"पाण्डुरंग ने मुझे सारी खबर बताई और मैंने वहां उस कोठी का जायजा भी लिया था; लेकिन वहां से मुझे प्रकाश और निशांत के खिलाफ कोई सुबूत नहीं मिला—सो मैं उस खबर को टी०वी० पर रिपोर्ट नहीं कर सका...। फिर जब

अंजली का अपहरण हुआ तो मेरे जेहन में वही उभरा कि वह वहीं हो सकती है...।"

"और वह वहीं थी?"

"हां...।"

"क्या पाण्डुरंग तुम्हारी सच्चाई पर गवाही दे सकता है?"

"आप खुद ही उससे पूछ लें...। पता चल जायेगा।"

कुछ देर बाद पाण्डुरंग कटघरे में खड़ा था।

"तुम्हारा नाम...?"

"पाण्डुरंग—कांस्टेबल पाण्डुरंग...।"

कटघरे में खड़ा पाण्डुरंग रीमा राठौर को देखते हुए बोला।

इस वक्त वह कुछ घबराया हुआ नजर आ रहा था।

“किस थाने में हो?” रीमा राठौर ने पूछा।

“खार...।”

“उसे जानते हो?” रीमा राठौर ने सामने वाले कटघरे में खड़े विशाल कपूर की तरफ इशारा किया—जो कि उसी की तरफ देख रहा था।

पाण्डुरंग ने विशाल कपूर को देखा—फिर पुनः रीमा राठौर की तरफ देखते हुए बोला—

“हां...आर न्यूज का रिपोर्टर है यह...। थाने में अक्सर आता रहता है।”

“तुम्हारे साथ कैसी दोस्ती है विशाल कपूर की?”

“कोई दोस्ती नहीं...। मेरी ड्यूटी एस○एच○ओ○ के ऑफिस के बाहर है। यह जब भी आता है, पहले मुझसे ही मिलता है। बस यही जान-पहचान है हमारी।”

"कुछ रोज पहले तुम्हारे ही इलाके से कामना नाम की एक लड़की का अपहरण हुआ था। जो कि विशाल कपूर के मुताबिक, प्रकाश और निशांत के कब्जे से भाग निकलने में कामयाब रही और सीधा थाने पहुंची थी।"

"मुझे नहीं पता इसका...।" इन्कार में सिर हिलाया पाण्डुरंग ने।

उसका जवाब सुनकर विशाल कपूर के पैरों तले से धरती खिसक गई।

"य...यह क्या कह रहे हो पाण्डु...।" वह बुरी तरह से घबराये अंदाज में चीखा—"तुमने खुद आकर मुझे बताया था कि कामना पहले तुमसे मिली थी...वो भी गेट पर...।"

"यह क्या कह रहे हो तुम...मैंने ऐसा कुछ नहीं कहा—और न ही मैं किसी से मिला...।"

साफ ही मुकर गया वह।

"य....यह झूठ बोल रहा है....इसी ने....।"

विशाल कपूर की आंखों के आगे अंधेरा छाने लगा।

"य...यह नहीं, तुम झूठ बोल रहे हो विशाल कपूर।" रीमा राठौर उसकी बात काटते हुए सख्त स्वर में बोली—"जबकि हकीकत यह है कि तुम पहले से ही प्रकाश और अंजली के प्यार के बारे में जानते थे और तुम्हें यह भी पता चल गया था कि अंजली और प्रकाश प्यार की सारी हदों को पार कर चुके हैं। चूंकि प्रकाश विधायक आत्माराम का भतीजा है—सो तुम किसी ऐसे मौके की तलाश में थे जिससे कि तुम प्रकाश से मोटा पैसा ऐंठ सको। और जब अंजली का अपहरण हुआ तो तुमने यही सोचा कि हो सकता है प्रकाश ने ही ऐसा कराया हो—सो तुम दो सौ इक्कीस पहुंच गए जिसे तुम दोनों के मिलन स्थल के तौर पर जानते थे—इत्तेफाक से अंजली और प्रकाश वहां एक नये तरीके से प्यार कर रहे थे—जो कि बलात्कार की तरह था—और तुमने उसे चोरी-छुपे कैमरे में उतार लिया। और उसके बदले आत्माराम से बीस लाख की मांग की—जिसे आत्माराम ने सख्ती से देने से मना कर दिया। और तुमने वह स्टिंग ऑपरेशन रिपोर्ट के रूप में अपने चैनल को दे दिया।"

"य...यह झूठ है! मैंने बीस लाख की कोई मांग नहीं रखी।" चीख उठा विशाल कपूर—"और वहां अंजली से प्यार नहीं हो रहा था—बल्कि उससे

सचमुच का रेप हो रहा था।"

"रेप वाली बात तो अंजली स्वीकार नहीं कर रही थी।"

"उसके लिए अंजली पर दबाव डाला गया था।"

"यह तुम नहीं, अदालत तय करेगी कि अंजली ने दबाव से सुसाईड नोट लिखा था...या अपनी मर्जी से।"

"मेरा यकीन करें वकील साहिबा—यह लोग"—विशाल कपूर ने आत्माराम और प्रकाश की तरफ इशारा किया—"इंसान नहीं, दरिंदे हैं। इन्होंने बहुत बड़ी चाल चली है—।"

"मेरा नाम रीमा राठौर है, मिस्टर विशाल कपूर और रीमा राठौर किसी चाल में नहीं फंसती...।"

रीमा राठौर गुर्राई।

"तो फिर मैं यही कहूंगा कि तुम भी इन्हीं शैतानों से मिली हुई हो।"

"मिस्टर विशाल कपूर!" तभी मजिस्ट्रेट सख्त स्वर में बोल पड़े—"किसी को भी पर्सनल अटैक करने की इजाजत नहीं।"

केलकर ने अपनी तरफ से विशाल कपूर को बेगुनाह साबित करने के लिए पूरा जोर लगा डाला...। मगर रीमा राठौर के सामने उसकी एक नहीं चली...। और उसे सजा हो गई।

¶¶

विशाल कपूर ने एक गहरी सांस छोड़ी और गुफा के इधर-उधर देखा...। मगर सिवाये अंधेरे के कुछ भी नजर नहीं आया उसे।

अतीत में डूबे उसे पता ही नहीं चला था कि रात बहुत ज्यादा गहरा गई थी।

उसने जेब से मोबाइल निकाल कर उसका बटन दबाया तो तुरन्त स्क्रीन रोशन हो गई, और उस पर वक्त नजर आने लगा।

सुबह के चार बजने वाले थे।

उसने मोबाइल वापिस अपनी जेब में डाला और बड़बड़ाया—

"मेरा सब कुछ तेरी वजह से तबाह हुआ है, रीमा राठौर...। मेरी बीवी...मेरे बच्चे...सब मारे गए। अगर तू सच्चाई का साथ देती तो मैं और मेरा घर तबाह न होता...।" उसने झटके से सांस छोड़ी—"मेरा तो सब कुछ तबाह हो गया...अब तबाह होने की बारी तेरी है। आत्माराम तू...तू भी वहीं पहुंचेगा जहां तूने मेरे बीवी...बच्चों को पहुंचाया है...।"

अंधेरे में उसके चेहरे के भाव तो नजर नहीं आ रहे थे; लेकिन उसकी बड़बड़ाहट सुन कर अंदाजा लगाया जा सकता था कि उसके चेहरे पर खूंखार किस्म के भाव होंगे।

वह मूर्ति के पास से हटा और दीवार का सहारा लेते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए गुफा से बाहर निकल आया।

कुछ देर तक वह जंगल में चलता रहा—फिर वह सड़क पर आ गया।

सड़क पर वह ऐसे चल रहा था कि किसी की नजर न पड़े उस पर।

वह जानता था कि पुलिस और आत्माराम के कुत्ते पूरे जोर-शोर से उसे ढूंढ रहे होंगे और उसे उनसे हर हाल में बच कर रहना था।

तभी अपने मकसद को, अपनी प्रतिज्ञा को अंजाम तक पहुंचा सकता था।

¶¶

अस्पताल के एमरजेंसी वार्ड के बाहर सिकन्दर ठाकरे और रीमा राठौर गैलरी की दीवार के साथ लगे लम्बे बैंच पर बैठे थे। दोनों के चेहरों पर चिंता की गहन लकीरें थीं।

भीतर नेहा का ऑपरेशन चल रहा था।

सिकन्दर ठाकरे और रीमा राठौर लगभग साथ-साथ नेहा के घर पहुंचे थे।

गेट के करीब ही उन्हें आशा और राकेश मिल गए थे।

आशा अब होश में आ चुकी थी। दोलों ही बुरी तरह से घबराये हुए कांप रहे थे।

रह-रह कर उनकी आंखों से आंसू बह रहे थे।

¶¶

“लाशें कहां हैं...?” भीतर प्रवेश करते सिकन्दर ठाकरे ने राकेश से सबसे पहले सवाल यही किया।

उसने न तो उनका परिचय जाना और न ही कुछ और पूछा। वह पहले लाशों को देख लेना चाहता था।

तभी वहां रीमा राठौर भी पहुंच गई।

ठाकरे ने एक बार रीमा राठौर को देखा...फिर पुनः राकेश को देखने लगा।

"अन्दर...।" थूक सटकते हुए बोला राकेश और अपने आंसू पौंछने लगा।

ठाकरे तथा रीमा राठौर आगे बढ़ और जैसे ही उन्होंने बेडरूम में कदम रखा...ठाकरे के होंठों से तेज सिसकारी फूट पड़ी।

रीमा राठौर सन्न रह गई।

अपनी जिन्दगी में उसने बहुत लाशें देखी थीं; लेकिन बच्चों की ऐसी लाशें उसने कभी नहीं देखी थीं।

वह उन लाशों को देख विचलित हो उठी थी।

कुछ पलों तक तो वह अपलक-सी बच्चों को देखती रही—फिर उसने नेहा की नग्न लाश पर निगाह डाली।

खून से लथपथ हो रही थी वह।

मांस के लोथड़े उसकी जांघों के बीच नजर आ रहे थे, जो खून से सने थे।

अभी भी खून बह रहा था।

साफ नजर आ रहा था कि पहले उसके साथ रेप हुआ था, फिर उसके पेट पर ठोकरें मारी गई थीं, क्योंकि और कोई घाव तो नजर ही नहीं आ रहा था उसके जिस्म पर।

तभी वह हल्के से चौंकी।

नेहा के पैर के अंगूठे में हल्की-सी हरकत हुई थी।

तुरन्त वह उसके करीब पहुंची और झुक कर उसकी नब्ज टटोली।

"फौरन एम्बूलेंस बुलाओ ठाकरे...।" वह होते से चीखी—"यह अभी जिन्दा है...।"

सुनकर ठाकरे पहले तो बुरी तरह से चौंका—फिर हड़बड़ाते हुए उसने मोबाइल निकाला और जल्दी-जल्दी कोई नम्बर मिलाने लगा।

दस मिन   ट बाद ही एम्बुलेंस वहां पहुंच गई।

रीमा राठौर ने बेड की चादर खींच कर पहले नेहा के बदन को ढका—फिर उसे दोनों हाथों में उठा कर निकली और एम्बुलेंस में डाल कर पीछे हटी और ठाकरे से बोली—"तुम एम्बुलेंस के साथ जाओ, ठाकरे। डॉक्टर से कहना कि इसका बचना बहुत जरूरी है। तब तक मैं उनसे बात करती हूं।"

अभी उसने बात पूरी ही की थी कि सब-इंस्पैक्टर चार सिपाहियों तथा फोटोग्राफर के साथ वहां पहुंच गया।

ठाकरे ने उसे भीतर पड़ीं लाशों का पंचनामा करने का आदेश दिया और स्वयं अपनी जिप्सी की तरफ बढ़ते हुए एक सिपाही को एम्बुलेंस में बैठने का आदेश दे दिया।

गेट पर खड़े राकेश और आशा आंखें फाड़े धड़कते दिलों से यह सब देख रहे थे।

रीमा राठौर की बातों से वे समझ गए थे कि नेहा अभी मरी नहीं है—सो मन-ही-मन वे ऊपर वाले से प्रार्थना कर रहे थे कि नेहा बच जाये।

एम्बुलेंस के जाने के बाद रीमा राठौर ने पहले सब-इंस्पेक्टर को भीतर पड़ीं लाशों के बारे में बताया और फिर राकेश और आशा को देखते हुए बोली —"अन्दर आओ.....।"

कुछ ही देर में तीनों ड्राईंगरूम में सोफों पर बैठे थे।

"ब-बहन जी ठीक हो जायेंगी न...।" तभी राकेश थर्राये स्वर में बोला।

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी और बोली—"हालत बहुत ज्यादा खराब है....। उम्मीद तो नहीं...। बाकी ऊपर वाला कोई चमत्कार कर दे तो कुछ कहा नहीं जा सकता।"

आशा की आंखों से आंसू बहने लगे। रोते हुए अपने पास बैठे राकेश के कंधे पर माथा रख दिया उसने।

"पहले अपना परिचय दो...। कौन हो तुम लोग...?" रीमा राठौर बोली।

"मेरा नाम राकेश है। और यह मेरी पत्नी आशा...यह नेहा की कजिन है। आप कौन हैं? पुलिस?"

"मेरा नाम रीमा राठौर है और..."

बोलते-बोलते रुक गई वह और आशा को देखने लगी, जो राकेश के कंधे से माथा हटा कर झटके से से देखने लगी थी।

"तो तू है वो एडवोकेट!" वह नफरत भरे स्वर में बोली—"जिसने मेरे जीजू को जेल कराई थी?"

"कानून की रक्षा करना मेरा फर्ज ही नहीं धर्म भी है।" रीमा राठौर उसकी नफरत का बुरा न मानते हुए बोली।

"अगर तू ऐसे ही कानून की रक्षा करती है तो मैं दावे से कहती हूं कि तूने कभी किसी गुनहगार को सजा नहीं होने दी। सिर्फ बेगुनाहों को ही सजा दिलवाई है तूने...। जैसे मेरे जीजू को...।"

"तुम मेरी बात...।

"हमें कोई बात नहीं करनी तेरे से...।" चीख उठी आशा—"दफा हो जाओ यहां से। हमें तुम्हारी न तो मदद चाहिये, न तुम्हारी यहां मौजूदगी चाहिये...गेट आऊट...।" उसने तीर की तरह अपनी बांह दरवाजे की तरफ की।

"बस...।" फुंफकार उठी रीमा राठौर—"खबरदार जो ऐसी बकवास और की तो—"

"तो क्या कर लोगी—मुझे भी जेल भिजवा दोगी या फांसी पर चढ़ा दोगी?"

"शटअप!"

रीमा राठौर इतने खौफनाक ढंग से गुर्राई कि आशा बुरी तरह से सकपका गई।

राकेश भी थर्रा उठा।

आशा की आंखों से फिर से आंसू बहने लगे।

रीमा राठौर सोफे से उठी और उनके दाईं तरफ पड़ी खाली जगह पर चहल-कदमी करते हुए कुछ देर तो सोचों में डूबी रही—फिर वह आशा और राकेश पर निगाह गड़ाते हुए बोली—

"विशाल कपूर जेल से फरार हो चुका है। इस बात का पता लग चुका है मुझे। तुम मुझे सारी बात बताओ।"

"हम जो भी बतायेंगे, वो पुलिस को बतायेंगे...।" राकेश, जो कि स्वयं को सम्भाल चुका था, बोला—"तुम पर हमें कोई विश्वास नहीं...। विश्वास तो पुलिस पर भी नहीं रहा मेरा...। मगर उसे बताना हमारी मजबूरी है, जबकि तुम्हारे सामने हम मजबूर नहीं हैं।"

"देखो...।" रीमा राठौर उनके सामने कर सेन्टर टेबल पर बैठ गई—"मुझे गलत मत समझो—मेरी विशाल कपूर से कोई दुश्मनी नहीं थी, जो मैं उसे सजा कराती। उसने एक बेगुनाह लड़की को आत्महत्या करने पर मजबूर कर

दिया था। कम से कम स्टिंग ऑपरेशन को टी०वी० पर दिखाने से पहले वह पहचान तो करता कि सच्चाई क्या है...।”

“क्या तुमने सच्चाई की पड़ताल की?” राकेश मुंह बनाते हुए बोला।

“सच्चाई मेरे सामने थी। प्रकाश और अंजली की मंगनी हो गई थी। अंजली के मां-बाप इस मंगनी से खुश थे। खुद अंजली ने मरने से पहले अपने सुसाईड नोट में प्रकाश से अपने प्यार का इजहार किया था—ऐसे में पड़ताल करने की जरूरत ही कहां थी?”

“यानि तुम्हें वे सुबूत मिले और तुम कूद कर इस नतीजे पर पहुंच गईं कि विशाल कपूर गुनहगार है...?” आशा तीखे स्वर में बोली—“यह नहीं सोचा कि सुबूत गढ़े भी जा सकते हैं? और कुछ नहीं तो उस कमीने आत्माराम के बारे में ही मालूमात हासिल कर लेतीं...। प्रकाश के बारे में पता लगातीं। मगर तुम्हें तो विशाल को सजा दिलवाने की जल्दी पड़ी हुई थी। अगर पुलिस और तुम हकीकत का पता जानतीं तो आज विशाल बाहर होता और आत्माराम अन्दर होता—उसका बेटा और भतीजा भी अन्दर होते; मगर तुमने कुछ भी नहीं किया—

नतीजा यह हुआ कि पुलिस का काम दीदी को करना पड़ा। उसी काम की वजह से दीदी को मौत से दो-चार होना पड़ा और बच्चों से महरूम होना पड़ा।"

"क्या मतलब..." हल्के से चौंकी रीमा राठौर।

आवेश में भरी आशा तब कुछ बताती चली गई।

"कल दीदी बच्चों को लेकर मेरे पास आई थीं और दोनों बच्चों को मेरे हवाले करते हुए वसीयत बच्चों के नाम करते हुए मुझे यह कहा कि वह विशू की मौत का बदला लेने जा रही हैं। अगर उन्हें कुछ हो गया तो बच्चों की परवरिश हमें करनी है।"

"फिर...?"

"यह नहीं बताया था उसने—बस यही कहा था कि सुबह टी०वी० पर देख लेना और वो बच्चों को लेकर चली गई थी—उसके बाद जीजू का फोन आया जिसमें उसने यह कहा कि मैं राकेश को लेकर फौरन यहां पहुंचूं...हम यहां पहुंचे तो सब कुछ खत्म हो चुका था...।" रोने लगी आशा।

रीमा राठौर की आंखें सिकुड़ गईं।

उसे लगा कि इस बार वाकई उससे बहुत बड़ी भूल हो गई थी।

अब वह भूल कितनी बड़ी थी...यह तो सुबह टी०वी० देखने पर ही पता चलना था।

उसने उससे कुछ और प्रश्न पूछे—फिर सेन्टर टेबल से खड़ी होते हुए बोली—

"मैं अभी कुछ नहीं कह सकती कि विशाल कपूर बेगुनाह था या गुनाहगार; लेकिन विशाल कपूर के दोनों बच्चों की मौत और उसकी पत्नी का मौत के मुंह में पहुंचना यही बताता है कि नेहा के हाथ कुछ ऐसा लग गया था जो विशाल कपूर को निर्दोष साबित कर सकता था। सो मैं वादा करती हूं कि मैं इस केस की सच्चाई जान कर दम लूंगी। और अगर विशाल कपूर सच्चा हुआ तो उसे बरी कराने का वादा भी करती हूं।"

कहकर वह वहां से निकली और सीधा अस्पताल जा पहुंची।

और अब वह ठाकरे के साथ गैलरी में लगे बैंच पर बैठी थी।

"कुछ कहा डॉक्टर ने...?" वह बोली।

"अभी निकला ही कहां है डॉक्टर...।" ठाकरे ने कहा—"वैसे नेहा की हालत देख कर उसने यह कहा था कि उसे कोई चमत्कार ही बचा सकता है। वह भीतर कोई उम्मीद लेकर नहीं गया...उसने बस यही कहा था कि वह कोशिश करेगा और भीतर वह कोशिश ही कर रहा है...।"

कहकर उसने एक गहरी सांस छोड़ी।

रीमा राठौर ने भी गहरी सांस छोड़ी।

"राकेश और आशा ने क्या बताया?" पूछा सिकन्दर ठाकरे ने।

रीमा राठौर ने बताया, फिर बोली—"सुबह टी०वी० पर ऐसा क्या दिखाया जायेगा जो विशाल कपूर को निर्दोष साबित कर देगा?"

"कहीं नेहा ने भी तो किसी का स्टिंग ऑपरेशन न कर डाला हो?"

सुनकर रीमा राठौर हौले से चौंक उठी।

"हां...।" वह बड़बड़ाई—"ऐसा हो सकता है...। उसने जरूर स्टिंग ऑपरेशन ही किया होगा और किसी तरह से उस व्यक्ति को पता चल गया होगा—सो वह नेहा के घर पहुंच गया और उससे सी०डी० या कैसेट वगैरह मांगने लगा होगा—जिसे देने से नेहा ने इन्कार किया तो उसने उसके बच्चों को मार डाला और उसकी यह हालत कर दी।"

"क्या पता नेहा ने अभी तक वह स्टिंग ऑपरेशन उस व्यक्ति को न दिया हो?" ठाकरे बोला।

"हो सकता है। तुम फौरन सब-इंस्पेक्टर को फोन करके कहो कि वह पूरे घर की बारीकी से तलाशी ले...। खासकर सी०डी०, वीडियो कैसेट या पैनड्राइव वगैरह को खासतौर पर चैक करे।"

कह कर वह खड़ी हुई।

"तुम कहां चलीं...?"

रीमा राठौर ने उसकी बात का जवाब नहीं दिया—बस एक गम्भीर मुस्कान मुस्कुराई और उसकी तरफ पीठ कर गैलरी में आगे बढ़ने लगी।

¶¶

“खट...खट...खट...।”

दस्तक की आवाज सुनकर अब्दुल खान की आंखें खुल गईं।

उसने करवट बदली और सीधे होकर अपने सिरहाने के नीचे में मोबाइल निकाला और बटन दबा कर मोबाइल की स्क्रीन रोशन कर स्क्रीन पर उभरे बटन को आंखें मिचमिचाते हुए देखा।

छह बजने वाले थे।

वह बड़बड़ाया और बेड पर टांगें नीचे लटकाईं और सरक कर बेड से उतर कर चप्पल पहन कर दरवाजे की तरफ बढ़ा।

दरवाजे के करीब पहुंच कर उसने दरवाजे के दाईं तरफ दीवार पर लगे स्विच बोर्ड को टटोला और एक बटन दबाया।

'खट' की हल्की-सी आवाज के साथ सी.एफ.एल. की सफेद रोशनी कमरे में फैल गई।

वह दरवाजा खोल कर बाहर निकला और आंगन को पार करते हुए मेन गेट की तरफ बढ़ा।

"खट...खट...खट...।"

तभी पुनः दस्तक हुई।

"आ रहा हूं, भाई...।" वह झल्लाये स्वर में बोला और दरवाजे के करीब पहुंच कर कुण्डा खोल दरवाजा खोल दिया।

सामने विशाल कपूर खड़ा था।

अब्दुल खान पहले तो उसे पहचानने वाले अंदाज में देखता रहा—फिर जैसे ही उसने उसे पहचाना, वह चौंक पड़ा।

"अरे, विशाल भाई तुम...?"

"हां मैं...।" गम्भीरता से बोला विशाल कपूर और उसे एक तरफ करते हुए भीतर दाखिल हो गया।

अब्दुल खान उसे रिपोर्टर के तौर पर जानता था।

साल भर पहले अब्दुल खान की बहन के साथ कुछ गुण्डों ने रेप कर दिया था और उसकी बहन ने आत्महत्या कर ली थी। तब गुस्से तथा प्रतिशोध में जलते हुए अब्दुल खान ने उन जारों गुण्डों को गोलियों से उड़ा दिया था और उनके घरों को बमों से उड़ा दिया था।

उसे कानून से कम से कम उम्रकैद मिलनी निश्चित थी; मगर तब विशाल कपूर ने उसका साथ दिया था। अपने चैनल के जरिये उसने ऐसे-ऐसे प्वाइंट सामने रखे थे कि पुलिस उलझ कर रह गई थी और अब्दुल खान पर केस हो ही नहीं सका था।

तब अब्दुल खान ने विशाल कपूर को अपना भाई कहते हुए यह कहा था कि कभी भी उसकी जान की भी जरूरत हो तो वह बेखटके मांग ले।

मगर विशाल कपूर ने उसकी बात को हवा में उड़ाते हुए यह कहा था कि उसने बस अपना फर्ज पूरा किया है।

उसके बाद दोनों कभी नहीं मिले थे।

ऐसे में आज उसे अपने सामने देख कर उसका चौंकना स्वाभाविक ही था। वो भी इतनी सुबह...।

"दरवाजा बन्द कर दो खान।" बोला विशाल कपूर।

अब्दुल खान ने दरवाजा बन्द कर कुण्डा लगाया और उसकी तरफ मुड़ते हुए हैरानी से बोला—

"खैरियत तो है, भाई—जो इतनी सुबह यहां आये हो?"

जवाब में विशाल कपूर बोला कुछ नहीं।

उसने शर्ट उतारी, बांह पर बंधी पट्टी खोली और आंगन के ईंटों वाले फर्श पर फेंकते हुए बोला—

"थोड़ा-सा कपड़ा और माचिस ले आओ खान...।"

अब्दुल खान ने उसके करीब आ उसकी बांह के घाव को देखा तो चौंक उठा।

"य...यह तो गोली का घाव है, भाई...।"

"हां...।"

"कैसे लगी गोली—किसने मारी...?"

"सब बताऊंगा, मेरे भाई...। पहले यहां कपड़े की राख बांध लूं...फिर सब कुछ बताऊंगा।"

"मेरे पास घाव की दवा है। भीतर चलो...। राख से जख्म जल्दी नहीं भरेगा।"

कहकर अब्दुल खान उसकी कलाई पकड़ कर उसे भीतर कमरे में ले आया और खुद अलमारी की तरफ बढ़ गया।

अलमारी खोलकर उसने उसमें से एक बक्सा निकाला और विशाल कपूर के करीब आकर बक्से को बेड पर रखकर उसे खोला।

भीतर फर्स्ट एड का सामान रखा था।

उसने पहले स्प्रिट से उसके घाव को धोया, फिर उस पर दवा लगाकर पट्टी बांध दी।

स्प्रिट लगाने के दौरान विशाल कपूर के चेहरे पर पीड़ा के भाव जरूर उभरे; लेकिन उसके मुंह से सी तक नहीं निकली।

बक्से को वापिस अलमारी में रखकर दरवाजे की तरफ बढ़ते हुए बोला—"मैं चाय बना लाता हूं—फिर बैठ कर पूछूंगा।"

"भूख भी लगी है मुझे...।" बोला विशाल कपूर—"कुछ खाने को भी ले आना—कल दोपहर से कुछ नहीं खाया...।"

अब्दुल बिना कुछ बोले बाहर निकल गया।

¶¶

"अब बोलो—क्या बात है...? यह गोली किसने मारी तुम्हें...?"

चाय का खाली कप बेड पर रखी थाली के बीच रखते हुए बोला अब्दुल खान।

"जेल से फरार हूं मैं...।" गम्भीरता से बोला विशाल कपूर।

बुरी तरह से उछल पड़ा अब्दुल खान और आंखें फाड़े उसे देखने लगा।

"यह...यह क्या कह रहे हो भाई? तुम्हें जेल कैसे हो गई?"

उत्तर में विशाल कपूर ने उसे अब तक की सारी कहानी सुना दी।

सुनकर अब्दुल खान के रोंगटे खड़े हो गए।

"तुम्हारे साथ तो बहुत जुल्म हुआ भाई...।" वह भर्राये स्वर में बोला।

“सब कुछ खत्म हो गया मेरा, मेरे भाई...। मेरा परिवार खत्म हो गया...। ऊपर से ब्लैकमेलर का ठप्पा माथे पर लग गया। अब तो बस दिल में प्रतिशोध है—जिसे मैंने हर हाल में पूरा करना है।”

“जरूर करो, विशाल भाई। ऐसे आदमी को इस जमीं पर रहने का कोई हक नहीं...। तुम मुझे बताओ—मैं क्या कर सकता हूं तुम्हारे लिए...?”

“मुझे बहुत बड़ी लड़ाई लड़नी है, खान...; लेकिन मेरे पास हथियार के नाम पर कुछ भी नहीं...। तुमने बदला लेने के लिए उन गुण्डों को गोलियों से भून दिया था, उनके घरों को बमों से उड़ा दिया था। मुझे भी बम और पिस्तौल चाहिये—उसी के लिए मैं तुम्हारे पास आया हूं...।”

“मिल जायेंगे...।” तुरन्त बोला अब्दुल खान।

“तुम मुझे वह जगह बता दो—जहां से यह सब हासिल हो सकता है—मैं खुद ही...।”

“सारा सामान मेरे पास ही पड़ा है।”

"क्या...?" चौंक उठा विशाल कपूर—साथ ही उसकी आंखों में संदेह उभर आया।

"हां भाई...।" गम्भीरता से बोला अब्दुल खान—"मगर मेरी बात का गलत मतलब मत निकालना—मैं कोई दहशतगर्द नहीं हूं...।"

"तो फिर ऐसा खतरनाक सामान तुम्हारे पास कहां से आया...?"

"मेरी बहन रेहाना की मौत से कुछ दिन पहले अली खां नाम का हमारा एक रिश्तेदार यहां आया था। पाकिस्तान से वह हमें मिलने आया था, सो हमने उसकी खूब खातिरदारी की। लेकिन वह दहशतगर्द था—और यहां दहशत फैलाने के लिए आया था।"

दो दिन बाद वह घूमने की कहकर निकला; लेकिन वह लोकेशन देखने गया था—तब पुलिस को उसका पता चल गया...। पुलिस से बचने के लिए उसने पिस्तौल से फायरिंग शुरू कर दी और जवाबी फायरिंग में वह मारा गया।

कम्बख्त अपने साथ बारूद का पूरा जखीरा लेकर आया था। जिसका पता हमें उसकी मौत के बाद तब लगा—जब हमने उसके बैग की तलाशी ली।”

“ओह!”

“इतना असलाह देख कर तो हमारे होश ही उड़ गए थे...। हमारी समझ में नहीं आया कि हम उस असलाह का करें क्या...।”

पुलिस को देने का मतलब था—खुद को फंसाना...। पुलिस हमें भी दहशतगर्द मानती और हमारा एनकाउंटर कर देती। कहीं फैंक भी नहीं सकते थे हम उसे...। कहीं कोई देख लेता तो मुसीबत खड़ी हो जाती...। सो हमने सारा असलाह घर में ही दफन कर दिया...। खुदा ने उसे शायद इसलिए यहां पहुंचाया था कि मैं अपनी बहन के कातिलों का बदला ले सकूं...। और वह बचा भी इसलिए हुआ है कि तुम भी अपना बदला ले सको।”

“कहां है वह...?”

"अभी लाता हूं...।" कहकर अब्दुल खान बेड से उतरा और थाली उठाकर बाहर निकल गया।

करीब दस मिनट बाद वह वापिस लौटा तो उसने एक बैग उठा रखा था।

बैग को बेड पर रखकर उसने खोला और उसमें से सामान बाहर निकाल कर बेड पर रखने लगा।

दो पिस्तौलें—पांच हथगोले—दो रिमोट बम—जिन्दा गोलियां जो कि तीस-पैंतीस थीं—बेड पर सजे नजर आ रहे थे।

"सारा सामान ले जाओ...।" अब्दुल खान बोला—"और सबको तबाह बर्बाद कर दो...।"

विशाल कपूर की आंखों में कहर नाचने लगा।

¶¶

"डिंग...डांग...।"

कालबेल की आवाज सुनकर शांतारानी ने श्रीकृष्ण की तस्वीर के आगे माथा टेका और छोटे से बने मंदिर में जल रही जोत पर हाथ कर हाथों को चेहरे पर फेरा और उठकर दरवाजे की तरफ बढ़ गई।

मेनडोर के करीब पहुंच कर उसने सिटकनी गिरा कर दरवाजा खोला।

सामने रीमा राठौर खड़ी थी।

"नमस्कार आंटी...।" रीमा राठौर ने सिर को हल्के से झुकाते हुए कहा।

"आओ बेटी...।" एक तरफ होते हुए बोल शांतारानी।

रीमा राठौर भी भीतर प्रविष्ट हुई तो उसने दरवाजा बन्द किया और रीमा राठौर को ड्राईंगरूम में ले आई।

"तुम बैठो—मैं चाय बना लाती हूं...।" वह बोली और बाहर निकल गई।

रीमा राठौर एक सोफा चेयर पर बैठी और कोने में रखे टी०वी० पर रखी तस्वीर को देखने लगी—जिसमें दीनदयाल और शांतारानी सोफे पर बैठे थे—तथा

उलके पीछे खड़ी अंजली दोनों के गले में बाहें डाले हंस रही थी।

अभी वह तस्वीर को देख ही रही थी कि तभी दीनदयाल अपने सफेद गीले बालों को झाड़ते हुए भीतर प्रविष्ट हुआ।

उसने लुंगी और बनियान पहन रखी थी। साफ नजर आ रहा था कि वह नहा कर निकला है।

"नमस्कार...।" रीमा राठौर बोली।

"नमस्ते बेटी...।" कहते हुए वह उसके दाईं तरफ वाले सोफे पर बैठ गया—"इतनी सुबह-सुबह...खैरियत तो है?"

"विशाल कपूर फरार हो गया है।" बोली रीमा राठौर।

सुन कर बुरी तरह से चौंका दीनदयाल—फिर बुरा मुंह बनाते हुए बोला—"हमारा कानून, हमारे कानून के रखवाले, सब पंगु हो गए हैं। और..."

"छोड़िये इस बात को...। उसे पकड़ने के लिए पुलिस भी भाग-दौड़ कर रही है—मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछने आई हूं।"

तभी शांतारानी चाय ले कर भीतर प्रविष्ट हुई।

उसने ट्रे सेन्टर टेबल पर रखी और एक कप उठा कर रीमा राठौर को दिया—फिर दीनदयाल को चाय दी—फिर अपना कप उठा कर दीनदयाल के करीब बैठ गई।

"पहले चाय पी लो—फिर जो पूछना हो पूछना...।"

तीनों चाय पीने लगे।

चाय पीकर रीमा राठौर ने कप वापिस ट्रे में रखा और दोनों पर निगाह दौड़ाते हुए बोली—"रात को आपसे मिलने कोई औरत आई थी...?"

"नहीं...।" दीनदयाल बोला—"कोर्ट से लौटने के बाद हम घर में ही रहे थे...। शाम को अड़ोस-पड़ोस के तीन-चार लोग आये थे—उसके बाद कोई नहीं आया था।"

"तुम किसकी बात कर रही हो, बेटी...?" शांतारानी ले पूछा।

"नेहा की—विशाल कपूर की पत्नी है वो।"

"नहीं...।" बोली शांतारानी—"वो नहीं आई। वो अगर आती भी तो हम उसे अन्दर घुसने भी नहीं देते। उसका आदमी मेरी बेटी का हत्यारा है। ऐसे में हम उसे बाहर से ही धक्का दे देते...।" कहते हुए उसका चेहरा भभक उठा था।

"मगर बात क्या है...? तुम ऐसा क्यों पूछ रही हो?" दीनदयाल उसे प्रश्नभरी नजर से देखते हुए बोला।

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी और पहलू बदलते हुए बोली—

"रात किसी ने विशाल कपूर के घर पर हमला किया था...। उसने उसके दोनों बच्चों को मार डाला। उसके पेट में पल रहे बच्चे को भी मार डाला—और इस वक्त वह खुद अस्पताल में जिन्दगी और मौत के बीच झूल रही है...। डॉक्टर ने उसके बच जाने की सम्भावना सिर्फ पांच प्रतिशत बताई है।"

दोनों पति-पत्नी बुरी तरह से उछल पड़े।

"उसकी मौत आप वाले केस से सम्बन्धित है...यह मैं दावे से कह सकती हूं...। इसी वजह से मैं यहां आई हूं।"

"भगवान करे वो बच जाए।" गहरी सांस छोड़ते हुए बोली शांतारानी —"हमारा कुसूरवार विशाल कपूर था। उसकी पत्नी और बच्चों से हमारी क्या दुश्मनी...जो हम उनके लिए बद्दुआयें मांगें...।"

"अंजली के बारे में बताइये...।"

"क्या...?   "

"कैसी लड़की थी वह...?"

शांतादेवी ने गहरी सांस छोड़ते हुए दीनदयाल को देखा—जिसने मारे शर्म के अपना सिर झुका लिया।

"तुम जानती तो हो ही, बेटी...।" शांतारानी बोली—"मरकर भी उसने हमारी ऐसी नाक कटाई कि...।"

"मैं तब की बात नहीं कर रही...। मैं उससे पहले की बात कर रही हूं। उससे पहले आपने उसके बारे में कभी सुना था कि वह ऐसी-वैसी लड़की है?"

"नहीं...।" शांतारानी ने सिर दांये-बांये हिलाया—"पहले तो मैंने उसके

बारे में ऐसा-वैसा कभी भी नहीं सुना था...। पढ़ाई में वह हमेशा अव्वल आती थी। कॉलेज से घर ठीक वक्त पर पहुंचती थी...। कहीं जाती भी थी तो मुझे या किसी और को लेकर जाती थी। अकेली तो निकलती ही नहीं थी घर से। बाकी कालेज के वक्त वह प्रकाश के पास जाती हो तो मैं कह नहीं सकती। उसके लिए तुम कालेज से पता कर लो...।"

"मगर तुम उसके बारे में क्यों पूछ रही हो?" दीनदयाल बोला—"वो चैप्टर अब खत्म हो चुका है।"

साफ नजर आ रहा था कि अंजली के बारे में बात करके वह खुद को बेइज्जत महसूस कर रहा था।

“मैं इस केस को दूसरे पहलू से सोच रही हूं, अंकल...।” रीमा राठौर बोली।

“दूसरे पहलू से...?”

“हो सकता है अंजली के साथ सचमुच रेप हुआ हो...। उसका सचमुच का अपहरण हुआ हो...।”

दोनों बुजुर्ग बुरी तरह से चौंक उठे।

“य...यह क्या कह रही हो तुम...?” शांतारानी हड़बड़ाते हुए बोली।

“उसने वापिस आकर खुद अपने मुंह से मुझे कहा था कि वो प्रकाश से प्यार करती है...फिर...।” दीनदयाल बोला।

“नेहा ने भी एक स्टिंग ऑपरेशन किया था, अंकल...। जिसके बाद उसके बच्चों को मार डाला गया और हत्यारों ने अपनी तरफ से उसे भी मार

डाला। इससे यही नजर आता है कि कातिल उस स्टिंग ऑपरेशन को सामने नहीं आने देना चाहता था—तभी तो उसने हमला किया।”

“वो बात तो ठीक है; लेकिन अंजली और प्रकाश की मंगनी...।”

“अभी मैं कुछ नहीं कह सकती कि सच्चाई क्या है—बाकी जो भी सच्चाई सामने आयेगी—मैं आपको जरूर बताऊंगी। किस कॉलेज में बढ़ती थी अंजली...।”

“एस०डी० कालेज।”

रीमा राठौर खड़ी हो गई।

¶¶

“खट...खट...खट...।”

दरवाजे पर दस्तक की आवाज सुनकर बेड पर गहरी नींद सो रहे आत्माराम की नींद खुल गई।

सुबह सवा पांच बजे वह अपने बेडरूम में आया था।

हालांकि आधी रात के बाद से वह दूसरे बेडरूम में सोता रहा था; मगर वहां उसे ढंग से नींद नहीं आई थी।

सुबह पांच बजे महेश के उसके बेडरूम से निकलने के बाद ही वह अपने बेडरूम में गया था।

महेश के साथ जो लड़की थी, उसे उसने निकाल दिया था।

अभी वह ढंग से अपनी नींद भी पूरी नहीं कर पाया था कि दरवाजे पर दस्तक पड़ गई।

"कौन है...।" गुस्से से झुंझलाते हुए वह बोला।

"रीमा राठौर आई है, नेता जी—आपसे मिलना चाहती है।"

बाहर से आई आवाज को सुन कर वह उछल कर उठ बैठा—साथ ही उसके कलेजे की धड़कन कुछ बढ़ गई।

इतनी सुबह रीमा राठौर का यहां आना—जरूर कुछ गड़बड़ है...।

वह बेड से उतरा और दरवाजा खोलते हुए बोला—"ड्राइंगरूम में बिठा उसे...।"

बाहर खड़ा नौकर वापिस चला गया।

वह वापिस बेड के करीब आया और बैठ कर गहरी सोचों में डूब गया।

कुछ देर तक वह यूं ही सोचों में डूबा रहा—फिर अपना गाऊन उठा कर पहना और मरे कदमों से बाहर निकल कर वाशबेसिन की तरफ बढ़ गया।

सिंक पर उसने हाथ-मुंह धोया और वहीं लटक रहे तौलिए से मुंह पौंछ कर ड्राइंग-रूम की तरफ बढ़ गया।

ड्राइंगरूम में रीमा राठौर एक सोफे पर बैठी उसका इंतजार कर रही थी।

"आईये आईये, रीमा राठौर जी...।" वह खींसे निपोरते हुए बोला—"मेरे घर के तो भाग्य ही खुल गए...जो आपके पैर यहां पड़े...। लेकिन इतनी

सुबह...खैरियत तो है न...?"

कहते हुए वह सोफे पर बैठ गया।

"रात नेहा आपके यहां आई थी?" रीमा राठौर बोली।

"नेहा...?"

"विशाल कपूर की पत्नी...। हालांकि गेट पर दरबान से मुझे जवाब मिल चुका है...लेकिन मैं आपके मुंह से सुनना चाहती हूं।"

यहां झूठ बोला था रीमा राठौर ने—उसने जानबूझ कर ऐसा कहा था...ताकि वह सच बोले।

इधर न चाहते हुए भी कलेजा धड़क उठा आत्माराम का—मन-ही-मन वह दरबान को गालियां निकालने लगा।

"हां...।" वह फंसे स्वर में बोला वह—"आई थी...।"

"क्या कहने आई थी...?"

"गुस्सा उतारने आई थी मुझ पर...। विशाल की सजा का ठीकरा मेरे सिर फोड़ रही थी। बहुत बुरा भला कहा उसने मुझे...। सो मैंने भी उसे दो-चार गाली निकालीं और उसे भगा दिया।"

"और उसका और उसके बच्चों का खून करवा दिया।"

"खू...न...।" बुरी तरह से उछल पड़ा आत्माराम—"यह क्या कह रही हैं आप...?"

"हालात तो यही कह रहे हैं, नेता जी...। बाकी हकीकत का पता तो नेहा के होश में आने पर ही चलेगा...।"

सुनकर आत्माराम का कलेजा मुंह को आ गया—"क्या मबलब?"

"नेहा को भी आपने उसके बच्चों की तरह मार डाला था...मगर वह बच गई...। अस्पताल में उसका इलाज चल रहा है...।"

"आप मुझ पर इल्जाम लगा रही हैं.....। भला मुझे क्या पड़ी है उसको मारने की?" थूक सटकते हुए बोला वह।

"हालात आप ही की तरफ इशारा कर रहे हैं। हो सकता है मैं गलत सोच रही होऊं—बाकी हकीकत तो अब नेहा ही बतायेगी।"

"मगर...मुझ पर शक करने की कोई वजह भी तो होनी चाहिये न?"

"वजह है...। तभी तो मैं ऐसा बोल रही हूं।"

"क्या वजह है?"

"मैं अंजली की एक सहेली से मिल कर आ रही हूं—वह तो कॉलेज में भी किसी से दोस्ती नहीं करती थी। सिर्फ अपनी पढ़ाई से मतलब रखती थी...। घर से वह कभी अकेली नहीं निकलती थी। फिर उसे प्रकाश से प्यार कैसे हो गया?"

"तो तुम यह कहना चाहती हो कि प्रकाश और अंजली में प्यार नहीं था?"

वह सीधे ‘आप’ से ‘तुम’ आ गया।

“हालात तो यही कह रहे हैं।”

“जब अंजली और प्रकाश खुद अपने मुंह से कबूल कर रहे थे तो फिर तुम कैसे शक कर रही हो?” गम्भीरता से बोला आत्माराम राठौर—“आपको विशाल कपूर के फरार हो जाने की खबर तो लग गई होगी।”

“क्या...?” बुरी तरह से उछलने की जबरदस्त एक्टिंग की आत्माराम ने—“वो फरार हो गया?”

“हां...।”

“हे भगवान...फिर तो मुझे प्रकाश को कहना पड़ेगा कि वो सावधान रहे।”

कुछ नहीं बोली रीमा राठौर—हौले से मुस्कुराई और खड़ी हो गई।

उसके जाते ही आत्माराम के चेहरे पर गम्भीरता उभर आई।

आंखों में सिकुड़न पैदा हो गई...। साथ ही माथे पर पर बल पड़ गए।

"तेरा रुख मेरी तरफ हो गया है...।" वह बड़बड़ाया—"तेरे तेज दिमाग के बारे में जानता हूं मैं...तू जिसके पीछे पड़ जाती है, उसकी जड़ तक पहुंच कर ही दम लेती है। तेरा इलाज करना अब बहुत जरूरी हो गया है। इससे पहले कि तू मेरी हकीकत को दुनिया के सामने लाये...तेरे को मौत की गोद में फैंकना ही पड़ेगा।"

बड़बड़ाते हुए उसके चेहरे पर सख्ती उभर आई थी।

¶¶

विशाल कपूर ने बाइक रीमा राठौर की आलीशान कोठी के ऊंचे और चौड़े गेट से थोड़ी पहले ही रोकी और गेट की तरफ देखा...। उस वक्त गेट बन्द था।

दिन निकल आया था...लेकिन अभी लोगों का आवागमन शुरू नहीं हुआ था।

बस इक्का-दुक्का ही लोग थे, जो टहलने के लिए घरों से निकले थे।

जिस बाइक पर विशाल कपूर बैठा था—वह बाइक उसने अब्दुल खान से हासिल की थी।

उस वक्त उसका जेहरा बदला हुआ था...कपड़े भी बदले हुए थे।

उस वक्त वह खाकी रंग की पेन्ट और खाकी ही शर्ट पहले हुए था। चेहरे पर बड़ी-बड़ी मूंछें थीं—जो उसके आधे गालों को ढक रही थीं...। ऐसी मूंछों में वह कुछ खूंखार किस्म का आदमी नजर आ रहा था।

वह बाइक से उतरा—उसकी साईड में लगी टोकरी के सामने आया और उसे खोल कर उसमें से एक खुरपा निकाल कर टोकरी को वापिस बन्द किया और खुरपा ले गेट के सामने सड़क के किनारे आ गया।

एक बार सड़क के दोनों तरफ नजर मार कर वह सड़क किनारे की कच्ची मिट्टी को खोदने लगा...।

करीब एक फुट गहरा गड्ढा करने के बाद वह उठा और वापिस बाइक की टोकरी के करीब पहुंच गया।

टोकरी का ढक्कन खोल कर उसने खुरपे को उसमें रखा और रिमोट बम निकाल लिया।

बम के एक तरफ लगी छोटी-सी टेप को नाखून से खुरच कर उसने उखाड़ा और फिर बम को उठाये गड्ढे के करीब पहुंच कर झुका और बड़ी एहतियात से उसने बम को गड्ढे में डाल कर ऊपर मिट्टी डाल कर गड्ढे को भर दिया।

तत्पश्चात् वह खड़ा हुआ और मिट्टी को पैरों से इस तरह दबाया कि किसी को संदेह न हो कि वहां गड्ढा किया गया था।

मिट्टी को समतल करके उसने पैरों से ही आस-पास की सूखी मिट्टी को उस पर डाला, फिर एक नजर गेट की तरफ डाल कर अपनी बाइक की तरफ बढ़

गया।

बाइक पर बैठ कर उसने पैर से उसका साईड स्टैण्ड हटाया और किक मार कर उसे स्टार्ट कर दिया।

गियर बदलने के लिए अभी उसने क्लच दबाया ही था कि तभी गेट खुलने लगा।

तुरन्त उसने क्लच छोड़ा और जेब से माचिस की डिब्बी के आकार का रिमोट निकाल लिया—जिस पर लाल रंग का एक ही बटन बगा हुआ था।

वह यही समझा था कि रीमा राठौर बाहर निकल रही है।

तेजी से उसने रिमोट के सेंसर के आगे लगी काली टेप को खुरच कर उखाड़ दिया और दांत भींचे रीमा राठौर के बाहर निकलने का इंतजार करने लगा।

अब उसे क्या मालूम था कि रीमा राठौर आधी रात से ही बाहर थी।

¶¶

गेट मुरारीलाल ने खोला था।

एक पल्ले को पूरा खोल कर उसने दूसरा पल्ला भी खोला और फिर गेट से बाहर निकल कर पहले बाईं तरफ देखा—फिर जैसे ही दाईं तरफ देखा—उसकी नजर विशाल कपूर पर पड़ी।

तुरन्त विशाल कपूर ने मुंह परे कर लिया।

कुछ पल उसे संदेह भरी नजर से देखने के बाद वह वापिस गेट में दाखिल हुआ और भीतर से कुर्सी निकाल कर गेट के बाईं तरफ रखी और उस पर बैठ गया।

विशाल कपूर के होठों से एक गहरी सांस छूट गई। साथ ही चेहरे पर फैली उत्तेजना हल्की-सी निराशा में बदल गई।

वह समझ गया कि भीतर से कोई बाहर नहीं निकलेगा।

उसने रिमोट के सेंसर पर पुनः टेप चिपकाई और उसे वापिस जेब में डाल लिया।

सेंसर पर टेप लगानी जरूरी थी...। अगर वह टेप न लगाता तो सेंसर सक्रिय रहता और बटन दबते ही बम फट जाती। टेप लगने के बाद सेंसर से निकलने वाली किरणें टेप को क्रॉस नहीं कर सकती थीं...। जिससे कि बम फटने के कोई चांस नहीं थे।

उसने उसकी तरफ पीठ करके बैठे मुरारीलाल पर एक नजर मारी और फिर बाइक को स्टार्ट कर उसने क्लच दबाया—बाइक को गियर में डाला और क्लच को छोड़ते हुए वहां से रवाना हो गया।

जैसे ही वो वहां से रवाना हुआ—मुरारीलाल की गर्दन उसकी तरफ घूमी और निगाह उसकी पीठ पर जम गई।

¶¶

"ट र र र न...ट र र र न...।"

कालबेल की कर्कश आवाज पूरे घर में गूंजी तो किचन में नाश्ता बना रही रमाबाई ने गैस कम की और किचन से निकल कर आंगन पार करते हुए मेन

गेट की तरफ बढ़ी।

"कौन है...?" वह साड़ी के पल्लू को पेटीकोट के नाड़े में फंसाते हुए बोली।

"दरवाजा खोलो...।"

बाहर से किसी महिला की आवाज आई...जो उसके लिए बिल्कुल अंजान थी।

कुण्डा कोलकर रमाबाई ने दरवाजा खोला।

सामने रीमा राठौर खड़ी थी।

रमाबाई ने अंजान निगाहों से देखा—"कौन है तुम...? मैं तेरे को पहिचाना नहीं...।" उसकी आवाज में मराठी का पुट साफ नजर आ रहा था।

"पाण्डुरंग से मिलना है मुझे...।" रीमा राठौर बोली।

“पाण्डु नहा रहा—तुम कौन होती...?” वह शक्की निगाहों से उसे देखते हुए बोली।

“रीमा राठौर...। वकील हूं—एक केस के सिलसिले में उससे बात करनी है।”

“ओहो...तुम वकील होती...। आ जा, अन्दर आ।” कहते हुए वह एक तरफ हट गई।

रीमा राठौर भीतर दाखिल हुई।

दरवाजा बन्द करके रमाबाई उसे एक कमरे में ले आई—जहां एक बेड पर दो बच्चे सो रहे थे।

बेड की चादर अस्त-व्यस्त हो रही थी। ऊपर ओढ़ने वाला कम्बल एक तरफ लटक रहा था।

बेड के पास ही दो कुर्सियां पड़ी थीं—जिनमें से एक पर मैले कपड़े पड़े थे तथा दूसरी पर दो स्कूल बैग पड़े थे।

रमाबाई ने बैग उठाकर बेड पर रखे और बोली—"बईठा...पाण्डु नहा के अभी आएला है।"

रीमा राठौर कुर्सी पर बैठ गई।

करीब पांच मिनट बाद पाण्डुरंग लुंगी तथा बनियान पहने भीतर दाखिल हुआ।

उसकी रंगत तनिक फीकी पड़ी हुई थी—चेहरे पर हल्की-सी घबराहट थी।

"नमस्ते...।" उसने सिर हिला कर रीमा राठौर का अभिवादन किया और आगे बढ़ कर कुर्सी से कपड़े उठा कर उन्हें बेड पर फेंक कर स्वयं कुर्सी पर बैठ गया।

"मुझे पहचाना पाण्डुरंग...?" रीमा राठौर बोली।

"हें...हें...।" दांत निकाले पाण्डुरंग ने—"कैसी बात करती हैं आप...। आपको मुम्बई क्या पूरा हिन्दुस्तान जानता है...।"

"शुक्र है पहचाना तुमने...। वर्ना मुझे डर था कि कहीं तुम मुझे पहचानने से ही इन्कार कर दो...।"

रीमा राठौर गहरी सांस छोड़ते हुए बोली।

"हुक्म कीजिये...?"

"रात क्या हुआ—तुम्हें कुछ पता...?"

"रात क्या हुआ...?" हल्के से चौंकते हुए बोला पाण्डुरंग।

"विशाल कपूर जेल से फरार हो गया।"

"क्या...?" बुरी तरह से उछल पड़ा पाण्डुरंग।

"रात किसी ने उसके दोनों बच्चों को मार डाला—उसकी पत्नी अस्पताल में पड़ी है—जिसके बचने की उम्मीद न के बराबर है।"

"हे भगवान...किसने किया यह सब...?"

"तुम बताओ—कौन कर सकता है यह सब?"

सुनकर हड़बड़ा उठा पाण्डुरंग—"म...मैं भला कैसे बता सकता हूं...।"

"आत्माराम के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है?" कहते हुए रीमा राठौर ने उसकी आंखों में झांका।

पाण्डुरंग उससे आंखें चुराने लगा।

"मैं तुमसे पूछ रही हूं, पाण्डुरंग...। जवाब दो।"

पाण्डुरंग ने एक बार रीमा राठौर को देखा—फिर निगाह झुकाते हुए बोला—

"मैं समझ रहा हूं कि आप क्या पूछना चाहती हैं। विशाल कपूर बेगुनाह है। अदालत में मैंने झूठ बोला था...। कामना मुझसे मिली थी—और उसने मुझसे वही कहा था—जो विशाल ने अदालत में बताया था। कामना थाने में इंस्पेक्टर

शम्भूनाथ के साथ ही निकली थी—और फिर उसकी लाश मिलने की खबर आ गई...।"

"ओह! तो विशाल के साथ अन्याय हुआ है।"

"जी हां...। लेकिन अगर आप मुझसे यह कहेंगी कि मैं अदालत में अपना ब्यान बदलूं—वह रीमा राठौर को देखते हुए बोला—"तो यह नामुमकिन

है। मैं अदालत में वही कहूंगा—जो पहले कहा है।" उसने एक गहरी सांस छोड़ी —"लेकिन विशाल का परिवार उजड़ने का बहुत अफसोस है मुझे रीमा राठौर जी, लेकिन मैं अपने परिवार से सबसे ज्यादा प्यार करता हूं। अगर मैंने सच बोला तो शम्भूनाथ का पता नहीं क्या होगा—लेकिन मेरी नौकरी छूटते ही मैं सड़क पर आ जाऊंगा। अपने परिवार की कीमत पर, मैं किसी की जिंदगी नहीं बचा सकता...। फिर चाहे वो मेरा कितना ही करीबी क्यों न हो...।"

"फिर तो तुम पुलिस की नौकरी में कानून की सेवा के लिए नहीं—अपना पेट भरने के लिए आये हो?"

"इस बारे में आप विशाल से पूछ सकती हैं कि मैं कैसा सिपाही हूं...। पूरे थाने में सिर्फ एक मैं ही हूं जो रिश्वत नहीं खाता—मेरे घर की हालत भी यही सच्चाई ब्यान कर रही है।" उसने बाहें फैलाईं—"कानून की सेवा मेरे लिए सर्वोपरि है—लेकिन मेरे परिवार के प्रति भी मेरा फर्ज है। अदालत में सच बोल कर मुझे कानून की तरफ से मैडल तो नहीं मिलेगा—मगर कुछ रोज बाद किसी न किसी बहाने से मुझे सस्पैंड जरूर कर दिया जायेगा...। जिस महकमें में ऊपर से नीचे तक भ्रष्टाचार फैला हो—उसमें ईमानदार के लिए कोई जगह नहीं होती...।"

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी—पहलू बदला और बोली—

"इंस्पेक्टर सिकन्दर ठाकरे को जानते हो?"

"बहुत अच्छी तरह से जानता हूं...। बहुत ईमानदार हैं वो—किसी का भी गलत रौब बर्दाश्त नहीं करते...। अपने फर्ज के प्रति पूरे वफादार हैं वो...।"

"फिर भी वो महकमें में हैं—उसे तो किसी न भी नहीं निकाला आज तक?"

"उनकी पीठ पर आपका हाथ है, मैडम...। किसी ने उनसे दुश्मनी मोल ले कर मरना है क्या...? और फिर वो अफसर हैं—पूरा थाना उनके अण्डर है। और मुम्बई में शायद वही एक थाना ऐसा है—जहां हर एक की सुनवाई होती है।"

"तुम ठीक कह रहे हो...। लेकिन तुमने यह गलत कहा है कि ठाकरे की पीठ पर मेरा हाथ है...। वह जो भी करता है, अपने बलबूते पर करता है...। उसकी ईमानदारी ही उसकी सबसे बड़ी ताकत है। वो सच्चाई को सामने लाने के लिए किसी की भी परवाह नहीं करता...।"

"लेकिन...।"

"मेरी बात अभी पूरी नहीं हुई, पाण्डुरंग...।"

पाण्डुरंग ने होंठ भींच लिए।

"रही बात ठाकरे के अफसर होने की—थाने का इंचार्ज होने की—तो तुम भी अपनी जगह पर एक अधिकारी हो...। प्यादे की ताकत कम नहीं होती...। वह भी राजा को मार सकता है। तुममें और ठाकरे में बस यही फर्क है

कि वो लड़ने से नहीं डरता—जबकि तुम लड़ने से डरते हो। अगर तुम अदालत में सच बोलते और बेईमान अफसर तुम्हें किसी बहाने से सस्पैंड करते तो तुम अदालत में लड़ कर अपना हक हासिल कर सकते थे। लेकिन तुमने ऐसा नहीं किया; क्योंकि तुम लड़ना चाहते ही नहीं—जो हो रहा है, होने दो। तुम्हें बस अपनी नौकरी और अपने परिवार से मतलब है...।"

"आप सच कह रही हैं...।" सिर झुका लिया पाण्डुरंग ने—"मैं इन लफड़ों में नहीं जी सकता...।"

"तुम्हारी इसी बुजदिली ने विशाल का पूरा परिवार तबाह कर डाला...। उसकी तबाही का जिम्मेदार कोई और नहीं...तुम हो...सिर्फ तुम!" रीमा राठौर ने उसके सीने पर अपनी उंगली ठोकी—"तुम उसके बच्चों के खूनी हो। उसे सजा दिलवाने वाले भी तुम्हीं हो...और उसकी पत्नी के भी खूनी तुम ही हो—अगर वह मर गई तो।"

पाण्डुरंग से कुछ बोलते नहीं बना।

उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं...। आंखों में बदहवासी उभर आई।

उसने जोरों से थूक सटकी और रीमा राठौर को देखने लगा।

"तुम जैसे बुजदिलों को पुलिस में होने का हक नहीं मिलना चाहिये...।" रीमा राठौर बोली—"रही बात शम्भूनाथ की...तो उसे मैं देख लूंगी कि वह कितने पानी में है...।"

कह कर वह खड़ी हो गई।

ठीक तभी रमाबाई चाय लिए भीतर प्रविष्ट हुई।

"अरे...तुम तो जा रही हो...अपुन तुम्हारे वास्ते चाय बना के लाई...। चाय पीने का, फिर जाने का...।"

"सॉरी...।" रीमा राठौर बोली—"ऐसे बुजदिल सिपाही के घर का पानी भी न पीयूं !" उसने नफरत भरी निगाहों से पाण्डुरंग को घूरा और झटके से बाहर निकल गई।

रमाबाई हैरानी से रीमा राठौर की पीठ देखती रही। और जब वह मेन गेट खोल कर बाहर निकल गई तो उसने पाण्डुरंग की तरफ गर्दन मोड़ी—

"बड़ी तेज है यह...। क्या बात हो गई...जो वो ऐसी लाल-पीली होकर निकली...।"

पाण्डुरंग ने उससे चाय ली और उसे पीते हुए सारी बात बता दी।

"ओह...!" रमाबाई ने मुंह बिचकाया—"अईसा सिला मिला तेंरे को ईमानदारी का? अरे, तेंरे को रोती थी, कुछ ऊपर से कमा ले...देखा, कइसी लाल-पीली होकर गई वो। अगर तेंरे पास पईसा होता तो ऐसा न करती वो...।"

"चुप रहो...।" तनिक गुस्से से बोला पाण्डुरंग।

"मैं तो यह बोली—तुमने गलत क्या किया—कुछ भी तो नहीं...। खामखां के लफड़े में क्या फंसना। अपुन तो अपना घर देखने का...अपुन के बच्चों को देखने का...।"

"अब कान मत खा.....बच्चों को उठा और तैयार कर स्कूल के लिए...।"

झुंझलाते हुए बोला वह।

रमाबाई ने सिर हिलाया और बेड पर सो रहे बच्चों की तरफ बढ़ गई।

¶¶

आत्माराम के बेडरूम में आत्माराम, निशांत और प्रकाश बैठे हुए थे।

तीनों के चेहरों पर गम्भीरता थी।

अभी-अभी जाकिर का फोन आया था आत्माराम को—जिसमें उसने कहा था कि नेहा सचमुच ही अस्पताल में है और उसका ऑपरेशन हो रहा है।

रीमा राठौर के जाने के थोड़ी देर बाद ही आत्माराम ले जाकिर को फोन करके कहा था कि वह पता करे कि रीमा राठौर ने उसे नेहा के जिन्दा होने के बारे में जो बताया था, वो सच है कि नहीं...।

उसके बाद उसने प्रकाश और निशांत को उठा कर अपने कमरे में बुलाया और उन्हें सारी बात बता दी।

और अब जाकिर का फोन आ गया।

"यह तो बहुत बुरा हुआ, पापा...।" निशांत गम्भीरता से बोला—"अगर नेहा बच गई तो हममें से कोई भी नहीं बचेगा—होश में आते ही वह सारी बात पुलिस को बता देगी...। और वहां ठाकरे बैठा है—जो बड़ा ही लीचड़ किस्म का पुलिसिया है।"

"मैं तो यह कहता हूं अंकल कि नेहा के होश में आने से पहले ही उसको खत्म कर दिया जाये। न वह होश में आयेगी, न ही वह पुलिस को यह बता पायेगी कि उसके बच्चों को और उसे हमने मारा है...।"

"प्रकाश ठीक कह रहा है, पापा—नेहा की मौत ही हमारी जिन्दगी है।" निशांत बोला।

गहरी सांस छोड़ी आत्माराम ने और सिर हिलाते हुए बोला—"मैं भी यही सोच रहा हूं...।"

कहकर उसने मोबाइल को अपने सामने किया और जाकिर का नम्बर मिलाने लगा।

¶¶

"डिंग...डांग।"

ठीक आठ बजे कालबेल बजी।

बेड पर गहरी नींद सो रहे महेश की आंखें नहीं खुलीं।

वह मुंह फाड़े लम्बे-लम्बे खर्राटे भरता रहा।

नींद खुलती भी कैसे उसकी—सुबह पांच बजे तक का जो वक्त उसे मिला था, उसमें उसने पलक भी नहीं झपकी थी। सारी रात वह उस युवती से

जूझता रहा था—जो उसे आत्माराम से सुबह पांच बजे तक ईनाम के रूप में मिली थी।

युवती ने भी उससे पूरी मस्ती की थी—और उसके द्वारा बरसाये खजाने से अपनी झोली ऐसे भर ली थी कि सुबह जब महेश आत्माराम की कोठी से निकला था तो वह नींबू की तरह निचुड़ा हुआ था। और रिचार्ज होने के लिए उसे भरपूर नींद की जरूरत थी।

ऐसे में एक बार बेल बजने पर उसकी नींद कहां टूटनी थी!

"डिंग...डांग।"

कालबेल पुनः बजी।

मगर इस बार भी उसकी नींद नहीं टूटी।

चौथी बार बेल बजने पर उसके खर्राटे बंद हुए और जिस्म में हरकत हुई और पांचवीं बार घण्टी बजने पर उसकी आंखें खुलीं।

जबरदस्ती आंखों को खोलते हुए बेड से उतरा और झूमते हुए दरवाजे की तरफ बढ़ा।

उसके मेन डोर तक पहुंचते-पहुंचते छठी बार घण्टी बजी, साथ ही दरवाजे पर थपथपाहट भी हुई।

"आ रहा हूं भाई...आ रहा हूं...।"

नींद में डूबे हुए स्वर में वह बोला—और आगे बढ़ कर उसने सिटकनी गिराई और जम्हाई लेते हुए जैसे ही दरवाजा खोला—

रिवॉल्वर की नाल उसके खुले मुंह में जा घुसी।

बुरी तरह बौखला उठा वह—साथ ही निगाहें सामने खड़े बड़ी-बड़ी मूंछों वाले व्यक्ति पर जा टिकीं।

पहले तो उसने उसे नहीं पहचाना; मगर जब पहचाना तो कलेजा मुंह को आ गया।

दिल की धड़कनों ने जैसे साथ छोड़ दिया।

आंखें फट पड़ीं।

"पीछे हट...।" वह बड़ी मूंछों वाला जो कि विशाल कपूर था, गुर्राया—और नाल को उसके हलक में और अन्दर घुसेड़ दिया।

बौखलाये हुए वह पीछे हटा तो विशाल कपूर भीतर दाखिल हो गया।

पैर से उसने दरवाजा बन्द किया, बायां हाथ पीछे कर ऊपर उठाया और सिटकनी टटोल कर चौखट में लगी सॉकेट में फंसा कर लॉक कर दी।

"बड़ी गहरी नींद सो रहा था?" विशाल कपूर बोला।

महेश भला क्या जवाब देता—उसके हलक में तो रिवॉल्वर की नाल घुसी हुई थी।

यूं भी वह जवाब देने लायक था ही नहीं।

विशाल कपूर ने उसके मुंह से रिवॉल्वर खींची और क्रूरता से मुस्कुराया —

“लगता है रात भर काफी भाग-दौड़ करता रहा तू। यह साला रिपोर्टर का पेश ही ऐसा है—उसमें चैन है ही नहीं।”

महेश कपूर ने बड़ी मुश्किल से थूक सटकी और बोला—“तुम ज...जेल से कैसे निकले...?”

“वो भी बताऊंगा। पहले जरा वो स्टिंग ऑपरेशन तो देख लूं—जो नेहा ने तेंरे को दिखाया था—चल तेंरे टी०वी० पर देखते हैं।”

कहकर उसने महेश के सीने पर हाथ रख उसे पीछे धकेला।

महेश पीछे को लड़खड़ाया, फिर सम्भल कर बुरी तरह से भर्राये स्वर बोला—“व...वो पैनड्राइव गुम हो गया...।”

“और आत्माराम को मिल गया?” फुंफकार उठा विशाल कपूर—“मैं जानता था हरामजादे—तू ऐसा ही कुछ कहेगा...।”

"न...नहीं मैं...मैं गलत नहीं कह रहा हूं। म...मैं सच बोल रहा हूं। म...मैं सच बोल रहा हूं...।

"तेरा चेहरा ही तेरा झूठ बता रहा है, हरामजादे...।" आंखों से चिंगारियां छोड़ते हुए गुर्राया विशाल कपूर—"कितना बड़ा जूता मारा आत्माराम ने तेरे को?"

"म-मेरा विश्वास करो, दोस्त...मैं...।"

"मैं यह पूछ रहा हूं कितना पैसा मिला आत्माराम से?"

फुंफकारते हुए विशाल कपूर ने अंगूठे से रिवॉल्वर का कुत्ता पीछे खींचा तो महेश की रूह कांप उठी।

"न...हीं...।" चीख उठा वह—"ग-गोली मत चलाना...म...मैं बताता हूं...।"

"जल्दी भौंक कुत्ते...।"

"पा-पांच लाख।"

"और भी कुछ मिला?"

"व...वो...एक ल..ड़की...।"

"तो एक लड़की और पांच लाख की खातिर तूने अपने पेशे से गद्दारी करने के साथ-साथ मेरा घर बर्बाद कर दिया...?" विशाल कपूर की आंखें भर आईं—"मैं तेरे को दस लाख देता हूं...एक की जगह चार लड़कियां देता हूं...तू मेरी नेहा को...मेरे बच्चों को जिन्दा कर दे...।"

महेश के सिर पर जैसे कमरे का लेंटर आ गिरा।

पैरों तले से घरती खिसक गई।

"य...यह क्या कह रहा है तू...।" वह जैसे कुएं में खड़ा बोल रहा था।

"मेरे बीवी-बच्चे मर गए...उन्हें राक्षसों ने मार डाला...और उन राक्षसों में एक तू भी है, हरामजादे! अपनी बीवी-बच्चों की मौत की खबर सुन कर ही मैं समझ गया कि हो न हो तूने गद्दारी की है। वर्ना वो शैतान मेरी नेहा को...मेरी गुड़िया को...मेरे मुन्ना को क्यों मारते...। उन्हें स्टिंग ऑपरेशन का पता लगा...तभी तो उन्होंने उन्हें मारा और पता तेरे अलावा और किसी से चल ही नहीं सकता था।"

सहसा ही महेश विशाल कपूर के आगे घुटनों के बल बैठ गया और हाथ जोड़ते हुए भर्राये स्वर में बोला—

"म...मुझे माफ कर दे, विशू...मुझे यह अंदाजा कभी नहीं था कि वह इतना बड़ा कदम उठायेगा...त...तू मुझे एक मौका दे—मैं वादा करता हूं कि अब मैं आत्माराम का स्टिंग ऑपरेशन करके उसे सजा दिलवाऊंगा।"

"धांय...।"

गोली रिवॉल्वर की नाल से निकली और सीधा महेश के माथे में जा घुसी।

वह बिना चीख मारे वहीं पीछे को पलटा और फर्श पर पीठ के बल जा गिरा।

अगली सांस भी नहीं ले पाया और नर्क की तरफ रवाना हो गया।

विशाल कपूर ने नफरत से उसे ठोकर मारी और उस पर थूक दिया।

"आक थू! कुत्ता...दगाबाज...।"

गुस्से से बिफरते हुए उसने पुनः लाश को ठोकर मारी तो लाश करवट में लुढ़क कर पुनः सीधी हो गई।

उसने रिवॉल्वर जेब में डाली और उसकी लाश को फांदते हुए उसके बेडरूम में घुस गया।

शीघ्र ही वह वापिस लौटा तो उसने वह बैग उठा रखा था जो महेश आत्माराम से लेकर आया था।

"इन्हीं पैसों के लिए तूने मेरे बीवी-बच्चों को मारा था न...अब इन्हें अपने साथ ले जा...।"

कहते हुए उसने बैग उस पर पलट दिया।

नोट हवा में तैरते हुए लाश पर गिरने लगे और देखते ही देखते लाश पर नोटों का कफन बिछ गया।

विशाल कपूर ने बैग परे फेंका और मुड़ कर मेन गेट की तरफ बढ़ गया।

मकान से निकल कर वह कुछ दूर खड़ी अपनी बाइक की तरफ बढ़ा और देखते-ही-देखते वह बाइक पर सवार हो वहां से रवाना हो गया।

दस मिनट बाद ही उसने बाइक सड़क किनारे एक विशाल वृक्ष के नीचे खड़ी की और जेब से मोबाइल निकाल कर उसे ऑन किया और रीमा राठौर का नम्बर मिलाने लगा।

¶¶

उस वक्त रीमा राठौर अपनी कार ड्राईव करती हुई अस्पताल की तरफ जा रही थी—जब उसके डैशबोर्ड पर रखे मोबाइल में से धुन निकलने लगी—

"सारे जहां से अच्छा...हिन्दोस्तां हमारा...।"

रीमा राठौर ने कार सड़क किनारे खड़ी की और डैशबोर्ड से मोबाइल उठा कर उसकी स्क्रीन पर नजर मारी।

कोई अंजान नम्बर था स्क्रीन पर...।

हरा बटन दबाते हुए उसने मोबाइल कान से लगाया।

"हैलो...।"

"अपनी सफलता पर बहुत खुश हो रही हो तुम?"

दूसरी तरफ से विशाल कपूर की आवाज सुनकर रीमा राठौर बुरी तरह से चौंकी।

"विशा...ल...।"

"विशाल नहीं मौत बोल! विशाल तो तभी मर गया था जब उसके बेगुनाह होने के बाद भी तूने उसे सजा दिलवा दी। और मरा हुआ विशाल मौत तब बना...जब उसका पूरा परिवार खत्म हो गया। अब तो सिर्फ और सिर्फ मौत हूं—जो अपने दुश्मनों को लील जायेगी। बोहनी तो कर ली है मैंने...।"

"क्या मतलब?" बुरी तरह से घबरा उठी रीमा राठौर।

"महेश नाम के उस प्रेस रिपोर्टर की लाश उसके घर में ही पड़ी है...। उसी की वजह से मेरी नेहा मरी—मेरे बच्चे मरे। और अब तेरी बारी है...।"

रीमा राठौर गम्भीर हो उठी।

"नेहा अभी जिन्दा है, विशाल...।" वह बोली।

"मैं जानता हूं....तू उस चालाक लोमड़ी की तरह है जो शिकार करने के लिए कोई भी जुगाड़ भिड़ा सकती है।"

"नहीं विशाल—नेहा सचमुच जिन्दा है...। अच्छा....यकीन नहीं आता तो अपनी साली आशा से पूछ लो। उसने तुम्हें फोन पर बताया था कि बच्चों के साथ-साथ नेहा भी मर गई है; लेकिन तब वह बेहोश थी। इस वक्त वह अस्पताल में जिन्दगी और मौत के बीच झूल रही है...।"

"फिर भी तेरी मौत तो निश्चित है—सच का चोला पहन कर तूने झूठ का साथ दिया—तेरी ही वजह से मैं जेल में गया—मेरे बच्चे...।"

"मैं मानती हूं कि मेरे से बहुत बड़ी गलती हुई...।" रीमा राठौर उधर से आती आवाज को काटते हुए बोली—"आत्माराम ने इतनी पुख्ता चाल चली थी कि मैं भी उसमें फंस गई; मगर अब मैं सच्चाई जान चुकी हूं। तुम सचमुच निर्दोष थे; मगर अब महेश का कत्ल करके तुमने बहुत बड़ा गुनाह कर दिया है। फिर भी मैं तुमसे यही कहूंगी कि खुद को कानून के हवाले कर दो—मैं वादा करती हूं कि अदालत में तुम्हें कम से कम सजा दिलवाऊंगी।"

"मेरी चिंता छोड़ और अपनी चिंता कर। मैं तो अब सब कुछ खत्म करके ही दम लूंगा...।"

"तुम बहुत गलत कर रहे हो, विशाल...।"

"मैंने कहा न—मेरी नहीं अपनी सोच—कैसे बचेगी तू मेरे कहर से...।"

दूसरी तरह से गुर्राहट उभरी और सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

रीमा राठौर के होठों से गहरी सांस छूट गई।

उसने मोबाइल कान से हटाया और ठाकरे का नम्बर मिला कर पुनः कान से लगा लिया।

¶¶

"डिंग-डिंग-डिंग"

म्यूजिक सुनते ही सिकन्दर ठाकरे ने जेब से मोबाइल निकाला, एक नजर स्क्रीन पर नजर आते नम्बर पर मारी—फिर उसे कान से लगाते हुए बोला—"हां बोलो रीमा...।"

"नेहा का क्या हाल है?"

"अभी कुछ नहीं कहा जा सकता। डॉक्टरों ने ऑपरेशन कर दिया है। अब उसे खून चढ़ रहा है। अगले चौबीस घण्टे उस पर बहुत भारी हैं—डॉक्टर ने कहा है कि चौबीस घण्टे के बाद कुछ कहा जा सकेगा।"

"ओह!"

"तुम कहां तक पहुंचीं?"

"विशाल बेगुनाह था।"

"ओह! मैंने कहा भी था कि मुझे ऐसा लग रहा है कि उसे गलत सजा हुई है...।"

"मगर अब वह गुनहगार बन चुका है।"

"क्या मतलब?" चौंका ठाकरे।

"महेश नाम के रिपोर्टर का खून कर दिया है उसने।"

"क्या?" बुरी तरह से उछल पड़ा ठाकरे।

"अभी-अभी फोन आया था उसका—इंतकाम की आग में बुरी तरह से जल रहा है वह...। मुझे डर है कि कहीं यह आग उसी को खत्म न कर दे। आत्माराम बहुत ही खतरनाक आदमी है। तुम उसके चारों तरफ ऐसा पहरा बिठा दो कि वह विशाल तक पहुंचे तो वो सीधा पुलिस के हत्थे चढ़े...।"

"मैं अभी थाने फोन करता हूं।"

"और नेहा की सुरक्षा का भी इंतजाम करो। आत्माराम उसे खत्म करने की कोशिश जरूर करेगा; क्योंकि नेहा ही एक ऐसी शख्स है जो आत्माराम को उसके किए की सजा दिला सकती है...।"

"तुम कहां हो अब...?"

"मैं आ तो तुम्हारे पास रही थी; मगर अब वापिस पाण्डुरंग के पास जा रही हूं—उसे चेताने के लिए कि विशाल उसके पास भी पहुंच सकता है...।"

"ठीक है। मैं अभी थाने फोन करता हूं।"

कह कर ठाकरे ने मोबाइल कान से हटाया और थाने फोन करने लगा।

¶¶

रीमा राठौर खार थाने के एस○एच○ओ○ के ऑफिस में प्रविष्ट हुई।

बाईं तरफ अपनी टेबल के बीछे कुर्सी पर शम्भूनाथ टेबल पर टांगें फैलाये ऐसे बैठा था जैसे वह अपने ऑफिस में नहीं बल्कि घर में बैठा हो।

रीमा राठौर को देख कर उसके पोज में जरा भी परिवर्तन नहीं आया। हां—होठों पर मुस्कान जरूर उभर आई थी उसके।

"आइये रीमा राठौर जी...।" वह मुस्कुराते हुए बोला—"आज इधर का रास्ता कैसे भूल गयीं?"

रीमा राठौर ने एक कुर्सी खींची और उस पर बैठते हुए सख्ती से बोली—

"यहां इंसाफ मांगने आये लोगों से भी तुम ऐसे ही पेश आते होगे, इंस्पेक्टर शम्भूनाथ?"

शम्भूनाथ हौले से हंसा और टांगें उठा कर नीचे करते हुए सीधा बैठ गया।

“ऐसी बात नहीं है, रीमा राठौर जी...। थका हुआ था...इसीलिए थोड़ा आराम कर रहा था। आप हुक्म कीजिये—कैसे आना हुआ?”

“पाण्डुरंग से मिलना है मुझे...।” रीमा राठौर गम्भीरता से बोली—“उसके घर से आ रही हूं मैं—पता चला कि वो थाने में है।”

“हां...आया तो था, लेकिन वापिस घर चला गया है।”

“क्यों...?” हल्के से चौंकी रीमा राठौर।

“उसकी पत्नी का फोन आया था। उसके छोटे बेटे की तबीयत अचानक खराब हो गई है। उसे डॉक्टर के पास ले जाने के लिए बुलाया था उसकी पत्नी ने...।”

“कब गया वो?”

"बीस-पच्चीस मिनट तो हो गए होंगे। अब तक वो घर पहुंच गया होगा।"

"उसे फोन करो...। मुझे उससे बात करनी है—अभी...।"

शम्भूनाथ के चेहरे पर उलझन उभरी—"मगर बात क्या है?"

"फोन पर सुन लेना—फिलहाल तो बात कराओ उससे।"

शम्भूनाथ ने रिसीवर उठा कर पाण्डुरंग के मोबाइल का नम्बर मिलाया और कुछ पलों बाद गहरी सांस छोड़ते हुए रिसीवर वापिस क्रेडिल पर रखते हुए बोला—"स्विच आफ है उसका मोबाइल...।"

"उसके लैण्डलाईन पर नम्बर मिलाओ।"

"लैण्डलाईन नहीं है। उसकी बीवी के पास अपना मोबाइल है—जिसका मुझे नम्बर नहीं पता।"

"ओह! तो वापस उसके घर जाना होगा मुझे...।" वह बड़बड़ाई।

“लेकिन बात क्या है—आप इतनी चिंतित क्यों हैं?”

“महेश को जानते हो?” कुछ सोच कर बोली रीमा राठौर।

“महेश?”

“आर न्यूज का रिपोर्टर...।”

“हां जानता हूं—क्यों?”

“विशाल कपूर ने उसका खून कर दिया है।”

“क्या?” बुरी तरह से उछल पड़ा शम्भूनाथ—“यह...यह क्या कह रही हैं आप...।”

“खुद विशाल कपूर ने फोन करके बताया है मुझे...।”

“लेकिन...वो तो उसका कुलीग था—फिर उसे क्यों मारा उसने?”

“वो तो मुझे बाद में पता चलेगा, लेकिन अगर उसने पाण्डुरंग को मारा तो उसकी वजह का पता होगा तुझे...।”

शम्भूनाथ के चेहरे का रंग तेजी से बदला।

“वो...वो पाण्डुरंग को मारेगा?”

“हालात तो यही बता रहे हैं कि वह पाण्डुरंग का शिकार करने की कोशिश करेगा।”

“क्यों...?”

“क्योंकि अदालत में उसने झूठ बोला था।”

बुरी तरह से बौखला उठा शम्भूनाथ—साथ ही उसके माथे पर पसीने की बूंदें चमकने लगी थीं।

“उसको अदालत में दी गई पाण्डुरंग की गवाही का पता था। और जब उसने पाण्डुरंग की वापिसी पर उससे पूछा था तो पाण्डुरंग ने उससे यह कहा था

कि विशाल कपूर खामखां ही उसे घसीटने की कोशिश कर रहा था। तब उसने ऊपर से तो उसे कुछ नहीं कहा था; मगर भीतर से वह पाण्डुरंग से सावधान हो गया था और उसने उसकी ड्यूटी अपने दफ्तर के बाहर की बजाये मुन्शी के कमरे में लगा दी थी।"

"क्या कह रही हैं आप...?" वह थोड़ा तैश में आते हुए बोला—"आप ऐसा कह कर मुझ पर इल्जाम लगा रही हैं।"

रीमा राठौर खड़ी हो गई।

"पाण्डुरंग ने सच बता दिया है मुझे...।" वह उसे घूरते हुए बोली—"और खातिर जमा रखो—बहुत जल्द मैं मय सुबूत के यह बात सामने ला दूंगी कि कामना का कत्ल किसने किया था...।"

कहकर वह झटके से मुड़ी और लहराते हुए बाहर निकल गई।

शम्भूनाथ आंखें और मुंह फाड़े दरवाजे को देखता रहा।

उसके कलेजे की धड़कनों ने जैसे उसका साथ ही छोड़ दिया था।

सच्चाई रीमा राठौर ने उसके मुंह पर दे मारी थी और उसने एक नये अंदाज में कह भी दिया था कि अब वह उसे नहीं छोड़ेगी।

ऐसे में उसकी हालत का अंदाजा सहज ही लगाया जा सकता था।

¶¶

बुरी तरह से घबराया हुआ पाण्डुरंग अपने घर के दरवाजे के सामने रुका और दरवाजा खटखटाया।

"खट...खट...खट...।"

दरवाजे पर हाथ का दबाव पड़ते ही दरवाजा थोड़ा-सा भीतर की तरफ खिसका तो वह उसको धकेलते हुए भीतर प्रवेश कर गया।

अच्छा भला छोड़ कर तो गया था वह अपने बच्चों को—फिर पीछे ऐसा क्या हो गया कि उसके छोटे बेटे की तबीयत इतनी बिगड़ गई कि रमाबाई को उसे फोन करके बुलाना पड़ा।

"रमा...रमा...।" वह अपनी पत्नी को आवाज देते हुए जैसे ही कमरे में प्रविष्ट हुआ—उसका कलेजा उछल कर उसके हलक में जा फंसा।

सामने बेड पर रमाबाई ऐसे बैठी हुई थी जैसे वह इंसान न होकर कोई पुतला हो। खौफ से उसका चेहरा पीला पड़ा हुआ था।

और बेड के करीब ही एक कुर्सी पर बैठा हुआ था विशाल कपूर...। जिसके हाथ में रिवॉल्वर थी और रिवॉल्वर का रुख उसी की तरफ था।

इस वक्त उसके चेहरे पर भारी भरकम मूंछें नहीं थीं।

"वि...शू...त...तु...म...।" उसके मुंह से कांपता स्वर निकला।

"आ पाण्डु...मैं तेरा ही इंतजार कर रहा था।" जहर भरे स्वर में बोला विशाल कपूर—"उधर अपनी बीवी के पास बैठ जा।"

"तु...म मेरी बात तो सुनो, विशू...।"

“पहले बैठ—फिर बात करूंगा भी और सुनूंगा भी...।” गुर्राया विशाल कपूर।

पाण्डुरंग हिचकिचाया।

“बैठ...।” कोबरा की तरह फुंफकार उठा विशाल कपूर।

पाण्डुरंग का पूरा जिस्म उसकी फुंफकार सुन कर थर्रा उठा।

जोरों से थूक सटकते हुए वह बेड पर चढ़ा और अपनी पत्नी के करीब बैठ गया।

“कत्ल की क्या सजा होती है?” विशाल कपूर रिवॉल्वर का रुख उसकी तरफ करते हुए गुर्राया।

बुरी तरह से हड़बड़ा उठा पाण्डुरंग।

“य-यह क्या कह रहे हो...?”

"तेरे झूठ के कारण अदालत ने मुझे सजा सुनाई और रात को ही मेरे बच्चों का कत्ल हो गया—मेरी बीवी अस्पताल में पड़ी मौत से जूझ रही है...।"

पाण्डुरंग के गले की घण्टी जोरों से उछल कर गिरी।

"अगर तू सच बोलता तो मेरा परिवार तबाह न होता। तेरे झूठ के कारण ही मेरे बच्चे मरे हैं—उनका खूनी सिर्फ आत्माराम नहीं, तू भी है और इतना तो मैं भी जानता हूं कि कत्ल की सजा मौत होती है...।"

पाण्डुरंग के गले की घण्टी पुनः उछली।

"म...मैं मानता हूं विशू कि म...मेरे से बहुत बड़ा गुनाह हुआ है; ल..लेकिन अ...अगर मैं सच बोलता तो मैं सस्पैंड हो जाता...मैं सड़क पर आ जाता...।"

"तो सिर्फ अंदेशे के डर से तूने झूठ बोला...। पक्का पता नहीं था कि ऐसा ही होगा।"

"त...तुम तो जानते ही हो कि शम्भूनाथ कैसा है...वो...।"

"तेरे बहाने मेरे सामने नहीं चलेंगे, पाण्डुरंग।" गुर्रा उठा विशाल कपूर—एक झटके से खड़ा हो गया—"अगर तू सच बोलता तो शम्भूनाथ इस वक्त जेल में होता, लेकिन तूने सिर्फ एक काल्पनिक डर की वजह से मेरा सब कुछ तबाह कर दिया। तू पुलिस में तो क्या इस दुनिया में भी रहने के लायक नहीं...।"

"न...नहीं विशू...म...मुझे माफ कर दो...मैं...मैं वादा करता हूं...कि आज ही पूरी दुनिया को सच बता दूंगा।"

"विशू को अपनी जिन्दगी से अब कोई प्यार नहीं रहा, पाण्डुरंग—अब तो बस इसलिए जी रहा हूं कि उन सबसे बदला ले सकूं जिनकी वजह से मेरा सब कुछ तबाह हुआ—और मेरी तबाही में तेरा भी बहुत बड़ा रोल है...।"

कहते हुए विशाल कपूर ने रिवॉल्वर का रुख उसकी तरफ कर दिया।

"न...ही विशू...और कुछ नहीं तो मेरे बीवी-बच्चों पर तरस खाओ...।" रोने लगा पड़ा पाण्डुरंग।

मगर विशाल कपूर ने उसकी गिड़गिड़ाहट पर कोई ध्यान नहीं दिया और ट्रिगर दबा दिया।

"धांय...।"

गोली सीधा पाण्डुरंग के सीने में जा घुसी।

बुरी तरह से चीखते हुए पाण्डुरंग बैठे-बैठे ही पीछे को लुढ़क गया।

रमाबाई को काटो तो खून नहीं।

वह आंखें फाड़े अपने पति की लाश को देखने लगी। उसका मुंह चीखने के लिए खुला तो हुआ था; मगर चीख उसके हलक से निकल ही नहीं रही थी।

एक पल में ही जीता जागता उसका पति लाश में तब्दील हो गया।

एक ही पल में वह सुहागिन से विधवा हो गई।

कई मिनटों तक वह यूं ही आंखें फाड़े पाण्डुरंग की लाश को देखती रही। फिर एकाएक ही उसके मुंह से इतनी तेज चीख निकली कि सिर्फ चीख से पूरा मौहल्ला थर्रा उठा।

"न...हीं....।"

मगर तब तक विशाल कपूर वहां से जा चुका था।

और करीब बीस मिनट बाद जब रीमा राठौर वहां पहुंची तो वहां हाहाकार मजा हुआ था।

पूरा मौहल्ला पाण्डुरंग के घर इकट्ठा हो रहा था।

रीमा राठौर के होठों से एक गहरी सांस निकली और चेहरे पर निराशा फैल गई।

पाण्डुरंग को बचाने की उसकी भागदौड़ व्यर्थ गई थी।

विशाल कपूर के खाते में एक और गुनाह जुड़ गया था— एक और खून कर डाला था उसने।

¶¶

रीमा राठौर अस्पताल पहुंची तो उसे अस्पताल के शीशे के गेट पर ही सब-इंस्पेक्टर मिला।

“ठाकरे कहां है?” उसने पूछा।

“साहब भीतर डॉक्टर के ऑफिस में बैठे हैं।” सब-इंस्पेक्टर बोला।

“विशाल कपूर के घर से कुछ हासिल हुआ?”

“नहीं मैडम। मैंने अच्छी तरह से तलाशी ली थी; मगर कोई भी सी○डी○, कैसेट या पैनड्राईव नहीं मिला, जिससे कि कुछ हासिल हो सके...।”

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी और उसके करीब से होते हुए भीतर प्रवेश कर गई।

लम्बे गलियारे में चलते हुए वह बाईं तरफ के पहले मोड़ पर मुड़ी तो सामने एक बड़े हॉल में उसे बैंचों पर कई लोग बैठे नजर आए—जिनमें कई मरीज थे—तो कई उनके रिश्तेदार जो उन्हें वहां लेकर आये थे।

बैंचों के बीच से निकलते हुए वह हॉल को पार कर आगे बने गलियारे में पहुंची और बाईं तरफ के तीसरे कमरे में प्रवेश कर गई।

कमरे में सामने डॉक्टर की टेबल तथा उसके पीछे खाली कुर्सी थी।

डॉक्टर कमरे में नहीं था, मगर ठाकरे था, जो बाईं तरफ एक लम्बे बैंच पर अधलेटी अवस्था में बैठा था।

रीमा राठौर को देख कर ठाकरे सीधा होकर बैठ गया।

रीमा राठौर उसके करीब पहुंची और बैंच पर बैठ कर पीछे को खिसकी और दीवार से पीठ लगा ली।

“डॉक्टर कहां है?” पूछा उसने।

“नेहा को देखने गया है...। अभी आ जायेगा।”

ठाकरे गम्भीरता से बोला।

“नेहा की हिफाजत का बंदोबस्त कर दिया है न?”

“हां...नेहा के वार्ड के बाहर दो हथियारबंद सिपाही तैनात कर रखे हैं। जिन्हें मैंने कह रखा है कि वार्ड में जाने वाले डॉक्टर की पूरी तसल्ली करके ही उसे भीतर जाने की इजाजत मिले; क्योंकि आत्माराम के गुलाम डॉक्टर के वेश में भी यहां पहुंच सकते हैं। गेट पर मैंने सब-इंस्पेक्टर को तैनात कर रखा है—वह किसी भी गलत आदमी को पढ़ने की महारत रखता है। इसके अलावा सादी वर्दी में मैंने पन्द्रह सिपाही पूरे अस्पताल में फैला रखे हैं। जो किसी भी संदिग्ध पर पूरी नजर रखेंगे।”

रीमा राठौर कुछ नहीं बोली, बस सिर हिला दिया।

“पाण्डुरंग को सावधान कर दिया तुमने?” पूछा ठाकरे ने।

रीमा राठौर के होठों से गहरी निराशा भरी सांस निकली।

"विशाल कपूर ने उसे मुझसे मिलने का मौका ही नहीं दिया।"

बुरी तरह से उछल पड़ा ठाकरे—"यह...यह क्या कह रही हो तुम...।"

उत्तर में रीमा राठौर ने उसे सारी बात बताई तो ठाकरे के चेहरे पर चिंता उभर आई।

"बहुत गलत कर रहा है, विशाल कपूर...। अपने गुनाहों में इजाफा करके वह हर पल मौत के करीब बढ़ रहा है।"

रीमा राठौर ने कुछ नहीं कहा—बस गहरी सांस छोड़ कर रह गई। फिर उसने पूछा—

"आत्माराम के घर की निगरानी शुरू करवा दी?"

"हां...दो सिपाही वहां तैनात कर दिए हैं मैंने—जो हर आने-जाने वाले पर नजर रखेंगे...। विशाल कपूर की पहचान है उन्हें और अगर विशाल कपूर ने

मेकअप भी किया होगा तो भी उसे पहचान लेंगे। जैसे ही वह वहां पहुंचेगा, वो आत्माराम को सूचित करेंगे...फिर मुझे फोन करेंगे।"

रीमा राठौर ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया—फिर बोली—

"विशाल कपूर ने पहले महेश का खून किया—फिर पाण्डुरंग का—अब उसके निशाने पर कौन-कौन रह गया है?"

"एक तो आत्माराम, दूसरे उसका बेटा, और तीसरा भतीजा...।" ठाकरे बोला।

"मैं भी हूं उसके निशाने पर—उसने मुझे भी खत्म करने की कसम खा रखी है।" कहते हुए रीमा राठौर मुस्कराई।

"बात को हंस कर मत टालो...।" गम्भीर होते हुए बोला ठाकरे—"इस वक्त विशाल कपूर जिस दौर से गुजर रहा है, उसमें कुछ भी कर सकता है वो...।"

रीमा राठौर कुछ नहीं बोली—हां, उसकी मुस्कान थोड़ी तेज जरूर हो गई थी।

¶¶

डॉक्टर से नेहा का हालचाल जानकर रीमा राठौर अस्पताल से निकली और अपनी कार में सवार हो अपनी कोठी की तरफ रवाना हो गई।

उसका इरादा फ्रैश होकर विशाल कपूर के बारे में पूरे इत्मिनान से सोचने का था।

मगर उसे क्या पता था कि विशाल कपूर मौत बना उसका वहां पर इंतजार कर रहा था।

ठीक डेढ़ बजे रीमा राठौर अपनी कोठी के सामने पहुंची तो उसे कोठी का गेट बन्द नजर आया।

वह जानती थी कि एक से दो बजे तक मुरारी गेट बन्द रखता है। उस एक घन्टे में वह खाने के साथ-साथ थोड़ा सुस्ताता है और अगर मौका मिले तो अपनी पत्नी पार्वती के रात मिले वक्त का भरपूर फायदा भी उठाता है।

उसे पता था कि इस वक्त गेट केवल भिड़ा हुआ है और उसका कुण्डा लगा है। भीतर से कुण्डा नहीं लगा हुआ।

कार ऐन वहां उस जगह पर खड़ी थी जहां विशाल कपूर ने बम दबाया था।

उधर थोड़ी दूरी पर एक गली के मोड़ पर विशाल कपूर की निगाह कार पर टिकी हुई थी।

रीमा राठौर की कार उसके पास ही हो कर गुजरी थी—सो उसने उसे कार ड्राईव करते देख लिया था। कार जैसे ही रुकी—उसने फौरन रिमोट निकाला और उसका बटन दबा दिया।

लेकिन यह क्या...?

कोई धमाका नहीं हुआ।

बुरी तरह से बौखलाया हुआ था वह—कलेजा जोरों से धड़क रहा था उसका।

पाण्डुरंग और महेश को मारते वक्त उस पर इतनी बौखलाहट नहीं थी जितनी अब थी।

वजह थी उसका रीमा राठौर के बारे में जानना।

रीमा राठौर के बारे में वह बहुत अच्छी तरह से जानता था। उसके रुतबे, उसकी पहुंच, उसकी असीम शक्ति के बारे में जानता था। ऐसे में उसका बौखलाना

लाजमी था।

उसी बौखलाहट का ही नतीजा था कि उसे रिमोट के सेंसर से टेप हटाने का ध्यान ही नहीं रहा था।

और जब उसे ध्यान आया तो उसने तेजी से कांपते हाथ से टेप को उतारा।

उधर रीमा राठौर ने कार का दरवाजा खोला और गेट खोलने के लिए गेट की तरफ बढ़ी।

उधर टेप उतार कर विशाल कपूर ने रीमा राठौर की तरफ देखे बिना ही रिमोट का बटन दबा दिया।

उस वक्त रीमा राठौर गेट का हुड़का हटा कर गेट का पल्ला खोल रही थी —जब एकाएक ही एक भयानक धमाका हुआ।

“बड़ा..म...।”

धमाके के साथ ही कार हवा में कई फुट ऊपर उछली और उसके चीथड़े हवा में ही उड़ गए।

धमाका इतना जबरदस्त था कि रीमा राठौर जो कार से कुछ दूर थी—हवा में उड़ गई और सीधा लॉन में जा गिरी।

उसके गिरते ही कार के कई पार्ट्स उसके आस-पास गिरे।

गनीमत थी कि कोई भारी टुकड़ा उस पर नहीं गिरा था।

बाहर कार जब नीचे गिरी तो वह आग की लपटों से घिरी हुई थी।

तभी कोठी के भीतर से मुरारीलाल और पार्वती कांपते हुए निकले और खुले गेट में से जब उन्होंने बाहर खड़ी कार को आग की लपटों में घिरा देखा तो दोनों के होठों से चीख उबल पड़ी।

दोनों एक साथ कम्पाउंड से निकले और लम्बे ड्राईव-वे पर भागते हुए गेट की तरफ लपके।

अभी वे आधा ड्राईव-वे ही नाप पाये थे कि तभी पार्वती जोरों से चीखी—

“मै...ड...म...।”

उसकी नजर लॉन में बेहोश बड़ी रीमा राठौर पर पड़ गई—जिसके आस-पास कार के जलते हुए टुकड़े फैले थे।

मुरारीलाल की नजर भी रीमा राठौर पर पड़ गई थी।

“तुम मैडम को सम्भालो...मैं बाहर देखता हूं।” वह चीखा और गेट की तरफ भागा।

इधर पार्वती रीमा राठौर की तरफ भागी।

रीमा राठौर के कपड़े फट चुके थे—जिनमें से उसके अंग नजर आ रहे थे।

पार्वती उसके करीब पहुंची और झुक कर उसे अपनी बाहों में उठा कर वहां जल रहे टुकड़ों से बचते हुए भीतर की तरफ भागी।

उधर गेट से निकल कर मुरारी ने रिवॉल्वर निकाली और इधर-उधर देखने लगा।

वह उस शख्स को ढूंढ रहा था जिसने रीमा राठौर की कार को उड़ाया था।

मगर वह तो वहां से जा चुका था।

धमाका होते ही वह गली में घुसा था और रिमोट को फेंक तेज-तेज चलते हुए वहां से निकल गया था।

कुछ देर इधर-उधर तलाश करने के बाद मुरारी वापिस गेट में दखिल हुआ और ड्राईव-वे पर भागते हुए कोठी में प्रविष्ट हुआ और फोन की तरफ लपका।

कुछ ही पलों में वह ठाकरे को रीमा राठौर पर हुए हमले की खबर दे रहा था।

उधर रीमा राठौर के बेडरूम में रीमा राठौर बेड पर पड़ी थी और पार्वती उसके कपड़ों को फाड़-फाड़ कर उसके जिस्म से अलग कर रही थी।

कुछ ही देर में रीमा राठौर सिर से पांव तक निर्वस्त्र पड़ी नजर आ रही थी और पार्वती उसके जिस्म को टटोल रही थी कि उसे कहां-कहां चोट लगी थी?

कोई बड़ी चोट नजर नहीं आई उसे—बस कुछ हल्की-फुल्की खरोंचें थीं।

तत्पश्चात् पार्वती ने उसकी नब्ज टटोली तो उसने राहत भरी लम्बी सांस छोड़ी।

वह सीधी हुई और कमरे से बाहर निकल कर लॉबी में आ गई। जहां मुरारीलाल बेचैनी से इधर से उधऱ टहल रहा था।

पार्वती को देखते ही वह उसकी तरफ लपका।

"म...मैडम ठीक हैं न..?" वह थर्राये स्वर में बोला।

"हां...सिर्फ बेहोश हैं...। छोटी-मोटी खरोंचें ही आई हैं उन्हें।" पार्वती तेजी से एक दूसरे कमरे की तरफ बढ़ती हुई बोली।

गहरी सांस छोड़ते हुए मुरारीलाल ने छत की तरफ ऐसे गर्दन टेढ़ी की मानो ऊपर वाले का शुक्रिया कर रहा हो।

शीघ्र ही पार्वती वापिस लौटी तो उसके हाथ में एक बक्सा था, जिसमें कि दवाईयां वगैरह थीं।

मुरारी के पास के होते हुए वह रीमा राठौर के बेडरूम में प्रवेश कर गई।

¶¶

सिकन्दर ठाकरे रीमा राठौर की कोठी पर पहुंचा तो कोठी के बाहर लोगों का हुजूम खड़ा था—मीडिया वाले जलती हुई कार को कैमरे में कैद कर रहे थे...। कुछ कैमरामैन कोठी के खुले गेट में से कोठी को शूट कर रहे थे और कुछ रिपोर्टर कैमरे के सामने खड़े बोल रहे थे। जैसे ही ठाकरे जिप्सी से नीचे उतरा—कई रिपोर्टर माईक पकड़े उसकी तरफ लपके और पल भर में ही उसे घेर कर उस पर सवालों की बौछार कर दी।

"क्या रीमा राठौर पर आतंकी हमला हुआ है?"

“क्या रीमा राठौर के किसी दुश्मन ने हमला किया है?”

“रीमा राठौर की कैसी हालत है?”

“वो ठीक है या दुश्मन अपने इरादे में कामयाब हो गए?”

ऐसे ही कितने ही सवाल एक साथ ठाकरे पर बरस पड़े; लेकिन ठाकरे ने किसी के भी सवाल का जवाब नहीं दिया और भीड़ को चीरता हुआ गेट में प्रवेश कर गया।

वह कोठी में दाखिल हुआ तो उसका सामना मुरारीलाल से हुआ।

“रीमा कैसी है...?” छूटते ही उसने पूछा।

बाहर उसने जलती कार को देखा था तो उसका कलेजा कांप उठा था। ऐसे में उसे रीमा राठौर का हाल जानने की जल्दी तो होनी ही थी।

“मैडम अब ठीक हैं...।” बोला मुरारीलाल—“अपने बेडरूम में आराम कर रही हैं।”

बगोले की तरह ठाकरे उसके बेडरूम की तरफ लपका।

भीतर प्रवेश करते ही उसकी नजर बेड पर लेटी रीमा राठौर पर पड़ी—जो अपने ऊपर चादर लपेटे हुए थी।

उसके कंधे तथा बाहें नंगे थे—जिससे पता चल रहा था कि चादर के नीचे वह निर्वस्त्र है।

चादर के ऊपर ही उसके उठे उभार कयामत ढाते नजर आ रहे थे—लेकिन ठाकरे की नजर वहां गई ही नहीं।

वह बेड पर उसके करीब बैठा और बड़ी व्यग्रता से बोला—"कैसे हुआ यह सब?"

रीमा राठौर मुस्कुराई और उसे सारी बात बता दी...। फिर बोली—"किस्मत अच्छी थी मेरी...जो गेट खोलने के लिए कार से निकल गई थी—वर्ना इस वक्त तुम मेरे टुकड़ों को इकट्ठा कर रहे होते...।"

“बकवास मत करो...।” कहते हुए ठाकरे की आवाज भर्रा गई—“मरें तुम्हारे दुश्मन...।”

रीमा राठौर हौले से हंस पड़ी।

“अब कैसी तबीयत है तुम्हारी?” ठाकरे ने पूछा।

“भारी चोट तो कोई नहीं लगी। बस छोटी-मोटी खरोंचें हैं। हां, बदन दर्द कर रहा है। पेन किलर का इंजेक्शन लगाया है पार्वती ने जल्दी ही दर्द भी दूर हो जायेगा।”

ठाकरे ने एक राहत भरी सांस छोड़ी और फिर गम्भीर होते हुए बोला—

“हो न हो...यह हमला विशाल कपूर ने ही किया है तुम पर...।”

“वो तो नजर आ रहा है और हमला रिमोट बम से हुआ है। यानि उसके पास रिवॉल्वर भी है और बम भी है। हैरानी नहीं होती यह सोच कर कि उसके पास इतना खतरनाक असलाह कहां से आया?”

"रिपोर्टर था वो। कई जानने वाले हैं उसके—उनमें कुछ ऐसे भी होंगे जिसके पास असलाह होगा। उन्हीं में से किसी ने उसे यह सब दिया होगा ठाकरे गम्भीरता से बोला।

"तो पता लगाओ उसके दोस्तों का। उसके कैमरामैन से तुम्हें कुछ हासिल हो सकता है; क्योंकि एक वही है जो उसके सबसे करीब रहा है।"

ठाकरे ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया—"यहां से निकल कर मैं पहले उसी से ही मिलूंगा।" वह बोला।

तभी पार्वती एक ट्रॉली धकेलते हुए भीतर प्रविष्ट हुई, जिस पर खाना लगा था।

"रात से कुछ नहीं खाया होगा तुमने...।" रीमा राठौर बैठते हुए बोली —"पहले खाना खा लो।"

कहते हुए उसने चादर अपनी बगलों में दबा ली—ताकि वो नीचे न सरक जाये।

"बाहर मीडिया खड़ा है—उसे क्या जवाब देना है?" ठाकरे बोला।

"विशाल पर शक जाहिर कर दो। उसका अब ज्यादा देर तक आजाद रहना ठीक नहीं...। जब तक वह बाहर रहेगा, यूं ही खून बहाता रहेगा। और कोई बड़ी बात नहीं कि आत्माराम भी उसको खत्म करने के लिए उसके पीछे लग गया हो...।"

रीमा राठौर बोली और पार्वती को देखा—जो सेन्टर टेबल पर खाना लगा रही थी।

¶¶

आत्माराम के होठों पर कुटिल मुस्कान नाच उठी। आंखों में लोमड़ी की-सी चमक उभर आई।

उसने हाथ में पकड़े रिमोट को टी०वी० की तरफ किया और बटन दबा कर टी०वी० बंद कर दिया।

टी०वी० बन्द होते ही निशांत और प्रकाश चौंक कर आत्माराम को देखने लगे। टी०वी० पर रीमा राठौर पर हुए हमले की खबर आई थी। जिसमें ठाकरे ने विशाल कपूर पर शक करते हुए यह कहा था कि रीमा राठौर ने उसके खिलाफ केस लड़ कर उसे सजा दिलवाई थी—तब वहीं अदालत में ही उसने रीमा राठौर को खत्म करने की कसम खाई थी। साथ ही मीडिया के जरिये उसने जनसाधारण से अपील की थी कि विशाल कपूर का पता लगते ही फौरन स्थानीय पुलिस स्टेशन को खबर की जाए या सौ नम्बर पर डायल किया जाए।

आत्माराम को मुस्कुराते देख दोनों भाई पुनः चौंके।

"आप मुस्कुरा क्यों रहे हैं, अंकल...?" प्रकाश बोला।

आत्माराम के होठों पर नाच रही मुस्कान और भी तेज हो गई।

"इसलिए कि रीमा राठौर का अन्त करीब आ गया है।" आत्माराम बोला।

"यह क्या कह रहे हैं आप, पापा...। आप क्या समझते हैं....विशाल उसे मारने में कामयाब हो जायेगा?" निशांत हैरानी से बोला।

"वो तो हो गया था—लेकिन रीमा राठौर की अच्छी किस्मत ने उसे बचा लिया—तभी तो ऐन वक्त पर कार का दरवाजा खोल कर वह बाहर निकल गई थी। वर्ना अब तक तो वह जहन्नुम पहुंच चुकी होती।"

"अब तो वो सावधान हो गई होगी—ऐसे में कैसे मरेगी वो...।"

"हम मारेंगे उसे।"

"क्या...?"

"उस कुतिया को जाने के बाद से मैं इन्हीं सोचों में डूबा हुआ था कि उसे खत्म कैसे किया जाये जिससे कि मेरा कुछ भी न बिगड़े...। क्योंकि उसकी मौत पर बड़े पैमाने पर तफ्तीश होती। जिसमें मैं रगड़ा जा सकता था; मगर अब उसकी

मौत पर कोई तफ्तीश नहीं होगी। सीधे विशाल का नाम उसके कातिल के तौर पर लिया जायेगा और उसको ढूंढने से लिए जमीन-आसमान एक कर देगी पुलिस। लेकिन वह पुलिस के हत्थे नहीं चढ़ेगा। उससे पहले ही वह इस दुनिया से गायब हो जायेगा...। हा...हा...हा...।"

उसके होठों से शैतानी अट्टाहस फूट पड़ा।

प्रकाश और निशांत भी हंसने लगे।

¶¶

अस्पताल की पार्किंग में बाइक खड़ी करके विशाल कपूर बाहर निकला—पर्ची ली और अस्पताल की पिछली तरफ जा खड़ा हो गया। गेट पर उसने सब-इंस्पेक्टर को देख लिया था। ऐसे में वह समझ गया था कि नेहा की हिफाजत के तगड़े बंदोबस्त किए गए हैं।

यूं भी जब फोन पर रीमा राठौर ने उसे नेहा के जीवित होने की बात बताई थी—तभी वह समझ गया था कि उसको पकड़ने के लिए रीमा राठौर ने पुलिस से मिल कर जाल जरूर बुना होगा।

रीमा राठौर के बारे में वह अभी भी समझ रहा था कि वह मर गई थी। रिमोट का बटन दबाने के बाद उसने कार को उड़ते देखा था—लेकिन उससे पहले कार से निकलते हुए नहीं देखा था।

यहां अस्पताल में वह एक नजर अपनी नेहा को देखने आया था—अपना कहने के लिए बस वही तो बची थी उसकी। उसके दोनों बच्चे खत्म हो गए थे और तीसरी जिसने अभी जन्म भी नहीं लिया था—वह भी खत्म हो चुका था।

अस्पताल की पिछली दीवार के करीब खड़े होकर वह सोचने लगा कि किस तरह से वह अपनी नेहा को एक बार...सिर्फ एक बार देख सके...।

अभी वह सोच ही रहा था कि वह बुरी तरह से चौंक उठा...। और फिर उसके जेहन में धमाके होने लगे।

उससे थोड़ी दूर ही एक कार रुकी थी—जिसमें से उसने जुम्मन को निकलते देखा था।

जुम्मन को पहचानने में जरा भी देर नहीं लगी। अभी कल ही तो उसने उसे जेल में उन दोनों के साथ काम करते देखा था, जिन्होंने उसे भागने का झांसा देकर पहाड़ी से धक्का दिया था।

होश में आने पर जब उसने इस तरफ सोचा था—तो उसने यही अंदाजा लगाया था कि हो न हो, वे दोनों आत्माराम के ही आदमी थे; क्योंकि आत्माराम ने जेल में ही उससे कहा था कि वह जेल में ही उसका काम तमाम करवा देगा।

ऐसे में जुम्मन को देख कर वह यही समझा कि हो न हो, वह नेहा का कोई अहित करने आया था और वो अहित एक ही हो सकता था—

नेहा की मौत...।

नेहा की जिन्दगी आत्माराम को बुरी तरह से फंसा सकती था; इसीलिए उसने नेहा को खत्म करने के लिए जुम्मन को जेल से निकलवा लिया।

यह बात जेहन में आते ही विशाल कपूर का चेहरा दहक उठा।

आंखों में चिंगारियां कौंधने लगीं।

जुम्मन उस वक्त सफेद कपड़े पहने हुए था।

कार से निकल कर वह मुड़ा—झुका और कार में से स्टैथस्कोप निकाल कर गले में लगाया और विशाल कपूर से बेखबर उस तरफ बढ़ गया जिधर अस्पताल का गेट था।

विशाल कपूर का कलेजा जोर-जोर से धड़कने लगा।

उसे समझ में नहीं आ रहा था कि इस स्थिति से वह कैसे निपटे?

वह चाहता तो उस पर गोली दाग कर उसको खत्म कर सकता था; मगर उस सूरत में वह सब की नजर में आ जाता, जबकि अभी वह पुलिस की पकड़ में आना नहीं चाहता था।

आत्माराम को खत्म करके ही वह अपना इंतकाम पूरा कर सकता था।

अगर रीमा राठौर जीवित होती तो वह उसे फोन करके बता सकता था कि नेहा की जान को खतरा है और वह वहां तैनात पुलिस को फोन कर देती; मगर उसे तो उसने खत्म कर दिया था।

सौ नम्बर पर भी फोन नहीं कर सकता था वह। क्या पता कन्ट्रोल रूम में आत्माराम का ही कोई गुलाम बैठा हो। फिर क्या करे वह? कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था उसे।

अगर उसे यह पता होता कि नेहा किस वार्ड में थी—तो वह वहां जाने का कोई रास्ता खोज सकता था।

"हे भगवान...।" उसने बड़बड़ाते हुए अपनी कलाई पर दांत जमा दिए—"मेरी नेहा की रक्षा करना...।"

¶¶

जुम्मन अस्पताल के गेट पर खड़े सब-इंस्पेक्टर के पास से होते हुए भीतर दाखिल हुआ और गलियारे में आगे बढ़ने लगा।

कोई छोटा-मोटा अस्पताल तो था नहीं वह—जिसमें दो-चार दस डॉक्टर हों। काफी सारे डॉक्टर थे वहां। ऐसे में सब-इंस्पेक्टर ने उसे भी डॉक्टर ही समझा था।

यूं भी वह खाली हाथ था—ऐसे में शक होता ही कहां उसे?

अभी जुम्मन गलियारे में थोड़ी दूर ही आगे बढ़ा था कि उसकी जेब में रखे मोबाइल का म्यूजिक बजने लगा।

"टिन...न...न...।"

तुरन्त उसने जेब से मोबाइल निकाल कर उसका बटन दबाते हुए कान से लगाया।

"हैलो...?"

"कहां तक पहुंचा है अभी...?" दूसरी तरफ से जाकिर की आवाज उसके कान में पड़ी।

"अस्पताल में हूं, भाई...।" जुम्मन आगे बढ़ते हुए बोला।

"पता है न किस वार्ड में है नेहा?"

"आप ही ने बताया था...दो सौ सात...तीसरी मंजिल पर...।"

"हां...वार्ड के दरवाजे पर दो पुलिसिये हैं—उन्हें पूरी तसल्ली करानी है तेरे को—और तेरे पास कब कुछ है तसल्ली करवाने को। सारी सुरक्षा व्यवस्था के बारे में जान कर ही मैंने तेरे को भेजा है। अब काम पूरा करके ही आना...।"

"डोंट वरी, भाई—जुम्मन की तरफ से आपको कोई शिकायत नहीं मिलेगी।"

दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

जुम्मन ने मोबाइल जेब में डाला और उधर बढ़ने लगा जिधर लिफ्ट थी।

कुछ ही देर में पह लिफ्ट में सवार ऊपर जा रहा था।

तीसरी मंजिल पर लिफ्ट रुकी और उसने लिफ्ट से बाहर निकलकर अपने मुंह पर कपड़ा बांधा और आगे बढ़ गया।

शीघ्र ही वह उस वार्ड के करीब था—जिसमें नेहा थी।

उसे अपनी तरफ बढ़ते देख वार्ड के बन्द दरवाजे के बाहर खड़े दोनों सिपाही सतर्क हो गए। और जैसे ही वह उनके करीब पहुंचा—दोनों उसके सामने खड़े हो गए।

जुम्मन जानता था कि ऐसा ही होगा।

जाकिर ने वहां की सारी सुरक्षा व्यवस्था जानने के बाद ही उसको अच्छी तरह से समझा कर यहां भेजा था।

उसने प्रश्न भरी निगाह से दोनों को देखा और मुंह से कपड़ा खींच कर गर्दन तक पहुंचा दिया।

"क्या है...?" वह बोला—"रास्ता क्यों रोका मेरा?" वह थोड़ी नाराजगी से बोला।

"आपका नाम...?" एक सिपाही उसकी नाराजगी को नजरअंदाज करते हुए बोला।

"डॉक्टर असगर अली...।"

"आप डॉक्टर रमन तो नहीं हैं। यहां की ड्यूटी डॉक्टर रमन और डॉक्टर कश्यप की है—फिर आप यहां क्या करने आये हैं...?" दूसरा बोला।

जुम्मन के चेहरे पर नाराजगी और भी गहरा गई।

"यह तुम्हारा थाना नहीं, मिस्टर...।" वह गुर्राया—"यह अस्पताल है। यहां जो होता है—डाक्टरों की मर्जी से होता है।"

"सॉरी डॉक्टर...हमें सख्त निर्देश है कि हम पूरी तसल्ली किए बिना किसी को भी अन्दर न जाने दें।"

"मरीज की जान को खतरा है...।" दूसरा बोला।

"ओह—क्या तसल्ली करना चाहते हो...?" जुम्मन गम्भीरता से बोला।

"अपना आई-कार्ड दिखाईये...।" पहला बोला।

जुम्मन ने जेब से आई-कार्ड निकालकर उन्हें दे दिया। एक कॉस्टेबल ने आई-कार्ड को अच्छी तरह से देखा—फिर कार्ड उसे वापिस देते हुए बोला—

"डॉक्टर रमन या कश्यप में से कोई नहीं आया?"

"हर डॉक्टर की अपनी स्पैशियलिटी होती है। हर डॉक्टर जिस्म के अलग पार्ट में एक्सपर्ट होता है। और सभी डॉक्टर एक टीम वर्क में काम करते हैं—तभी तो मरीज का चैकअप होता है।"

"ओह...!"

"मैं अपने हिस्से की जांच करने आया हूं यहां...।"

"मैं समझ गया...।" अपनी गन अपने साथी को पकड़ाते हुए बोला सिपाही—"आप जरा हाथ फैला लें।"

"क्यों...?"

"तलाशी लेनी है।"

मुंह बनाते हुए जुम्मन ने हाथ फैला दिए।

सिपाही ने उसकी अच्छी तरह से तलाशी ली। मगर उसके पास से ऐसा कुछ भी बरामद नहीं हुआ, जिससे उसे लगता कि वह गलत इरादे से भीतर जाना चाहता है।

पूरी तसल्ली करने के बाद ही दोनों सिपाही दरवाजे के सामने से हटे।

"जाईये...।" पहला बोला।

जुम्मन ने कपड़ा पुनः मुंह पर चढ़ाया और दरवाजा खोल कर भीतर प्रवेश कर गया।

मुड़कर उसने दरवाजा बन्द किया, सिटकनी चढ़ाई और उधर बढ़ गया जहां एक लम्बे स्टेण्ड पर हरे कपड़े का पर्दा बना हुआ था।

वह पर्दे के पीछे पहुंचा तो उसे बेड पर पड़ी नेहा नजर आई। उसके करीब ही एक कुर्सी पर नर्स बैठी थी, जो कोई उपन्यास पढ़ रही थी।

उपन्यास पढ़ने में वह इस कदर मस्त थी कि उसे यह भी पता नहीं चला कि उसके पीछे कोई आ खड़ा हुआ था।

पता तो उसे तब चला जब पीछे आ खड़े जुम्मन ने पीछे से बांह निकाल कर उसके मुंह को बन्द कर दिया।

बुरी तरह से बौखला उठी नर्स और जैसे ही खड़ी होने को हुई...जुम्मन का घूंसा उसकी कनपटी पर जा पड़ा।

नर्स की आंखों के आगे लाल-पीले तारे नाच उठे और वो बेहोशी के गर्त में डूबते हुए वापिस कुर्सी पर बैठ गई।

जुम्मन ने उसके मुंह से हाथ हटाया और उसकी पीठ कुर्सी की पुश्त से लगा दी।

अब ऐसा नजर आ रहा था...मानो नर्स गहरी नींद सो रही हो।

उससे निपट कर जुम्मन नेहा की तरफ बढ़ा—जो बेड पर पड़ी थी।

उसका दायां हाथ चादर से बाहर निकला हुआ था...। जिसके उल्टी तरफ नस में सीरिंज लगी हुई थी और उस पर टेप लगी थी। सीरिंज के ढक्कन बन्द थे।

अभी उसे खून या ग्लूकोज वगैरा कुछ भी नहीं चढ़ाया जा रहा था।

जुम्मन के होठों पर क्रूर मुस्कान फैल गई।

आंखों में भेड़िये की-सी झलक उभर आई।

वह थोड़ा झुका और निडल के ढक्कन को खोल दिया।

तुरन्त उसमें से खून निकल कर नीचे फर्श पर तेजी से गिरने लगा।

जुम्मन ने करीब ही पड़े डस्टबिन को उठा कर उसके हाथ के नीचे फर्श पर रख दिया।

अब खून की धार फर्श पर न पड़ कर डस्टबिन में गिर रही थी।

जुम्मन सीधे खड़ा हुआ और मुस्कुराया।

"सिर्फ पन्द्रह मिनट में ही तू ऊपर पहुंच जायेगी...और उसी के साथ ही नेता जी के खिलाफ सबसे बड़ा सुबूत खत्म हो जायेगा...।"

बड़बड़ाते हुए उसकी मुस्कान और भी तेज हो गई।

वह वहां से हटा और कपड़े को पुनः मुंह पर चढ़ाते हुए दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

दरवाजा खोल कर वह बाहर निकला और अपने दायें-बायें खड़े दोनों सिपाहियों से लापरवाह बना आगे बढ़ गया।

लिफ्ट द्वारा नीचे आकर वह गलियारे में से होते हुए अस्पताल से बाहर निकला और उधर बढ़ गया...जिधर उसकी कार खड़ी थी।

दरवाजा खोल कर स्टीयरिंग के पीछे बैठा—दरवाजा बन्द किया और कार को स्टार्ट कर उसका स्टेयरिंग घुमाते हुए कार को गेट की तरफ बढ़ा दिया।

अस्पताल के परिसर में बने दो पार्कों के बीच बनी सड़क पर से होते हुए वह सदर गेट से बाहर निकला और सड़क पर आकर एक्सीलेटर पर पैर का दबाव बढ़ा दिया।

कार तेज गति से सड़क पर दौड़ने लगी।

अभी कार थोड़ी ही दूर गई थी कि तभी उसकी खोपड़ी के पृष्ठभाग से रिवॉल्वर की नाल आ लगी।

इस बुरी तरह से चिहुंक उठा जुम्मन कि स्टेयरिंग उसके हाथ से कांप गया।

कार सड़क पर तेजी से लहराई।

"गाड़ी सम्भाल हरामजादे...।" तभी पीछे से गुर्राहट उभरी—"वर्ना मरने से पहले यह भी नहीं जान पायेगा कि मारने वाला कौन था...।"

जुम्मन ने बड़ी मुश्किल से स्टेयरिंग पर काबू पाया और थर्राये स्वर में बोला—“कौन हो तुम?”

“घबरा नहीं...सब बताऊंगा...। पहले गाड़ी को वहां ले चल—जहां हम दोनों के अलावा कोई न हो।”

कहते हुए पीछे की सीट पर बैठे विशाल कपूर ने रिवॉल्वर की नाल उसकी खोपड़ी पर ठकठकाई।

“ल...लेकिन तुम...।”

“कोई बकवास नहीं और न ही पीछे मुड़ कर देखना। चुपचाप गाड़ी चलाता रह।”

पीछे से उभरी फुंफकार सुन कर जुम्मन के तिरपन कांप उठे।

¶¶

जुम्मन को वार्ड से निकले अभी पांच मिनट भी नहीं बीते थे कि नेहा को चैक करने के लिए डॉक्टर रमन वहां पहुंच गया। उसे देख दोनों सिपाही बुरी तरह से चौंके...।

"क्या बात है?" डॉक्टर दोनों को देखते हुए शंकित स्वर में बोला —"चौंके क्यों तुम...?"

"अभी पांच मिनट पहले ही डॉक्टर असगर अली आये थे। और इतने में आप आ गए...!" पहला हैरानी से बोला।

"डॉक्टर असगर अली...?" हल्के से चौंका डॉक्टर रमन—"इस नाम का कोई डॉक्टर यहां नहीं है...।"

"मगर उसने तो अपना आई-कार्ड भी दिखाया था।" दूसरा बोला।

डॉक्टर रमन के चेहरे पर भूचाल उभर आया।

तुरन्त उसने दरवाजा खोला और तेजी से भीतर की तरफ लपका।

पर्दे के पीछे जैसे ही वह नेहा के बेड के करीब पहुंचा—उसका कलेजा मुंह को आ गया।

खून की धार निडल से निकल कर डस्टबिन में पड़ रही थी—और डस्टबिन एक-चौथाई खून से भरा हुआ था।

झपट कर वह नेहा के करीब पहुंचा और निडल का ढक्कन बन्द कर तेजी से बाहर की तरफ लपका।

उसको बदहवासी से बाहर निकलते देख दोनों सिपाही बुरी तरह से घबरा गए।

"क्या हुआ डॉक्टर...?" एक बोला।

"नेहा ठीक तो है न?"

दूसरे ने पूछा।

लेकिन डॉक्टर ने किसी की बात जैसे सुनी ही नहीं।

वह तो तेजी से भागता चला गया।

शीघ्र ही वह वापिस लौटा तो उसके साथ नर्स थी—जो खून की दो बोतलें पकड़े हुए थी।

दोनों के बीच से होते हुए डॉक्टर और नर्स वार्ड में प्रवेश कर गए।

"लगता है डॉक्टर असगर अली, डॉक्टर नहीं था!" पहला थर्राये स्वर में बोला—"वो नेहा को मारने आया था...।"

दूसरे के मुंह से बोल नहीं फूटा—वह बस थूक सटक कर रह गया।

¶¶

"बस यहीं रोक दे गाड़ी...।" पीछे से गुर्राहट उभरी।

जुम्मन ने कार रोक दी।

वह एक सुनसान सड़क थी। जिसके दोनों तरफ खड़े दूर-दूर तक खेत ही खेत नजर आ रहे थे।

पीछे की सीट पर बैठे विशाल कपूर ने पीठ सीट की पुश्त से लगाई और बोला—

"अब गर्दन मोड़ ले। और ध्यान रहे...अगर तूने जरा भी चालाकी दिखाई तो...।" आगे के शब्द उसने बीच में ही छोड़ दिए। जुम्मन का कलेजा जोरों से धड़क उठा।

विशाल कपूर के अधूरे शब्दों का मतलब वह खूब अच्छी तरह से समझ रहा था।

बड़ी मुश्किल से थूक सटकते हुए उसने जैसे ही गर्दन पीछे मोड़ी—वह बुरी तरह से चौंक उठा।

आंखें फट पड़ीं—कलेजा मुंह को आ गया।

"त...तुम...।"

"पहचान लिया!" क्रूरता से भरे अंदाज में फुंफकारा था विशाल कपूर —"मैं वही हूं—जिसे तूने जेल में देखा था...और उसे मारने के लिए अपने साथियों से पहाड़ी से धक्का दिलवाया था।"

जुम्मन ने जोरों से थूक सटकी...। उसके चेहरे पर बेचैनी साफ नजर आ रही थी।

"आत्माराम का कुत्ता है न तू...?" विशाल कपूर उसकी आंखों में झांकते हुए गुर्राया।

"म...मुझे म...माफ कर दो विशाल...मैं...।"

"मेरी बात का जवाब दे हरामजादे!" फुंफकार उठा विशाल कपूर।

"ह...हां...।"

"तू तो जेल में था—फिर बाहर कैसे आ गया?"

"म...मेरी सजा खत्म हो गई थी।"

"अस्पताल में क्या करने गया था तू?"

"व...वो जाकिर ने मुझे कहा था न कि...नेहा को खत्म करना है।"

सुनकर कलेजा डूबने लगा विशाल कपूर का—"म...मार डाला तूने उसे...?" पूछते हुए उसकी आवाज भर्रा गई।

"ह...हां...।"

"क...कैसे मारा?" विशाल कपूर की आंखें भर आईं। साथ ही उसके भीतर से एक हूक-सी उठी।

जुम्मन ने कांपते हुए बताया।

बड़ी मुश्किल से विशाल कपूर ने अपने आप पर काबू पाया और झपट कर बांये हाथ से उसके बालों को पकड़ा और इतनी जोरों से खींचा कि जुम्मन बुरी तरह से चीखते हुए सीट की बैक पर पैर तक उसकी तरफ लटक गया।

"जाकिर कौन है...?" वह दांतों को भींचते हुए गुर्राया।

"न...नेताजी का सबसे खासमखास है...। म-मुझे माफ कर दो, विशाल...मैं...।"

"कहां रहता है यह हरामजादा जाकिर?" कहते हुए विशाल कपूर ने लटक रहे जुम्मन का सिर सीट की बैक से घुटने से दबा दिया।

जुम्मन को ऐसा लगा, जैसे उसका सिर अभी कुचल जायेगा और भेजा बाहर आ जायेगा।

बुरी तरह से कराहते हुए उसने जाकिर का पता बताया।

दर्द से उसकी जान निकली जा रही थी। लेकिन विशाल कपूर को उस पर जरा भी तरस नहीं आया।

उसने उससे कुछ और सवाल पूछे और घुटने को उसके सिर से हटा कर रिवॉल्वर की नाल उसकी खोपड़ी से लगाई और ट्रिगर दबा दिया। गोली उसकी खोपड़ी में सुराख करते हुए पीठ की बैक में जा घुसी।

उल्टा लटके हुए जुम्मन जोरों से तड़पा और फिर वह ऐसे स्थिर हो गया जैसे पेड़ पर लटका बेताल हो।

विशाल कपूर ने एक गोली उसके सीने में उतारी और फिर दरवाजा खोल कर बाहर आ गया।

उसने कार का दरवाजा बन्द किया और पैदल ही सड़क पर चलते हुए वहां से दूर होता चला गया।

¶他¶

रिसीवर कान से लगाये रीमा राठौर बुरी तरह से उछल पड़ी।

“यह क्या कह रहे हो तुम, ठाकरे...?”

“अभी-अभी डॉक्टर का फोन आया है मुझे और मैंने तुम्हें बता दिया...। अब मैं अस्पताल जा रहा हूं।”

दूसरी तरफ से ठाकरे की आवाज आई।

“नेहा ठीक तो है न...?”

“उसे खून चढ़ाया जा रहा है—बाकी वहीं अस्पताल पहुंच कर पता चलेगा।”

"मैं भी वहीं पहुंच रही हूं...।" रीमा राठौर बोली।

"लेकिन तुम्हारी तबीयत...।"

"अब ठीक हूं मैं...।" ठाकरे की बात काटते हुए बोली रीमा राठौर—"तुम मेरी नहीं...नेहा की फिक्र करो।"

कह कर उसने रिसीवर रखा और अपने ऊपर पड़ी चादर को जैसे ही हटाया-

कमरे की तमाम दीवारें हिलने लगीं।

ट्यूब लाईट की रोशनी भी पीली पड़ गई।

रीमा राठौर के तने हुए उभारों और उसके बल्ले-बल्ले करने वाले जिस्म में से निकल रही रोशनी से जैसे पूरा कमरा चमकने लगा था।

वह बेड से नीचे उतर कर बाथरूम की तरफ बढ़ी तो उसके चलने से उसके बेलगाम उभार ऐसे थर्राये कि वहां भूचाल आ गया। उसकी जांघों की

थर्राहट किसी का भी हार्टफेल करने के लिए पर्याप्त थी।

कमरे में आग लगाते हुए वह बाथरूम में पहुंची और दरवाजा बन्द कर दिया।

करीब दस मिनट बाद वह बाहर निकली तो उसके बदन पर ओस की बूंदें चमक रही थीं। जो उसके चलने से फिसल कर ऐसे गिर रही थीं जैसे वहां हल्की-हल्की बूंदाबांदी हो रही हो।

वार्डरोब के सामने आकर उसने दरवाजा खोला और उसमें से पहले तौलिया निकाल कर अपने बदन को पौंछा—फिर कपड़े निकाल कर पहनने लगी।

कुछ ही देर में वह जीन्स और ऊपर छोटी-सी टॉप पहने कमरे से निकलती नजर आई। जीन्स इतनी नीची पहन रखी थी उसने कि बस जरा-सा और खिसकने की देर थी कि ऐसा नजारा नजर आने लगता कि बस...।

कोठी से निकल कर वह ड्राइव-वे पर खड़ीं तीन गाड़ियों में से सबसे पीछे वाली सफारी की तरफ बढ़ी। और कुछ ही देर में वह सफारी ड्राइव करती हुई कोठी से निकलती नजर आ रही थी।

¶¶

“टिन...न...न...।”

मोबाइल बजते ही जाकिर ने हाथ में पकड़े मोबाइल का हरा बटन दबाते हुए उसे कान से लगाया।

“हैलो...।”

“पक्या बोल रहा हूं, जाकिर भाई—रीमा राठौर अभी-अभी कोठी से निकली है।”

“किस तरफ गई है वो...?”

"सी○एम○टी○ की तरफ वाली सड़क पर...। ग्रे रंग की सफारी में है...मैं उसके पीछे लगा हुआ हूं।"

"लगता है अस्पताल जा रही है वो—जरूर उसे नेहा की मौत की खबर मिली होगी।"

"हो सकता है। अगर वो अगले चौराहे से बाईं तरफ मुड़ी तो वह अस्पताल ही जायेगी।"

"उसकी गाड़ी से थोड़ा दूर ही रहना...। उसे शक नहीं होना चाहिये।"

"ठीक है, भाई...।"

जाकिर ने मोबाइल कान से हटाया वो उसके होठों पर विषैली मुस्कान नाच उठी।

"नेहा तो गई—अब तेरी बारी है, रीमा राठौर...।" वह मुस्कुराते हुए ही बड़बड़ाया।

¶¶

दस्तक की आवाज सुनकर अब्दुल खान ने दरवाजा खोला तो सामने विशाल कपूर को देख उसने राहत भरी एक लम्बी सांस छोड़ी और एक तरफ हटते हुए बोला—

"शुक्र है खुदा का...कि तुम सही सलामत हो...।"

विशाल कपूर एक गम्भीर मुस्कान मुस्कुराया और भीतर दाखिल हो गया।

अब्दुल खान ने दरवाजा बन्द कर कुण्डा लगाया और उसके पीछे-पीछे चलते हुए कमरे में आ गया।

"बाइक कहां है...?" उसके कुर्सी पर बैठते ही पूछा उसने।

"अस्पताल में है।"

"अस्पताल में...।" हल्के से चौंका अब्दुल खान—"वहां क्या कर रही है?"

"हां...।" कह कर विशाल कपूर ने गहरी सांस छोड़ी—फिर बोला —"रीमा राठौर को बम से उड़ा कर मैं सीधा अस्पताल गया और वहां...।"

सब कुछ कह सुनाया उसने।

सुनकर एक गहरी सांस छोड़ी अब्दुल खान ने और बोला—"रीमा राठौर नहीं मरी।"

"क्या?" बुरी तरह से उछल पड़ा विशाल कपूर—"यह क्या कह रहे हो तुम...?"

"हां विशाल भाई...। तुमने उसकी कार को उड़ा डाला; लेकिन यह नहीं देखा कि वो कार में है या नहीं। उसे हल्की-फुल्की चोटें तो आई हैं; मगर मरी नहीं वह...। टी०वी० पर यह खबर उस पर हुए हमले के थोड़ी देर बाद ही आ चुकी थी।"

सुनकर विशाल कपूर के चेहरे पर पहले तो मायूसी उभरी—फिर उसके चेहरे पर कठोरता फैल गई।

"कोई बात नहीं। अगली बार नहीं बचेगी वो...। अब मैं उसकी मौत की पूरी तसल्ली करके ही उसके पास से हटूंगा।"

"एक बात बोलूं भाई...?" गम्भीर होते हुए बोला अब्दुल खान।

"क्या...?"

"रीमा राठौर से तुम्हारी दुश्मनी बेमानी है। उसने वही किया—जो नजर आ रहा था। आत्माराम ने चाल ही ऐसी चली थी कि रीमा राठौर की जगह कोई और भी होता तो वह भी उसमें फंस जाता।"

"उसकी एक छोटी-सी गलती से मेरा सब कुछ तबाह हो गया—और तुम कह रहे हो कि उसकी कोई गलती नहीं थी?"

"ऊपर वाले की मर्जी को कौन टाल सकता है विशाल भाई...। अगर उसे पता होता कि ऐसा होगा तो वो ऐसा होने ही नहीं देती; लेकिन ऐसा होना था।

क्योंकि उसमें ऊपर वाले की मर्जी थी—वर्ना तुम भी जानते हो कि रीमा राठौर ने हमेशा सच्चाई का साथ दिया है।"

"छोड़ो उस बात को खान भाई—जिसके दिल पर बीत रही हो—दर्द को वही महसूस कर सकता है।" गम्भीरता से बोला विशाल कपूर और जेब से पर्ची निकाल कर उसे देते हुए बोला—"यह अस्पताल की पार्किंग की पर्ची है। वहां से अपनी बाइक ले आओ...और मेरी नेहा का भी पता करके आना।" कहते हुए उसकी आवाज डबडबा गई।

हताशा भरी सांस छोड़ते हुए अब्दुल खान ने उससे पर्ची ले ली।

¶¶

"धांय...धांय...धांय...।

"बड़ा...म...।"

एक के बाद एक तीन धमाके हुए और एक तेज धमाके के साथ सफारी का बाईं तरफ का अगला टायर बर्स्ट हो गया।

इत्तफाक से उस वक्त सफारी की रफ्तार तेज थी—सो टायर बर्स्ट होते ही सफारी जोरों से लहराई...।

हालांकि रीमा राठौर ने स्टेयरिंग पर काबू पाने की पूरी कोशिश की; मगर फिर भी सफारी फुटपाथ पर जा चढ़ीं।

 फिर भी रीमा राठौर ने उसे उलटने नहीं दिया।

जैसे ही सफारी रुकी—

रेट...रे...ट...ट...।

कई गोलियां एक साथ सफारी की बॉडी के शीशे से टकराईं...।

तुरन्त रीमा राठौर नीचे झुक गई और शीशे की छोटी-छोटी किरचें उस पर गिरीं।

बाल-बाल बची थी वह।

एक पल के भी दसवें हिस्से में वह नीचे झुकी थी और गोलियां शीशे को चकनाचूर करते हुए उसके ऊपर से निकल गई थीं।

अगर वह इतनी फुर्ती न दिखाती तो अब तक उसकी खोपड़ी के परखच्चे उड़ चुके होते।

बाल-बाल बची थी वह।

झुके-झुके ही उसने डैशबोर्ड में से अपनी पिस्तौल निकाली और दरवाजा खोल कर एकदम से बाहर छलांग लगाई और सड़क पर लुढ़कती चली गई।

"रेट...ट...ट...ट...।"

कई गोलियां उसकी तरफ लपकीं...। मगर उससे पहले ही वह लुढ़क कर स्थान छोड़ गई थी...। जिससे गोलियां सड़क को उधेड़ते हुए उसकी तरफ बढ़ती नजर आ रही थीं।

लुढ़कते हुए ही रीमा राठौर ने कुछ दूर सड़क के नीचे एक पेड़ के पास खड़े उस व्यक्ति को देखा—जो उस पर स्टेनगन से गोलियां चला रहा था।

तभी उसकी रिवॉल्वर गर्ज उठी।

"धांय...।"

लुढ़कती हुई रीमा राठौर का अचूक निशाना।

गोली सीधा उस व्यक्ति के पेट में जा घुसी थी।

बुरी तरह से चीखा वह और स्टेनगन छोड़ कर वह अपना पेट पकड़ वहीं लम्बा हो गया।

लुढ़कते हुए ही रीमा राठौर का जिस्म एकदम से रबड़ के समान उछला और वह खड़ी हो गई।

ठीक तभी—

"धांय...।"

उसके दाईं तरफ से गोली चली।

रीमा राठौर अभी आस-पास का जायजा भी नहीं ले पाई थी कि गोली उसके रिवॉल्वर पर आ लगी।

उसका हाथ बुरी तरह से झनझना उठा और रिवॉल्वर उसके हाथ से छूट कर नीचे जा गिरी।

जैसे ही उसने चौंक कर गोली वाली दिशा में देखा—वो गहरी सांस छोड़ कर रह गई।

रिवॉल्वरों से लैस चार आदमी उसकी तरफ बढ़ रहे थे...। जबकि एक व्यक्ति थोड़ा परे खड़ा था।

"चालाकी नहीं दिखाना...।" वह फुंफकारा—"मेरा निशाना तो तू देख ही चुकी है...।"

रीमा राठौर के होठों पर मुस्कान नाच उठी।

अब वह पूरी तरह से सतर्क थी और दुश्मन भी छुपा हुआ नहीं था। अब दुश्मन उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता था। उसने नजर टेढ़ी करके नीचे पड़ी अपनी रिवॉल्वर को देखा, फिर अगले ही पल उसका दायां पैर रिवॉल्वर की नाल के सिरे पर ऐसे पड़ा कि रिवॉल्वर गिल्ली की तरह घूमती हुई ऊपर उठी और उसी के साथ ही उसने उससे हवा में फायर किया।

रिवॉल्वर उसके हाथ में आते ही चारों गुण्डे हड़बड़ा कर वहीं रुक गए।

रीमा राठौर के होठों पर जहर भरी मुस्कान नाच उठी।

"अब मुकाबला बराबर का है...।" वह हंसी।

"पलड़ा अभी भी हमारा ही भारी है, रीमा राठौर...।" परे खड़ा गुण्डा उसकी तरफ बढ़ते हुए बोला—"हम पांच हैं और हम सभी के पास रिवॉल्वरें हैं। तेरे पास सिर्फ पांच गोलियां हैं। जबकि हमारे पास तीस गोलियां हैं। तू मेरे दो और साथी मार सकेगी, जिसकी उम्मीद नहीं; मगर तेरी मौत आज निश्चित है।"

“बड़ा गुमान है अपने निशाने पर...।” रीमा राठौर बोली—“जा...वादा करती है रीमा राठौर कि जब तक तुम सबकी रिवॉल्वरें खाली नहीं होंगी...तब तक मैं फायर नहीं करूंगी।”

कहने के साथ ही उसने रिवॉल्वर अपनी जीन्स की बैल्ट में फंसा दी।

“खत्म कर दो इस कुतिया को!” दहाड़ा वह गुण्डा—“ताकि इसे पता लगे कि हमसे पंगा लेकर इसने कितनी बड़ी गलती की थी।”

तुरन्त सभी की रिवॉल्वरें सीधी हुईं और एक साथ चारों रिवॉल्वरों ने गोलियां उगलनी शुरू कर दीं।

“धांय...धांय...धांय...।” की आवाजों से पूरा इलाका कांपने लगा।

मगर रीमा राठौर को एक भी गोली छू नहीं पाई।

संग आर्ट में माहिर रीमा राठौर का जिस्म इस फुर्ती से उछल-कूद कर रहा था कि बिजली की फुर्ती भी उसके आगे फेल थी।

देखते ही देखते चारों रिवॉल्वरें खाली हो गईं।

मगर रीमा राठौर को एक हल्की-सी खरोंच भी नहीं आई।

चारों हक्के-बक्के से कभी अपनी रिवॉल्वरों को तो कभी रीमा राठौर को देखने लगे।

उधर पांचवां—जो थोड़ा परे खड़ा था—आंखें फाड़े रीमा राठौर को देखे जा रहा था।

वह तो यह सोच-सोच कर पागल हुआ जा रहा था कि चार-चार रिवॉल्वरों से रीमा राठौर बच कैसे गई?

“तेरे आदमियों के निशाने तो फेल हो गए...।” तभी रीमा राठौर उसे उकसाते हुए बोली—“अब तू दिखा अपना निशाना! जरा मैं भी देखूं कितना सही है तेरा निशाना...।”

एक औरत उसे चैलेंज कर रही थी—ताव तो आना ही था उसे—सो दांत भींचते हुए वह दहाड़ा—“हरामजादी! साली मुझे चैलेंज करती है...।”

और ट्रिगर दबा दिया।

“धांय...।”

गोली रीमा राठौर की तरफ लपकी।

ठीक तभी रीमा राठौर थोड़ा दाईं तरफ झुकी और गोली उसकी बगल के करीब से होते हुए निकल गई।

अपना निशाना खाली जाते देख कर गुण्डा भौंचक्का रह गया; मगर उसने तुरन्त ही स्वयं को सम्भाला और पुनः ट्रिगर दबा दिया।

बेवकूफ ने यह नहीं सोचा कि जब चार रिवॉल्वरें एक साथ उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकीं तो उसकी अकेली रिवॉल्वर क्या कर लेगी!

ऐसे में क्या बिगड़ना था रीमा राठौर का?

वह गोली भी कोई कमाल नहीं दिखा पाई।

उस गुण्डे ने बौखलाहट में अंधाधुंध ट्रिगर दबाना शुरू कर दिया।

"धांय...धांय...धांय...धांय...।"

पूरी रिवॉल्वर खाली हो गई उसकी; मगर रीमा राठौर बिल्कुल ठीक-ठाक खड़ी थी।

तब रीमा राठौर ने अपनी रिवॉल्वर निकाल ली और उन सभी पर तानते हुए गुर्राई—

"तुम्हारी तीस की तीस गोलियां बेकार गईं...। अब मेरा निशाना देखो...।

कहने के साथ ही उसने ट्रिगर दबाया।

"धांय...।"

गोली एक गुण्डे के सिर के बालों के बीच सड़क बनाते हुए निकल गई।

उसके बाल उस जगह से गायब हो गए—जहां से गोली निकली थी।

"धांय...धांय...धांय...।"

बाकी के तीन गुण्डों के सिरों के बीचों-बीच भी चौड़ी सड़क बन गई; मगर क्या मजाल जो किसी की चमड़ी जरा सी भी झुलसी हो।

सिर्फ बाल ही गायब हुए थे उनके।

चारों गुण्डे बुरी तरह से बौखलाते हुए अपना सिर टटोलने लगे।

रीमा राठौर ने गुण्डों के सरदार की तरफ रिवॉल्वर का रुख किया और बोली—

"इनके तो बाल ही उड़े हैं—तेरा क्या उड़ाऊं?" कहते हुए उसने रिवॉल्वर का रुख थोड़ा नीचे किया।

बुरी तरह से बौखलाते हुए गुण्डों के कमाण्डर ने अपनी जांघों के बीच हाथ दबा दिया और बौखलाये स्वर में बोला—"खुद को इतना ही पहलवान समझती हो तो रिवॉल्वर छोड़ कर सामने आओ...।"

रीमा राठौर ने एक गहरी सांस छोड़ी और रिवॉल्वर को अपनी जीन्स की बैल्ट में फंसाते हुए बोली—

“तेरी यह तमन्ना भी पूरी कर देती हूं...।”

तुरन्त वह गुण्डा सीधा हुआ, दहाड़ा—खत्म कर दो हरामजादी को...।”

तुरन्त चारों गुण्डे रीमा राठौर पर झपटे।

मगर यह देख कर गुण्डों के कमाण्डर की कंपकपी छूट गई कि अकेले रीमा राठौर उन चारों पर भारी पड़ रही थी।

जैसे-तैसे उसने अपनी घबराहट पर काबू पाया और अपने साथियों का साथ देने के लिए उनसे जा मिला।

मगर उससे रीमा राठौर को क्या फर्क पड़ना था!

वो पांच की बजाये पच्चीस भी होते—तो भी रीमा राठौर का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते थे।

नतीजा...।

कुछ ही देर में पांचों लम्बी-लम्बी सांसें छोड़ते हुए सड़क पर इधर-उधर बिखरे नजर आ रहे थे।

रीमा राठौर ने अपने कपड़े ऐसे झाड़े जैसे उन पर से धूल हटा रही हो—फिर उसने इधर-उधर निगाह दौड़ाई।

काफी दूर खड़े सैकड़ों लोग तमाशा देख रहे थे।

वह एक चलती सड़क थी—जहां से गोली-बारी होने से लोग डर कर जिधर मुंह समाया—उधर भाग निकले थे...।

सड़क पर दोनों तरफ कई कारें खड़ी थीं—जिनमें से करीब की दो-तीन कारों को गोलियों से नुकसान पहुंचा था।

उन पांचों के सड़क पर बिछने के बाद ही तीन आदमी हिम्मत करके आगे आये और रीमा राठौर के करीब आ खड़े हुए।

"आपने तो कमाल कर दिया, रीमा राठौर जी...।" एक बोला—"ऐसी फाईट तो मैंने फिल्मों में भी नहीं देखी। क्या धो-धो कर मारा है आपने इन्हें...।"

"मगर यह हैं कौन?" दूसरा बोला।

"जरूर विशाल कपूर के आदमी होंगे...।" तीसरा नफरत भरे स्वर में बोला—"दोपहर को भी तो उसने रीमा राठौर जी पर हमला किया था...।"

"वो तो अब यह बतायेंगे कि यह कौन हैं...।" रीमा राठौर बोली—"मेरी गाड़ी का टायर बर्स्ट हो गया है। आप थोड़ा कष्ट करेंगे?"

जिस अंदाज से रीमा राठौर ने कहा था, उसे देख कर कोई इन्कार कर ही नहीं सकता था—और वे तो उसके मुरीद थे।

तुरन्त तीन सफारी की तरफ बढ़ गए और पिछले दरवाजे से लगी स्टैपनी खोलने लगे।

एक ने जैक निकाल लिया और उसे अगले पहिये के नीचे हब से लगा कर जैक उठाने लगा।

इधर रीमा राठौर ने जेब से मोबाइल निकाला और ठाकरे के मोबाइल का नम्बर मिलाने लगी।

शीघ्र ही दूसरी तरफ से ठाकरे की आवाज उसके कान के पर्दे से टकराई।

"हैलो...।"

"नेहा का क्या हाल है अब...?" रीमा राठौर बोली।

दूसरी तरफ से गहरी सांस छोड़ने की आवाज आई। फिर ठाकरे का स्वर उसके कान में पड़ा—"दुश्मन अपने इरादे में कामयाब हो गया...।"

"ओह नो!" रीमा राठौर के चेहरे पर मायूसी छा गई।

"खून बहुत ज्यादा निकल गया था। डाक्टरों ने अपनी तरफ से उसे बचाने की पूरी कोशिश की...मगर बचा नहीं पाये।"

रीमा राठौर का चेहरा पत्थर की तरह कठोर हो उठा। आंखों में ज्वालामुखी दहकने लगा।

"तुम फौरन थाने पहुंचो...।" वह गुर्राई—"वहां का काम किसी और के जिम्मे कर दो...।"

"कोई खास बात...?"

रीमा राठौर ने बात सुनने से पहले ही फोन काट दिया।

"आत्माराम!" वह मन-ही-मन फुंफकारी—"अब तू नहीं बचेगा। तेरे को जो भी हथकंडा अपनाना है, अपना ले। अब तो कानून का तेरे पर ऐसा वार होगा कि तेरी सारी की सारी सियासत धरी की धरी रह जायेगी।"

बड़बड़ाते हुए उसकी आंखों से चिंगारियां फूटने लगीं।

उसने अपनी सफारी की तरफ देखा—जिसका पहिया बदलने में तीनों व्यक्ति लगे हुए थे।

पांच मिनट बाद ही तीनों पहिया बदल कर उसके सामने खड़े थे।

"धन्यवाद...।" रीमा राठौर बोली—"एक कष्ट और कर दें—इन सभी को गाड़ी में डाल दें...।"

उसने इधर-उधर बिखरे गुण्डों की तरफ इशारा किया।

तुरन्त वे तीनों इस काम में जुट गए।

सफारी में वे गुण्डों को इस तरह एक-दूसरे के ऊपर फेंकने लगे—जैसे सामान लाद रहे हों।

उधर रीमा राठौर ने सभी की रिवॉल्वरें एकत्र कीं और फिर उस व्यक्ति के पास पहुंची जिसके उसने पेट में गोली मारी थी।

दम तोड़ चुका था वह।

रीमा राठौर ने उसकी स्टेनगन उठाई और उसे सफारी के करीब आकर आगे वाली सीट के नीचे रख दिया।

तीनों का एक बार फिर से धन्यवाद करके उसने ड्राईविंग सीट सम्भाली और वहां से रवाना हो गई।

उसके वहां से जाते ही यातायात ऐसे खुला जैसे सभी गाड़ियां हरी बत्ती का इंतजार कर रही हों।

¶¶

दरवाजा खोलते ही विशाल कपूर का कलेजा धड़क उठा।

अब्दुल खान का चेहरा ही बता रहा था कि कुछ न कुछ गड़बड़ थी।

"क्या बात है, खान भाई...?" उसके भीतर प्रवेश करते ही वह उसके पीछे-पीछे चलते हुए घबराये स्वर में बोला—"सब ठीक तो है...। मेरी नेहा का क्या हाल है...?"

कमरे के दरवाजे के भीतर पहुंच कर अब्दुल खान मुड़ा तो उसकी आंखों में आंसू भरे हुए थे।

"स...ब खत्म हो गया, विशाल भाई...।" उसकी आंखों से आंसू बह निकले—"न...नेहा भाभी नहीं रहीं...। दुश्मन अपने इरादे में कामयाब हो गया।"

कहकर वह उससे लिपट कर जोर-जोर से रोने लगा।

नेहा की मौत की खबर बहुत बड़ा आघात थी विशाल कपूर के लिए।

लेकिन उसकी आंखों से एक भी आंसू नहीं टपका।

हां, चेहरे पर जलजला जरूर था।

अब्दुल खान के रोने की आवाज उसे सुनाई ही नहीं दे रही थी—उसके कानों में तो बस सांय-सायं गूंज रही थी।

तभी अब्दुल खान उससे अलग हुआ और उसके कंधों को पकड़ कर उसे झिंझोड़ते हुए बोला—"तेरी बीवी मर गई है विशाल भाई और तू रो नहीं रहा?

कुछ तो रो! कुछ तो आंसू बहा! रोने से दिल हल्का हो जाता है।"

"नहीं...।" जैसे किसी सोये हुए शेर ने हुंकार भरी हो—"अब मेरी आंखें तभी बहेंगी जब मैं उन कुत्तों को उनके अंजाम तक पहुंचाऊंगा—जिन्होंने मेरी नेहा को मारा है। अब दिल हल्का नहीं होने दूंगा मैं...। इसमें जो ज्वालामुखी दहक रहा है...उसकी आग से मैं सबको जला कर खाक कर दूंगा...।"

हुंकारते हुए उसकी आंखों में आग भरने लगी थी।

¶¶

"ट्रिन...न...न।"

मोबाइल का म्यूजिक बजा।

जाकिर ने जेब से मोबाइल निकाल कर उसका बटन दबाते हुए कान से लगाया और बोला—

"हां बोल—क्या खबर है?"

"खबर बुरी है, भाई...।" दूसरी तरफ से आवाज आई—"रघु मारा गया है...और बाकियों को रीमा राठौर अपने साथ ले गई है।"

बुरी तरह से उछल पड़ा जाकिर...। चेहरे पर अविश्वास उभर आया।

"य...यह क्या बकवास कर रहा है तू...? तूने तो कहा था कि वह अकेली ही है। और...।"

"वो अकेली ही थी, जाकिर भाई—उस अकेली ने ही सबकी ऐसी-तैसी फेर के रख दी थी। ऐसी फुर्ती...ऐसी ताकत मैंने आज तक किसी में भी नहीं देखी जाकिर भाई...जो गोलियों से बच जाये। चार-चार रिवॉल्वरें एक साथ उस पर बरस रही थीं—मगर क्या मजाल जो एक भी गोली उसे छू भी सकी हो। निरंजन का निशाना भी किसी काम नहीं आया और फिर उस अकेली ने पांचों को ऐसा धुना कि सभी जमीन पर बिखरे नजर आने लगे।"

"कहां ले गई है वो सबको?" उसकी बात पर हैरान होते हुए बोला जाकिर।

“यह तो पता नहीं...। बाकी थाने के अलावा वो उन्हें कहां ले सकती है...।”

जाकिर ने आगे कोई बात नहीं की...। उसने उससे सम्बन्ध विच्छेद किया और आत्माराम का नम्बर मिलाने लगा।

¶¶

“शाबास...ठण्ड पड़ गई कलेजे को...।” रिसीवर कान से लगाये अपने सीने पर हाथ रखते हुए बोला आत्माराम—“शुक्र है वह साली मर गई...। वर्ना मेरी तो जान ही अटकी हुई थी। जाकिर के पास जाकर अपना ईनाम ले लेना...और जुम्मन को मेरे पास भेजना—उसे मैं खुद ईनाम दूंगा...।”

उसने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और सामने बैठे निशांत और प्रकाश को देखते हुए मुस्कुराया—

“नेहा मर गई। जुम्मन अपने काम में सफल रहा।”

दोनों ने राहत भरी सांस छोड़ी।

"अभी थोड़ी देर में रीमा राठौर की मौत की खबर भी मिल जायेगी।" आत्माराम बोला—"फिर बचेगा वह हरामी विशाल! उसे भी ढूंढ कर खत्म कर दिया जायेगा और...।"

"ट्रिन...ट्रिन...।"

तभी फोन की घण्टी घनघना उठी।

"लो...आ गई रीमा राठौर की मौत की खबर...।" वह हंसते हुए बोला और रिसीवर उठा कर कान से लगाते हुए बोला—"हैलो...।"

"जाकिर बोल रहा हूं, नेता जी।" दूसरी तरफ से आवाज आई।

"हां बोल...क्या खबर है...?"

"बुरी खबर है, नेताजी।"

आत्माराम की मुस्कान एकदम गायब हो गई—माथे पर बल पड़ गए।

"मिली नहीं क्या वो वकीलनी...?" वह गुर्राया।

"वो तो मिली-उस पर हमला भी किया गया...।"

"तो...?"

"वो हमारी उम्मीदों से कहीं बढ़ कर ताकतवर और तेज निकली—हमारा एक आदमी उसने मार गिराया और बाकियों को अपने साथ ले गई वो। जाकिर के अनुसार अगर उसके सामने बीस भी होते तो वो उनकी भी ऐसी-तैसी फेर देती।"

आत्माराम के चेहरे पर चिंता की लकीरें उभर आईं।

"अब क्या करें, नेता जी?" आवाज आई।

"कमान किसको सौंपी थी तूने उसे मारने की...?" गम्भीरता से बोला वह।

"निरंजन को।"

एक गहरी सांस छोड़ी उसने और बोला—"हालांकि उम्मीद तो नहीं कि वह कुछ बोलेगा—फिर भी तू अपने अड्डे पर उसके स्वागत का पूरा बंदोबस्त कर ले। वहां जितना भी गैरकानूनी माल है, उसे समेट ले। वह हरामन तेरे पास आये तो वह जिन्दा बाहर न निकले और फिर माल लेकर पूना रवाना हो जाना।"

"जी नेता जी।"

"निरंजन को कह रखा है न तूने—उसे विशाल का आदमी बन कर रीमा राठौर पर हमला करना है?"

"जी हां...।"

"ठीक है...मैं कोशिश करता हूं कि उसके सच्चाई बताने से पहले ही सबको वहां से निकाल लूं।"

कहकर उसने पलंजर दबाया और शम्भूनाथ का नम्बर मिलाने लगा।

¶¶

“आप निश्चिंत रहें नेता जी...। वो जगह मेरे ही इलाके में आती है—जहां रीमा राठौर ने आपके गुलामों को पकड़ा था।” रिसीवर कान से लगाये हुए बोला शम्भूनाथ—“मैं अभी जाता हूं और उसे गिरफ्तार करके यहां आता हूं...और कहां ले जायेगी वो—इंस्पेक्टर ठाकरे से याराना है उसका—वहीं उसके थाने में ले जायेगी...। आप बेफिक्र रहें...जी...जी...जी ठीक है...बस अभी निकलता हूं...।”

उसने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और टेबल पर रखी कैप उठाकर सिर पर रखते हुए खड़ा हो गया।

टेबल के पहलू से होते हुए वह ऑफिस से बाहर निकला और कम्पाऊंड से होते हुए बाहर आ उधर बढ़ गया जिधर उसकी जिप्सी खड़ी थी।

जिप्सी के स्टेयरिंग के पीछे बैठ कर उसने इग्नीशन में चाबी डाल कर उसे घुमाया तो घर्रर की हल्की-सी आवाज के साथ जिप्सी का इंजन जाग उठा।

उसने जिप्सी को गियर में डाला और स्टेयरिंग घुमाते हुए उसे आगे बढ़ा दिया।

शीघ्र ही जिप्सी थाने के सदर गेट से निकल कर सड़क पर आई और अंधेरी की तरफ बढ़ने लगी।

अभी वह आधा किलोमीटर ही दूर पहुंचा था कि एक चौराहे पर रेड लाईट होने के कारण उसे गाड़ी रोकनी पड़ी।

स्टेयरिंग से हाथ हटा कर वह अपने सिर पर फेरते हुए इधर-उधर देखने लगा। बांये हाथ में उसने कैप पकड़ रखी थी।

घूमती हुई उसकी निगाह अपने पीछे आ खड़ी हुई बाइक पर भी पड़ी...। मगर उसने उस पर गौर नहीं किया।

यूं भी बाइक सवार पीछे देख रहा था।

उसने गर्दन सीधी की तो बाइक सवार ने भी गर्दन सीधी कर ली।

विशाल कपूर था वह—जो बाइक से अभी-अभी वहां पहुंचा था।

शम्भूनाथ को देख कर उसके नथुनों से भाप निकलने लगी थी—आंखों से चिंगारियां फूटने लगी थीं।

"जा तो मैं जाकिर के पास रहा था।" वह बड़बड़ाया—"मगर अब पहले तेरा शिकार करूंगा...। तू भी तो कलंक है मेरी भारत माता के माथे पर—और आत्माराम का कुत्ता तो तू है ही!"

और जैसे ही हरी बत्ती हुई—वह उसके पीछे लग गया।

करीब दस मिनट बाद ही एक सुनसान रोड पर उसने बाइक चलाते हुए ही जेब से हैंड ग्रेनेड निकाला और उसकी पिन का सिरा दांतों से फंसा कर बाइक को पूरी रफ्तार देते हुए जिप्सी के करीब पहुंचने लगा।

शीघ्र ही वह जिप्सी के बराबर पहुंच गया।

जिप्सी चलाते हुए शम्भूनाथ ने गर्दन मोड़कर उसे देखा तो उसके दांतों में लटक रहे बम को देख कर बुरी तरह से चौंक उठा।

ठीक तभी विशाल कपूर ने बायें हाथ से बम को पकड़ा और दांतों से बम का सेफ्टी पिन खींच लिया।

शम्भूनाथ का कलेजा मुंह को आ गया।

उसे समझते देर नहीं लगी कि उसके इरादे क्या थे?

तुरन्त उसने ब्रेक पर अपना पैर जमा दिया और ठीक तभी विशाल कपूर ने बम जिप्सी की तरफ उछाल दिया और उसी के साथ ही बाइक को रफ्तार दे दी।

बस सीधा शम्भूनाथ के पैरों में जा गिरा।

बुरी तरह से बौखला उठा शम्भूनाथ। ब्रेक लगाने के बावजूद अभी जिप्सी रुकी नहीं थी, वर्ना वह छलांग भी लगा देता।

और तभी—

"बड़ा...म...।"

एक गगनभेदी विस्फोट के साथ जिप्सी के साथ-साथ शम्भूनाथ के परखच्चे उड़ गए।

विस्फोट की आवाज सुनते ही काफी दूर पहुंच चुके विशाल कपूर ने बाइक रोकी और गर्दन मोड़ कर पीछे देखा।

आग का एक बड़ा गोला हवा में काफी ऊपर उड़ रहा था और नीचे जिप्सी के चीथड़े उड़े हुए थे।

उसने एक गहरी सांस छोड़ी और गर्दन सीधी करते हुए बड़बड़ाया—

“अब वापिस अब्दुल के पास जाना होगा...। एक ही बम था—वो चला दिया—दूसरा बम लेने जाना होगा...।”

बड़बड़ाते हुए उसने बाइक आगे बढ़ा दी।

¶¶

“ट्रिन...ट्रिन...।”

फोन की घण्टी बजते ही आत्माराम ने रिसीवर उठाकर कान से लगाया।

"हैलो...।" वह आवाज में गम्भीरता लाते हुए बोला।

"कैसा है रे आत्माराम...?"

दूसरी तरफ से आई आवाज को सुन कर आत्माराम का पारा चढ़ गया।

"कौन बद्तमीज बोल रहा है?" वह गुस्से से बोला।

"दुश्मन को भूला नहीं करते हरामजादे—वर्ना मौत वक्त से पहले उछल पड़ती है।"

सुनकर आत्माराम पहले तो चौंका—फिर उसके होठों पर क्रूर मुस्कान नाच उठी।

"ओहऽ...तो विशाल बोल रहा है तू...।" वह बोला।

"ठीक पहचाना तूने आत्माराम—मैं वही बोल रहा हूं।"

"भई, तेरी बीवी तो मर गई...।"

"पता है मेरे को; मगर तेरे को शायद न पता हो कि नेहा को मारने वाला जुम्मन उससे माफी मांगने चला गया है...।"

"क्या?" बुरी तरह से उछल पड़ा आत्माराम।

"और वर्दी पहन कर तेरे सामने दुम हिलाने वाला शम्भूनाथ भी वहां पहुंच गया है—मैंने उसकी गाड़ी में ही उसकी चिता जला दी है।"

आत्माराम बुरी तरह से बौखला उठा।

"त...तूने शम्भूनाथ को भी मार डाला?" उसे जैसे विश्वास ही नहीं हुआ।

"अभी तो शुरूआत हुई है मेरे इंतकाम की—जिसका अंत तेरी मौत पर होगा।"

सुनकर क्रूरता से हंस पड़ा आत्माराम।

"तू...तू मारेगा मुझे? हा...हा...हा! एक चूहा शेर का शिकार करेगा! हा...हा...हा...।"

"हंस ले—खूब हंस ले, हरामजादे—फिर मैं तेरे मुंह से ऐसी हंसी तब भी सुनूंगा जब मैं तेरी मौत बन कर तेरे तक पहुंचूंगा। तू देखता चल....कैसे पहुंचूंगा मैं तेरे तक...।"

"मैं तेरा बेसब्री से इंतजार करूंगा।" हंसते हुए ही बोला आत्माराम और रिसीवर रख कर गम्भीर होते हुए निशांत और प्रकाश की तरफ देखा।

"क्या कह रहा था, विशाल...।" प्रकाश बोला था।

"उसने जुम्मन और शम्भूनाथ को मार डाला है...।"

"क्या...?" दोनों एक साथ उछल पड़े।

"हां—वह केंचुआ अब नाग बन चुका है। जिसकी जहरीली फुंफकारें मैं फोन पर महसूस कर रहा हूं। इससे पहले कि उसका जहर हम तक पहुंचे—उसका फन कुचलना पड़ेगा।"

"फन तभी कुचला जायेगा न—जब हमें यह पता लगेगा कि वह छिपा कहां हुआ है।"

निशांत चिंतित स्वर में बोला।

"वो भी पता चल जायेगा...।" गम्भीर होते हुए बोला आत्माराम—"मगर उससे पहले हमें निरंजन के बारे में सोचना है। अगर उसने रीमा राठौर को सब कुछ बता दिया तो रीमा राठौर सीधा जाकिर पर जा चढ़ेगी।"

"और जाकिर को आपने सावधान कर ही रखा है अंकल...।" प्रकाश बोला।

"मैं तो यह सलाह दूंगा कि इससे पहले कि रीमा राठौर जाकिर तक पहुंचे-जाकिर ही थाने पर हमला कर दे और निरंजन तथा बाकी चारों को वहीं खत्म कर दे। अभी तो रीमा राठौर ने उससे पूछताछ शुरू ही नहीं की होगी। उसे कुछ जानने का मौका ही न दो। उससे पहले ही सबकी जुबान बन्द कर दो।"

सुनकर आत्माराम की पहले वो आंखें सिकुड़ीं—फिर उनमें एकाएक ही तेज चमक उभर आई।

"हां...।" वह भेड़िये की तरह गुर्राया—"तू ठीक कह रहा है—ऐसा ही होना चाहिये।"

गुर्राते हुए ही उसने रिसीवर उठाया और जाकिर का नम्बर मिलाने लगा।

¶¶

टार्चर सेल में एक कुर्सी पर निरंजन बंधा हुआ था।

उसके दोनों पैर कुर्सी के पायों से बंधे हुए थे और हाथ कुर्सी के हत्थों से बंधे हुए थे।

कपड़े के नाम पर उसके जिस्म पर एक धागा तक नहीं था।

सिर से पांव तक निर्वस्त्र था वह।

उसके सामने एक अन्य कुर्सी पर सिकंदर ठाकरे बैठा था, जिसकी आग उगली आंखें निरंजन को घूर रही थीं।

दो सिपाही निरंजन के दांये-बायें खड़े थे। दोनों के हाथ खड़े थे—जिन्हें चलाने के लिए वे बेकरार नजर आ रहे थे।

थाने में पहुंचते ही रीमा राठौर ने पांचों को सिकन्दर ठाकरे के हवाले

किया—जो कि अस्पताल से उससे पहले ही वहां पहुंच गया था—और निरंजन की तरफ इशारा करते हुए यह कहा था कि वही उन सबाका कमांडर है—सो उससे पूछताछ की जाये।

और फिर उसने स्वयं के लिए हल्के डिनर के लिए कहा।

ठाकरे ने एक सिपाही को उसके लिए डिनर लाने को कहा और फिर बाकी चारों को हवालात में डाल कर निरंजन को टार्चर रूम में ले आया—जहां अब वह कुर्सी से बधा हुआ था।

“मुझे जानता है?” ठाकरे अपनी आंखें उसके चेहरे पर गड़ाते हुए गुर्राया।

निरंजन ने जोरों से थूक सटकी और फंसे स्वर में बोला—"स...सिकन्दर ठा...करे...।"

चेहरे से काफी डरा हुआ नजर आ रहा था वह। उसकी आंखों में खौफ फैला हुआ था।

मगर यह सब ड्रामा था...नाटक था।

भीतर से वह पूरी तरह से बेखौफ था।

"फिर तो तू यह भी जानता होगा कि मैं कैसा इंस्पेक्टर हूं...।" गर्दन अकड़ाई ठाकरे ने।

जवाब में निरंजन के गले की घण्टी जोरों से उछली—होंठ फड़फड़ा कर रह गए।

"नाम बोल अपना...?" आवाज में सख्ती लाते हुए बोला ठाकरे।

"न...निरंजन...।"

"कहां रहता है...?"

"धारावी में...।"

"धारावी में कहां?"

निरंजन ने अपना पता बताया।

"रीमा राठौर को जानता है तू...?"

"न...हीं...।" इन्कार में सिर हिलाया निरंजन ने।

"साले! जब तू रीमा राठौर को जानता ही नहीं तो फिर उस पर हमला क्यों किया...?"

"म...मुझे सुपारी मिली थी, साहब...।"

"सुपारी...।" चौंका ठाकरे।

“ह...हां...। दो लाख में सौदा हुआ था—जिसमें म...मुझे रीमा राठौर का कत्ल करना था।”

“किसने दी सुपारी तेरे को?”

जवाब में निरंजन ने होंठ ऐसे भींच लिए मानो उसने सुपारी देने वाले का नाम न बताने की कसम खा रखी हो।

“बोल...।” ठाकरे ने आंखें तरेरीं।

“म...मैं उसे नहीं जानता-वो...वो मेरे पास नकाब पहन कर आया था।”

“तो तू नहीं बतायेगा?” गुर्राया ठाकरे—“इसकी इतनी सेवा करो...कि इसे याद आये कि इसे किसने सुपारी दी थी!”

आदेश मिलते ही दोनों सिपाहियों के डण्डे कुर्सी के पिछवाड़े पर बरसने लगे और इसी के साथ ही निरंजन के मुंह से चीखें उबलने लगीं।

दरअसल कुर्सी की बैक और सीट इतनी छोटी थी कि कुर्सी के पीछे से निरन्जन का पूरा पिछवाड़ा ही बाहर निकला हुआ था और सिपाहियों ने डण्डे वहां बरसाये थे।

पांच-सात डण्डे पड़ने पर वह जारो से चीख उठा।

"बस...और नहीं...म...मैं बताता हूं।"

ठाकरे ने हाथ उठा कर सिपाहियों को रुकने का आदेश दिया।

तुरन्त दोनों सिपाहियों के चलते हुए हाथ रुक गए।

बोल—"किसने दी थी सुपारी तेरे को?" गुर्राया ठाकरे—"और याद रखना—अगर तूने झूठ बोला तो तेरा वो हाल करूंगा कि बाकी की जिन्दगी पिछवाड़े की सिकाई करते हुए ही गुजार देगा।"

"म...मैं सच बोलूंगा। अ...आ...ह....।" कराहते हुए बोला वह।

"बोल—किसने दी थी सुपारी...?"

“व...विशाल कपूर ने...अ...आ...ह...।”

सुनकर ठाकरे के होठों से गहरी सांस निकल गई—“तो विशाल कपूर ने रीमा पर दूसरा हमला किया था?”

“ह...हां...।”

“कहां है वो हरामजादा?”

“म...मुझे नहीं पता।”

ठाकरे ने आंखें तरेरीं।

“मैं सच कहता हूं...मुझे नहीं पता।” हड़बड़ाते हुए बोला निरंजन—“व...वो कल मेरे पास आया था—और मुझे दो लाख देते हुए यह कहा था कि मुझे रीमा राठौर का कत्ल करना है।”

“तू जानता था उसे?”

“नहीं...मगर वो मेरे को जानता था। और जब उसने अपना परिचय दिया तो मैंने उसे फौरन पहचान लिया—पूरे मुम्बई में उसकी चर्चा थी—उसका नाम सुनते ही मैं पहचान गया।”

ठाकरे खड़ा हो गया।

“हवालात में डाल दो हरामखोर को...।” वह सिपाहियों से बोला—“रीमा राठौर पर जानलेवा हमले के जुर्म में देखना मैं तेरी क्या हालत करता हूं...।”

कह कर वह मुड़ा और टार्चर सैल के दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

उसके निरंजन की तरफ पीठ करते ही निरंजन के होठों पर एक विषैली मुस्कान आकर लुप्त हो गई।

¶¶

अभी रीमा राठौर डिनर कर ही रही थी...जब ठाकरे ने ऑफिस में प्रवेश किया।

उसे देख रीमा राठौर हल्के-से मुस्कुराई और बोली—"लगता है...सब कुछ बता दिया है उसने...।"

"हां...।" ठाकरे उसके बराबर बैठ कर एक रोटी उठाते हुए बोला—"उसका नाम निरंजन है और तुम्हें खत्म करने के लिए विशाल ने सुपारी दी थी।"

सुनकर रीमा राठौर ऐसे चौंकी कि उसके खुले मुंह में से उसकी चबाई हुई रोटी नजर आने लगी।

"क्या हुआ...?" उसे मुंह फाड़े खुद को देखते देख मुस्कुराया ठाकरे।

"विशा...ल ने कराया था यह हमला...?" रीमा राठौर को जैसे विश्वास ही नहीं हुआ।

"हां...।"

"मुझे सारी बात बताओ—जो तुमने उससे पूछी थी और यह भी बताओ कि उसने क्या जवाब दिया था।"

रोटी खाते हुए ठाकरे उसे बताने लगा।

रीमा राठौर ने उसके चुप होने पर पानी का गिलास उठा कर पीया और खड़ी हो गई।

"कहां है वो...?" वह बोली।

"मैंने सिपाहियों को उसे हवालात में डालने को कह दिया है।"

"आओ...।"

"ल...लेकिन...।"

"तुम आओ तो...।" कह कर रीमा राठौर दरवाजे की तरफ बढ़ गई।

ठाकरे ने जल्दी-जल्दी रोटी का आखिरी टुकड़ा सब्जी से भर कर मुंह में डाला और उसे चबाते हुए रीमा राठौर के पीछे-पीछे बाहर निकल गया।

जिस वक्त रीमा राठौर टार्चर सैल में पहुंची—निरंजन फर्श पर खड़ा हुआ शर्ट डाल रहा था।

पैन्ट पहन चुका था वह।

“रहने दे, निरंजन...।” रीमा राठौर गुर्राई—“बटन बन्द मत कर।”

सुनकर निरंजन बुरी तरह से हड़बड़ाया—फिर उसने चेहरा ऐसे बनाया जैसे उसके पिछवाड़े में बहुत दर्द हो रहा हो।

“म...मैंने सब कुछ बता तो दिया है...।” वह थूक सटकते हुए पीड़ा भरी आवाज में बोला।

“जो ठाकरे ने पूछा था...अब मैं पूछंगी। कपड़े उतारो इसके।” वह सिपाहियों से बोली।

सिपाहियों ने तुरन्त निरंजन को जकड़ा और उसे फिर से नंगा कर दिया।

खुद को एक औरत के सामने नंगा देख निरंजन बुरी तरह से हड़बड़ा गया।

"शरमा क्यों रहा है...।" रीमा राठौर कुटिलता से मुस्कुराई—"जब मैं लड़की होकर तेरे को नंगा देख सकती हूं तो तू क्यों शरमा रहा है...।"

कोई और वक्त होता तो अब तक वह रीमा राठौर पर झपट पड़ता; मगर इस वक्त हालात अलग थे और वो पुलिस की गिरफ्त में था।

ऊपर से रीमा राठौर का उसे दोबारा नंगा करवाना...ही बता रहा था कि जरूर उससे कहीं ऐसी गलती हुई थी जिससे रीमा राठौर को संदेह हो गया है कि वह झूठ बोल रहा था।

सो वह रीमा राठौर की बात के जवाब में कुछ नहीं बोला—बस सिर झुका लिया।

"कुर्सी पर बिठा दो इसे और बांध दो...।" रीमा राठौर बोली।

तुरन्त ही दोनों सिपाहियों ने निरंजन को कुर्सी पर बिठा कर बांध दिया।

निरंजन ने मन-ही-मन फैसला कर लिया कि वह मरता मर जायेगा, मगर कुछ बतायेगा नहीं।

रीमा राठौर ने एक सिपाही से डण्डा लिया और उसके सामने पड़ी कुर्सी को एक तरफ खिसका कर निरंजन के सामने जमीन पर पालथी मार कर बैठ गई।

"नीचे क्यों बैठी हो तुम...?" ठाकरे चौंकते हुए बोला।

रीमा राठौर ने उसकी तरफ देखा—मुस्कुराई और बोली—"मेरे नीचे बैठने पर ही यह महाशय प्रवचन देंगे। तुम कुर्सी पर बैठ जाओ...।" कह कर उसने निरंजन को देखा—"तो तेरे को विशाल कपूर ने मेरी सुपारी दी थी...?"

"हां...मैं बता तो चुका हूं।" धड़कते दिल से बोला निरंजन।

"बता तो तू यह भी चुका है कि विशाल ने कल तेरे से मुलाकात की थी...। लेकिन तूने वक्त नहीं बताया कि मुलाकात का वक्त क्या था?"

"स...सात बजे...।" बोला निरंजन।

रीमा राठौर ने डण्डे का अगला सिरा उसके पैर के अंगूठे पर दे मारा।

बुरी तरह से बिलबिला उठा निरंजन। डण्डा उसके अंगूठे पर ऐसे लगा जैसे हथौड़ा पड़ा हो।

"कपड़े कौन-से पहने हुए थे उसने तब...?" रीमा राठौर गुर्राई।

"क...कैदियों वाले...धारी वाले कपड़े...।"

"ठाक...।" पुनः डण्डे का सिरा अंगूठे पर पड़ा।

"आ...ई...।" चीख उठा निरंजन।

"अभी तो शुरूआत हुई है, निरंजन—मैं डण्डे मार-मार कर तेरे पैरों की दसों उंगलियों का बारी-बारी से कचूमर निकाल दूंगी और यकीन मान—अगर तब भी यही रट लगाये रहा तो मैं यह जानते हुए कि तू झूठ बोल रहा है, तेरे पर विश्वास कर लूंगी—तो अब मैं शुरू होती हूं।"

दो ही डण्डों में निरंजन की ऐसी-तैसी फिर गई थी...। आगे क्या होगा, यह सोच कर ही उसकी हालत खराब होने लगी।

"ठाक...।"

तभी अंगूठे के उसी स्थान पर पुनः डण्डा पड़ा।

जोरों से चीख उठा निरंजन।

मगर रीमा राठौर ने जैसे उसकी चीख सुनी ही नहीं। उसने अंगूठे पर फिर से डण्डे का सिरा दे मारा।

निरंजन की चीखें टार्चर सैल की दीवारों को कंपाने लगीं।

उसे ऐसा लगने लगा—जैसे उसके अंगूठे का कचूमर निकल गया हो।

छठे-सातवें डण्डे पर ही वह टूट गया।

"नहीं...मैं बताता हूं...। मैं और दर्द बर्दाश्त नहीं कर सकता।"

"बोल...किसने भेजा था तेरे को मेरे को मारने के लिए?"

"ज...जाकिर भाई ने।"

"जाकिर कौन...?"

"न...नेता जी का मन्त्री है वो।"

"कहां रहता है यह जाकिर...?"

उसने चीखते-कराहते हुए बताया।

"आत्माराम के बारे में बता...।"

"म...मैं न...नेता जी के बारे में कुछ नहीं जानता...मुझे तो जो भी हुक्म मिलता था...जाकिर से मिलता था।"

"क्या-क्या हुक्म देता था तेरे को जाकिर?"

कराहते हुए वह बताने लगा।

उसके अलावा उसने आत्माराम के एक और अड्डे के बारे में भी बताया और यह भी बताया कि जाकिर ने अपने मौजूदा अड्डे से सारा माल समेटने का हुक्म दिया है।

रीमा राठौर खड़ी हो गई।

"इसे हवालात में डाल दो।" वह बोली और फिर ठाकरे को चलने का इशारा कर बाहर निकल गई।

बगोला बना ठाकरे उसके पीछे-पीछे बाहर निकला और तेजी से उसके बराबर आ कर बोला—

"तुमने कैसे जान लिया कि वह झूठ बोल रहा है?"

"वैरी सिम्पल!" राहदारी में आगे बढ़ते हुए मुस्कुराई रीमा राठौर—"रात एक-डेढ़ बजे मुझे उसका फोन मिला, जिसमें उसने मुझे खत्म करने की धमकी दी थी। उस वक्त नेहा को अस्पताल पहुंचाया जा चुका था। विशाल के साढ़ू राकेश के अनुसार रात आठ बजे वो बच्चों को लेकर आशा के पास गई थी। और साढ़े नौ-

दस बजे नेहा आत्माराम के पास से होकर आई थी। जबकि विशाल को अपने जिन्दा होने की खबर सबसे पहले नेहा को देनी चाहिये थी—मगर उसने पहले निरंजन से मिलना उचित समझा। बात गले से उतरती है क्या...?"

ठाकरे ने मुस्कुराते हुए इन्कार में सिर हिलाया और बोला—"इतनी गहरी सोच सिर्फ तुम ही रख सकती हो...।"

"अब जल्दी से फोर्स तैयार रखो और जाकिर के अड्डे पर धावा बोलने के लिए कूच कर दो। मैं आज रात ही आत्माराम को गिरफ्तार हुआ देखना चाहती हूं।"

"तुम बैठो।" ऑफिस के दरवाजे के सामने आते हुए बोला ठाकरे—"मैं पांच मिनट में फोर्स तैयार करता हूं।"

कह कर वह आगे बढ़ गया—जबकि रीमा राठौर ऑफिस में प्रवेश कर गई।

¶¶

उस वक्त जवान तैयार होकर थाने के प्रांगण में इकट्ठे हो रहे थे।

पुलिस की दो गाड़ियां इन्हें ले जाने के लिए तैयार थीं।

ऑफिस में ठाकरे रीमा राठौर से कह रहा था—“सब तैयारी हो चुकी है—चलें...?”

रीमा राठौर ने मुस्कुराते हुए सिर हिलाया और खड़ी हो गई।

ठीक तभी थाने के सदर गेट के बाहर दो टाटा सूमो रुकीं।

देखते ही देखते दोनों सूमो के दरवाजे खुले और उनमें से स्टेनगनों से लैस पन्द्रह गुण्डे बाहर निकले।

गेट पर खड़े संतरी ने उन्हें देखा तो पहले तो वह चौंका...फिर उसने तेजी से कंधे पर लटक रही अपनी राईफल उतारी।

लेकिन कुछ करने का मौका नहीं मिला उसे।

उससे पहले ही एक गुण्डे की स्टेनगन गरज उठी।

“तड़...तड़...तड़...।”

बेचारा संतरी...अपना जौहर दिखाने से पहले ही शहीद हो गया।

गुण्डे उसकी लाश को रौंदते हुए गेट में प्रवेश कर गए।

ठीक तभी ठाकरे और रीमा राठौर बुरी तरह से हड़बड़ाते हुए ऑफिस से बाहर निकले।

गेट पर संतरी की लाश तथा गुण्डों को भीतर प्रवेश करते देख उसका खून खौल उठा।

“खत्म कर दो सबको...।” वह दहाड़ा।

तुरन्त प्रांगण में खड़े सभी सिपाही इधर-उधर बिखरने लगे।

गुण्डों ने अपनी स्टेनगनों के मुंह खोल दिए।

“तड़…तड़…तड़…।” की खौफनाक आवाजों से पूरे थाने की दीवारें थर्राने लगीं।

और जब तक जवान पोजीशन लेते—दो और जवान शहीद हो गए।

एक गोली ठाकरे के कान को छूती हुई निकल गई।

तुरन्त उसने बरामदे में एक पिलर के पीछे छलांग लगा दी और अपनी रिवॉल्वर निकाल ली।

रीमा राठौर ने भी एक अन्य पिलर के पीछे पोजीशन ले ली।

“खत्म कर दो सबको…।” ठाकरे दहाड़ा—“एक भी हरामजादा जिन्दा नहीं रहना चाहिये…।”

पोजीशन ले चुके सिपाहियों ने अपनी राईफलों के मुंह खोल दिए।

दोनों तरफ से गोलियों का आदान-प्रदान होने लगा।

थाने का वह प्रांगण युद्ध-भूमि बन चुका था।

ऐसा लग रहा था—जैसे यहां हिन्दुस्तान-पाकिस्तान की लड़ाई चल रही हो।

जहां ठाकरे अपने थाने पर हुए हमले से गुस्से में था—वहीं सभी जवान अपने जवानों की शहादत पर ताव खाये हुए थे। सो वे चुन-चुन कर गुण्डों का शिकार कर रहे थे।

देखते ही देखते गुण्डों की संख्या पन्द्रह से दस हो गई।

पांच गुण्डे गोलियों से उड़ा दिए गए।

उधर पिलर के पीछे पोजीशन लिए ठाकरे की नजर उस गुण्डे पर पड़ी जो अंधेरे का लाभ लेते हुए उधर बढ़ रहा था जिधर जवान थे।

दांतों को भींचते हुए उसने रिवॉल्वर का रुख उसकी तरफ किया और ट्रिगर दबा दिया।

"धांय...।" गोलियों की आवाज में उसकी रिवॉल्वर की गर्ज तो सुनाई नहीं दी; मगर गोली ने अपना काम कर दिया।

वह गुण्डा चीख मारते हुए वहीं गिर पड़ा।

एक और गुण्डे की लाश बिछ गई।

बाकी जो गुण्डे बचे थे—वे पुलिस की गाड़ियों के पीछे पोजीशन लिए गोलियां बरसा रहे थे।

जिस ढंग से अन्धा—धुन्ध फायरिंग कर रहे थे—उसी से पता चलता था कि वे किस कदर बौखलाये हुए थे; मगर उनके इरादे अटल नजर आ रहे थे। तभी तो वे अभी तक टिके हुए थे—वर्ना वो चाहते तो गोलियां बरसाते हुए आसानी से वहां से भाग सकते थे।

हवालात की तरफ जाने वाले गुण्डे के मरते ही पुलिस की गाड़ी के पीछे पोजीशन लिए गुण्डों के कमाण्डर ने अपने करीब बैठे दूसरे से कहा—

"तू हवालातों की तरफ जा जखीरा—पिलर के पीछे से इंस्पेक्टर ने कालिया को गोली मारी है। मैं कवर फायर करता हूं—तू मौका मिलते ही उधर जा और पांचों को खत्म कर दे। खास कर निरंजन को तो जरूरी मारना है।"

"ठीक है...।" दूसरा बोला—"तू कवर फायरिंग शुरू कर...।"

गुण्डे ने स्टेनगन का रुख ठाकरे वाले पिलर की तरफ किया और

ताबड़तोड़ फायरिंग शुरू कर दी।

पिलर के पीछे छुपा ठाकरे इस तेज फायरिंग में तेजी से अपने आप में सिमट गया।

गोलियां पिलर से टकरा कर इधर-उधर छितरा रही थीं और कई गोलियां पिलर के दांये-बांये से निकल रही थीं।

तुरन्त दूसरा गुण्डा फायरिंग का लाभ उठाते हुए हवालातों की तरफ रेंग गया।

रेंगते हुए वह रास्ते में पड़ी गुण्डे की लाश के पास से होते हुए हवालातों की तरफ तेजी से बढ़ने लगा।

शीघ्र ही वह वहां था—जहां हवालातों की लाईन थी।

एक ही लाईन में पांच हवालात थे।

गुण्डा पहले हवालात के सामने आया तो वह उसे खाली मिला।

दूसरे में दो आदमी थे—जो बुरी तरह से घबराये हुए बाहर की तरफ देख रहे थे। गोलियों की आवाजों ने उन्हें काफी डरा दिया था।

तीसरे हवालात के सामने आते ही गुण्डे की आंखों में तेज चमक उभर आई। सामने निरंजन और उसके चारों साथी नजर आये उसे।

तुरन्त उसने स्टेनगन सीधी की।

मगर—

इससे पहले कि वह गोली चला पाता—

"धांय...।"

पीछे से धमाका गूंजा और गुण्डा कटे वृक्ष की तरह धड़ाम से नीचे गिर पड़ा।

निरंजन—जिसकी हालत स्टेनगन अपनी तरफ उठते ही खराब होने लगी थी—गुण्डे को मरते देख कर वह हैरान रह गया।

तभी उसकी नजर रीमा राठौर पर पड़ी—जो हाथ में रिवॉल्वर पकड़े उसी की तरफ बढ़ रही थी।

निरंजन ने जोरों से थूक सटकी और उनके करीब आने पर वह बस इतना ही बोल पाया—"धन्यवाद...।"

रीमा राठौर ने उसके धन्यवाद के जवाब में कुछ नहीं कहा—वह झुकी, गुण्डे की स्टेनगन उठाई और वहां से हट गई।

तेजी से बढ़ती हुई वह पुलिस की गाड़ियों के पीछे पोजीशन लिए गुण्डों के पीछे जा पहुंची और बिना कोई चेतावनी दिए स्टेनगन का मुंह खोल दिया।

"तड़...तड़...तड़...।"

पीछे से अचानक हुए हमले से गुण्डे बुरी तरह से बौखला उठे।

उनकी लाशें तड़ातड़ नीचे गिरने लगीं।

खलबली मच गई उनमें और वे वहां से भागने लगे—और भागते हुए जैसे ही वे गाड़ी के पीछे से निकले—पुलिस की गोलियों का शिकार होने लगे।

कुछ ही देर में सभी गुण्डों की लाशें बिछ गईं।

रीमा राठौर ट्रक के पीछे से निकली और पिलर के पीछे पोजीशन लिए ठाकरे की तरफ देखते हुए बोली—

"बाहर आ जाओ ठाकरे...।"

ठाकरे के साथ-साथ सभी जवान भी बाहर आ गए।

"वक्त मत गंवाओ।" रीमा राठौर छूटते ही बोली—"शहीद हुए जवानों को सलाम बाद में करना—पहले अपना फर्ज पूरा करो। जाकिर पर हमला करने के लिए फौरन निकलो...।"

ठाकरे ने जल्दी-जल्दी मुन्शी को बुला कर उसे हेडक्वार्टर से फोर्स बुला कर वहां की स्थिति सम्भालने का हुक्म दिया और फिर सभी जवानों को गाड़ियों में चढ़ने का आदेश दे खुद जिप्सी की तरफ बढ़ गया।

रीमा राठौर भी उसके साथ उसकी जिप्सी में सवार हो गई।

कुछ ही देर में पहले जिप्सी थाने के गेट से बाहर निकली—फिर उसके पीछे पुलिस की दोनों गाड़ियां बाहर निकलीं।

पीछे प्रांगण में गुण्डों की लाशें तथा स्टेनगनें इधर-उधर बिखरी नजर आ रही थीं।

उन लाशों में संतरी तथा दो जवानों की लाशें भी थीं और दो सिपाही आंखें फाड़े लाशों को देख रहे थे, जबकि मुन्शी अपने ऑफिस में हैडक्वार्टर फोन कर रहा था।

¶¶

विशाल कपूर ने बाइक जाकिर वाले अड्डे से थोड़ी दूर सड़क किनारे लगे एक विशाल पेड़ के तने के पीछे खड़ी की और उसकी हैडलाईट बन्द करके नीचे उतरा और बाइक की टोकरी में से हैंडग्रेनेड निकाल कर अपनी जेब में डाल लिया।

तने के आगे आकर उसने जाकिर वाले हैडक्वार्टर की तरफ देखा—वह एक दो-मंजिला कोठी थी—जिसके गेट पर स्टेनगन से लैस एक आदमी खड़ा था।

गेट के दोनों तरफ लगे गेट की ही ऊंचाई जितने पिलरों पर लैम्प शैड लगे थे, जिनकी मध्य लाईट पूरे गेट को प्रकाशित कर रही थी।

कोठी में बस दो-तीन कमरों में ही लाईट जलती नजर आ रही थी—वो भी ऊपरी कमरों की। नीचे की मंजिल बाऊंड्री-वाल के पीछे घूमी हुई थी, जो उसे नजर नहीं आ रही थी।

विशाल कपूर ने पहले सड़क क्रॉस की और कोठी वाली लाईन में आकर कोठी की तरफ बढ़ने लगा।

शीघ्र ही वह कोठी की बाऊंड्री-वाल के आखिरी सिरे पर दीवार से लग कर खड़ा था।

पूरी दीवार अंधेरे में डूबी हुई थी—बस बाऊंड्री-वाल का वही हिस्सा रोशन हो रहा था—जहां तक पिलरों पर लगे लैम्पशैडों का प्रकाश पहुंच रहा था।

बाऊंड्री-वाल से लगे हुए वह धीरे-धीरे आगे को सरकता गेट पर खड़े गार्ड की तरफ बढ़ने लगा।

रिवॉल्वर निकाल कर उसने हाथ में ले ली थी और किसी भी खतरे का सामना करने के लिए वह पूरी तरह से तैयार था।

गार्ड की पीठ उसकी तरफ थी।

तभी गार्ड उसकी तरफ घूमा।

तुरन्त विशाल कपूर दीवार से निकल गया।

अपनी सांसें रोक लीं उसने।

मगर गार्ड की नजर उस पर नहीं पड़ी। उसने सड़क पर दूर तक नजर मारी—फिर पुनः विशाल की तरफ पीठ कर ली।

विशाल कपूर पुनः उसकी तरफ बढ़ने लगा और जैसे ही वह उसके करीब पहुंचा—उसने रिवॉल्वर की नाल उसकी पीठ से लगा दी—साथ ही खौफनाक ढंग से गुर्राया—"खबरदार—अगर हिलने की कोशिश की तो गोली चल जायेगी।"

गार्ड का कलेजा मुंह को आ गया।

वह वहीं जड़ होकर रह गया।

"क...कौन हो तुम...?" उसके होठों से बड़ी मुश्किल से निकला।

जवाब में विशाल कपूर ने उसके हाथ में पकड़ी स्टेनगन कब्जाई—फिर थोड़ा पीछे हट कर रिवॉल्वर अपनी जेब में डाल कर स्टेनगन उसकी तरफ तानते हुए गुर्राया—"घूम...।"

गार्ड कांपते हुए उसकी तरफ घूमा और अपने सवाल को दोहराया —"क...कौन हो तुम?"

"कोई सवाल नहीं—मेरी तरफ बढ़...।"

कह कर विशाल कपूर उस पर स्टेनगन ताने हुए पीछे हटा तो गार्ड उसकी तरफ बढ़ा।

बाऊंड्री-वाल की ओट में आकर विशाल कपूर गुर्राया—"भीतर कौन-कौन है?"

"चा...चार आदमी हैं...।"

"और जाकिर—वो चारों में है या पांचवां है?"

"वो पांचवां है।"

"चारों कहां है।"

"लॉबी में बैठे हैं।"

"और जाकिर...?"

"वो अपने कमरे में है।"

"बाहर कौन-कौन है?"

"को...ई नहीं...।"

"झूठ बोल रहा है, हरामजादे—जुम्मन ने तो कहा था कि यहां बीस आदमी हैं और तू कह रहा है पांच हैं?"

"बा...की को जाकिर भाई ने कहीं भेजा हुआ है...।"

"कहां...?"

"प...ता नहीं।"

"कब गए हैं वो...?"

"पौ...न घण्टा हो गया है।"

"वापिस कब आयेंगे वो...?"

"प...ता नहीं।"

"जाकिर किस कमरे में बैठा है?"

"नीचे...बाईं तरफ का दूसरा कमरा उनका है...।"

"तो ऊपर वाली लाईटें क्यों जल रही हैं...?"

"प...ता नहीं...।" थूक सटकते हुए गार्ड बोला।

"पीठ कर ले मेरी तरफ...।" गुर्राया विशाल कपूर।

गार्ड कांपते हुए घूमा और उसकी तरफ पीठ कर ली।

“आगे बढ़...।” स्टेनगन की नाल उसकी पीठ से लगाते हुए गुर्राया विशाल कपूर।

गार्ड आगे बढ़ने लगा।

उसे कवर किए हुए विशाल कपूर गेट में प्रविष्ट हुआ तो उसे ड्राईव-वे के अन्त में ट्रक खड़ा नजर आया—जिसका रुख गेट की तरफ था और पिछवाड़ा कम्पाऊंड की तरफ।

“इस ट्रक में क्या है...?” उसने पूछा।

“ह...हेरोईन...स्मैक...और चरस तथा हथियार...।” बोला गार्ड।

विशाल कपूर के होठों पर एक क्रूर मुस्कान आ गई।

वह गार्ड को गेट के पीछे ले गया और बिना कोई चेतावनी दिए स्टेनगन का बट उसकी खोपड़ी पर दे मारा।

गार्ड जोरों से बाऊंड्री-वाल से टकराया और फिर लॉन में जा गिरा।

विशाल कपूर ने एक और वार उसके सिर पर किया और फिर वहां से हट कर ट्रक की तरफ बढ़ने लगा।

ट्रक के करीब आकर वह पूरी तरह से सतर्क हो उठा।

ट्रक के बराबर से होते हुए वह कम्पाऊंड में आया और दरवाजा खोल कर भीतर प्रवेश कर गया।

सामने लॉबी में सोफों पर चार गुण्डे बैठे किसी बात पर हंस रहे थे...। उनकी स्टेनगन बीच में रखी सेंटर टेबल पर पड़ी थी।

जैसे ही उनकी नजर विशाल कपूर पर पड़ी—उनकी हंसी वहीं रुक गई—और वो तेजी से स्टेनगनों की तरफ झपटे।

लेकिन विशाल कपूर ने उन्हें गनें उठाने का मौका नहीं दिया—उससे पहले ही उसकी स्टेनगन गर्ज उठी...।

“तड़...तड़...तड़...।”

चारों बुरी तरह से चीखते हुए सोफों पर आड़े-तिरछे गिर पड़े।

बेचारों को मुकाबला करने का भी मौका नहीं मिला—उससे पहले ही वे नर्क को रवाना हो गए।

उन्हें खत्म करते ही विशाल कपूर पूरी शक्ति से उस कमरे की तरफ लपका जिसमें गार्ड के मुताबिक जाकिर मौजूद था।

दरवाजे के सामने आकर उसने पैर की ठोकर दरवाजे पर मारी।

“भड़ाक” दरवाजा खुला और पीछे दीवार से जा टकराया।

सामने जाकिर बेड पर खड़ा जल्दी-जल्दी लुंगी बांधने में लगा हुआ था तथा करीब एक युवती बेड पर बैठी ब्रा पहन रही थी।

गोलियों की आवाज सुन कर युवती से मस्ती कर रहा जाकिर उछल कर खड़ा हो गया और अपनी लुंगी पहनने लगा था।

लेकिन उसके लुंगी पहनने से पहले ही मौत उसके सिर पर पहुंच चुकी थी।

“ऐसे ही लुंगी को पकड़े रह जाकिर...।” वह गुर्राया।

लुंगी को गांठ बांधते जाकिर के हाथ वहीं रुक गए...। साथ ही उसका कलेजा जोरों से धड़क उठा।

“वि...शा...ल...।”

“विशाल नहीं मौत बोल, हरामजादे!” फुंफकारा विशाल कपूर और फिर युवती को देख कर गुर्राया—“अपने कपड़े उठा और बाथरूम में चली जा...।”

युवती ने जल्दी-जल्दी कपड़े उठाए और निर्वस्त्र ही बेड से उतर कर कमरे के कोने में बने बाथरूम में जा घुसी।

विशाल कपूर आगे बढ़ा और बेड के करीब पहुंच कर अपनी बाईं टांग उठा कर पैर बेड पर रखा और स्टेनगन का रुख जाकिर की तरफ करते हुए गुर्राया

—"फोन उठा और अपने बाप आत्माराम को वो बोल जो मैं कहता हूं...।"

"देखो विशाल...तुम...।"

"बकवास नहीं जाकिर—वर्ना वक्त से पहले ही मारा जायेगा। फोन उठा।"

जाकिर ने जोरों से थूक सटकी और वहीं बैठ कर रिसीवर उठाया और उसे कान से लगा कर आत्माराम का नम्बर मिलाने लगा।

¶¶

"ट्रिन...ट्रिन...।"

फोन की घन्टी घनघना उठी।

बेड पर एक युवती पर सवार आत्माराम की गति में एकदम से विराम लग गया।

"यह साला फोन जब जी करता है...बज उठता है। यह भी नहीं देखता कि मौका क्या है...?"

आत्माराम बड़बड़ाते हुए युवती के ऊपर से उतरा और आगे सरक कर बेड की पुश्त पर रखा रिसीवर उठाया और बोला—
"हैलो...।"

"जाकिर बोल रहा हूं नेता जी...।"

दूसरी तरफ से जाकिर की आवाज सुनकर आत्माराम सतर्क हो उठा।

"हां बोल जाकिर—काम कर दिया निरंजन का...?"

"वो गए हुए हैं। जैसे ही आयेंगे, आपको फोन कर दूंगा।"

"तो अब फोन क्यों किया...?"

"एक बहुत जरूरी बात करनी है नेता जी।"

“बोल...?”

“मुझे अभी-अभी खबर लगी है कि आपके खिलाफ एक बहुत बड़ा सुबूत विशाल कपूर के घर में पड़ा है।”

“क्...या...?” बुरी तरह से उछल पड़ा आत्माराम—“कैसा सुबूत...?”

“यह मुझे पता नहीं लग सका...। बस इतना ही पता चला है कि सुबूत है...। और रीमा राठौर उस सुबूत को पाने के लिए सुबह वहां पहुंचेगी। आप फौरन किसी को भेज कर पूरे घर की तलाशी लें—कहीं ऐसा न हो कि वह सुबूत रीमा राठौर के हाथ लग जाये।”

“तो फोन क्यों कर रहा है? तू खुद पहुंच वहां...।” धड़कते दिल से बोला आत्माराम।

“समझने की कोशिश कीजिये नेता जी...। मैं अभी यहां से नहीं निकल सकता। मैंने उस आदमी को यहां बुलाया है, जिसने मुझे सुबूत के बारे में बताया है...।”

"ओह!"

"आप जल्दी ही कुछ कीजिये, नेताजी।"

"ठीक है...मैं करता हूं...।" कहकर आत्माराम ने रिसीवर रखा और तुरन्त खड़ा हो गया।

बेड से नीचे उतर कर उसने गाऊन उठा कर पहना और युवती से बोला—

"ऐसे ही लेटी रहना—मैं अभी आ रहा हूं...।"

कह कर वह दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

लॉबी पार कर वह निशांत के कमरे के दरवाजे के सामने पहुंचा और दरवाजे पर दस्तक दी।

"खट...खट...खट...।"

"कौन है...?" भीतर से निशांत की आवाज आई।

"कपड़े पहन कर बाहर आ—फौरन...।" बोला आत्माराम और वहां से हट कर उधर बढ़ गया जिघर सोफे पड़े थे।

उसके सोफे पर बैठने के दो मिनट बाद ही निशांत दरवाजा खोल कर बाहर निकला और आत्माराम के सामने आकर बैठते हुए बोला—

"कोई खास बात है क्या, पापा...?"

"जाकिर का फोन आया था...।" गम्भीरता से बोला आत्माराम—"उसे पता लगा है कि विशाल कपूर के घर में हमारे खिलाफ कोई ऐसा सुबूत पड़ा है जो हम तीनों को फंसा सकता है...।"

सुनकर बुरी तरह से हड़बड़ा उठा निशांत।

"यह आप क्या कह रहे हैं, पापा...?"

"तू फौरन वहां जा और उस सुबूत को ढूंढ कर लेकर आ। मैं एक छोटा-सा भी रिस्क नहीं लेना चाहता...। हां...एक बार रीमा राठौर खत्म हो जाये फिर कोई परवाह नहीं।"

“मगर वो घर तो पुलिस ने सील किया होगा?” बोला निशांत।

“तो किसी और रास्ते से भीतर घुसना और रिवॉल्वर साथ ले जाना। कहीं भी खतरा नजर आये तो फौरन गोली चला देना।”

“प्रकाश को भी साथ ले जाता हूं।”

“नहीं...तू ही जा...। उसे अभी ऐसे कामों का इतना तजुर्बा नहीं जितना तेरे को है। ऐसा न हो कि वह वहां पर कोई ऐसी गलती कर दे, जिससे हमें लेने के देने पड़ जायें।”

निशांत ने सिर हिलाया और खड़ा हो गया।

¶¶

जाकिर के फोन रखते ही विशाल कपूर के होठों पर एक क्रूर मुस्कान आकर लुप्त हो गई।

“क्या कहा आत्माराम ने...?” वह बोला।

उत्तर में जाकिर ने बताया...फिर बोला—"नेता जी से दुश्मनी मोल ले कर तुमने अच्छा नहीं किया विशाल...। क्या जरूरत थी तुम्हें उनसे पंगा लेने की? खामखां प्रकाश और अंजली का स्टिंग ऑपरेशन कर दिया। क्या मिला तुम्हें—जेल! ऊपर से तुम्हारा घर तबाह हो गया। मैं तो तुम्हें अब यही सलाह दूंगा कि तुम इस शहर को छोड़ कर कहीं दूर जाकर अपना नया घर बसा लो और...।"

"बकवास बन्द कर अपनी, हरामजादे...।" फुंफकार उठा विशाल कपूर।

"म...मैं तो तुम्हें सलाह दे रहा था।" हड़बड़ाते हुए बोला वह।

"यहां पर पन्द्रह आदमी और भी रहते हैं—वो कहां गए हैं...?" अपनी बात की विशाल कपूर ने।

बुरी तरह से चौंक उठा जाकिर—"त...तुम्हें कैसे पता...?"

"जुम्मन ने मरने से पहले बता दिया था मुझे...। कहां गए हैं वो...।"

"वो...वो किसी काम से गए हैं...।"

"किस काम से...?"

जाकिर ने थूक सटकी और फंसे स्वर में बोला—"रीमा राठौर ने हमारे पांच आदमियों को पकड़ लिया था...।

अगर रीमा राठौर ने उनकी जुबान खुलवा ली तो उसे यहां का सारा पता चल जायेगा। इसलिए मैंने सबको थाने पर हमला करके उन पांचों को खत्म करने के लिए भेजा है...।"

सुन कर गम्भीर हो उठा विशाल कपूर।

"तो रीमा राठौर अपनी गलती सुधारने के लिए पूरे जोर-शोर से आत्माराम के पीछे लगी हुई है...।" वह मन-ही-मन बड़बड़ाया।

"लेकिन आत्माराम तेरा नहीं, मेरा शिकार है रीमा राठौर! तेरे से पहले ही मैं मौत बन कर उस तक पहुंच जाऊंगा...।"

उसने जाकिर की आंखों में झांका और गुर्राया—

"बाहर ट्रक में जो माल लदा है—क्या इसके अलावा भी माल है उसका?"

"नेता जी यहां बस इतना ही माल मंगाते हैं जितना आर्डर होता है। यह सारा माल सुबह सप्लाई हो जायेगा।"

"तो गोदाम कहां है...?"

"पूना में...। यह माल भी उन्होंने अभी पूना भेजने को कहा है।"

"पूना में कहां...?"

जाकिर ने बताया—फिर बोला—"वहां प्रकाश बाबू के पापा रहते हैं—उनकी और नेता जी की पार्टनरशिप है। वैसे सारा काम वही सम्भालते हैं। यहां पर तो बस वही काम होता है—जो मैं करता हूं...। नेता जी नहीं चाहते कि उनका नाम ऐसे कामों में आये।"

"प्रकाश के बाप का नाम बोल...।"

"विजय कुमार...।"

"कहां रहता है यह विजय कुमार?"

उसने बताया।

विशाल ने उससे दो-तीन सवाल और किए और फिर स्टेनगन का ट्रिगर दबा दिया।

"तड़...तड़...तड़...।"

एक साथ दर्जनों गोलियां जाकिर के जिस्म में जा समाईं।

जाकिर का बदन जोरों से उछला और बेड पर गिर पड़ा।

विशाल ने नफरत से उसकी लाश पर थूका और कमरे से बाहर निकल गया।

कम्पाउंड में आकर उसने स्टेनगन को एक तरफ फेंका...जेब से बम निकाला और ट्रक के बराबर से होते हुए ट्रक से आगे आया और गेट की तरफ बढ़ते हुए ही उसने दांतों से हैंडग्रेनेड की पिन को खींचा और बिना पीछे मुड़े बम को पीछे की तरफ उछाल दिया।

इधर उसने गेट से बाहर कदम रखा—उधर पीछे से गगनभेदी धमाका हुआ।

"बड़ा...म...।"

ट्रक के परखच्चे उड़ गए।

कई बड़े टुकड़े उड़ कर विशाल कपूर की तरफ भी लपके; लेकिन तब तक वह बाऊंड्री-वाल की ओट में हो चुका था।

सो टुकड़े बाऊंड्री-वाल पार कर उसके करीब तो गिरे; मगर उसका कुछ नहीं बिगड़ा।

भीतर ट्रक धूं-धूं करता जल रहा था।

काला धुंआ जलती हुई आग में से ऐसे निकल रहा था जैसे हजारों टन लकड़ी एक साथ जल रही हो।

विशाल कपूर ने सड़क क्रॉस की और तेजी से उस वृक्ष की तरफ बढ़ने लगा जहां उसकी बाइक खड़ी थी।

इधर वह बाइक से वहां से रवाना हुआ—उधर पुलिस की गाड़ियां गेट के सामने आकर रुकीं।

जिप्सी में ठाकरे के बराबर बैठी रीमा राठौर ने धूं-धूं कर जल रहे ट्रक को देखा तो गहरी सांस छोड़ कर रह गई वो।

“लगता है आत्माराम को पता चल गया था कि पुलिस यहां छापा मारने जा रही है—सो उसने हमारे पहुंचने से पहले ही यहां सब कुछ खत्म कर दिया...।” ठाकरे गम्भीरता से बोला।

रीमा राठौर ने एक बार गर्दन मोड़ कर उसकी तरफ देखा—फिर बिना कुछ बोले जिप्सी से उतरी और खुले गेट में प्रवेश कर जलते हुए ट्रक की तरफ

बढ़ी।

कोठी की बाहरी दीवारें काली पड़ गई थीं और आग की तपिश कम्पाऊंड के दरवाजों को झुलसाने में लगी थी।

साफ नजर आ रहा था कि जल्दी ही आग पूरी कोठ को अपनी चपेट में ले लेगी।

जबकि रीमा राठौर कोठी के भीतर का मुआयना करना चाहती थी।

कम्पाऊंड की तरफ से तो वो भीतर जा नहीं सकती थी। सो वह लॉन से होते हुए कोठी की दाईं तरफ बढ़ी—जहां पीछे जाने का रास्ता था।

इधर गेट के पास खड़े ठाकरे ने जल्दी-से मोबाइल निकाला और फायर ब्रिगेड का नम्बर मिला कर मोबाइल कान से लगाया और जैसे ही दूसरी तरफ से आवाज आई—उसने जल्दी-जल्दी उस जगह का पता बता कर फौरन वहां पहुंचने को कहा।

उधर गली पार कर रीमा राठौर जैसे ही कोठी के पीछे पहुंची; एक लड़की पर नजर पड़ी उसकी—जो बुरी तरह से घबराई हुई कोठी से निकल रही थी।

तुरन्त रीमा राठौर ने रिवॉल्वर निकाली और दहाड़ी—“कौन हो तुम...?”

दहाड़ सुन कर उस लड़की के होठों से दहशत भरी चीख उबल पड़ी।

“म...मुझे मत मारो...मैंने कुछ नहीं किया।” वह दोनों हाथ आगे करते हुए चीखी।

रीमा राठौर आगे बढ़ कर उसके पास पहुंची।

“कौन हो तुम...?” वह उसे घूरते हुए बोली।

“अं...जू...।”

“यहां क्या कर रही हो?”

“ज...जाकिर ने बुलाया था।”

“जाकिर ने बुलाया था? ओह! तो उसका बिस्तर गर्म करने करने आई थीं तुम...?”

कुछ नहीं बोली अंजू—बस थूक सटक कर रह गई।

“जाकिर कहां है?”

“अन्दर...उसने उसे मार डाला...।”

“किसने...?” चौंकते हुए बोली रीमा राठौर।

“वि...शाल ने...जाकिर ने इसी नाम से उसे पुकारा था—और उसने मुझे बाथरूम में बन्द कर दिया था...।” सब कुछ बताती चली गई वह।

रीमा राठौर के होठों से गहरी सांस निकल गई।

“तेरे बाथरूम में बन्द होने के बाद दोनों में क्या बात हुई, तूने सुना कुछ...?” उसने पूछा।

अंजू ने जोरों से सिर दायें-बायें हिलाया।

"बाहर जा...बाहर पुलिस खड़ी है...। वहां जाकर बता सब कुछ।"

कह कर रीमा राठौर उसी दरवाजे से कोठी में प्रवेश कर गई...। वह कोठी के भीतर ऐसा कुछ ढूंढना चाहती थी जो उसे आत्माराम की गर्दन पकड़ने में सहायक हो सके।

भीतर प्रवेश करते ही उसकी नजर लॉबी में पड़ीं चारों गुण्डों की लाशों पर पड़ी।

कुछ पलों के लिए उसने लाशों को देखा...फिर वह वहां से हटी और उस कमरे की तरफ बढ़ गई जिसमें कि जाकिर की लाश पड़ी थी।

कमरे में पहुंच कर उसने पहले बेड पर पड़ी लाश को देखा, फिर कमरे की तलाशी लेने में जुट गई।

शीघ्र ही ठाकरे भी भीतर आ गया और रीमा राठौर के कहने पर वह भी तलाशी लेने लगा।

बाहर पुलिस ने कोठी को चारों तरफ से घेर लिया था।

शीघ्र ही घण्टियां बजाती हुई फायर ब्रिगेड की दो गाड़ियां वहां पहुंच गईं।

¶¶

निशांत ने कार विशाल कपूर के घर से थोड़ा पहले ही एक मकान के गेट के आगे खड़ी की और दरवाजा खोल कर बाहर आ गया।

उसने कार का दरवाजा बन्द किया और लॉक लगा कर चाबी जेब में डाली और विशाल कपूर के मकान की तरफ बढ़ने लगा। हर तरफ सन्नाटा फैला हुआ था।

किसी-किसी मकान के बाहर लाईट जल रही थी...वर्ना सभी मकान अंधेरे में डूबे हुए थे।

निशांत मकान के गेट के सामने आया...जिस पर लगे ताले पर पुलिस की सील लगी हुई थी।

एक नजर सील पर डाल कर वह थोड़ा दाईं तरफ हटा और बाऊंड्री-वाल के ऊपरी सिरे को पकड़ कर थोड़ा उछला और बाऊंड्री-वाल को पार करते हुए भीतर कूद गया।

बाऊंड्री-वाल ज्यादा ऊंची नहीं थी—जिससे उसे फांदने में जरा भी परेशानी नहीं हुई।

छोटे से लॉन को पार कर वह कम्पाऊंड में आया और मकान के मेन गेट पर लगे ताले को टटोल कर देखा—तो वहां भी पुलिस की सील लगी हुई थी।

वह मेन गेट के सामने से हटा और दूसरे दरवाजे के सामने आ पहुंचा...।

वहां भी सील लगा ताला था।

गहरी सांस छोड़ी उसने और कम्पाउंड से निकल कर खिड़कियों को चैक करते हुए मकान के पिछले हर हिस्से की तरफ बढ़ा।

पीछे जाने की जरूरत नहीं पड़ी उसे।

तीसरी खिड़की पर उसने हाथ का दबाव डाला तो खिड़की का पल्ला भीतर की तरफ झूल गया।

भीतर घुप्प अंधेरा था।

दोनों हाथों को आगे की तरफ फैलाते हुए वह धीरे-धीरे उधर बढ़ा जिधर नेहा का बेडरूम था।

उसी कमरे में ही तो उन्होंने कत्ल किए थे...और वहीं प्रकाश ने नेहा की इज्जत लूटी थी।

ऐसे में अगर कोई सुबूत छूटा था तो उसी कमरे में होना चाहिये था।

इसीलिए उसने सबसे पहले उसी कमरे को चैक करने का निश्चय किया था।

धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए वह बेडरूम के दरवाजे तक पहुंचा और टटोल कर उसका कुण्डा देखा—तो वह पहले से ही खुला हुआ था।

हैंडल को पकड़ कर उसने उसे नीचे दबाया और दरवाजे को भीतर की तरफ धकेलते हुए भीतर प्रवेश कर गया।

जैसे ही उसने दरवाजे का हैंडल छोड़ा और स्विच बोर्ड की तरफ मुड़ा—

"ठाक्क...।"

पीछे से उसके कूल्हों पर जबरदस्त प्रहार हुआ।

उसे सपने में भी ऐसे किसी हमले की उम्मीद नहीं थी—सो बुरी तरह से चीखते हुए वह उछल कर मुंह के बल नीचे गिरा।

गिरते ही वह तेजी से पलटा।

"खट...।" तभी एक हल्की-सी आवाज के साथ बल्ब की रोशनी कमरे में फैल गई।

बुरी तरह से बौखलाये हुए निशांत ने जैसे ही स्विचबोर्ड की तरफ देखा-उसके होठों से घुटी-घुटी-सी चीख उबल पड़ी।

आंखें फट पड़ीं—कलेजा उछल कर हलक में आ फंसा...।

सामने विशाल कपूर खड़ा था—जिसके हाथ में थमी रिवॉल्वर का रुख उसी की तरफ था।

"वि...शा...ल...।" उसके होठों से कांपता स्वर निकला।

"हां मैं! तेरी मौत!" विशाल फुंफकारा और उसके करीब आकर अपने बूट की भरपूर ठोकर उसके मुंह पर दे मारी।

बुरी तरह से चीखता हुआ निशांत पीछे को पलट गया...और अपनी कांख दबा ली।

बूट की ठोकर उसकी कांख पर पड़ी थी।

पीड़ा से निशांत का बुरा हाल हो रहा था।

“इसी कमरे में मेरे बच्चों को मारा था न तुमने...?” किंग कोबरा की तरह फुंफकारा विशाल कपूर।

“मु...मुझे माफ कर दो, विशाल...।” अपनी कांख दबाये हुए गिड़गिड़ाया विशाल।

“कैसे मारा था मेरी गुड़िया और मुन्ना को...?” कहते हुए विशाल ने उसके पेट में ठोकर मारी।

बुरी तरह से बिलबिलाते हुए निशांत ने दोनों हाथों से अपना पेट दबाया तो उसकी कांख से बहता खून नजर आने लगा।

“म...मुझे माफ कर दो...।” वह गिड़गिड़ाया।

“कैसे मारा था मेरे बच्चों को? बोल हरामजादे...।”

घिघियाते हुए निशांत ने उसे सब कुछ बताया तो विशाल कपूर की आंखें भर आईं।

"मेरे बच्चों को पटक कर मार डाला तुम दोनों बाप-बेटों ने—मेरी नेहा की इज्जत लूट ली प्रकाश ने और उसके पेट पर घूंसे मार-मार कर मेरे अजन्मे बच्चे का भी खून कर दिया और फिर अस्पताल में मेरी नेहा को भी मार डाला...।"

"म...मुझे माफ कर दो...।" निशांत घिघियाया—"तुम जो कहोगे तो मैं अभी पुलिस के सामने जाकर अपना गुनाह कबूल कर लेता हूं...।"

"अब वो वक्त निकल गया, हरामजादे...।" गुर्राया विशाल—"अब तो सिर्फ मेरी ही अदालत लगेगी—जिसमें वकील भी मैं होऊंगा—जज भी मैं और जल्लाद भी मैं...।"

"नहीं...।"

"खड़ा हो...।"

बुरी तरह से कराहते हुए निशांत खड़ा हुआ तो विशाल कपूर ने उसके पेट में लात मार दी।

चीखता हुआ निशांत बेड पर जा गिरा।

“अपने बाप को फोन लगा और उससे बोल कि वो तेरे को आकर बचा ले...।”

गुर्राते हुए विशाल ने बेड की पुश्त पर रखे फोन की तरफ इशारा किया।

निशांत कराहते हुए पीछे सरका और फोन के करीब पहुंच कर रिसीवर उठाया और आत्माराम का नम्बर मिलाने लगा।

¶¶

उस वक्त आत्माराम अपने नीचे दबी युवती से निपट कर उसके ऊपर से उतरा ही था कि फोन की घण्टी बज उठी।

“ट्रिन...ट्रिन।”

सरक कर वह फोन के करीब आया और रिसीवर उठा कर कान से लगाते हुए बोला— “हैलो...।”

“पा...पा...।”

दूसरी तरफ से निशांत की रोती-कराहती आवाज को सुनकर आत्माराम का कलेजा दहल उठा।

“क्या हुआ निशांत बेटे...तू ठीक तो है न...?”

“म...मुझे बचा लो, पापा...मुझे बचा लो...।” दूसरी तरफ से रोती हुई आवाज आई।

आत्माराम के सीने पर जैसे घूंसा लगा अपने बेटे की रोती आवाज सुन कर।

“हुआ क्या तुझे, बेटे...? कुछ बोल तो सही...?”

“तेरा बेटा मरने जा रहा है, आत्माराम...।”

तभी दूसरी तरफ से फुंफकार सुनकर आत्माराम बुरी तरह से उछल पड़ा।

“क...कौन बोल रहा है?”

“विशाल...।” दूसरी तरफ से गुर्राहट उभरी—“बहुत शौक है न तेरे को दूसरों की जान लेने का—अब अपने बेटे की चीख सुन...।”

“न...हीं...।” गुर्रा उठा आत्माराम—“खबरदार जो तूने मेरे बेटे को छुआ भी तो.....।”

“घबरा नहीं...मैं नहीं छुऊंगा तेरे छोकरे को...हां...मेरी गोली जरूर इसके सीने में घुसेगी।”

“बकवास बन्द कर, हरामजादे...। अगर अपनी खैरियत चाहता है तो चुपचाप मेरे बेटे को छोड़ दे। तू नहीं जानता मैं कितना खतरनाक हूं!”

“अब तो तेरे से ज्यादा खतरनाक मैं हो चुका हूं, हरामजादे...तू क्या समझता है चालें चलनी सिर्फ तेरे को ही आती हैं?

मेरी चाल देखी—कैसे तेरा होनहार इकलौता बेटा मौत के मुंह में आ पहुंचा?”

"क्...या मतलब...?"

"तेरा सबसे बड़ा गुलाम जाकिर मर चुका है। वहां एक ट्रक भी खड़ा था—उसे भी उड़ा दिया है मैंने...और अब तेरे बेटे को उड़ाने की बारी है।"

आत्माराम को काटो तो खून नहीं—"ज...जाकिर मर गया...?"

"और अब नया धमाका सुन...। सुनेगा न गोली की आवाज कैसी होती है?"

"न...हीं विशाल...मेरे बेटे को छोड़ दो...।" गिड़गिड़ा उठा आत्माराम।

"मेरी नेहा भी तेरे सामने ऐसे ही गिड़गिड़ाई थी—क्या तूने उसे छोड़ा...उसकी आंखों के सामने उसके दोनों बच्चों को मार डाला और अब जब अपने खून का खून हो रहा है तो गिड़गिड़ा रहा है?"

"नहीं विशाल...निशांत को कुछ मत कहना...उसे...।"

"धांय...धांय...।"

आत्माराम के कान में दो धमाके गूंजे और उनकी बात वहीं रुक गई।

"राम नाम सत्य है...।" दूसरी तरफ से आवाज आई।

आत्माराम के कानों में सांय-सांय होने लगी।

"त...तूने मेरे बेटे को मार डाला...।" वह ऐसे बोला—जैसे गहरे कुंए में खड़ा हो।

"मेरी पत्नी के पास माफी मांगने भेजा है मैंने उसे—अब तेरी और प्रकाश की बारी है।"

"हरा...म...जा...दे...मैं तुझे जिन्दा नहीं छोड़ूंगा।"

आत्माराम इतनी जोर से दहाड़ा कि कोठी के कई नौकर कमरों से निकल कर उसके कमरे की तरफ लपके।

“हा...हा...हा...।” विशाल के होठों से शैतानी ठहाका निकला—“तेरी तड़फ देख कर मुझे कितना सकून मिल रहा है...यह मैं ही जानता हूं।”

“तूने तो सुकून हासिल कर लिया, हरामखोर—अब मुझे सुकून तब मिलेगा—जब मैं तेरी लाश को अपनी आंखों से देखूंगा।”

“यह तो अब वक्त ही बतायेगा कि कौन किसकी लाश को देखता है...। फिलहाल तो अपने बेटे की लाश उठवा और फूंक डाल।”
कह कर उसने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और निशांत की लाश को देखा...जो बेड पर पड़ी थी।

उसने रिवॉल्वर की नाल में फूंक मारी...उसे जेब में डाला और बाहर निकलता गया।

¶¶

“ट्रिन...ट्रिन...।”

फोन की घण्टी की आवाज सुन कर बरामदे में खड़े मुन्शी ने थाने के प्रांगण में लाशों को उठा रहे, उनका निरीक्षण कर रहे हैडक्वार्टर से आये अधिकारियों पर से निगाह हटाईं और अपने दफ्तर में जा घुसा।

टेबल के करीब पहुंच कर उसने रिसीवर उठाया और कान से लगाते हुए बोला—"हैलो!"

"आप थाने से बोल रहे हैं?" दूसरी तरफ से आवाज आई।

"जी हां...आप कौन बोल रहे हैं?"

"मैं धर्मपाल बोल रहा हूं—विशाल कपूर का पड़ोसी। अभी-अभी विशाल कपूर के घर से गोलियां चलने और चीखने की आवाजें आई हैं...।"

"क्या...?" चौंका मुन्शी।

"मेरा फर्ज आपको सूचित करने का था, वह कर दिया—अब आपने क्या करना है, यह आप जानें...।"

दूसरी तरफ से आवाज आई और सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

मुन्शी ने तुरन्त पलंजर दबाया और ठाकरे के मोबाइल का नम्बर मिलाने लगा।

¶¶

फायर ब्रिगेड ने आग पर काबू पा लिया था। फिर भी आग कम्पाऊंड वाले खिड़की-दरवाजों को जला गई थी।

गनीमत थी आग ज्यादा नहीं फैली थी।

भीतर अभी भी रीमा राठौर और ठाकरे तलाशी के काम में जुटे हुए थे।

तभी ठाकर का मोबाइल बजने लगा।

"डिंग...डिंग...डिंग...।"

उस वक्त रीमा राठौर वार्डरोब की तलाशी ले रही थी...। तथा ठाकरे ड्रैसिंग टेबल की दराजें उलट रहा था।

उसने हाथ में पकड़ी दराज वहीं रखी और जेब से मोबाइल निकाल कर उसका बटन दबाते हुए कान से लगाया।

"हैलो...।"

"थाने से मुन्शी बोल रहा हूं, सर...।"

दूसरी तरफ से मुन्शी की उत्तेजित आवाज सुनकर ठाकरे चौंक उठा।

"सब ठीक तो है न...?" वह बोला।

"अभी-अभी विशाल कपूर के पड़ोसी धर्मपाल का फोन आया था सर—विशाल के घर में गोलियां चली हैं।"

"क्या...?" बुरी तरह से चौंकते हुए ठाकरे खड़ा हो गया।

रीमा राठौर अपना काम छोड़ उसे देखने लगी।

"यस सर—फोन आते ही मैंने आपको सूचना दे दी...।"

"ठीक है। मैं देखता हूं...।"

कह कर उसने मोबाइल कान से हटा कर जेब में रखते हुए रीमा राठौर को देखा।

"किसका फोन था...?" रीमा राठौर बोली।

"विशाल के घर में गोली चली है...। अभी-अभी एक पड़ोसी ने खबर की है।"

बुरी तरह से चौंक उठी रीमा राठौर और अपना काम बीच में छोड़ उसके पास आते हुए बोली—

"फौरन वहां चलो—यहां की तलाशी का काम सिपाहियों को दे दो।"

ठाकरे को भी यही ठीक लगा। वह यही समझा कि हो न हो विशाल की हत्या की गई थी।

तुरन्त दोनों कोठी से निकले...।

ठाकरे ने कोठी को घेर कर खड़े जवानों में से पांच को कोठी की तलाशी लेने का काम सौंपा और बाकियों को कोठी घेरे रहने का आदेश देकर जिप्सी की तरफ बढ़ गया।

उसके पीछे-पीछे रीमा राठौर भी थी।

¶¶

गुस्से से, गम से भरा आत्माराम कमरे का दरवाजा खोल कर बाहर निकला तो बाहर आठ-दस नौकर तथा उसके बॉडीगार्ड खड़े थे।

उनमें प्रकाश भी था।

"क्या हुआ, अंकल...सब ठीक तो है न...आप चीखे क्यों...?"

वह तुरन्त उसके सामने आ कर बोला।

तभी आत्माराम के कमरे में मौजूद युवती भी बाहर निकली और नौकरों में खड़ी हो गई।

प्रकाश के प्रश्न पूछने पर आत्माराम की आंखों से आंसू बह निकले।

उसने प्रकाश को अपने सीने से लगाया और फूट-फूट कर रोने लगा।

प्रकाश हैरान-परेशान...उसकी समझ में कुछ नहीं आया कि आत्माराम जैसा शैतान ऐसे क्यों रो रहा था।

"क्या हुआ अंकल? कुछ बताईये तो सही।" वह उससे अलग होते हुए बोला।

"निशांत...।" कहकर वह फिर रोने लगा।

"निशांत...!" बुरी तरह से चौंका प्रकाश और इधर-उधर ऐसे देखा—जैसे निशांत को देख रहा हो—फिर पुनः आत्माराम को देखते हुए धड़कते दिल से बोला—"निशांत को क्या हुआ...? कहां है वो?"

"वो अब नहीं रहा...।"

प्रकाश के सिर पर जैसे लॉबी की छत आ पड़ी।

वहां खड़े तमाम लोग भौंचक्के रह गए।

कुछ पलों तक तो प्रकाश हक्का-बक्का-सा ठगा सा रहा—फिर एकदम से चीख पड़ा—"यह...यह आप क्या कह रहे हैं, अंकल...? वो तो मेरे सामने अपने कमरे में गया था...।"

"उसके बाद जाकिर का फोन आया था...।" अपनी आंखें पौंछते हुए बोला आत्माराम और उसने सारी बात बता दी—फिर अपनी आंखों में अंगारे भरते हुए फुंफकारा—"मुझे वह हरामजादा विशाल चाहिये—किसी भी कीमत पर चाहिये प्रकाश...।"

"ऐसा ही होगा, अंकल...।" प्रकाश का भी पूरा वजूद सुलग उठा—"उस हरामजादे को निशांत की मौत का हिसाब देना ही होगा; मगर उससे पहले हमें निशांत की लाश यहां लानी है। अगर पुलिस वहां पहुंच गई तो हमें पुलिस के कई

सवालों के जवाब देने मुश्किल पड़ जायेंगे—और रीमा राठौर तो यूं भी हमारी दुश्मन बनी हुई है।"

"तू ठीक कह रहा है...।" खुद को सम्भालते हुए बोला आत्माराम—"हमें पहले निशांत को यहां लाना है।"

कहकर उसने अपने दो नौकरों को देखा—जो चेहरों से ही नौकर नहीं बल्कि खूंखार दरिंदे नजर आ रहे थे।

"फौरन हमारे बेटे को पूरी हिफाजत से ले कर आओ...।" वह गुर्राया।

दोनों ने तुरन्त सिर झुकाया और वहां से हट कर दरवाजे की तरफ बढ़ गए।

¶¶

विशाल कपूर के घर के आगे अड़ोस-पड़ोस के लोगों की भीड़ लगी हुई थी।

सो ठाकरे को जिप्सी थोड़ी पहले ही खड़ी करनी पड़ी।

रीमा राठौर और ठाकरे के जिप्सी से उतरते ही एक व्यक्ति तेजी से उनकी तरफ बढ़ा और उनके करीब आ कर बोला—"फोन मैंने ही किया था...।"

"क्या सुना आपने...?" ठाकरे भीड़ की तरफ बढ़ते हुए बोला।

"दो गोलियां चलने की आवाज सुनी—साथ में चीखने की भी आवाज सुनी।"

चलते-चलते ठाकरे रुका और उसे घूरते हुए बोला—"परसों जब नेहा और उसके बच्चों की हत्या हुई थी—तब आपको चीखें सुनाई नहीं दी थीं...?"

"नहीं...।" धर्मपाल बिना हड़बड़ाये बोला—"मेरे बेडरूम में कूलर चलता है....तो बाहर क्या हो रहा है, कुछ पता नहीं चलता।"

"क्या आज कूलर नहीं चलाया था?"

"चलाया था...। अब भी चल रहा है।"

“तो फिर आज कैसे सुनाई दे गया...?”

“उस वक्त मैं टायलेट के लिए बाहर निकला था। हमारी टायलेट मकान से बाहर है...।” उसने सामने की तरफ इशारा किया—“तभी गोलियां चलने की आवाज आई...।”

“और यह पड़ोसी...?” रीमा राठौर ने पूछा—“क्या यह भी गोलियों की आवाज सुन कर जागे हैं?”

“इन्हें मैंने उठाया है...।” धर्मपाल रीमा राठौर को देखते हुए बोला।

दोनों भीड़ में से होते हुए गेट के सामने पहुंचे तो वहां सील लगा ताला लटक रहा था।

“बाऊंड्री-वाल फांद कर अन्दर चलो।” रीमा राठौर ठाकरे से बोली। वह वहां से हट कर बाऊंड्री-वाल के करीब आई और बाऊंड्री-वाल पर दोनों हाथ रख ऐसे उछली कि उसका जिस्म बाऊंड्री-वाल के ऊपर से होते हुए सीधा लॉन में जा उतरा।

पीछे-पीछे ठाकरे भी दीवार फांद कर भीतर आया।

दोनों कम्पाऊंड में आये तो वहां भी तालों की सील लगी देखी।

"पीछे से देखते है...।" रीमा राठौर बोली।

दोनों कम्पाऊंड से निकले और पीछे की तरफ बढ़े।

उसने एक बार ठाकरे को देखा—फिर भीतर कूद गई।

पीछे-पीछे ठाकरे भी खिड़की फांद कर भीतर आ गया।

दाईं तरफ बेडरूम खुला था और भीतर लाईट जल रही थी।

तुरन्त ठाकरे ने होलस्टर से रिवॉल्वर खींच ली और पूरी सावधानी से बेडरूम की तरफ बढ़ा।

रीमा राठौर ने रिवॉल्वर तो नहीं निकाली; मगर वह सावधान पूरी तरह से थी।

पूरी तरह से सावधानी बरतते हुए दोनों जैसे ही कमरे में प्रविष्ट हुए—

बुरी तरह से उछल पड़े दोनों।

आंखें फट पड़ीं उनकी।

वे तो यह समझे कि वहां विशाल की लाश के दर्शन होंगे; मगर वहां तो निशांत की लाश पड़ी थी।

"य...यह तो निशांत है।" हकलाया-सा बोला सिकन्दर ठाकरे —"आत्माराम का बेटा...।"

रीमा राठौर ने कुछ नहीं कहा—बस बेड पर पड़ी निशांत की लाश को देखती रही—जो आंखें फाड़े छत को घूर रही थी। उसके सीने से निकला खून चादर को सुर्ख किए हुए था।

"य...यह कैसे मरा...?" ठाकरे हैरानी से रीमा राठौर को देखते हुए बोला —"और यह यहां पहुंचा कैसे...? क्या करने आया था यह यहां...?"

रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी और ठाकरे को देखते हुए बोली—

"इसमें कोई शक नहीं कि विशाल ने ही इसे मारा है।" उसने लाश की तरफ इशारा किया—"जाकिर को मार कर विशाल सीधा यहां आया और निशांत का इंतजार करने लगा और जैसे ही यह यहां आया—उसने उसे गोली से उड़ा दिया। साफ नजर आ रहा है कि विशाल ने निशांत को यहां लाने के लिए कोई चाल चली थी...।"

"क्या चाल चली होगी...?"

"अब यह तो विशाल ही बतायेगा!" गम्भीरता से बोली रीमा राठौर।

"और विशाल का पता नहीं कि वो कहां है। हम जहां भी जाते हैं—वो वहां से पहले ही काम करके निकल चुका होता है।"

"यह उसकी किस्मत है, जो उसका साथ दे रही है। मगर किस्मत हमेशा साथ नहीं देती...। जिस दिन भी किस्मत ने उसका साथ छोड़ा—वह कानून की गिरफ्त में होगा।"

सुनकर एक गहरी सांस छोड़ी सिकन्दर ठाकरे ने।

"वो जो कर रहा है—हमारी ही वजह से कर रहा है।" वह बोला —"असली गुनहगार वो नहीं—हम हैं। उसने तो अपना रिपोर्टर का धर्म पूरा किया था; लेकिन हम आत्माराम की चाल में ऐसे फंसे कि उसे ही गुनहगार मान बैठे...। मैंने उसे गिरफ्तार किया और तुमने उसे सजा दिलवा दी।"

"इसका मतलब यह तो नहीं कि वह भी आत्माराम जैसा बन जाये? मैंने उससे फोन पर कहा भी था कि मैं सच्चाई जान चुकी हूं और मैं उसकी सहायता करना चाहती हूं; लेकिन वो तो अपने बीवी-बच्चों की मौत का बदला लेने पर तुला हुआ था...।"

कह कर रीमा राठौर ने गहरी सांस छोड़ी और लाश पर से निगाह हटा कर इधर-उधर देखने लगी।

घूमती हुई उसकी निगाह दांई तरफ टेबल पर रखे कम्प्यूटर पर पड़ी।

उसने कुछ पल सोचा—कम्प्यूटर को देखती रही—फिर ठाकरे की तरफ देखते हुए बोली—

"जिस सब-इंस्पेक्टर ने यहां की तलाशी ली थी—उसे कम्प्यूटर चलाना आता है?"

"सीडी वगैरह चला लेता है—और कुछ नहीं आता उसे। क्यों...?"

ठाकरे बोला।

"इसका मतलब उसने कम्प्यूटर की फाइलें खोल कर नहीं देखीं?"

"फाइलें नहीं खोल सकता वह—मगर फाईलें खोलने की जरूरत ही क्या थी उसे?"

जवाब में रीमा राठौर आगे बढ़ी और कुर्सी खींच कर कम्प्यूटर के आगे बैठते हुए बोली—"तुम अस्पताल फोन करो—मैं जरा कम्प्यूटर देखती हूं।"

कहकर उसने कम्प्यूटर ऑन किया और उसकी एक-एक फाईल खोल कर देखने लगी।

उधर ठाकरे ने डॉक्टर और फोटोग्राफर को फोन किया और एक दूसरी कुर्सी खींच लाश की तरफ पीठ कर रीमा राठौर के करीब बैठ गया।

¶¶

"ट्रिन...ट्रिन...।"

फोन की घण्टी बजते ही आत्माराम ने रिसीवर उठा कर कान से लगाया और अपनी आवाज पर काबू पाने की कोशिश करते हुए बोला—

"हैलो...।"

इस वक्त वह लॉबी में फर्श पर बिछे कालीन पर बैठा था तथा उसके आसपास प्रकाश तथा घर के नौकर वगैरह बैठे थे।

फोन उसके पास ही नीचे रखा था।

"जवाहर बोल रहा हूं नेता जी...।"

दूसरी तरफ से आवाज आई।

आत्माराम का पारा चढ़ गया।

“साले कुत्ते—तेरे को मेरे बेटे को लाने को भेजा था...। वहां से फोन करने को नहीं कहा था।” वह फुंफकार उठा।

“भ...भीतर पुलिस है नेता जी...।” दूसरी तरफ से थर्राई आवाज आई।

“क्या....?” बुरी तरह से उछल पड़ा आत्माराम—“पुलिस वहां कैसे पहुंच गई...?”

“पता नहीं...हमारे पहुंचने से पहले ही पुलिस वहां पहुंच चुकी थी। हमने बाहर खड़े लोगों से पूछताछ की तो पता चला कि भीतर इंस्पेक्टर सिकन्दर ठाकरे और रीमा राठौर हैं।”

“कमाल है...।” बड़बड़ाया आत्माराम—“उसके थाने पर हमला करने आदमी गए हुए हैं और वो यहां है। कहीं मेरे प्यादों का भी काम तो नहीं कर दिया उसने...।”

“अब क्या हुक्म है नेता जी?” तभी दूसरी तरफ से आवाज आई।

“तुम वहीं रहो—देखो क्या करते हैं दोनों...।”

“जी नेता जी।”

आत्माराम ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा...कुछ पल सोचा—फिर पुनः रिसीवर उठा कर कान से लगा कर कोई नम्बर मिलाया।

शीघ्र ही दूसरी तरफ से अलसाई आवाज आई—“हैलो...।”

“मेरा बेटा मर गया है—और तू सो रहा है?” गुर्राया वह।

दूसरी तरफ पल भर के लिए सन्नाटा छा गया...फिर थर्राती आवाज आई—

“य...यह आप क्या कह रहे हैं नेता जी?”

“वही जो तू सुन रहा है...। उस हरामी विशाल ने मेरे बेटे को मार डाला...।” कहते हुए आत्माराम की आवाज भर्रा गई—“उसका पता लगा...ढूंढ उसे...। पूरे मुम्बई की खाक छान मार—मगर वो हरामी मेरे को मिलना चाहिये।”

“मैं अभी काम पर जुट जाता हूं।”

“उससे पहले अंधेरी थाने जा...। वहां का क्या हाल है—देख और मुझे फौरन रिपोर्ट कर...।”

“जी नेता जी...।”

आत्माराम ने रिसीवर रखा और प्रकाश की तरफ देखते हुए बोला—“अपने पापा को फोन कर दिया तूने...?”

“हां अंकल...। अब तक तो पापा पूना से निकल पड़े होंगे।”

एक गहरी सांस छोड़ते हुए आत्माराम ने अपनी आंखें पौंछीं और निशांत के साथ बीते लम्हों को याद करने लगा।

करीब आधे घण्टे बाद फोन की घण्टी बजी।

"ट्रिन...ट्रिन...।"

आत्माराम ने रिसीवर उठा कर कान से लगाया।

"हैलो...।"

"बहुत बुरी खबर है नेता जी...।" दूसरी तरफ से आवाज आई।

"मेरे निशांत की मौत से बुरी खबर क्या हो सकती है?" वह गुर्राया—"तू बोल...।"

"थाने पर हमला हुआ था...। हमलावर पन्द्रह थे—एक भी नहीं बचा। सभी मारे गए...। और तीन सिपाही भी मारे गए।"

आत्माराम के चेहरे पर निराशा फैल गई।

सब दांव उल्टे पड़ रहे थे। नुकसान पर नुकसान हो रहा था। जानी भी—माली भी।

¶¶

उस वक्त फोटोग्राफर निशांत की लाश की विभिन्न एंगलों से तस्वीरें ले रहा था—जब की-बोर्ड से उलझी रीमा राठौर चौंक पड़ी।

स्क्रीन पर कैमरा हिलता नजर आ रहा था।

ऐसा लग रहा था जैसे कैमरामैन कैमरा हाथ में पकड़े आगे बढ़ रहा हो—जिससे कि सामने का दृश्य बुरी तरह से हिल रहा था।

“यह क्या है?” हैरान होते हुए बोला ठाकरे।

मगर रीमा राठौर ने हाथ उठा कर उसे चुप रहने का इशारा किया और मॉनीटर पर देखने लगी।

“आत्माराम...।” तभी स्पीकर में से नेहा की आवाज आई।

और फिर स्क्रीन स्थिर हुई...तथा स्क्रीन पर पहले आत्माराम नजर आया—फिर प्रकाश और निशांत...।

"स्टिंग ऑपरेशन...।"

तभी चौंकते हुए बड़बड़ाया ठाकरे।

"हां...वही स्टिंग है—जिसके कारण नेहा तथा उसके बच्चों की जान गई।" रीमा राठौर स्क्रीन पर नजर जमाये हुए ही बोली।

"यह मैं हूं आत्माराम!" नेहा की आवाज दहाड़ के रूप में स्पीकर से निकली।

"ऐ...।" स्क्रीन पर निशांत दहाड़ा—"कौन है तू...?"

"तूने भी नहीं पहचाना आत्माराम—मैं विशाल कपूर की पत्नी हूं।"

"ओऽऽ...तो तू उस रिपोर्टर की बीवी है...जिसने मेरे भतीजे का स्टिंग ऑपरेशन किया था।"

“हां कमीने; मगर तूने अपनी चाल चल कर उल्टे मेरे विशू को ही फंसा दिया...। उसे पहले दस साल की सजा कराई...फिर जेल में ही उसकी हत्या कर दी...।”

आत्माराम जहर भरी मुस्कान मुस्कुराया। फिर वह कैमरे के और करीब आ गया।

“बेवकूफ था वो—जिसने शेर से दुश्मनी मोल ली...। अब शेर से दुश्मनी मोल लेगा तो मौत ही तो मिलेगी...साला रिपोर्टर क्या बन गया...खुद को खुदा ही समझ बैठा। सबको एक ही छड़ी से हांकने लगा...। बेवकूफ को यह भी नहीं पता था कि यहां के बादशाह हम हैं...और बादशाह के सामने सिर उठाने का मतलब होता है मौत...। मगर उसने तो हमारा तख्ता ही पलटने की कोशिश कर डाली...। और तब मेरे को अपनी राजनीति खेलनी पड़ी। ऐसी चाल चली मैंने कि सांप भी मर गया और लाठी भी नहीं टूटी...जिस लड़की से अय्याशी करते स्टिंग ऑपरेशन तेरे खसम ने किया था...उस लड़की ने आत्महत्या नहीं की...। बल्कि उसे हमने ही मारा था। और उसे आत्महत्या का रूप देकर सारा इल्जाम तेरे खसम पर डाल दिया। दस साल की सजा हो गई उसे! मगर हरामी की हेकड़ी नहीं गई—

कल जेल में मिला था मैं उससे....तो हरामी तब भी मेरे को खत्म करने के सपने देख रहा था...तो मैंने जेलर से कह कर उसका पत्ता कटवा दिया...। हमारे साथ दुश्मनी मोल लेने वाले का ऐसा ही अंजाम होता है...।"

निशांत आत्माराम के बराबर खड़ा होते हुए हंसते हुए बोला—

"अरे, ऐश हम कर रहे थे—उसे क्या तकलीफ हो गई जो उसने हमारा स्टिंग कर डाला?"

प्रकाश भी कैमरे के सामने नजर आया।

"मेरे पति को मार कर तूने अभी फतह नहीं पाई आत्माराम—अभी दुश्मनी खत्म नहीं हुई। दुश्मनी तो अब शुरू हुई है! विशू की जगह अब मैं रिपोर्टर बनूंगी और यह बात गांठ बांध ले—तेरे को नंगा मैं करूंगी। इस नेता की खाल के पीछे जो कमीना भेड़िया छुपा है—उसे मैं समाज के सामने लाऊंगी।"

"हा...हा...हा...।" आत्माराम मुंह फाड़कर हंसने लगा—"तो तू मेरे को नंगा करेगी?"

"हां आत्माराम...तेरे को नंगा करूंगी मैं...।"

आत्माराम का हाथ कैमरे के नीचे कहीं गायब हुआ...और उसकी बांह ऊपर-नीचे हुई...।

"अभी तेरे भाग-दौड़ करने का वक्त नहीं है—यह घर खाली कर ले—फिर मेरे से लड़ने की सोचना...। और एक बात और गांठ बांध ले...। इस बार तो मैं तेरे को छोड़ रहा हूं; लेकिन अब के बाद तेरा एक भी कदम मेरी तरफ बढ़ा तो तेरे को भी वहां पहुंचा दूंगा...जहां तेरा खसम गया है...दफा हो जा यहां से!"

"जा रही हूं, आत्माराम...।" नेहा की गुर्राती आवाज उभरी—"अपने बचाव के लिए तू जो भी करना चाहता है—अभी से करना शुरू कर दे—क्योंकि जब मेरा कहर तेरे पर टूटेगा तो तेरे को पनाह मांगने के लिए कहीं भी जगह नहीं मिलेगी।"

"तू जाती है कि नहीं यहां से?" दहाड़ा आत्माराम—"वर्ना कहीं ऐसा न हो कि यहीं पर तेरी इज्जत का भी फालूदा हो जाये...। दफा हो जा यहां से।"

और फिर मानीटर पर पुनः हिलते हुए दृश्य उभरे...। जिनमें कमरे का भीतरी दृश्य भी था। फिर दरवाजा उभरा और फिर दृश्य ऐसे हिलने लगे—जैसे नेहा वापिस जा रही हो।

रीमा राठौर ने चमकती आंखों से ठाकरे की तरफ देखा—"क्या समझे...?" वह मुस्कुराई।

ठाकरे भी मुस्कुरा पड़ा—"साफ नजर आ रहा है कि आत्माराम, उसके बेटे तथा भतीजे का स्टिंग करके नेहा ने कम्प्यूटर पर उसे चैक किया था और वो स्टिंग सेव हो गया, जो हमें नजर आ रहा है।"

"साथ ही महेश के कत्ल की गुत्थी भी सुलझ गई...।" रीमा राठौर बोली —"अब समझ में आ रहा है कि महेश की हत्या क्यों हुई...। जरूर नेहा ने महेश को सी○डी○ या पैनड्राइव दिया होगा ताकि वह चैनल पर उसे दिखा सके। मगर उसने अपने पेशे से गद्दारी की और स्टिंग जाकर आत्माराम को दे दिया और तब आत्माराम ने गुस्से में आकर नेहा तथा उसके बच्चों को मार डाला...। और इसमें यह बात भी जोड़ लो कि नेहा को विशाल के जिन्दा होने का पता चल गया था।

तभी तो विशाल को यह पता था कि स्टिंग ऑपरेशन महेश के पास है...और तभी तो उसने उसका कत्ल किया था। वर्ना महेश का तो इसमें कोई रोल ही नहीं था।"

ठाकरे ने एक गहरी सांस छोड़ी।

"यह आत्माराम तो गया काम से...।" वह बोला।

"तुम कोई ब्लैंक सीडी देख कर उसमें यह स्टिंग लोड करो, फिर हम चलते हैं उस हरामी को गिरफ्तार करने...।"

कहते हुए रीमा राठौर का चेहरा कठोर हो गया।

¶¶

"ट्रिन...ट्रिन...।"

फोन की घण्टी बजते ही आत्माराम ने रिसीवर उठाया।

"निशांत बाबू के शव को पोस्टमार्टन के लिए रवाना कर दिया गया है नेता जी...।"

दूसरी तरफ से आवाज आई।

"और वो दोनों हरामी रीमा राठौर और ठाकरे—वो कहां हैं?"

"वो दोनों भी जिप्सी में बैठ कर चले गए हैं।"

"कोई खास बात नजर आई?"

"नहीं नेता जी—हां, दोनों को देखकर ऐसा जरूर लग रहा था कि वे कहीं जल्दी पहुंचने की फिराक में थे।"

"किस तरफ गए वो?"

"यहां से वे आपकी कोठी की तरफ गए...आगे कहीं और गए होंगे।"

गहरी सांस छोड़ते हुए आत्माराम ने रिसीवर रखा और गहरी सोचों में डूब गया।

"कुछ पता चला विशाल का?" तभी बोला प्रकाश।

"लगेगा...। जरूर पता लगेगा...।" गुर्राया आत्माराम—"अब तो सब काम छोड़ कर पहले यही काम करना है। ऐसी मौत मारूंगा हरामजादे को कि मौत भी पनाह मांगने लगेगी।"

कहते हुए उसकी आवाज हिंसक हो उठी।

अभी पांच-सात मिनट भी नहीं बीते थे कि तभी एक नौकर घबराई हालत में भीतर प्रविष्ट हुआ।

उसे देख कर आत्माराम चौंका—"क्या हुआ...?"

"पुलिस ने कोठी को चारों तरफ से घेर लिया है।" नौकर घबराये अंदाज में बोला।

सुनकर आत्माराम और प्रकाश बुरी तरह से उछल पड़े।

तुरन्त आत्माराम गुस्से से खड़ा हुआ और दनदनाते हुए कमरे से निकल कर बाहर आया और ड्राईव-वे पार करके गेट पर पहुंचा—तो मारे हैरत के उसकी

आंखें फट पड़ीं—कलेजा धड़क उठा।

उसकी कोठी की पूरी बाऊंड्री-वाल को पुलिस ने घेर रखा था और चार सिपाही गेट पर तैनात थे।

सभी के सभी राइफलों से लैस थे।

"य...यह सब क्या है...?" वह गुस्से में दहाड़ा—"क्यों घेर रखा है मेरे घर को?"

"आप और प्रकाश गिरफ्तार हैं नेता जी...।" एक सिपाही बोला।

"क्या...?" बुरी तरह से उछल पड़ा आत्माराम।

"जी हां...इंस्पेक्टर साहब का हुक्म है कि अगर आप यहां से निकलने की या भागने की कोशिश करें तो आपकी टांगों में गोली मार दी जाये।"

दूसरा बोला।

आत्माराम का पूरा वजूद सुलग उठा।

"उस दो कौड़ी के इंस्पेक्टर की यह हिम्मत कि मेरे को गोली मारने का हुक्म दे? जानता नहीं मैं एम○एल○ए○ हूं?"

"खातिर जमा रखिये, नेता जी...।" तीसरा बोला—"इंस्पेक्टर साहब अभी आ रहे हैं। फिर देखेंगे कि उनकी औकात दो कौड़ी की है या आपकी...।"

"हरामजादे...तेरी यह हिम्मत जो मुझसे बकवास करे...मैं...।"

"ऐ...।" चौथे ने राईफल तान दी उस पर—"ज्यादा ऐंठ नहीं दिखाने का, वर्ना औकात हम साहब के आने से पहले ही बता देंगे।"

"हमारे थाने के तीन जवान शहीद कर दिए तूने...।" तीसरा गुर्राया—"हमारा दिल कितना जल रहा है—इसका तू अंदाजा भी नहीं लगा सकता। दिल तो यह कर रहा है कि अभी तेरे सीने में गोलियां दाग दूं...। लेकिन साहब का हुक्म है कि तेरे को कुछ न कहा जाये...। वर्ना अब तक तो हम तेरे को ऊपर भी पहुंचा चुके होते।"

आत्माराम को काटो तो खून नहीं।

एक मामूली सिपाही ने ही उसे उसकी औकात दिखा दी थी। भला इससे बड़ा अपमान और क्या हो सकता था उसका!

“अब यहीं खड़ा रहना...। भीतर जाने की जरूरत नहीं।”

पहला गुर्राया।

आत्माराम समझ गया कि पुलिस के हाथ उसके खिलाफ कोई पुख्ता सुबूत लगा है—वर्ना एक विधायक पर यूं हाथ डालना आसान नहीं होता।

पूरी कोठी को फोर्स ने घेर रखा था—अगर दो-चार सिपाही होते तो वह उन्हें मार कर फरार भी हो सकता था।

लेकिन अब तो कुछ भी नहीं किया जा सकता था।

अब तो बस यह देखना था कि उसके खिलाफ सुबूत क्या मिला है पुलिस को।

दस मिनट बाद ही पुलिस की जिप्सी गेट के सामने आ कर रुकी।

तब तक पूरी कोठी के सदस्य गेट पर पहुंच चुके थे।

रीमा राठौर आत्माराम के सामने आई—"तेरे बेटे की मौत की खबर तो तेरे को मिल चुकी होगी, आत्माराम...।" वह बोली।

गुस्से से आत्माराम के नथुने फूलने-पिचकने लगे।

"मैं उसे जिन्दा नहीं छोड़ूंगा।" वह फुंफकारा।

"जैसा बोओगे वैसा ही तो काटोगे। तूने उसकी पत्नी को, उसके बच्चों को मार डाला। अब उसने कोई चूड़ियां तो पहन नहीं रखी थीं...जो वह चुप करके बैठ जाता...। उसने तेरी ऐसी तैसी फेर कर रख दी। जाकिर को मार कर उसने तेरी ताकत खत्म कर दी। और फिर तेरे बेटे का कत्ल कर दिया।"

"मैंने न तो उसकी बीवी को मारा है...न बच्चों को।"

“घबरा नहीं...। जिस वजह से तूने उनका कत्ल किया, वो वजह मिल गई है हमें...। नेहा ने तुम तीनों का स्टिंग किया था, जिसमें तुम तीनों ने अपना गुनाह कबूला था। वो स्टिंग नेहा के कम्प्यूटर में लोड हो गया था। तूने महेश से तो स्टिंग ले लिया—मगर नेहा का कम्प्यूटर चैक नहीं किया। अब तू और प्रकाश हैं और यकीन मान—तेंरे को मैं अदालत से ऐसी कड़ी सजा दिलवाऊंगी कि तेंरे जैसे कोई नेता अपराध से तौबा कर ले...।”

आत्माराम से कुछ भी बोलते नहीं बना।

¶¶

अदालत में टी०वी० पर स्टिंग ऑपरेशन चल रहा था, जिसे मजिस्ट्रेट के साथ-साथ अदालत में मौजूद लोग भी देख रहे थे। एक कटघरे में आत्माराम और प्रकाश खड़े थे...जिनके चेहरे झुके हुए थे।

जैसे ही टी०वी० पर स्टिंग ऑपरेशन खत्म हुआ—रीमा राठौर बोल पड़ी —

"मीलार्ड...अदालत ने सारी सच्चाई देखी...पर सच्चाई यह भी बताती है कि प्रकाश ने अंजली की मर्जी से नहीं, बल्कि उसकी मर्जी के खिलाफ उससे रेप किया था। जिसका विशाल कपूर ने स्टिंग किया था—और उस स्टिंग की उसे ऐसी सजा मिली कि उसका सब कुछ तबाह हो गया। उसकी बीवी का कत्ल कर दिया गया। बच्चों को बेरहमी से मार डाला गया। सिर्फ इसलिए कि उसने अपने कर्तव्य का पालन करते हुए समाज को...देश को...इन शैतानों का असली चेहरा दिखाया था। अगर सच पर चलने की राह इतनी कांटों भरी है, अगर सच का साथ देने वाले और सच को सामने लाने वाले को ऐसे दु:ख भोगने पड़े तो लोग तो सच्चाई से मुंह मोड़ना शुरू कर देंगे।

इसलिए मीलार्ड...मैं अदालत से अपील करती हूं कि सच्चाई को बचाने के लिए इन दोनों को ऐसी सजा दी जाये कि झूठे और मक्कार लोग गुनाह से तौबा करने लगें। दैट्स आल मीलार्ड...।"

मजिस्ट्रेट ने बैठे-बैठे ही पहलू बदला—फिर उनकी भारी आवाज अदालत में गूंजी—

“अदालत ने मृतका नेहा द्वारा किया गया स्टिंग देखा...। जिससे पहली नजर में ही यह तय होता है कि आत्माराम और प्रकाश गुनाहगार हैं। अदालत पुलिस को आदेश देती है कि नेहा की तथा उसके बच्चों की हत्या का सुबूत भी जल्द से जल्द कोर्ट में पेश करे, ताकि गुनाहगारों को सजा सुनाई जा सके...।”

“नहीं...।”

तभी अदालत में दहाड़ती आवाज गूंजी।

सभी चौंक कर इधर-उधर देखने लगे।

रीमा राठौर ने चौंक कर आवाज की दिशा में देखा—तो वह बुरी तरह से उछल पड़ी।

विशाल कपूर उस कटघरे में प्रवेश कर रहा था—जिसमें कि आत्माराम और प्रकाश खड़े थे।

“यह दोनों मेरे मुजरिम हैं जज साहब—इन्हें सजा भी मैं ही दूंगा...।”

"कौन हो तुम...?" मजिस्ट्रेट चौंक कर बोले—"अरेस्ट हिम...।"

"खबरदार!" दहाड़ा विशाल कपूर—"अगर कोई मेरे करीब भी आया तो अपनी मौत का जिम्मेदार वह खुद होगा...।"

"विशाल...।" चीखी रीमा राठौर।

"मेरी जेब में बम पड़ा है रीमा राठौर और मेरे हाथ में रिमोट है। कोई भी मेरे पास आने की कोशिश न करे।"

उसकी दहाड़ सुन कर अदालत में मौजूद लोगों की सांस ही सूख गई।

"यह पागलपन मत करो विशाल—खुद को कानून के हवाले कर दो...। मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूं कि मैं तुम्हें इंसाफ दिलाऊंगी।"

"इंसाफ पाने का वक्त निकल चुका है रीमा राठौर...। अब तो बस अपना इंतकाम पूरा करना है।"

"नहीं विशाल...।"

"निशाने पर तो तुम भी थीं मेरे...। लेकिन तुमने अपनी गलती को सुधारा और पूरी मेहनत से सच्चाई सामने लाईं।

इसलिए मैं तुम्हें माफ करता हूं...।" कहते हुए उसने आत्माराम और प्रकाश के गले में बाहें डाल लीं—"इस सपोले के बाप का नाम विजय कुमार है—वो गैरकानूनी कामों में इस हरामी कुत्ते आत्माराम का पार्टनर है—पूना में रहता है वो। उसे पकड़ कर सजा दिलवाना तुम्हारा काम है...।"

"जरूर करूंगी विशाल—मगर प्लीज—तुम उन दोनों को छोड़ दो।"

आत्माराम और प्रकाश जोर-जोर से चीखने लगे—

"बचाओ...बचाओ...।"

मगर विशाल ने उनकी चीखों पर ध्यान नहीं दिया और हाथ में पकड़े रिमोट का बटन दबा दिया।

"बड़ा...म...।"

एक तेज धमाका हुआ और तीनों के चीथड़े उड़ गए।

अदालत की दीवारों पर खून के छीटों के साथ-साथ गोश्त के लोथड़े चिपके नजर आने लगे।

"बेचारा...।"

रीमा राठौर के होठों से निकला और वह गहरी सांस छोड़कर रह गई।

—समाप्त—